ISBN 978-81-928330-7-1

आयुर्वेद परिभाषा कोश

Definitional Dictionary of **Ayurveda**

संस्कृत-अंग्रेजी-हिंदी

Sanskrit-English-Hindi

वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग

मानव संसाधन विकास मंत्रालय (उच्चतर शिक्षा विभाग) भारत सरकार

Commission for Scientific and Technical Terminology

Ministry of Human Resource Development (Department of Higher Education)

Government of India

आयुर्वेद परिभाषा कोश

Definitional Dictionary of Ayurveda

(संस्कृत-अंग्रेजी-हिंदी)

(Sanskrit-English-Hindi)

कंप्यूटरीकृत डाटाबेस

Computerised Database

सत्यमेव जयते

वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग
मानव संसाधन विकास मंत्रालय
(उच्चतर शिक्षा विभाग)
भारत सरकार

Commission for Scientific and Technical Terminology
Ministry of Human Resource Development
(Department of Higher Education)
Government of India

© भारत सरकार, 2016

© Government of India 2016

संस्करण 2016

मूल्य: देश में : ₹ 1345.00
विदेश में: $ 20.02, £ 13.61

प्राप्ति स्थल

1. बिक्री एकक
वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग
पश्चिमी खंड-7, रामकृष्णपुरम्
नई दिल्ली - 110066
फोन न: 26105211 एक्स 246

2. प्रकाशन नियंत्रक, भारत सरकार
सिविल लाइन्स, दिल्ली - 110054

प्रकाशक
वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग
पश्चिमी खंड-7, रामकृष्णपुरम्
नई दिल्ली - 110066

विषय सूची

		पृष्ठ संख्या
1.	प्रस्तावना	v
2.	Preface	vii
3.	संपादकीय	ix
4.	Editorial	xi
5.	संपादन एवं समन्वय	xiii
6.	आयुर्वेद परिभाषा कोश से संबंधित विशेषज्ञ	xiv
7.	वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग द्वारा अनुमोदित शब्दावली निर्माण के सिद्धांत	xv
7.	Principles for evolution of terminology approved by C.S.T.T.	xvi
8.	आयुर्वेद परिभाषा कोश	1-375
9.	परिशिष्ट (appendix)	376-423
10.	Key to transliteration	424
11.	सेक्षेपाक्षर सूची (abbreviations)	425

प्रस्तावना

वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग की स्थापना भारत के संविधान के अनुच्छेद 344 के खंड (4) के उपबंधों के अधीन गठित की गई समिति की सिफारिश के अनुसार भारत सरकार (शिक्षा मंत्रालय)के एक संकल्प के माध्यम से राष्ट्रपति के 1960 के आदेश के द्वारा 1 अक्टूबर 1961 को की गई। हिंदी में ज्ञान-विज्ञान के प्रसार के अतिरिक्त आयोग का मुख्य कार्य हिंदी तथा अन्य भारतीय भाषाओं में वैज्ञानिक एंव तकनीकी शब्दों का निर्माण करना और उनकी परिभाषा देना तथा कोशों/विश्व कोशों का प्रकाशन करना है।

उपर्युक्त संकल्प के अनुसार आयोग ने मानविकी तथा विज्ञान के विभिन्न विषयों, विषय-शाखाओं, उप-शाखाओं की अद्यतन तकनीकी शब्दावली के लिए मानक हिंदी पर्याय प्रस्तुत किए हैं। आयोग ने विभिन्न विषयों के अनेक शब्द-संग्रह/परिभाषा कोश प्रकाशित किए हैं जिनमें कई लाख शब्दों का समावेश है। चूंकि शब्दावली का निर्माण एक सतत प्रक्रिया है, अत: आज भी आयोग में शब्दावली के निर्माण, समन्वय, परिशोधन/परिवर्धन/ एंव प्रकाशन का कार्य निरंतर चल रहा है।

ऐसा नहीं है कि शब्दावली निर्माण की पहल हाल के समय की ही है। वस्तुत: तकनीकी शब्दावली निर्माण की परिपाटी का गौरवशाली इतिहास है।वैसे तो आयोग में आयुर्विज्ञान शब्दावली के निर्माण का इतिहास काफी पुराना है, लेकिन आयुर्विज्ञान के क्षेत्र में आयोग की सर्वाधिक श्रेष्ठ कृति ''बृहत् पारिभाषिक शब्दसंग्रह : आयुर्विज्ञान, भेषज विज्ञान, शारीरिक नृ-विज्ञान 1991 में प्रकाशित हुई जो सर्वथा संशोधित-मार्जित-समन्वित थी। इस शब्दकोश में लगभग 36 हजार शब्द हैं। अपनी उपादेयता और गुणवत्ता के आधार पर उपर्युक्त शब्द-संग्रह अत्यंत लोकप्रिय सिद्ध हुआ और इसका व्यापक प्रचार-प्रसार हुआ। परिणामत: इस शब्द-संग्रह की सभी प्रतियां लगभग समाप्त हो गई हैं। इस शब्द-संग्रह की उत्तरोत्तर बढ़ती हुई मांग को देखते हुए 2015 में इसका संशोधित एवं परिवर्धित संस्करण प्रकाशित किया गया है। इसके अतिरिक्त आयोग द्वारा आयुर्विज्ञान शब्दावली (मूलभूत) और आयुर्विज्ञान के सामान्य शब्दों एंव वाक्यांशों (अंग्रेजी-तमिल-हिंदी) ''अगदतंत्र एवं न्यायवैद्यक शब्द.संग्रह'' का भी प्रकाशन किया गया है। आयुर्वेद विषय में भी संस्कृत में उपलब्ध शब्दों के अंग्रेजी पर्याय प्रस्तुत करने के लिए (संस्कृत-अंग्रेजी- हिंदी) शब्दावलियों का अभाव अनुभव किया गया तथा इस रिक्ति की पूर्ति करने की दिशा में वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग द्वारा आयुर्वेद शब्दावली निर्माण का कार्य किया गया है।

प्रस्तुत ''आयुर्वेद संस्कृत-अंग्रेजी-हिंदी परिभाषा कोश'' का निर्माण एवं प्रकाशन आयोग द्वारा किया गया प्रथम प्रयास है। यह अपने किस्म का पहला परिभाषा कोश है जो संस्कृत, अंग्रेजी एवं हिंदी जानने वाले चिकित्सकों के लिए उपयोगी सिद्ध होगा। चूंकि आयुर्वेद में औषधियों, रोगों, जड़ी-बूटियों के नाम प्राय: संस्कृत में ही होते हैं अत: शब्दों के पर्यायों का निर्माण भी संस्कृत धातुओं के आधार पर ही किया जाता है और किसी भी चिकित्सक के लिए उनका ज्ञान होना परमावश्यक है। अंग्रेजी माध्यम से आयुर्वेद का शिक्षा प्रदान /ग्रहण करने वाले छात्रों के लिए तो यह कोश अत्यंत उपयोगी सिद्ध होगा। अंग्रेजी जानने वाले चिकित्सक के लिए रोगों के नाम लक्षण और निदान तथा आयुर्वेदिक औषधियों के संस्कृत नाम से परिचित होना परम आवश्यक है। आयुर्वेदिक चिकित्सा शिक्षा में संस्कृत का प्राधान्य होता है। आजकल आयुर्वेदिक शिक्षा का प्रचार-प्रसार भी तेजी से तथा व्यापकरूप से हो रहा है। चूँकि आयुर्वेदिक चिकित्सा पद्धति देश की मूलभूत चिकित्सा पद्धति है इसलिए यह देश में काफी लोकप्रिय भी है। भारत सरकार ने भी केंद्रीय सरकार स्वास्थ्य योजना के अंतर्गत देश में अनेक औषधालय खोल रखे हैं और सरकारी कर्मचारी उनका लाभ उठा रहे हैं। अत: यह परिभाषा कोश न केवल आयुर्वेदिक चिकित्सकों बल्कि सामान्य पाठकों, आयुर्वेदिक अध्यापकों, छात्रों, औषधियोजकों एवं चिकित्सा कर्मियों के लिए अत्यंत उपयोगी होगा।

चूंकि आयोग द्वारा प्रकाशित अपने किस्म का यह पहला परिभाषा कोश है अत: मुझे पूर्ण विश्वास है कि महत्व एवं उपयोगिता की दृष्टि से इस परिभाषा कोश का चिकित्सा-जगत में सर्वत्र स्वागत होगा और नई पीढ़ी के लोग परंपरागत स्वदेशी चिकित्सा की ओर आकर्षित होंगे तथा वे**''सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वेसन्तुनिरामया:''** (Sarve bhavantu Sukhinah sarve santu niramayah (May all be happy; may all be healthy)की लोक कल्याण भावना से ओत-प्रोत होंगे।

मैं उन सभी विद्वानों, चिकित्सकों, डाक्टरों, विषय-विशेषज्ञों और भाषाविदों के प्रति अपना आभार व्यक्त करता हूँ जिन्होंने प्रस्तुत परिभाषा कोश के निर्माण में अपना बहुमूल्य समय और विशेषज्ञता प्रदान की है। मैं डा. बी.एस. बेहेरा, वरिष्ठ वैज्ञानिक अधिकारी (आयुर्विज्ञान)का विशेष रूप से साधुवाद देता हू जिनकी गहरी लगन, विषय-विशेषता और अटूट परिश्रम के कारण प्रस्तुत परिभाषा कोश के निर्माण का कार्य समयबद्ध कार्यक्रम के अनुसार दक्षतापूर्वक संपन्न हो सका।

नन्दकिशोर पाण्डेय

(प्रो. नन्द किशोर पाण्डेय)

अध्यक्ष

वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग

2016

नई दिल्ली

Preface

The Commission for Scientific and Technical Terminology was set up in 1961 by the Presidential Order to revise the work done so far in the field of Scientific and Technical terminology in the light of the principles laid down in the Presidential Order of 1960, to formulate the principles relating to evolution and co-ordination of Scientific and Technical terminology in Hindi and other Indian languages, to coordinate the work done by different agencies in the states in the field of Scientific and Technical terminology, with the consent or at the instance of the state Government concerned and approval of glossaries for use in Hindi and other Indian languages as may be submitted to it by the concerned agencies; and also to take up preparation of standard scientific textbooks using the terminology evolved or approved by it.

As per the mandate, the Commission for Scientific and Technical Terminology has prepared and published several glossaries in almost all the fields of knowledge, Comprehensive Glossary of Technical Terms of Humanities and Social Sciences Vol. I and II, Comprehensive Glossary of Technical Terms of Sciences (Vol. I and II). The Terminological activities are a part of the language modernization programmes including the development of the mechanism of lexicographical processing.

In the field of Medical Sciences, the Commission has undertaken the following programmes (a) the preparation of Definitional Dictionary (b) The up-gradation of the glossary of Medical Sciences and publication of enlarged Edition of the same (c) The preparation of the fundamental glossaries and (d) The preparation of the Technical Terms and Phrases in the different languages of the country. The Commission has already published English-Tamil-Hindi Terminology. The Definitional Dictionary of Medical Sciences (Surgery) has been published. Very recently the Commission published an important and valuable Dictionary 'Toxicology and Medical Jurisprudence (English-Hindi)". The glossary has been commended far and wide. Clinical Diagnostics and Pathology Glossary and Definitional Dictionary of Ayurveda and Glossry of Ayurveda has been published. This glossary includes the maximum available technical terms in Ayurveda related with signs and symptoms of diseases.

The present Definitional Dictionary of Ayurveda is the collection of terms from Charaka samhita, Sushruta samhita, Ashtanga Sangraha, Ashtanga Hridaya and Madhavanidanam. The emphasis has been on giving the immediate meaning in English, Hindi and Sanskrit with classical reference and description .Many people from India and abroad are studying and practicing Ayurveda without adequate knowledge of Sanskrit. This work of Definitional Dictionary of Ayurveda will prove to be of great help to all of them. The maximum number of basic expressions and terms regarding the symptoms and various diseases have been included in this Definitional Dictionary. These terms are related to the indications connected with Ayurvedic diagnosis and therapy. The terms of Sanskrit have been transliterated and their descriptions have been given in English and Hindi with classical reference. This enhances the usefulness of the Dictionary and leads to further studies and research work. This dictionary is focussed on symptoms and psychosomatic indications and their meanings.

The users of this dictionary and the learned Ayurvedic scholars of their respective fields are requested to give their suggestions so that the glossary may be amended and improved so that the next edition becomes more useful.

I take this opportunity to express my deep gratitude to all those eminent scholars, subject-experts and linguists who enthusiastically lent their time and expertise to produce this glossary. Words of commendation are also due to Dr. B.S. Behera, Senior Scientific Officer(Medicine) who with his devotion to duty, subject-specialization and hard labour, made production of this glossary possible in time.

Since this is a first-of-its-kind glossary ever produced by the Commission, I am fully confident that as far as the usefulness of the Definitional Dictionary is concerned, this will be widely and warmly received in the medical fraternity. In addition, posterity will be attracted towards the traditional and domestic medication and get imbibed with the following feeling of public welfare:

" सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वेसन्तुनिरामयाः"

(Sarve bhavantu Sukhinah sarve santu niramayah (May all be happy; may all be healthy)

I express my thanks to the subject experts and the linguists who had been associated with the preparation of this glossary for their active co-operation and support. I also express my thanks in advance to all for their hard work and complete devotion for publication, sale and distribution of this glossary.

नन्द किशोर पाण्डेय

(Prof. Nand Kishore Pandey)
Chairman
Commission for Scientific and Technical Terminology

New Delhi-2016

संपादकीय

भारतीय कोश साहित्य के इतिहास का उद्भव वैदिक युग के आरंभिक काल में दृष्टिगत होता है जब मार्ग दर्शन के उद्देश्य से निघण्टु (शब्द कोशों) की रचना की जाती थी। इस समय इस प्रकार का केवल एक निघण्टु उपलब्ध है जिसके साथ यास्क- लिखित निरुक्त और व्युत्पत्ति भी सम्मिलित है। बाद के कोशग्रन्थों का निघण्टु साहित्य से किसी प्रकार का सम्बन्ध नहीं है और उनके बीच एक लम्बा अन्तराल है। दोनों प्रकार के कोश ग्रंथों की निरन्तरता व्याकरण के कतिपय धातुपाठों, गणपाठों इत्यादि संग्रहों में पाई जाती है; हाँ, कहीं-कहीं टीका ग्रन्थों में कात्यायन, वाचस्पति, व्याडि इत्यादि कतिपय प्राचीन लेखकों के विवरण और उद्धरण अवश्य मिल जाते हैं।

बाद के कोश ग्रन्थ प्राय: कवियों द्वारा साहित्यिक कृतियों के रचनाकारों-मुख्यत: कवियों के लिये लिखे गये थे। यही कारण है कि इस प्रकार के कोश-ग्रन्थ अधिकांशत: पद्य में ही है। इनमें अधिकतर 'श्लोक' का प्रयोग किया गया है और कभी-कभी 'आर्या' छन्द का प्रयोग भी उपलब्ध है। बाद के युग के ये कोश-ग्रन्थ शैली, क्षेत्र, उद्देश्य और शब्द-संग्रह का क्रम इत्यादि कई दृष्टियों से एक दूसरे से भिन्न हैं। इस प्रकार उनका वर्गीकरण अनेक प्रकार से किया जा सकता है। कुछ तो पर्यायमूलक हैं जिनमें एक ही पद्य में सभी पर्यायवाची शब्द संकलित कर दिये जाते हैं। कुछ भिन्नार्थी शब्दमूलक हैं जिनमे एक ही शब्द के सभी अर्थ इस प्रकार संकलित कर दिये जाते हैं कि शब्द को प्रथम विभक्ति में रखा जाता है और अर्थ के लिये सप्तमी विभक्ति का प्रयोग किया जाता है। इन दोनों प्रकारों को नामानुशासन की संज्ञा दी जाती है जिसका अर्थ है शब्दों की शिक्षा। कभी- कभी एक विधा दूसरी का अतिक्रमण कर जाती है। संयोजन की दृष्टि से ये कोश ग्रन्थ कई प्रकारों में विभाजित किये जा सकते हैं। किसी विधा में क्रम-व्यवस्था प्रथम अक्षर के अनुसार की जाती है; दूसरों में उनका व्यवस्थापन अन्तिम अक्षर के अनुसार किया जाता है; किन्हीं और कोश ग्रंथों में दोनों प्रकारों को एक साथ अपनाया जाता है। कतिपय कोश ग्रन्थ केवल शब्द और अर्थ तक सीमित नहीं होते; अपितु उनमें लिङ्ग निर्देश भी किया जाता है। कुछ कोशों में शब्द और उनके लिङ्ग साथ-साथ दिये जाते हैं जबकि दूसरों में लिङ्ग निर्देश के लिये एक पृथक् परिशिष्ट जोड़ दिया जाता है। अनेक बार शब्दों की क्रम योजना लिङ्ग के अनुसार पृथक्-पृथक् की जाती है। कुछ कोशों में क्रमयोजना अक्षरों की संख्या के अनुसार की जाती है।

कोशकारों के उज्ज्वल तारामण्डल में 5 वीं शताब्दी के अमरसिंह सर्वाधिक देदीप्यमान नक्षत्र हैं। ये विद्वानों और छात्रों में समान रूप में सर्वाधिक प्रतिष्ठित रहे हैं। उनके अमरकोश पर उच्चकोटि की लगभग 50 विशिष्ट टीकायें उपलब्ध हैं। कतिपय अन्य उत्कृष्ट कोशग्रन्थ निम्नलिखित हैं:-

1. पुरुषोत्तमदेव का त्रिकाण्डशेष
2. पुरुषोत्तमदेव की हारावली
3. शाश्वत का अनेकार्थसमुच्चय
4. हलायुध की अभिधानरत्नमाला
5. यादव प्रकाश की वैजयन्ती
6. धनंजय की नाममाला
7. मंख का अनेकार्थ कोश
8. हेमचन्द्र जैनाचार्य के कतिपय शब्द कोश जिनमें अभिधान चिन्तामणि माला (संक्षेप में इसे अभिधान चिन्तामणि कहा जाता है), निघण्टु शेष, अनेकार्थ संग्रह शामिल है

2—4 Min. of HRD/2016

ऊपर जिन कोशों का उल्लेख किया गया है उनके अतिरिक्त ऐसे कोशों की एक बहुत लम्बी सूची है जो हाल में प्रकाश में आये हैं। ये कोशग्रन्थ भी अनेक प्रकार के हैं: छोटे-बड़े, सामान्य विषयों पर, विशिष्ट विषयों पर (जैसे बौद्ध साहित्य विषयक, नृत्य और संगीत विषयक इत्यादि।) 19 वीं शताब्दी में कुछ ऐसे अत्यंत महत्वपूर्ण कोशों का निर्माण हुआ है जिनमें वर्णानुक्रम से शब्दसंग्रह करने की यूरोपीय पद्धति अपनाई गई है। इनमें विश्वकोश की श्रेणी के दो वृहदाकार कोश सम्मिलित हैं- राधाकान्तदेव का शब्दकल्पद्रुम और तारानाथ तर्कवाचस्पति का वाचस्पत्यम्।

कतिपय कोश ग्रन्थ छात्रों के उपयोग के मन्तव्य से भी लिखे गये। वे या तो इतने विशाल हैं कि सुविधाजनक रूप में उनका उपयोग नहीं किया जा सकता, या इतने छोटे हैं कि वे छात्रों की आवश्यकता पूरी नहीं करते। उदाहरण के लिये इस क्षेत्र का सर्वाधिक प्रतिष्ठित कोश आप्टे का है। यह कोश अत्यन्त विस्तृत है और स्वयं को सामान्य छात्र की आवश्यकता तक सीमित रखने की अपेक्षा उसे परिपूर्णता तक पहुँचाने का लक्ष्य बनाकर लिखा गया अधिक प्रतीत होता है। अतएव ऐसे कोश की आवश्यकता अब भी बनी हुई है जो केवल प्रसिद्ध अर्थों के साथ-साथ परिनिष्ठित पारिभाषिक शब्द तक ही सीमित हो।

इसी उद्देश्य को लेकर यह आयुर्वेद परिभाषा कोश प्रस्तुत किया गया है। इसमें आयुर्वेद के नित्य उपयोग में आने वाले लगभग 7,000 शब्द संकलित किये गये हैं और इसमें आयुर्वेद की विशेष वैज्ञानिक क्षेत्र की शब्दावली को सम्मिलित किया गया है। अंग्रेजी में उनके सर्वाधिक प्रसिद्ध अर्थ ही दिये गये हैं जिससे दोनों माध्यमों की आवश्यकता पूरी हो सके।

प्रस्तुत आयुर्वेदिक संस्कृत-अंग्रेजी परिभाषा कोश का निर्माण एवं प्रकाशन आयोग द्वारा इस दिशा में किया गया प्रथम प्रयास है। यह अपने किस्म का पहला परिभाषा कोश है जो संस्कृत, हिंदी एवं अंग्रेजी जानने वाले चिकित्सकों के लिए उपयोगी सिद्ध होगा। चूंकि आयुर्वेद में औषधियों, रोगों, जड़ी-बूटियों के नाम प्राय: संस्कृत में होते हैं अत: शब्दों के पर्यायों का निर्माण भी संस्कृत धातुओं के आधार पर ही किया जाता है और किसी भी चिकित्सक के लिए उनका ज्ञान होना परमावश्यक है। अंग्रेजी माध्यम से आयुर्वेद की शिक्षा प्रदान/ग्रहण करने वाले शिक्षकों/छात्रों के लिए तो यह कोश अत्यंत अनिवार्य सिद्ध होगा। साथ ही अंग्रेजी एवं हिंदी जानने वाले चिकित्सकों के लिए रोगों के नाम, लक्षण और निदान तथा आयुर्वेदिक औषधियों के संस्कृत नामों से परिचित होना परम आवश्यक है। आयुर्वेदिक चिकित्सा शिक्षा में संस्कृत की प्राथमिकता है और आजकल आयुर्वेदिक शिक्षा का प्रचार-प्रसार भी तेजी से तथा व्यापक रूप से हो रहा है। अत: यह परिभाषा कोश न केवल आयुर्वेदिक चिकित्सकों, बल्कि सामान्य आयुर्वेद के अध्यापकों, छात्रों एवं चिकित्सा कर्मियों के लिए भी अत्यंत उपयोगी होगा।

मैं उन सभी विद्वानों, चिकित्सकों, विषय-विशेषज्ञों और भाषाविदों के प्रति अपना आभार व्यक्त करता हूँ जिन्होंने प्रस्तुत शब्द संग्रह के निर्माण में अपना बहुमूल्य समय और सेवायें प्रदान की।

डॉ. भीमसेन बेहेरा
वरिष्ठ वैज्ञानिक अधिकारी (आयुर्विज्ञान)
वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग

Editorial

The antiquity of Indian lexicographical literature goes back to earlyVedic age when Nighantus e.g.vocabularies or books of words were prepared for guidance.Only one of such Nighaṇṭus now survives along with etymological interpretations and derivatives (Nirukta and Vyutpatti) by Yāska. The later dictionaries have no connection with Nighaṇṭu literature and have a long time interval after the Nighantus. The continuity of both the literatures is preserved only by a few books containing collection of words according to various grammatical categories Dhātupāṭha and Gaṇapāṭha, etc. Of course several references of old grammar works such as Kātyāyana, Vācaspati, Vyāḍi, etc. are sometimes available in commentaries.

The later dictionaries were written generally by poets for lexicographers. That is why such dictionaries are in verses, mostly in ślokas and at times in Ārya metre. These dictionaries of later period differ from each other in many ways in methodology, scope, objectives and the order of collection of words. Thus they can be classified in several categories. The synonymical ones are those in which all the synonyms are collected in one couplet. Homonymical ones are those in which the meanings of a word are grouped in such a way that the word stands in basic nominative form and its meanings stand in locative form. These two kinds are called Namanusasana i.e teaching of words. Sometimes one variety trespasses into the other. From the point of view of arrangement these dictionaries can be divided into several categories. In some the words are arranged according to the first syllable while in others they are arranged according to the final syllable; in some both the methods are followed simultaneously. A number of these dictionaries are not limited to words and their meanings only, but also provide gender . In some the words and gender are given side by side, while in others a separate appendix is added for genders. Many times words are arranged separately according to their genders. In a few dictionaries words are arranged according to the number of syllables.

Amidst the wide galaxy of lexicographers, Amara-Simha (about 5th century A.D.), is the most prominent one. He has been most popular among the scholars as well as students. On his Amarakośa about 50 elaborate commentaries have come into light. A few other prominent lexicons are as follows:

1. Trikaṇḍaśeṣa of Puruṣottama Deva
2. Hāravali of Purusottama Deva
3. Anekārtha Samuccaya of Sasvata
4. Abhidhāna Ratnamālā of Halāyudha
5. Vaijayantī of Yādava Prakāśa
6. Nāmamālā of Dhananjaya
7. Anekārtha Kośa of Mankha
8. Several dictionaries of Jainacarya Hemachandra. such as Abhidhāna Cintāmaṇimālā (briefly called Abhidhāna Cintāmani), Nighaṇṭu-Śeṣa, Anekārtha- sangraha, etc.

Besides those mentioned above, there is a very long list of those which have come into light recently. Such dictionaries are also of many kinds-big and small, general and on a particular topic, such as Bauddha literature, dance, music, etc.

In recent times some valuable dictionaries have been written on modern lines following the European type of alphabetical arrangement. Prominent among them the two encyclopaedic dictionaries-the Śabda-Kalpadruma of Radhakant Deva and the Vācaspatyam of Taranatha Tarkavacaspati were written in the 19th century.

Some dictionaries have also been written for the use of students. They are either too bulky or too small to fulfil the need of students. For example, Apte's dictionary, the most popular one in this field , is a too bulkydictionary aiming at comprehensiveness . Therefore the need for having a small dictionary limited to classical ornate literature with only popular meanings still exists.

The present glossary has been prepared with this very aim in view. Here about 7,000 words of day to day usage of Ayurveda have been selected and their most popular meanings have been given in Sanskrit vis-a-vis English to fulfil the need of both the media.

The production and publication of the present Ayurvedic Sanskrit-English-Hindi Definitional Dictionary is a maiden attempt made by the CSTT. This is the first-of-its-kind glossary which would prove most useful for those medical practitioners having knowledge of both Sanskrit and English. Since the names of drugs/medicines, diseases and herbs are available mostly in Sanskrit in Ayurveda , the determination/fixation of Hindi equivalents is generally based on Sanskrit roots. It is, therefore, essential for a Ayurvedic physician to have a sufficient knowledge of roots of Sanskrit words. This glossary will thus prove most useful for the teachers/students who impart/acquire Ayurvedic education through the medium of English. It is also necessary for a English knowing physician of Indian Medicine to acquaint himself with the Sanskrit names of diseases, their symptoms diagnosis and Ayurvedic drugs/medicines, Sanskrit reigns supreme in Ayurvedic education and as such the promotion and propagation of Sanskrit was also accomplished through Ayurveda .

Sanskrit is the most useful tool while evolving Hindi equivalents since it has inexhaustible treasure of prefixes, suffixes and other grammatical rules for forming various derivations and equivalents. Thus, the present glossary will be the most useful not only for the Ayurvedic physicians but also for the general readers, Ayurvedic teachers, students, compounders and medical staff also.

Since this is a first-of-its-kind glossary ever produced by the Commission, I am fully confident that as far as the usefulness of the Definitional Dictionary is concerned, this will be widely and warmly received in the medical fraternity.

I take this opportunity to express my deep gratitude to all those eminent scholars, subject-experts and linguists who enthusiastically lent their time and expertise to produce this Definitional Dictionary.

New Delhi

Dr. B.S. Behera
Senior Scientific Officer (Medicine)
Commission for Scientific and Technical Terminology

संपादन एवं समन्वय

प्रमुख संपादक

प्रो. नन्द किशोर पाण्डेय
(अध्यक्ष)

संपादक

डा. बी. एस. बेहेरा
वरिष्ठ वैज्ञानिक अधिकारी (आयुर्विज्ञान)

प्रकाशन

डॉ प्रेमनारायण शुक्ल
सहायक निदेशक

श्री गब्बर सिंह
सहायक

आयुर्वेद परिभाषा कोश के निर्माण से संबंधित विशेषज्ञ

1. प्रो. गुरदीप सिंह - पूर्व संकायप्रमुख, गुजरात आयुर्वेद विश्वविद्यालय जामनगर, गुजरात
2. डॉ. वी. बी. प्रसाद - पूर्व निदेशक, राष्ट्रीय आयुर्वेद विद्यापीठ, दिल्ली
3. डॉ. धर्मपाल आर्य - पूर्व कुलपति, गुरुकुल कांगडी विश्वविद्यालय हरिद्वार
4. डॉ. प्रवीण चौधरी - सह प्राध्यापक, आयुर्वेद एवं यूनानी तिब्बिया कालेज, दिल्ली
5. डॉ. राजेश छोकर - सह प्राध्यापक, आयुर्वेद एवं यूनानी तिब्बिया कालेज, दिल्ली
6. डॉ. तनुजा नेसरी - अतिरिक्त निदेशक, चौ, ब्रहम प्रकाश आयुर्वेद चरक संस्थान, दिल्ली
7. डॉ. टी. दिवाकर राव - मुख्य चिकित्साधिकारी, केंद्रीय सरकार स्वास्थ्य योजना, दिल्ली
8. डॉ. रमाकान्त आचार्य - प्राध्यापक, गोपबन्धु आयुर्वेद कालेज, पुरी
9. डॉ. अरुण कुमार दास - प्राध्यापक, गोपबन्धु आयुर्वेद कालेज, पुरी
10. डॉ. विपिन कुमार खूंटिया - प्राध्यापक, गोपबन्धु आयुर्वेद कालेज, पुरी
11. डॉ. सुदर्शन बेहेरा -प्राचार्य, गोपबन्धु आयुर्वेद कालेज, पुरी
12. डॉ. पवन गोडतवार - सह प्राध्यापक, राष्ट्रीय आयुर्वेद संस्थान, जयपुर
13. डॉ. संतोष. एस. आर. नायार - चौ, ब्रहम प्रकाश आयुर्वेद चरक संस्थान, दिल्ली
14. डॉ. सुवास साहु - चौ, ब्रहम प्रकाश आयुर्वेद चरक संस्थान, दिल्ली
15. डॉ. पवन माली - मुख्य चिकित्साधिकारी, नई दिल्ली
16. डा. एल. के. द्विवेदी, राष्ट्रीय आयुर्वेद संस्थान, जयपुर
17. प्रो. बनवारी लाल गौड, राष्ट्रीय आयुर्वेद संस्थान, जयपुर
18. डा. भीमसेन बेहेरा, वरिष्ठ वैज्ञानिक अधिकारी (आयुर्विज्ञान) वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग
19. डा. आर. डी. शर्मा, बडौदा
20. डा. ई. सुरेन्द्रन, कोटाकल
21. डा. वी. एस शर्मा, नई दिल्ली
22. डा. प्रभाकर राव, नई दिल्ली
23. डा. जी. आर. आर चक्रवर्ती, चैन्नई
24. डा. एच. पी मिश्र, पुरी, ओडिशा
25. डा. गोपाल रथ, भूवनेश्वर ओडिशा
26. डा. ए. सी. कर, वारणसी
27. डा. इदुलता दास, भूवनेश्वर, ओडिशा
28. डा. एन. पी होता, भूवनेश्वर, ओडिशा
29. डा. बी. एल. मेहरा, पपरोला
30. डा. पी. एल. शंखुआ, ओडिशा
31. डा. संध्या पटेल, नई दिल्ली
32. डा. एन. सी. दास, पुरी, ओडिशा
33. डा. कमलेश शर्मा, जयपुर
34. डा. बिरेंद्र कोरी, जामनगर
35. प्रो. रामबाबु द्विवेदी, जामनगर
36. डा. प्रमोद जयसवाल, पुना
37. डा. महेश व्यास, जामनगर
38. डा. एम.एम. पाढी, उपननिदेशक, सी सी आर ए एस, जनकपुरी, नई दिल्ली
39. डा. अनुप ठक्कर, जामनगर
40. डा. उमेश पुरद, गदक, कर्नाटक
41. डा. श्रीप्रसाद बावडेकर, पूना

वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग द्वारा स्वीकृत शब्दावली-निर्माण के सिद्धांत

1. अंतर्राष्ट्रीय शब्दों को यथासंभव उनके प्रचलित अंग्रेजी रूपों में ही अपनाना चाहिए और हिंदी व अन्य भारतीय भाषाओं की प्रकृति के अनुसार ही उनका लिप्यंतरण करना चाहिए। अंतर्राष्ट्रीय शब्दावली के अंतर्गत निम्नलिखित उदाहरण दिए जा सकते हैं:–
   - क) तत्वों और यौगिकों के नाम, जैसे–हाइड्रोजन, कार्बन डाइऑक्साइड आदि;
   - ख) तौल और माप की इकाइयां और भौतिक परिमाण की इकाइयां, जैसे–डाइन, कैलॉरी, एम्पियर आदि;
   - ग) ऐसे शब्द जो व्यक्तियों के नाम पर बनाए गए हैं जैसे, मार्क्सवाद (कार्ल मार्क्स), ब्रेल (लूइस ब्रेल), बॉयकाट (कैप्टन बॉयकाट), गिलोटिन (डॉ. गिलोटिन), गेरीमैन्डर (मि. गेरी), एम्पियर (मि. एम्पियर), फारेनहाइट तापक्रम (मि. फारेनहाइट) आदि;
   - घ) वनस्पतिविज्ञान, प्राणिविज्ञांन, भूविज्ञान आदि की द्विपदी नामावली;
   - ङ) स्थिरांक जैसे π, g, आदि;
   - च) ऐसे अन्य शब्द जिनका आमतौर पर प्राय: सारी भाषाओं में व्यवहार हो रहा है, जैसे–रेडियो, पेट्रोल, रेडार, इलेक्ट्रॉन, प्रोटॉन, न्यूट्रॉन आदि।
   - छ) गणित और विज्ञान की अन्य शाखाओं के संख्यांक, प्रतीक, चिह्न और सूत्र, जैसे–साइन, कोसाइन, टैन्जेन्ट, लॉग आदि (गणितीय संक्रियाओं में प्रयुक्त अक्षर रोमन या ग्रीक वर्णमाला के होने चाहिए)।
2. प्रतीक रोमन लिपि में अंतर्राष्ट्रीय रूप में ही रखे जाएंगे, परंतु उनके संक्षिप्त रूप, (विशेषकर साधारण तौल व माप संबंधी) नागरी और मानक रूपों में लिखे जा सकते हैं। सेन्टीमीटर का प्रतीक cm. हिंदी में भी रोमन में ही प्रयुक्त होगा, परन्तु इसका नागरी संक्षिप्त रूप से. मी. हो सकता है। यह सिद्धांत बच्चों के लिए लिखी गई किताबों और लोकप्रिय पुस्तकों में अपनाया जाएगा, परंतु विज्ञान और प्रौद्योगिकी की मानक पुस्तकों में केवल अंतर्राष्ट्रीय प्रतीक अर्थात् cm. ही प्रयुक्त करना चाहिए।
3. ज्यामितीय आकृतियों में भारतीय लिपियों के अक्षर प्रयुक्त किए जा सकते हैं, जैसे, **क, ख, ग** या **अ, ब, स** । परंतु त्रिकोणमिति में केवल रोमन अथवा ग्रीक अक्षर ही प्रयुक्त करने चाहिए, जैसे–साइन **A**, कॉस **B** आदि।
4. सामान्यत: संकल्पनात्मक शब्दों का अनुवाद किया जाना चाहिए।
5. हिंदी पर्यायों का चुनाव करते समय सरलता, अर्थ की परिशुद्धता (सटीकता) और सुबोधता का विशेष ध्यान रखना चाहिए। रूढ़िवादी तथा सुधार-विरोधी प्रवृत्तियों से बचना चाहिए।
6. सभी भारतीय भाषाओं के शब्दों में यथासंभव अधिकाधिक एकरूपता लाने के उद्देश्य से ऐसे शब्द अपनाने चाहिए जो अधिक से अधिक क्षेत्रीय भाषाओं में प्रयुक्त होते हों, और संस्कृत धातुओं पर आधारित हों।
7. जो देशी शब्द सामान्य प्रयोग के पारिभाषिक शब्दों के स्थान पर हमारी भाषाओं में प्रचलित हो गए हैं, जैसे–telegraph/telegram के लिए तार, continent के लिए महाद्वीप, post के लिए डाक, आदि, उन्हें इसी रूप में व्यवहार में लाया जाना चाहिए।
8. अंग्रेजी, पुर्तगाली, फ्रांसीसी आदि भाषाओं के ऐसे विदेशी शब्द जो भारतीय भाषाओं में प्रचलित हो गए हैं, जैसे–टिकट, सिगनल, पेन्शन, पुलिस, ब्यूरो, रेस्तरां, डीलक्स, आदि इसी रूप में अपनाए जाने चाहिए।
9. **अंतर्राष्ट्रीय शब्दों का देवनागरी लिपि में लिप्यंतरण**–अंग्रेजी शब्दों का लिप्यंतरण इतना जटिल नहीं होना चाहिए कि उसके कारण वर्तमान देवनागरी वर्णों में नए चिह्न व प्रतीक शामिल करने की आवश्यकता पड़े। शब्दों का देवनागरी लिप्यंतरण अंग्रेजी के मानक उच्चारण के अधिकाधिक अनुरूप होना चाहिए और आवश्यक होने पर ही उसमें भारत के शिक्षित वर्ग में प्रचलित उच्चारण के अनुरूप परिवर्तन किया जा सकता है।
10. **लिंग**–हिंदी में अपनाए गए अंतर्राष्ट्रीय शब्दों को पुल्लिंग रूप में ही प्रयुक्त करना चाहिए। किंतु अति आवश्यक होने या हिंदी में प्रचलन के अनुसार उन्हें भिन्न लिंग-रूप में प्रयुक्त किया जा सकता है।
11. **संकर शब्द**–पारिभाषिक शब्दावली में संकर शब्द, जैसे guaranteed के लिए 'गारंटित', classical के लिए 'क्लासिकी', codifier के लिए 'कोडकार' आदि के रूप सामान्य और प्राकृतिक भाषाशास्त्रीय प्रक्रिया के अनुसार बनाए गए हैं और ऐसे शब्द रूपों को पारिभाषिक शब्दावली की आवश्यकताओं, यथा–सुबोधता, उपयोगिता और संक्षिप्तता का ध्यान रखते हुए व्यवहार में लाना चाहिए।
12. **पारिभाषिक शब्दों में संधि और समास**–कठिन संधियों का यथासंभव कम से कम प्रयोग करना चाहिए और संयुक्त शब्दों के लिए दो शब्दों के बीच हाइफन लगा देना चाहिए। इससे नई शब्द-रचनाओं को सरलता और शीघ्रता से समझने में सहायता मिलेगी। नवनिर्मित शब्दों में संस्कृत-आधारित 'आदिवृद्धि' से बचा जाना चाहिए। 'व्यावहारिक' 'लाक्षणिक' आदि प्रचलित संस्कृत तत्सम शब्दों में आदिवृद्धि का प्रयोग ही अपेक्षित है, परंतु नवनिर्मित शब्दों में इससे बचा जा सकता है।
13. **हलंत**–नए अपनाए हुए शब्दों में जहां आवश्यक हो वहां हल् चिह्न का प्रयोग कर उन्हें सही रूप में लिखना चाहिए।
14. **पंचम वर्ण का प्रयोग**–पंचम वर्ण के स्थान पर अनुस्वार का प्रयोग उचित है परंतु lens, patent आदि शब्दों का लिप्यंतरण लेंस,पेटेंट या पेटेण्ट न करके लेन्स, पेटेन्ट ही करना चाहिए।

PRINCIPLES FOR EVOLUTION OF TERMINOLOGY APPROVED BY THE STANDING COMMISSION FOR SCIENTIFIC AND TECHNICAL TERMINOLOGY

1. "International terms" should be adopted in their current English forms, as far as possible and transliterated in Hindi and other Indian languages according to their genius. The following should be taken as examples of international terms:–
   - a) Names of elements and compounds, e.g., Hydrogen, Carbon dioxide, etc.,
   - b) Unit of weights, measures and physical quantities, e.g., dyne, calorie, ampere etc.,
   - c) Terms based on proper names, e.g., Marxism (Karl Marx), Braille (Braille), boycott (Capt. Boycott), guillotine (Dr. Guillotine), gerrymander (Mr. Gerry), ampere (Mr. Ampere) Fahrenheit scale (Mr. Fahrenheit), etc.,
   - d) Binomial nomenclature in such sciences as-Botany, Zoology, Geology, etc.,
   - e) Constants, e.g., π, g etc.,
   - f) Words like Radio, Petrol, Radar, Electron, Proton, Neutron etc., which have gained practically world-wide usage,
   - g) Numerals, symbols, signs and formulae used in mathematics and in other sciences, e.g., sin, cos, tan, log, etc. (Letters used in mathematical operation should be in Roman or Greek alphabets).
2. The symbols will remain in international form written in Roman script, but abbreviations may be written in Nagari and standardised form, specially for common weights and measures, e.g., the symbol 'cm' for centimeter will be used as such in Hindi, but the abbreviation in Nagari may be से.मी. This will apply to books for children and other popular works only but in standard works of science and technology, the international symbols only, like cm., should be used.
3. Letters of Indian scripts may be used in geometrical figures, e.g., क, ख, ग or अ, ब, स but only letters of Roman and Greek alphabets should be used in trigonometrical relations, e.g., sin A, cos B, etc.
4. Conceptual terms should generally be translated.
5. In the selection of Hindi equivalents simplicity, precision of meaning and easy intelligibility should be borne in mind. Obscurantism and purism may be avoided.
6. The aim should be to achieve maximum possible identity in all Indian languages by selecting terms:—
   - (a) common to as many of the regional languages as possible, and
   - (b) based on Sanskrit roots.
7. Indigenous terms which have come into vogue in our languages for certain technical words of common use, as- तार for telegraph/telegram, महाद्वीप for continent, डाक for post etc., should be retained.
8. Such loan words from English, Portuguese, French etc., as have gained wide currency in Indian languages should be retained, e.g., ticket, signal, person, police, bureau, restaurant, deluxe, etc.
9. **Transliteration of International terms into Devanagari Script**—The transliteration of English terms should not be made so complex as to necessitate the introduction of new signs and symbols in the present Devanagari characters. The Devanagari rendering of English terms should aim at maximum approximation to the standard English pronunciation with such modifications as prevalent amongst the educated circle in India.
10. **Gender**—The international terms adopted in Hindi should be used in the masculine gender, unless there are compelling reasons to the contrary.
11. **Hybrid formation**—Hybrid forms in technical terminologies, e.g., गारंटित for 'guaranteed', क्लासिकी for 'classical', कोडकार for 'codifier', etc., are normal and natural linguistic phenomena and such forms may be adopted in practice keeping in view the requirements for technical terminology, viz., simplicity, utility and precision.
12. **Sandhi and Samasa in technical terms**—Complex forms of Sandhi may be avoided and in cases of compound words, hyphen may be placed in between the two terms, because this would enable the users to have an easier and quicker grasp of the word structure of the new terms. As regards आदिवृद्धि in Sanskrit-based words, it would be desirable to use आदिवृद्धि in prevalent Sanskrit tatsama words, e.g., व्यावहारिक, लाक्षणिक, etc., but may be avoided in newly coined words.
13. **Halanta**—Newly adopted terms should be correctly rendered with the use of 'hal' sign wherever necessary.
14. **Use of Pancham Varna**—The use of अनुस्वार may be preferred in place of पंचम वर्ण but in words like 'lens' 'patent' etc., the transliteration should be लेन्स, पेटेन्ट and not लेंस, पेटेंट or पेटेण्ट.

अंश aṃśa
चतुर्थो भाग:। (ड.-सु.सू. 44/17), भाग (अ.हृ.सू. 19/39), चतुर्थ भाग, चौथाई भाग, one fourth, a part

अंशु aṃśu
सूक्ष्मतन्तु। (च.शा. 1/96), अत्यन्त सूक्ष्म तंतु, minute fibre

अंशुक aṃśuka
तमालपत्रम्। (रा.नि.पिप्पल्यादि 173), हिं-तेजपत्र, तेजपत्ता, eng - Indian cinnamomum, *lat - Cinnamomum tamala*

अंशुमती aṃśumatī
शालपर्णी। (चक्र-च.चि. 29/80), लघुपंचमूल में एक, हिं-सरिवन, सालवन, lat - Desmodium gangeticum

अंशुमान aṃśumāna
सोम का एक भेद। (सु.चि. 29/5), सोमकन्द का एक प्रकार, a type of soma

अंस aṃsa
बाहुशिर:। (ड.-सु.नि. 1/82), मर्मविशेष (सु.शा. 6/6), स्कन्ध (च.शा. 7/6), बाहुशिर, स्कन्ध, वैकल्यकरमर्म, shoulder

अंसकूट aṃsakūṭa
अंसस्य शिखरम्। (अ.सं.शा. 7/6), स्कन्ध शिखर, apex of shoulder

अंसताप aṃsatāpa
रोगलक्षण। (अ.सं.शा. 11), स्कन्धप्रदेश में तापमान की वृद्धि, temperature at shoulder region

अंसदाह aṃsadāha
अंसप्रदेश में दाह। (च.सू. 20/14), चालीस पित्तविकारों में से एक, राजयक्ष्मा के पित्तजन्य लक्षणों में एक। (अ.हृ.नि. 5/17), burning sensation in shoulder region, one of a symptoms of tuberculosis

अंसदेश aṃsadeśa
अंससमीपोपलक्षित देश:। (ड.-सु.नि. 1/82), स्कन्ध समीप भाग, region adjacent to shoulder

अंसपिण्ड aṃsapiṇḍa
बाहुशिर: (सु.शा. 5/11), बाहुशिरोऽग्रप्रोह:। (ड.-सु.शा. 5/11), स्कन्ध शीर्ष भाग, बाहु शीर्ष का आगे का भाग, deltoid region, head of shoulder

अंसपिण्डिका aṃsapiṇḍikā
स्कन्ध का उन्नत या ऊपर उठा भाग (सु.चि. 15/18), deltoid region

अंसपीठ aṃsapīṭha
बाहुशिर:। (ड.-सु.सू. 35/12), बाहु का शीर्ष भाग, head of shoulder

4 Min. of HRD/2016

अंसफलक aṃsaphalaka
पृष्ठ के ऊपरी भाग में स्थित अस्थि, संख्या में दो (च.शा. 7/6), (सु.शा. 5/19), एक वैकल्यकर मर्म (सु.शा. 6/6), scapula

अंसबन्धन aṃsabandhana
श्लेष्माणम्। (ड.-सु.नि. 1/82), स्कन्ध सन्धि स्थित श्लेष्मा जो संधिबन्धन कर्म करता है, synovial fluid of shoulder joint

अंसबन्धन शोष aṃsabandhana śoṣa
श्लेष्माणं शोषयित्वा अंसशोषं करोति। (ड.- सु.नि. 1/82), वायु द्वारा कफ का शोषण कर अंस प्रदेश में शोष उत्पन्न करना, degenerative disease of shoulder

अंसरोग aṃsaroga
अंसगतविकार। (च.सि. 2/22), स्कन्ध रोग, diseases of shoulder

अंसशोष aṃsaśoṣa
अंसबन्धनं शोषयित्वा 'अंसशोषं रोगं करोति'। (ड.-सु.नि. 1/82), वायु द्वारा अंससन्धि स्थित श्लेष्मा का शोष कर उत्पन्न विकार, degenerative disease of shoulder joint

अंससन्धि aṃsasandhi
बाहुशिर:सन्धि:। (ड.-सु.नि. 3/31), अंस उलूखल एवं प्रगण्डास्थि शीर्ष के मध्य की सन्धि, स्कन्धसंधि, shoulder joint

अंसाभिताप aṃsābhitāpa
अंस में सर्वत्र ताप की अनुभूति, राजयक्ष्मा के एकादश लक्षणों में से एक। (च.चि. 8/30), generallized burning sensation in shoulder region

अंसावमर्द aṃsāvamarda
अंसपीडनम्। (च.नि. 6/6), प्रकुपित वायु द्वारा कन्धों में मर्दनवत् पीडा, beating pain in shoulduer

अ a वर्णमाला का प्रथम अक्षर, व्यंजनों में अंतर्निहित प्रथम स्वल्प स्वर, एक उपसर्ग जो प्राय: अभाव या विरुद्ध के अर्थ में प्रयुक्त होता है- उदा. असत्, अनिद्रा, the first letter of alphabet, the first short vowel inherent in consonants, a prefix having a negative or contrary sense

अकण्ठ्य akaṇṭhya
कण्ठाय न हितम्-यथा जम्बूफल। (अ.हृ.सू. 6/127), कण्ठ/गले के लिए अहितकर- जैसे जामुन, unwholesome for throat

अकफ akapha
गौरीतेज (अभ्रक), बल्यं स्निग्धं रुचिरं अकफं दीपनम्, कफहरणम्। (र.र.स. 2/3), कफ का हरण/शमन करने वाला, pacifying kapha

अकराल
akarāla
अदन्तुरः। (ड.-सु.सू. 9/8), तानि सुग्रहाणि सुलोहानि सुसमाहितमुखाग्राण्यकरालानि चेति शस्त्र सम्पत्। (सु.सू. 9/8), दांत रहित, श्रेष्ठ शस्त्र का एक लक्षण, teethtess, one of the features of ideal sungical instruments

अकर्मण्य
akarmaṇya
1.ईषच्चेष्टाक्षमः। (विज.-मा.नि. 22/40), किसी अंग की चेष्टा का नष्ट होना, loss of motor function 2. अकर्मण्यः क्रियायामशक्तो। (अ.हृ.नि. 15/39), शारीरिक क्रियाओं में असमर्थता (पक्षवध का लक्षण), loss of body movements

अकर्मशीलता
akarmaśīlatā
कर्मण्यनुत्साहः। (ड.-सु.शा. 1/18), काम करने में उत्साह न होना, lethargy, loss of interest in work

अकला
akalā
गुणविरुद्धो दोषः सूक्ष्मोभागः। (चक्र.-च.सू. 12/1), कलाः गुणाः, अकलाः दोषा, सूक्ष्मांशाः वा। (च.सू. 12/1), गुण विरुद्ध, दोष, सूक्ष्म अंश या भाग, opposite quality, small part of anything

अकष्टशब्द
akaṣṭaśabda
अकृच्छ्रोच्चार्यशब्दं, किंवा प्रसिद्धवाभिधेयशब्दं वा। (चक्र-च.वि. 8/3), बिना कठिनाई के बोले जाने वाला शब्द या सरलता से बोलने योग्य शब्द, words that are easy to pronounce

अकाण्ड
akāṇḍa
अकालः। (अ.सं.उ. 28), अयोग्यकाल, अनुपयुक्तकाल, untimely

अकामत छर्दि
akāmata chardi अकामतश्च छर्दयति गन्धाद् उद्विजते शुभात्। प्रसेकः सदनं चापि गर्भिण्या लिङ्गमुच्यते।। (सु.शा. 3/15), उत्तरकालीन गर्भिणी का लक्षण, बिना किसी कारण के वमन होना, vomiting without any specific reason

अकामा
akāmā
मैथुनानभिलाषिणीम्। (ड.-सु.चि. 24/114), मैथुन की इच्छा न रखने वाली स्त्री, lack of sexual desire

अकारण
akāraṇa
न विद्यते कारणं यस्य तद् अकारणम्। (ड.-सु.शा. 1/3), जिसका कोई कारण न हो, बिना कारण, जो सब भूतों का कारण होते हुये भी स्वयं में कारण रहित (अव्यक्त) है, idiopathic

अकारुण्य
akāruṇya
निर्दयत्वम्। (ड.-सु.शा. 1/18), निर्दयता, निष्ठुरता, राजस गुण, mercilessness

अकाल
akāla
अतीतकाल। (च.वि. 8/128), व्यतीत काल, untimely

अकालज
akālaja
अनार्तवम्। (चक्र.-च.सू. 27/317), अकालजात या अकाल में उत्पन्न, अनुपयुक्त, अनागत काल उत्पन्न, प्रकृति नियत काल से भिन्न काल में उत्पन्न, untimely

अकालप्रवाहण
akālapravāhaṇa
अप्राप्त आवी काल प्रवाहण। (सु.शा. 10/9), आवी के प्रारम्भ होने के पूर्व ही प्रवाहण करना, इस कारण से संतान मूक, बधिर अथवा कुब्ज उत्पन्न होती है, untimely bearing down

अकालमरण
akālamaraṇa
अकालमृत्युः। (अ.सं.सू. 9/126), नियतायु से पूर्व किसी आगन्तुज कारण से मृत्यु होना, untimely death

अकालमृत्यु
akālamṛtyu
अप्राप्तकालमरण। (च.वि. 8/43), आयु के पूर्ण होने के पूर्व ही मृत्यु, untimely death

अकालयुक्त
akālayukta
अकालयुक्तं अप्रस्तावागतम्। (चक्र.-च.सू. 7/28), प्रकरण से असम्बद्ध वचन, without context

अकालविरोहि
akālavirohi
अकालजम्। (ड.-सु.सू. 46/297), असमय, अनुपयुक्त या अनुचित काल में उगने वाला, untimely germinated

अकालशयन
akālaśayana
अकाले स्वप्नः। (अरु.-अ.हृ.सू. 7/61), नियत समय के अतिरिक्त सोना, ऐसा करने से ज्वर, स्तैमित्य, मोह आदि विकार होते हैं, untimely sleeping

अकुलक
akulaka
अनस्थिकम्। (चक्र.-च.चि. 1(1)/75), बीजरहित, अस्थिरहित, seedless

अकृत
akṛta
1. कृतघ्नः। (ड.-सु.चि. 25/37), अपने ऊपर हुए उपकार को भूलने वाला, ungrateful 2. संस्कार रहित भोजन, unprocessed

अकृतकत्व
akṛtakatva
अकृत्रिमत्वम् हेतुः। (च.वि. 8/31), अकृतक (किसी दूसरे के द्वारा निर्मित नहीं) पुरुष, सहज, स्वाभाविक, स्वयं उत्पन्न, natural, not made by anyone

अकृत मांसरस
akṛta māṃsarasa
बिना घी, मसाले से संस्कृत हुआ मांसरस। (सु.सू. 46/379), unprocessed meat soup, simple meat soup which is not fried with ghee or condiments

अकृतयूष
akṛtayūṣa
स्नेहलवणाद्यसंस्कृतः। (चक्र.-च.सि. 1/11), स्नेह एवं लवण से जिसका संस्कार नहीं किया गया हो ऐसा यूष, अकृतयूष कहलाता है, unprocessed soup

अकृतसंज्ञ akṛtasaṃjña
कृतेऽपि वेगे न वेगं कृतं बुध्यत इति। (चक्र.-च.चि. 19/7), मल त्याग के उपरांत भी ऐसा प्रतीत होना कि और मल प्रवृत्ति होगी, यह अकृतसंज्ञ कहलाता है, feeling of incomplete evacuation of bowels

अकृतसंज्ञता akṛtasaṃjñatā
कृतेऽपि मूत्रे अंकृतसंज्ञतां अकृताभासत्वमिव कुर्यात्। (अरु.-अ.हृ.सू. 11/13), कृतवर्चोविसर्गादिकार्येऽपि तत्तद्संज्ञायां अहितत्वम्। (अ.हृ.सू. 11/13), रोगलक्षण, मलमूत्रादि के विसर्जन के उपरांत भी वेग प्रवृत्ति की इच्छा का बने रहना, urge of passing urine inspite of having passed before

अकृतात्मन् akṛtātman
जन्मान्तरीयैः अशुभैः कर्मभिः इह विपच्यमानैः असंस्कृतः आत्मा यस्य सः। (च.चि. 30/189), पूर्व जन्म में किए पापों का फल इस जन्म में प्राप्त करने वाला, one recieving the result of morbidity inherited from parents or sins of past life

अकृत्य akṛtya
असाध्यः। (ड.-सु.सू. 23/1), असाध्य, untreatable, incurable

अक्त akta
अक्तां लवणतैलेन साश्मप्रस्तरसंकरैः। (च.चि. 30/48), वातज योनि रोग में लवण तैल से अभ्यंग की गई योनि का अश्म, प्रस्तर या संकरस्वेद कराना चाहिए, undergone massage of any type, impregnated

अक्रम akrama
अनाचारः। (ड.-सु.नि. 14/3), क्रमविरोधः। (गय.-सु.नि. 14/3), क्रमविरुद्ध प्रयोग, improperly, disorderly

अक्रुद्धभीरु akruddhabhīru
क्रोधेऽसति भीरुम्। (चक्र.-च.शा. 4/38(4)), क्रोध न आने तक डरने वाला, सार्पसत्वलक्षण, timid till angry, a symptom of sarpa state of mind

अक्रोधव्रत akrodhavrata
विना क्रोधं चर्यते यत् तदक्रोधव्रतम्। (चक्र.-च.चि. 3/15), क्रोधित न होने का व्रतसंकल्प, क्रोधरहित जीवनचर्या, decided not to get angry

अक्लिन्न aklinna
शुष्कम्। (ड.-सु.सू. 46/439), आर्द्रता रहित, सूखा, dry

अक्लिन्नवर्त्म aklinnavartma
यस्य धौतानि धौतानि संबध्यन्ते पुनः पुनः। वर्त्मान्यपरिपक्वानि विद्याद्क्लिन्नवर्त्म तत्।। (सु.उ. 4/22), आंखों की पलकों का बार-बार धोने पर भी शुष्क हो जाना, एक प्रकार का नेत्र वर्त्म रोग, ankyloblepharon, a type of conjunctivitis featuring dry eyes

अक्ष akṣa
1. मान, कर्ष। (च.क. 12/90), एक मान, तोला, a measurement 2. शकटवहनोपयोगी चक्राधारः काष्ठविशेष। (च.वि. 3/38), पहिये की धुरी, axle 3. कोष्ठकास्थिः। (ड.-सु.सू. 35/7), अक्षकास्थि, clavicle 4. बिभीतक (रा. 1/212), बहेड़ा, eng- beleric myrobalan, beddanut, terminalia belerica 5. इन्द्रियः। (हे.-अ.हृ.सू. 11/2), इन्द्रिय, senses 6. सौवर्चललवण। (ध. 2/30), a salt

अक्षक akṣaka अर्वाक् जत्रुसन्धेः कीलकौ। (चक्र.-च.शा. 7/6), अक्षकास्थि, clavicle

अक्षकभग्न akṣakabhagna
अंससन्धेरुपरि भग्नः। (ड.-सु.चि. 3/50), अक्षकास्थिभग्न, clavicle fracture

अक्षकसन्धि akṣakasandhi
अंससन्धेरुपरिष्टाद् भवति। (ड.-सु.चि. 3/36), कोष्ठकं तस्य सन्धिः, ग्रीवाग्रकसन्धिरुच्यते। (ड.-सु.नि. 11/10), अक्षकास्थि एवं अंसफलक के मध्य स्थित सन्धि, acromio clavicular joint

अक्षग्लानि akṣaglāni
इन्द्रियदौर्बल्यम्। (हे.-अ.हृ.सू. 11/18), इन्द्रियों द्वारा विषय ग्रहण में अक्षमता, neuroasthenia

अक्षणित्व akṣaṇitva
पृच्छार्थमनुयुक्तस्य 'संप्रति वक्तुं क्षणो नास्ति' इति भाषणम्। (चक्र.-च.सू. 30/82), प्रश्न पूछने पर 'अभी उत्तर देने के लिये समय नहीं है' ऐसा कहना, यह मूर्ख वैद्य के अनेक बहानों में से एक है, when asked to reply, says "no time", it is one of excuses of a quack

अक्षत akṣata
1. यवाः, अखण्डितास्तण्डुला इत्यन्ये, धान्यमेवाखण्डितमक्षतशब्दवाच्यमित्यपरे। (अरु.-अ.हृ.शा. 6/30), यव, अखण्डित चावल, अखण्ड धान्य, unbroken grains, rice, barley 2. क्षतरहितम्। (सु.चि. 3/47), अभिघातरहित, unhurt

अक्षतण्डुला akṣataṇḍulā
नागबला। (रा.नि. शताह्वादि. 96), नागबला, हिं. गंगेरन, गुलसकरी, Sida spinosa

अक्षतपात्र akṣatapātra
तण्डुलभृतशरावादिकम्। (ड.-सु.सू. 29/29), चावलों से पूर्ण शरावादि, a plate full of rice

अक्षतर्पण akṣatarpaṇa
इन्द्रियतर्पणम्, तर्पककफ कर्म (अ.हृ.सू. 12/17), इन्द्रियों की तृप्ति, तर्पक कफ शिरःस्थ होकर करता है, nourishing senses

अक्षतशिरस akṣataśirasa
ग्रहमातृविशेषः। (अ.सं.उ. 4), एक प्रकार का बालग्रह, a type of balagraha

अक्षतैल akṣataila
बिभीतक मज्जा तैल, आक्षं स्वादु हिमं केश्यं गुरु पित्तानिलापहम्। (ध.नि.सुवर्णादि 126), बिभीतक तैल मधुर, शीत, केश्य, गुरु, पित्त एवं वातहर है, beddanut oil

अक्षत्वक् akṣatvak
बिभीतकत्वक्। (अ.सं.सू. 8/112), bark of Terminalia belerica

अक्षनाशन akṣanāśana
सर्वेन्द्रियविघाती। (हे.-अ.हृ.सू. 1/33), इन्द्रियनाशन, destructor of sense organs

अक्षपीड akṣapiḍa
यवतिक्ता। (ड.-सु.चि. 9/48), यव क्षेत्रेषु जायते तिक्तसप्ताष्टपत्रा 'यवेन्तिका' इति प्रसिद्धः। (ड.-सु.सू. 42/125), शंखिनी। (ध.नि. गुडूच्यादि 248), यवतिक्ता, यव के खेत में पाई जाने वाली आठ पत्रयुक्त तिक्तरस वनस्पति

अक्षप्रसादन akṣaprasādana
इन्द्रियाणां प्रसन्नत्वकृत्। (अरु.-अ.हृ.सू. 10/2), इन्द्रियवैमल्यकरः। (हे.-अ.हृ.सू. 10/2), इन्द्रियों के मल को दूर कर स्वच्छ करने वाला, sensotropic, enhancing functions of sense organs

अक्षबीज akṣabija
बिभीतकमज्जा। (ड.-सु.उ. 58/45), बहेडे की गिरी, pulp of Terminalia belerica

अक्षमा akṣamā
दन्तहर्षे प्रवाताम्लशीतभक्षाक्षमां द्विजाः।। (अ.हृ.उ. 21/12), दन्तहर्ष व्याधि में वायु, स्पर्श, अम्ल एवं शीत पदार्थों के खाने में अक्षमता, intolerance to air, ingestion of sour & cold substances

अक्षय akṣaya
क्षेत्रज्ञ (सु.शा. 3/4), जिसका क्षय न होता हो, आत्मा, soul

अक्षयुग akṣayuga
बिभीतको रुद्राक्षश्च। (र.र.स. 17/52-53), बहेडा एवं रुद्राक्ष को सम्मिलित रूप से अक्षयुग कहते हैं, Terminalia bererica and Elacocarpus ganitrus

अक्षर akṣara
1. न क्षरतीत्यक्षरम्। (चक्र.-च.शा. 4/8), जिसका क्षरण न हो, अविनाशी, आत्मा, that does not decay, soul 2. अकारादि वर्ण, alphabets

अक्षशल्य akṣaśalya
अक्षाणि इन्द्रियाणि। (ड.-सु.सू. 27/5), इन्द्रिय एवं नेत्रगत विजातीय पदार्थ, foreign body in eye

अक्षसम akṣasama कर्षप्रमाणम्। (ड.-सु.चि. 4/27), कर्ष या तोला, a measurement of 12 grams

अक्षसस्य akṣasasya
कपित्थः। (ध.नि. 2/99), कैथ, eng. wood apple, elephant apple, lat- Feronia elephantum

अक्षि akṣi
चक्षुरिन्द्रियस्याधिष्ठानम्। (च.सू. 8/10), चक्षु इन्द्रिय अधिष्ठान, नेत्र, eye

अक्षिकनीनिका akṣikanīnikā
नासायाः सममक्षिसन्धिरभिधीयते। (चक्र.-च.शा. 7/11), नासा के समीप स्थित अक्षिसंधि, inner canthus of eye, nasal canthus of eye

अक्षिकूट akṣikūṭa
अक्षिगोलकम्। (चक्र.-च.शा. 7/11), नेत्रगोलक, नेत्रकोटर, orbital cavity

अक्षिकोशालेपन akṣikośālepana
अक्षिकोशस्योपरि लेपः। (अ.सं.सू. 32/3) अक्षि (नेत्र) पलकों के ऊपर औषध लेप का प्रयोग, eye annointment

अक्षिकोष akṣikoṣa
नेत्रकोष। (सु.शा. 5/20), नेत्रकोश, fornix of eye, conjunctival cul de sac

अक्षिगौरव akṣigaurava
चक्षुषो गुरुत्वम्। (अ.हृ.सू. 4/12), नेत्रों में भारीपन होना, निद्रावेगरोधज लक्षण, heaviness in the eyes

अक्षितर्पण akṣitarpaṇa
अक्ष्णो तृप्तिकरं बलकरं च। (च.सू. 13/25), नेत्र बलवर्धक औषध पूरण, eye nourishment, eye filling

अक्षिनिमेष akṣinimeṣa
लघ्वक्षरोच्चारणमात्रेऽक्षिनिमेषः। (सु.सू. 6/5), लघु अक्षर के उच्चारण में लगा समय, कालविशेष, a unit of time, equal to time taken in eye blinking or pronunciation of an alphabet

अक्षिपाक akṣipāka
नेत्र रोग, चालीस पित्तविकारों में से एक। (च.सू. 20/14), Ophthalmia

अक्षिपाकात्यय akṣipākātyaya संच्छाद्यते श्वेतनिभेन सर्वं दोषेण यस्यासितमण्डलं तु, तमक्षिपाकात्ययमक्षिकोप समुत्थितं तीव्ररुजं वदन्ति। (सु.उ. 5/9), यह श्लेष्मज असाध्य नेत्र रोग है, इसमें नेत्र का कृष्णमण्डल श्वेतवर्ण आच्छादित होता है एवं नेत्र में तीव्रवेदना होती है, pan ophthalmitis

अक्षिपीडक akṣipiḍaka
श्वेतपीतशिम्बी भेदः। (चक्र.-च.चि. 23/215), पीडयित्वा यद् रसो अक्ष्णि दीयते सोऽक्षपीडोऽक्षिपीडकः। (गंगा.-च.चि 23/215), शङ्खिनी। (चक्र.-च.क. 11/3), जिसका रस निकालकर नेत्र में डालते हैं, शंखिनी,

अक्षिपुट akṣipuṭa
अक्षिपुट: अक्षिवर्त्म:। (ड.-सु.सू. 5/13), अक्षिवर्त्म, पलक को अक्षिपुट कहते हैं, eye lid

अक्षिभेद akṣibheda
अक्ष्णो भेद:, अशीतिवातविकारष्वेक:। (च.सू. 20/11), आंखों में चीरने जैसी वेदना होना, one of the 80 vataja disorders characterized by excruciating pain in eyes

अक्षिभेषज akṣibheṣaja
क्रमुक: पट्टिकारोध्रो वल्करोध्रो बृहद्दल:। जीर्णबुध्नो बृहद्वल्को जीर्णपत्रोऽक्षिभेषजौ:।। (रा.नि. 6/210), क्रमुक (लोध्र विशेष) के 15 नामों में से एक, Symplocos racemosa

अक्षिमध्य akṣimadhya
चिबुकौष्ठकर्णाक्षिमध्यनासिकाललाटं चतुरंगुलम्।। दृष्टयंतरम्, चतुरंगुल प्रमाणत:। (च.वि. 8/117), दोनों नेत्रों की पुतलियों के मध्य का अंतर, intra pupillary distance

अक्षिराग akṣirāga
तत: शोणितजा रोगा: प्रजायन्ते पृथग्विधा:। मुखपाको अक्षिरागश्च पूतिघ्राणास्य गन्धिता।। (च.सू. 24/11), नेत्र रक्तता, रक्तधातु दुष्टि का एक लक्षण, redness of eye

अक्षिराजि akṣirāji
चक्षुषि रेखाकारा: शिरा:। (हे.-अ.हृ.सू. 20/4), नेत्र में रक्तवर्ण की रेखाओं (शिराओं) का होना, prominent occular vessels

अक्षिरोग akṣiroga
नेत्ररोग। (च.चि. 26/246), eye disease

अक्षिरोधन akṣirodhana अक्षिहृदययो: रोधनं स्तम्भ:। (अरु.-अ.हृ.सू. 7/23), नेत्र क्रियाओं का रुकना (आमाशयगत विषान्न का लक्षण), stopping of occular movements

अक्षिलघुता akṣilaghutā
नेत्र लाघव। (अ.हृ.सू. 20/25), नेत्रों में हल्कापन, lightness in eye

अक्षिवर्त्म akṣivartma
नेत्रस्य बाह्याच्छादनम्। (च.शा. 7/11), नेत्र बाहरी आवरण, पलक, eye lids

अक्षिविभ्रम absivibhrama
नेत्रविभ्रम। (च.सि. 6/72), नेत्र की अनियमित गति, वमन या विरेचन से उत्पन्न वेग का अवरोध करने पर होने वाली हृद्ग्रह अवस्था का लक्षण, quivering of eyes, a symptom of suppression of urge of emesis/purgation

अक्षिवैराग्य akṣivairāgya
रूपग्रहणेऽलसत्वम्। (गयी-सु.क. 1/30), विगतरागे अक्षिणी। (संग्रहारुणौ- सु.क. 1/30), नेत्रों द्वारा दर्शन में आलस्य या कमी होना, नेत्र रक्तिमा का विलीन

4—4 Min. of HRD/2016

होना, विषयुक्त अन्नसेवन से उत्पन्न, diminished vision, pallor of eyes, a symptom of poisoning

अक्षिव्युदास akṣivyudāsa
अशीति वातविकारष्वेक:। (च.सू. 20/11), अस्सी वायु विकारों में से एक, नेत्र का ऊपर या बाहर आना, squint, deviated eyes

अक्षिशल्य akṣiśalya
नेत्रगत शल्य। (अ.सं.सू. 37/24), नेत्र में प्रविष्ट विजातीय वस्तु, foreign body in the eye

अक्षिशूल akṣiśūla
नेत्रों में वेदना, अस्सी वातविकारों में से एक। (च.सू. 20/11), occular pain

अक्षिसङ्कोच akṣisaṅkoca
नेत्र का संकोच या सिकुड़ना, रोग का लक्षण (अ.सं.सू. 29/6), contraction of eyes

अक्षिसेचन akṣisecana
द्रव औषधि द्वारा नेत्र का सिञ्चन। (अ.हृ.सू. 23/5), irrigation of eye

अक्षिस्तब्धता akṣistabdhatā
रोगलक्षण, नेत्र में जड़ता/स्तम्भता (अ.हृ.सू. 20/24), occular spasm

अक्षिस्पन्दन akṣispandana
नेत्रस्पन्द, रोग लक्षण। (अ.सं.सू. 29/5), नेत्र गोलक का अनियमित चालन, nystagmus

अक्षिहुण्डन akṣihuṇḍana
अक्षिव्युदास:। (विज.-मा.नि. 22/8), आंखों का विकृत या वक्र होना, functional distortion of eyes

अक्षी akṣī
रक्तस्फटिका। (र.र.स. 10/11), लाल फिटकारी, alum

अक्षीर akṣīra
महानिम्ब। (ध.नि. 1/31), बकायन, मीठा नीम, eng - Persian lilac, the beed tree, lat- Melia azadirachta

अक्षीरा akṣīrā
अक्षीरा जननी येषामल्पक्षीराऽपि वा भवेत्। (का.सं.सू. लेहाध्याय 10), स्तन्य की अल्पता वाली जननी (स्त्री), a mother with deficient lactation

अक्षीव akṣīva
1. क्षीव:, क्षीवो नीप:। (चक्र.-च.चि. 3/267), कदम्ब 2. शोभाञ्जन। (च.सू. 4/11), सहिजन 3. सामुद्रलवण। (भा.पू. हरीतक्यादि 244) 4. महानिम्ब। (सु.क. 8/120)

अक्षुद्रकर्मिणी akṣudrakarmiṇī
क्षुद्र कर्म न करने वाली। (च.शा. 8/52), one who does not do bad deed

अक्षोट aksoṭa
औत्तरापथिका:। (चक्र.-च.सू. 27/157), अखरोट, walnut, lat- Juglans regia

अक्षोड aksoḍa
मदनफलाकारफलो मध्ये किंचित् उन्नतरेखान्वित: पर्वतपीलु: 'अखरोट' इति लोके। (ड.-सु.सू. 46/187), मदनफलाकार, मध्य में कुछ उभरी रेखाओं युक्त, अखरोट लोकनाम, walnut, lat- Juglans regia

अक्षोडतैल aksoḍa taila
स्नेह, अखरोट तैल, गुण- शीत, गुरु, केश्य, कफकृत् वातपित्तहन। (ध.नि. 6/141), walnut oil

अक्ष्यञ्जन akṣyañjana
नेत्रों में रोगनिवारणार्थ औषध अंजन। (च.सू. 5/14), collyrium

अक्ष्युपरोध akṣyuparodha
दृष्टि प्रतिबन्ध, रोगलक्षण (च.चि. 23/69), visual obstruction

अगण्य agaṇya
न गणनया:। (चक्र.-च.शा. 4/24), जिसे गिना न जाये, गर्भिणी अष्टम मास, uncountable

अगद agada
विषहर:। (चक्र.-च.चि. 9/71), विषप्रतीकार:। (ड.-सु.सू. 1/17), औषधम्। (च.चि. 3/309), विषहर औषध, antidote

अगदक्रम agadakrama
विषहर औषधियों का उचित क्रम से प्रयोग। (सु.क. 5/13), regeme

अगदङ्कर agadaṅkara
रोग का नाश कर स्वास्थ्य प्रदान करने वाला। (सु.शा. 10/39), curing disease and promoting health

अगदतन्त्र agadatantra
अगदो विषप्रतीकार:, तदर्थ तन्त्रं अगदतन्त्रम्। (ड.-सु.सू. 1/7), विषप्रतीकार या विषहरण को अगद कहते हैं उस हेतु जो तन्त्र है उसे अगदतन्त्र कहते हैं, toxicology, one among eight branches of Ayurveda

अगदप्रलिप्त agadapralipta
विषहर भेषज लेपयुक्त। (अ.सं.सू. 8/9), pasted with antidote

अगदवेद agadaveda
अगदार्थो आरोग्यार्थो यो वेद: सोऽगदवेद:। (चक्र.-च.चि. 12/4), गद अर्थात् रोग के निवारण एवं आरोग्यप्राप्ति हेतु ज्ञान युक्त शास्त्र अगदवेद (आयुर्वेद) है, Ayurveda

अगम्या agamyā
स्वसृदुहितृप्रभृतय:। (ड.-सु.चि. 24/116), मैथुन के अयोग्य, unfit to intercourse

अगर्भा agarbhā
गर्भरहिता। (च.नि. 3/14), जिसे गर्भ न होता हो, one who is not pregnant

अगस्ति agasti
अगस्त्य। (रा.नि. 10/13), हिं - अगथिया, lat- Sesbania grandiflora

अगस्त्य agastya
1. एक महर्षि। (च.चि. 1(4)/3), मित्र एवं वरुण से उत्पन्न उर्वशी के पुत्र जिन्होंने समुद्र पान किया, विन्ध्य पर्वत को झुकाया तथा दक्षिण भारत में वैद्यक विधा का प्रारम्भ किया, इन्द्र के आदेश से रसायन प्रयोग किया, रोग नाशक उपायों के ऊपर विचार करने के लिये हिमालय परिसर में एकत्रित महर्षियों में एक। (च.सू. 1/9), a sage, son of Urvashi from Mitra and Varun, mentioned by charaka 2. एक तारका, नक्षत्र, इस नक्षत्र के उदय से जल निर्विष एवं स्वच्छ हो जाता है, a star canopus. 3. एक वनस्पति (भा.प्र.पुष्पवर्ग 61), Sesbania grandiflora.

अगस्त्य रसायन agastya rasāyana
एक रसायन कल्प। (अ.सं.चि. 50), an immune booster

अगस्त्य हरीतकी agastya harītakī
कासहर अवलेह कल्पना। (च.चि. 18/57-62), a medicinal preparation for cough

अगस्त्यावलेह agastyāvaleha
कास राजयक्ष्मा नाशक औषध योग। (सु.उ. 52/42-46), a preparation for cough and tuberculosis

अगुण aguṇa
अविद्यमानसत्वादिगुणम्। (ड.-सु.शा. 1/9), गुण रहित, निर्गुण, पुरुष गुणरहित है, no quality

अगुरु aguru
सुगन्धिद्रव्य। (भा.प्र.पू. कर्पूरादिवर्ग), हि.- अगर, eng- eagle wood, lat- Aquilaria agallocha

अगुरुज aguruja
अगुरुजन्यधूपादि। (च.चि. 3/269), अगुरु निर्मित धूप आदि, fumigation prepared from eagle wood

अगुरुतैल agurutaila
अगुरुसारतैल, दुष्टव्रणशोधन। (सु.सू. 45/123), oil of eagle wood

अगुरुसार agurusāra
अगुरुनिर्यास। (रा.नि. 12/39), अगरु/अगर निर्यास, secretion of eagle wood

अगुरुसार तैल agurusāra taila
अगुरुसारतैल। (सु.सू. 45/123), अगुरु निर्यास सिद्ध तैल। (अ.सं.सू. 6/106), अगर के निर्यास से निर्मित तैल, oil prepared from Aquillaria agallocha

अगुर्वाद्यतैल agurvādyataila शीतज्वरनाशक तैलयोग। (च.चि. 3/267), an oil preparation to relieve cold in fever

अगूढगन्ध agūḍhagandha
हिङ्गु:। (ध.नि. 2/36), हींग, lat- Ferula narthex

अगोचरभृत agocarabhṛta
आनूपं धन्वदेशे पुष्टम्। (चक्र.-च.सू. 27/311), गोचर देश को कहते हैं, एक देश का जन्मा, दूसरे देश में पालन पोषण हुआ जैसे आनूपप्राणी का जांगल देश में पोषण, इस प्राणि का मांस निषिद्ध है, immigrant

अग्नि agni
1. जठराग्नि। (च.चि. 15/3), digestive juice 2. भूताग्न्य: पञ्च, धात्वाग्न्य: सप्त, इति द्वादशाग्न्य:। (चक्र.-च.चि. 15/3), दोषधातुमलसन्निपात जनितोऽन्तरूष्मा:। (अ.सं.शा. 6/56), दोष, धातु एवं मल के समन्वय से उत्पन्न आन्तरिक ऊष्मा, पंचभूताग्नि, सप्त धात्वाग्नि, यह बारह अग्नियां हैं, जठराग्नि सह कुल 13 अग्नियाँ होती हैं, digestive and metabolic enzymes. 3. प्राण विशेष। (सु.शा. 4/3), सप्त प्राणों में से एक, one among seven vital factors 4. देवता। (च.चि. 3/82), God 5. वाणी का देवता। (सु.शा. 1/7), God of speech 6. सत्वरजोबहुलोऽग्नि:। (सु.शा. 1/20), सत्व एवं रज गुण युक्त एक महाभूत, तेज महाभूत, a mahabhuta 7. लौकिक अग्नि। (च.सू. 2/40), आग fire 8. अनुशस्त्र। (सु.सू. 8/15), एक सहायक शस्त्र, an accessary surgical instrument 9. सुवर्णम्। (रा.नि. 13/1), स्वर्ण या सोना, gold 10. चित्रक। (भा.पू. हरीतक्यादि), चीता, eng- Ceylon leadwort, white lead wort, lat- Plumbago zeylanica 11. भल्लातक:। (र.र.स. 13/66), भिलावा, marking nut, lat- Semecarpus anacardium

अग्निक agnika
1. चित्रक। (ड.-सु.उ. 23/10), चीता, eng. Ceylon leadwort, white leadwort, lat- Plumbago zeylanica 2. अजमोदा। (ड.-सु.उ. 9/19), अजमोद eng. Celery fruit, Apiumfructus, lat- Apium graveolens 3. भल्लातक (भा.प्र.पू. हरीतक्यादि)

अग्निकबभ्रु agnikababhru
मण्डलीसर्पभेद:। (सु.क. 4/34-2), मण्डलीसर्प में एक, a type of snake predominating in pitta

अग्निकर्णिका agnikarṇikā
अग्निमन्थ:। (र. 11/54), अग्निमंथ, lat- Premna spinosa

अग्निकर्म agnikarma अग्निना कृत्वा यत् कर्म, अग्ने: सम्बन्धि वा यत्र कर्म, तदग्निकर्म:।। (सु.सू. 12/2), अग्नि के द्वारा किया जाने वाला अथवा अग्नि सम्बन्धी जो कर्म है, उसे अग्निकर्म कहते हैं, thermal cauterization

अग्निकीट agnikīṭa
प्राणनाशक कीटविशेष। (सु.क. 8/17), a poisonous insect

अग्निकुमार रस agnikumāra rasa
जैपालगन्धाश्मरसत्र्याणां फलत्रयस्यापि कटुत्रयस्य:। (र.र.स. 18/75-77), जयपाल, शुद्धगन्धक, शुद्धपारद, त्रिफला, त्रिकटु आदि से निर्मित अग्निवर्धक औषध योग, a carminative mercurial preparation

अग्निक्वथन agnikvathana
अग्नि प्रयोग से उबाला हुआ। (सु.सू. 45/12), जलदोष निवारण विधि, boiled on fire

अग्निगन्धक agnigandhaka
चम्पक:। (रा.नि. 10/239), चम्पा पुष्प, Michelia champaca

अग्निगर्भ agnigarbha
अग्निजार:। (ध.नि. 6/21), अम्बर, व्हेल मत्स्य की अन्त्र का शुष्क भाग, amber

अग्निगृह agnigṛha
अग्निमद्गृहम्। (चक्र.-च.सू. 20/16), अग्नि तप्त गृह, fire warm house

अग्निजिह्वा agnijihvā
कलिहारी। (अ.सं.शा. 1/61), लांगली, eng- glory lily, lat- Gloriosa superba

अग्निज्वाला agnijvālā
धातकी:। (रा.नि. पिप्पल्यादि 213), हिं- धाय, lat- Woodfordia floribunda

अग्नितुण्डरस agnituṇḍarasa
रसगन्धाजमोदानां कृमिघ्नब्रह्मबीजयो, एकद्वित्रिचतु:पञ्चभागान् सविषतिन्दुकान्:। (र.र.स. 20/215-217), शुद्धपारद, शुद्धगन्धक, अजमोद, विडंग, ढाकबीज, कुपीलु एक, दो, तीन, चार, पांच, छ: भाग लेकर निर्मित रसयोग, यह कृमिनाशक है, a wormicidal mercurial preparation

अग्निदग्ध agnidagdha अग्निद्वारा दग्ध होना, यह प्रमादजन्य दग्ध प्लुष्ट, दुर्दग्ध, सम्यग्दग्ध, अतिदग्ध भेद से चार प्रकार का होता है। (सु.सू. 12/16), अग्निदग्ध व्रण अबन्ध्य होता है। (सु.सू. 18/32), burns and scalds

अग्निदमनी agnidamanī
दमनक:। (रा.नि. 4/3), दवना, दौना, lat- Artemisia vulgaris, वनस्पति (रा.नि. शताह्वादि 59), अग्निदवणा, दुरालभा भेद

अग्निदाह agnidāha
अग्निकर्म। (अ.सं.उ. 33), cauterization

अग्निदीपन agnidīpana
औषधकर्म, जठराग्नि वृद्धि। (च.सू. 27/251), जठराग्नि को दीप्त करना, carminative

अग्निदीप्ता
agnidīptā
तेजोवती। (सु.चि. 33/27), महाज्योतिष्मती (भा.प्र.), हि.-मालकांगनी, eng- staff tree

अग्निदीप्ति
agnidīpti
जठराग्निदीपन। (सु.चि. 33/27), carminative

अग्निदोष
agnidoṣa
अग्निविकृतिः। (अ.सं.शा. 6), अग्नि का दूषित होना, disturbed gastric functions

अग्निधमन
agnidhamana
निम्बः। (रा.नि. 9/44), नीम, lat- Azadirachta indica

अग्निनक्र
agninakra
जलचर प्राणि, अग्न्याख्यो नक्रः। (र.र.स. 3/142), अग्नि नामक मगर, जलचर, alligator named as agni

अग्निनामा
agnināmā
वायव्य कीट में से एक। (सु.क. 8/5), वायु कोपक एक कीट, a vata vitiating insect

अग्निनाश
agnināśa
पाण्डुत्व स्रोतसां रोधः क्लैब्यं सादः कृशाङ्गता। नाशोऽग्नेरयथाकालं वलयः पलितानि च।। (च.सू. 28/10), रसप्रदोषज रोग, अग्नि (जठराग्नि) का नाश होना, dyspepsia

अग्निनिर्यास
agniniryāsa
अग्निजारः। (ध.नि. 6/21), अंबर, amber

अग्निपरीक्षा
agniparīkṣā सविष अन्न की पहचान हेतु अन्न को अग्नि में डालकर की जाने वाली परीक्षा। (अ.हृ.सू. 7/13), test for poisonous food by dipping it in fire, a sort of flame photometry

अग्निपर्णी
agniparṇī
अग्निमन्थः। (र. 14/71), अरणी, lat- Clerodendrum phlomidis

अग्निप्रतपन
agnipratapana
अग्नि द्वारा स्वेदन करना, प्लुष्ट दग्ध में प्रयोज्य। (सु.सू. 12/20), sudation by fire

अग्निप्रताप
agnipratāpa
आमपाचनार्थम्। (ड.-सु.उ. 56/12), अग्नि द्वारा तापन करना, वातकफरोगों में प्रयुक्त, sudation by heat fire

अग्निप्रभा
agniprabhā
शतपदी भेद। (सु.क. 8/30), असाध्यदंश युक्त शतपदी, an insect, a venomous centipede with incurable bite

अग्निफला
agniphalā
तेजोवती। (रा.नि. 3/392), ज्योतिष्मती, मालकांगनी, Celastrus paniculatus

अग्निबन्ध
agnibandha
केवलो योगयुक्तो वा ध्मातः स्याद्गुटिकाकृतिः, अक्षीणश्चाग्निबद्धोऽसौ खेचरत्वादिकृत् स हि।। (र.र.स. 11/88), पारद बन्ध का एक प्रकार, केवल पारद अथवा द्रव्यान्तर संयुक्त पारद को अग्नि पर रख कर तापने से यदि वह न उडे और न मात्रा में ही कम हो, किन्तु उसकी गोली सी बंध जाये, तो उसे अग्निबद्ध पारद कहते हैं, a method to bind mercury

अग्निबल
agnibala
अग्निजरणशक्ति। (च.सू. 13/70), जठराग्नि की पचनशक्ति, digestive power

अग्निभासा
agnibhāsā
ज्योतिष्मती। (ध.नि. 1/267), मालकांगनी, lat- Celastrus paniculatus

अग्निभेद
agnibheda
अग्निवैषम्यम्। (का. बालग्रहचि.), रेवती ग्रह के कोप से होने वाली अग्नि की विषमता, disturbed digestive enzymatic functions

अग्निभ्रंश
agnibhraṃśa
अग्न्यादि भ्रंशो विनाशो। (अरु.-अ.हृ.नि. 11/58), अग्नि का नाश होना, (आभ्यन्तर गुल्म का लक्षण), dyspepsia

अग्निमथन
agnimathana
अग्निमन्थ। (ध.नि. 1/110), अरणी

अग्निमन्थ
agnimantha
तेजोवृक्षः पूर्वदेशे आगथ प्रसिद्धः। (ड.-सु.सू. 38/10), अङ्गेशूर लोकनाम। (ड.-सु.सू. 38/12), पर्यायः गणिकारिका, जय, जयन्ती, जया, तर्कारी, नादेयी, वैजन्तिका, श्रीपर्णी। (भा.प्र. गुडूच्यादि 23), हि.-अरणी, lat. Clerodendrum phlomidis/Premna integrifolia, fam- verbenaceae

अग्निमन्थन
agnimanthana
अग्निमन्थ। (ध.नि. 1/111), हिं-अरणी

अग्निमान्द्य
agnimāndya
जठराग्नि का मन्द होना, वातदोष से विषम, पित्त से तीक्ष्ण एवं कफ से मन्दाग्नि होती है। (अ.हृ.शा. 3/74), decreased power of digestive enzymes

अग्निमार्दव
agnimārdava
वह्निमांद्यम्। (विज.-मा.नि. 5/22), अग्निमांद्य, dyspepsia, loss of digestive enzymes

अग्निमुख
agnimukha
भल्लातक। (ध.नि. 3/143), हि.-भिलावा

अग्निमुखी
agnimukhī
1. लाङ्गली। (चक्र.-च.सू. 4/9(4)), हिं.-कलिहारी, 2. भल्लातक। (भा.प्र.पू. हरीतक्यादि 226), हिं.-भिलावा

अग्नियुग्म agniyugma
चित्रक एवं भल्लातक। (र.त. 15/69)

अग्निरोहिणी agnirohiṇī
क्षुद्ररोग, कक्षाभागेषु ये स्फोटा इत्यादिना अग्निरोहिणी। (गय.-सु.नि. 13/20), कक्षा में मांसदारण करने वाले स्फोट जिनमें अन्तर्दाह एवं ज्वर होता है यह जलती हुई अग्नि के सदृश होते हैं यह सन्निपातज असाध्य व्याधि है जो सात, दश या 15 दिन में रोगी को मार डालती है, bubonic plague

अग्निवक्त्रा agnivaktrā
लूता भेद। (सु.क. 8/118), दंश से दाह, स्राव, ज्वर, कण्डू, रोमहर्ष, विस्फोट को करने वाली लूता विशेष, a poisonous insect

अग्निवध agnivadha अग्निवध: अग्निमांद्य:। (हे.-अ.हृ.सू. 4/2), अग्नि की मंदता, मन्दाग्नि, अपानवायु वेगावरोध जन्य लक्षण, dyspepsia

अग्निवल्लभ agnivallabha
सर्जक, राल (ध.नि. 3/121), शालनिर्यास, राल, resin of Shorea robusta

अग्निविसर्प agnivisarpa
वातपित्तज विसर्प। (च.चि. 21/36), (अ.सं.नि. 13), वातपित्तप्रधान विसर्प जिसमें अग्निसमान दहन, वमन अतिसार आदि लक्षण होते हैं, a form of erysipelas

अग्निवीर्य agnivīrya
सुवर्णम्। (रा.नि. 13/1), स्वर्णधातु, gold

अग्निवेश agniveśa
पुनर्वसु आत्रेय के शिष्य एवं अग्निवेश तन्त्रकर्त्ता। (च.सू. 1/39), a disciple of Atreya and author of Agnivesha tantra

अग्निशेखर agniśekhara
कुङ्कुम। (रा.नि. 12/21). हिं.- केशर, saffron

अग्निष्टोम agniṣṭoma
सोमप्रकार। (सु.चि. 29/7), सोम रसायन भेद

अग्निसाद agnisāda
अग्निसाद: अग्निमान्द्यम्। (ड.-सु.उ. 52/7), (ड.-सु.उ. 62/10), अग्निमांद्य, मन्दाग्नि, dyspepsia

अग्नीषोमसंयोग agniṣomasaṃyoga
आर्तव एवं शुक्र का परस्पर संयोग। (सु.शा. 3/4), union of ovum and sperm

अग्न्यधिष्ठान agnyadhiṣṭhāna
अग्नेराश्रय इत्यर्थम्। (चक्र.-च.चि. 15/56), अग्नि का आश्रय स्थान, ग्रहणी, site of digestive enzymes, duodenum

5—4 Min. of HRD/2016

अच्छ accha
1. अच्छ: केवल:। (हे.-अ.हृ.सू. 16/16), एकमात्र वही (बिना किसी मिश्रण के), स्वच्छ, निर्मल, clear (fluid) without any mixing 2. अच्छो जलसदृशो नित्यं स्रावो जायते, विशेषेण रात्रौ:।। (अरु.-अ.हृ.उ. 19/9), जल के समान स्वच्छ निरंतर स्राव, नासास्राव का लक्षण, clear, transparent

अच्छस्नेह acchasneha
अच्छ: केवल स्नेह:। (ड.-सु.चि. 31/21), शुद्ध अच्छश्च पेयश्च अच्छपेय:। (चक्र.-च.सू. 13/25), केवल शुद्ध स्नेह (औषध रहित) का पान, ingestion of pure unctuous substance

अजकाजात ajakājāta
अजापुरीषप्रतिमो रुजावान् सलोहितो लोहितपिच्छिलाश्रु:। विदार्य कृष्णं प्रचयोऽभ्युपैति तं चाजकाजातमिति व्यवस्येत्। (सु.उ. 5/10), अजा पुरीष के समान रुजावान्, रक्तपिच्छिल अश्रु स्रावयुक्त नेत्र कृष्ण भाग का विदारण करने वाली व्याधि अजकाजात है, iris prolapse

अजगल्लिका ajagallikā
क्षुद्ररोग, (अत्रभोज:) मारुत: कफमादाय पिडिकां माषमुद्गयो:। तुल्यां सवर्णां त्वङ्मांसे कुरुते साऽजगल्लिका।। (गय.-सु.नि. 13/4), बालकों में होने वाली कफवातयुक्त पिड़का जो त्वक् मांस वर्ण की मुद्ग एवं माष के सदृश होती है, exanthemata

अजस्र ajasra
अजस्रं अनवरतम्। (ड.-सु.उ. 22/16), अनवरत, निरन्तर, नासापरिस्रव का लक्षण, continous, a sign of nasal discharge

अजातसार ajātasāra
सारहीन:। सा चेदपचाराद् द्वयोस्त्रिषु वा मासेषु पुष्पं पश्येन्नास्या गर्भ: स्थायस्तीति विद्यात्; अजातसारो हि तस्मिन् काले भवति गर्भ:।। (च.शा. 8/23), सारहीन गर्भ (गर्भ के प्रसंग में), यदि अपथ्य सेवन करने से दूसरे या तीसरे मास में गर्भिणी स्त्री के रज:स्राव को देखें तो यह समझ लें कि गर्भ की स्थिति नहीं रहेगी, क्योंकि तीन मास तक गर्भ सारहीन होता है, embryo till the age of third month

अजिन ajina
अजिनं व्याघ्रादि चर्म। (चक्र.-च.सू. 6/15), व्याघ्र आदि पशुओं की चर्म जो बैठने आदि के कार्य में प्रयुक्त होती है जैसे व्याघ्र चर्म से बना आसन, skin of dear, tiger etc used for sitting

अजीर्ण ajīrṇa
भोजन का सम्यक् रूप में न पचना। (च.सू. 5/39), indigestion

अजीर्णाध्यशन ajīrṇādhyaśana
अजीर्णेऽध्यशनमजीर्णाध्यशनं, किंवा अजीर्णस्यापक्वस्याशनमजीर्णाशनम्, अध्यशनं तु पूर्वान्नशेषे यदुज्यते यदाह- भुक्तस्योपरि यद्युक्तं तदध्यशनमुच्यते। (चक्र.-

च.सू. 24/10), अजीर्ण में अध्यशन करना अजीर्णाध्यशन कहलाता है अर्थात् पूर्वकृत् आहार के सम्यक् रूप से जीर्ण (पाक) न होने पर पुनः भोजन करना अथवा अपक्व भोजन (भोजन बनाने में कच्चा रह जाना) करना अजीर्णध्यशन कहलाता है, eating before digestion of previous food, eating improperly cooked food

अजुगुप्सिता ajugupsitā
धात्रीमानय समानवर्णां यौवनस्थां निभृतामनातुरामव्यङ्गमव्यसनामाविरूपामजुगुप्सिताम्। (च.शा. 8/52), धात्री के लक्षणों में से एक, जो स्त्री सर्वप्रिय हो, one of characteristics of wet nurse

अज्ञवैद्य ajñavaidya
असत्पक्षादि साधनं येषां ते तथा, असत्पक्षः। (चक्र.-च.सू. 30/76), असत् (असत्य=झूठ) पक्ष ही जिसका साधन हो, उसे 'अज्ञवैद्य' कहते हैं, ignoramus

अञ्जन añjana
अंजनशब्दोऽभ्यंजनेऽपि वर्तते, तदर्थमक्ष्यंजनमित्युक्तम्। (चक्र.-च.सू. 5/14), अंजन शब्द का प्रयोग अभ्यंजन के अर्थ में किया जाता है, इसी कारण 'आंख के अंजन' ऐसा वचन प्रस्तुत किया गया है या अंजन शब्द से यहां अभ्यंजन (काजल) अर्थ लिया जाता है। जिसे आंख का काजल भी कहते हैं, collyrium

अञ्जनादिगण añjanādigaṇa
अञ्जनरसाञ्जननागपुष्पप्रियंगुनीलोत्पल नलदनलिनकेशराणि मधुक चेति।। (सु.सू. 38/41), सौवीरांजन, रसांजन, नागकेशर, प्रियंगु, नीलकमल, जटामांसी, पद्मकेशर, मधुयष्टी आदि अंजनादि गण के द्रव्य हैं। यह गण रक्तपित्तहर, विषहर, भृश अन्तर्दाहनाशक है, a group of herbs pacifying bleeding disorders, and antitoxic

अञ्जनाभ añjanābha
रक्तपित्तं कषायाभं कृष्णं गोमूत्रसन्निभम्। मेचकागारधूमाभमञ्जनाभं च पैत्तिकम्।। (च.चि. 4/12), पैत्तिक रक्तपित्त में रक्त का वर्ण अञ्जन के समान होता है, collyrium coloured blood

अञ्जलि añjali
1. कुडवप्रमाणम्। (ड.-सु.चि. 20/10), मान का एक भेद, दो प्रसृति, चार पल या सोलह तोला के समान, a measurement equivalent to 160 gms 2. करद्वययोजनम्। (ड.-सु.उ. 37/15), हाथ जोड़ने की मुद्रा, आदरसूचक, folded hands

अञ्जलिमुख añjalimukha
स्वस्तिक यन्त्र का एक भेद। (सु.सू. 7/10), a type of cruciform instrument

अट्टहसन aṭṭahasana
अतिशयेन हासः। जोर से हंसना, laughing loudly

अणुतैल aṇutaila
अणुनां स्रोतसां हितमित्यणुतैलम्। (चक्र.-च.सू. 5:56), जो सूक्ष्म स्रोतसों के लिए हितकारी है ऐसा तैल 'अणुतैल' है, यह सामान्यतः नस्य में उपयोग होता है, oil helpful for minute channels is Anutail; a medicated oil commonly used for nasya

अतत्वाभिनिवेश atattvābhiniveśa
रजस्तमोभ्यां वृद्धाभ्यां बुद्धौ मनसि चावृते, हृदये व्याकुले दोषैरथ मूढोऽल्पचेतनः। विषमां कुरुते बुद्धिं नित्यानित्ये हिताहिते, अतत्वाभिनिवेशं तमाहुराप्ता महागदम्।। (च.चि. 10/56-60), चरक ने इसे महागद कहा है, मलिनाहारशील व्यक्ति के दोष प्रकुपित होकर रज तम की वृद्धि से बुद्धि एवं मन आवृत्त होता है, हृदय व्याकुल होकर मूढ एवं अल्पचेतना युक्त होता है एवं बुद्धि विषम हो जाती है। यह महागद अतत्वाभिनिवेश कहलाता है, confuse state of mind

अतिक्रान्त atikrānta
तन्त्रयुक्ति भेद। (सु.उ. 65/16)

अतिक्रान्तता atikrāntatā
अतिक्रान्तता दूरगमनम्। (ड.-सु.नि. 15/7), एक दूसरे से दूर होना (भग्न का लक्षण), a type of fracture in which bones move away from each other

अतिक्रान्तावेक्षण atikrāntāvekṣaṇa
अतीतस्य अवेक्षणम्। (ड.-सु.उ. 65/31), पूर्व में वर्णित, तन्त्रयुक्ति का एक भेद, described before

अतिक्लीब atiklība
अतिक्लीबं अतिविलम्बितोच्चारणम्। (चक्र.-च.सू. 8/24), अत्यधिक देर करते हुए उच्चारण करना, very slow pronunciation of the words

अतिक्षिप्त atikṣipta
अतिक्षिप्ते दूरं गतौ सन्धौ।। (ड.-सु.नि. 15/7), सन्धिमुक्त का एक प्रकार जिसमें सन्धि में भाग लेने वाली अस्थियां एक दूसरे से दूर हो जाती है, a type of dislocation

अतिचरणा aticaraṇā
पवनोऽतिव्यवायेन शोफसुप्तिरुजः स्त्रियाः। करोति कुपितो योनौ सा चातिचरणा मता।। (च.चि. 30/19), अतिचरणा बहुशो मैथुनं व्रजति, तयोश्चरणातिचरणयोर्बीजं न तिष्ठति, स्थितिं न करोतीत्यर्थः।। (ड.-सु.उ. 38/16), अति संभोगजन्य एक योनिरोग जिसमें शोफ, सुप्ति आदि होते हैं एवं यह बीजधारण नहीं करती है, nymphomania

अतिचर्या aticaryā
अत्यटनम्। (ड.-सु.सू. 21/19), अत्यधिक भ्रमण करना, wandering here and there

अतितृष्णा
atitṛṣṇā
1. अतिप्यास, excessive thirst 2. अति लोभ, excessive greed

अतिदग्ध
atidagdha
अतिदग्धे मांसावलम्बनं गात्रविश्लेषः सिरास्नायुसन्ध्यस्थिव्यापादनमतिमात्रं ज्वरदाहपिपासामूर्च्छाश्चोपद्रवा भवन्ति, व्रणश्चास्य चिरेण रोहति, रुढश्च विवर्णो भवति।। (सु.सू. 12/16), अतिदग्ध में मांस नीचे की तरफ लटकता है, दग्ध अवयव शिथिल हो जाता है, सिरा-स्नायु सन्धि और अस्थियों का अतिशय नाश हो जाता है, ज्वर, दाह, प्यास, मूर्च्छा इत्यादि उपद्रव हो जाते हैं, व्रण बहुत दिन के बाद भरता है और भरने पर भी शरीर के समान वर्ण नहीं होता, severe (4th) degree of accidental or iatrogenic burn

अतिनिद्रता
atinidratā
निद्रानाशोऽतिनिद्रा च मुखपाको व्रणोद्भवः। एकङ्गक पक्षवधः क्षीरालसक विसूचिका।। (का.सं.चि. बालग्रह चिकित्साध्याय), निद्रा का अधिक आना (रेवती ग्रह से ग्रसित शिशु का एक लक्षण), excessive sleepiness (a sign of child affected with Revati-graha)

अतिपातिषु
atipātiṣu
अतिपातिषु रोगेषु बन्धकालादि नियम व्यभिचारार्थ एवायम्। (ड.-सु.सू. 5/41), अतिपातिषु आशुकारिषु, शीघ्रकारी, चिकित्सकीय आपात काल, clinical emergency, emergency

अतिप्रतान्त
atipratānta
अतिप्रतान्तः अतिक्षीणद्रवधातुः। (चक्र.-च.सू. 13/55), जिसकी द्रवधातु अतिक्षीण हो गई हो, dehydrated

अतियोग
atiyoga
अतिमात्रयोगो विकारकरोऽतियोगः। (चक्र.-च.सू. 16/4), अतिमात्रा में दोषों का निकलना या विकार उत्पन्न करना अतियोग है, excessive removal leading to disorders

अतिराग
atirāga
उचित एव विषये पुनःपुनः प्रवर्तनेच्छा। (चक्र.-च.सू. 7/27), उचित विषय में पुनःपुनः प्रवृत्ति होने की इच्छा, excessive attachment, obsession

अतिविप्रकृष्ट
ativiprakṛṣṭa
अतिविप्रकृष्टं अतिदूरवर्ति। (चक्र.-च.सू. 11/37), बहुत दूर में स्थित होना, अतिविप्रकृष्ट कहा जाता है, distant, being far away

अतिव्यात्तानन
ativyāttānana
मुख को पूर्ण रूप से खोलना। (सु.शा. 8/10), fully opening of mouth

अतिश्लिष्ट
atiśliṣṭa
अतिश्लिष्टं नयनप्रत्यासन्नम्। (चक्र.-च.सू. 11/37), आँख के अत्यन्त समीप होना 'अतिश्लिष्ट' है, अत्यधिक समीप, approximation, being very close to the eyes

अतिसार
atisāra
अतिसरणात् अतिसारः। (अ.सं.नि. 8/17), एक रोग जिसमें द्रवमल अधो भाग से अधिक निकलता है, a disease in which the patient passes excessive loose motions, diarrhoea

अतिस्थान
atisthāna
अतिस्थानमिति अत्यर्थं दण्डायमानत्वेनावस्थितिः। (चक्र.-च.सू. 15/15), एक ही स्थान पर बहुत देर खड़े रहना, standing for a long time at one place

अतिस्निग्ध
atisnigdha
अतिस्निग्धे तु पाण्डुत्वं घ्राणवक्त्रगुदस्रवाः।। (अ.हृ.सू. 16/31), अधिक स्नेहन होने से पाण्डुता, नाक, मुख और गुदा से कफ का स्राव होता है, excessive oleation leads to anaemia and discharge (of kapha) from nose, mouth and anus

अतिहीन
atihīna
अतिहीनं नष्टशक्तिकं धान्यादि। (चक्र.-च.सू. 15/15), सड़े हुए अन्न, spoiled cereals

अतीन्द्रिय
atīndriya
अतिक्रान्तमिंद्रियमतीन्द्रियम्। (चक्र.-च.सू. 8/4), चक्षुरादिभ्योऽप्यतीन्द्रियभ्यः सूक्ष्मतरं, दुःखबोधात्। (चक्र.-च.सू. 8/4), इन्द्रिय चक्षुराद्यधिष्ठायकत्व-विशेषादतीन्द्रियमित्युक्तम्। (च.सू. 8/4), इन्द्रियों को अतिक्रान्त करने अर्थात् उनसे भी अधिक और अन्य कार्य करने के कारण मन को अतीन्द्रिय कहते हैं, चक्षुरादि इन्द्रियों से मन सूक्ष्म है तथा उसका ज्ञान इन्द्रियों से नहीं होता, अतः मन को अतीन्द्रिय कहते हैं, चक्षु आदि इन्द्रियों से मन विशेष है अतः मन अतीन्द्रिय है, mana is subtle than senses and it can not be perceived by indriya, therefore mana is called atindriya, mana works as indriya also, but as it is different from indriya, so mana is called atindriya

अतुल्यगोत्र
atulyagotra
अतुल्य गोत्रस्येति अतुल्य गोत्रस्य पुंसः।। (चक्र.-च.शा. 2/3), भिन्न गोत्र वाला, non consanguineous

अत्यादान
atyādāna
अत्यादानं तृप्तिमतिक्रम्य भोजनम्। (चक्र.-च.सू. 24/9), इच्छा या तृप्ति से भी अधिक भोजन करना अत्यादान कहलाता है, overeating

अत्युत्थान
atyutthāna
ज्यादा उठा हुआ (सु.शा. 8/8), excessively elevated

अत्युन्नत
atyunnata
उच्छ्रितकीलकादि। (ड.-सु.सू. 7/19), कील आदि का ऊपर उठा हुआ होना, यन्त्रदोष, elevated nail, a defect in instruments

अदृष्टिकृत्
adṛṣṭikṛta
अदृष्टिकृत् दर्शनरोधकृत्। (ड.-सु.उ. 5/6), दर्शनशक्ति का नाश करने वाला, सव्रण शुक्र का एक लक्षण, vision obscuring (a feature of corneal ulcer)

अध:पातन adhaḥpātana
नष्टपिष्टं रसं कृत्वा लेपयेच्चोर्ध्व भाजने। ततो दीप्तैरध: पातमुत्पलैस्तत्र कारयेत्।। (र.र.स. 11/39), नष्टपिष्ट हुये पारद को ऊपर के पात्र में लेप कर देते हैं, नीचे के पात्र में जल को भरकर सन्धिबन्धकर उपल की आग में पुट देकर पारद का अध: पातन किया जाता है, downward sublimation

अध:पातनयन्त्र adhaḥpātanayantra
अथोर्ध्वभाजने लिप्तस्थापितस्य जले सुधी:। दीप्तैर्वनोपले: कुर्यादध: पात प्रयत्नत:।। (र.र.स. 9/9), पातनायन्त्र के ऊपर वाले घड़े में नींबू भावित हिंगुल का लेप कर सुखा लेना चाहिए फिर संधिबंधन करके ऊपर वाले घड़े पर पाली बनाकर जंगली उपलों को जलाना चाहिए। इससे घड़े में संलिप्त पारद पिघलकर नीचे के जलयुक्त घड़े में घिर जाता है, an equipment used for downward sublimation of mercury

अध:शोधन adhaḥśodhana
दूषित दोषों का गुदमार्ग से निकालना। (च.क. 1/4), विरेचन, purgation

अध:स्रंसी adhaḥsraṃsī
विष्यन्दनशील:| (चक्र.-च.सू. 26/43), जो द्रवात्मक स्वभाव होने के कारण नीचे की ओर गतिशील होता है, वह अध: स्रंसी है, laxative

अधस्तन adhastana
अधस्तनो अन्नभोक्ता च यदावा।। (का.सि. 1/20), जो बालक नीचे चलता फिरता हो अर्थात् जिसने गोद त्याग दी हो, a child who has started crawling, walking, toddler

अधिदन्त adhidanta
अध्यस्थिदन्तौ दन्तास्थिभेदशूलं विवर्णता। केशलोमनखश्मश्रुदोषाश्चास्थि प्रदोषजा:।। (च.सू. 28/16), अधिक दांत होना, दांत के आगे एक दांत होना, यह एक अस्थिप्रदोषज विकार है, extra tooth

अधिष्ठान adhiṣṭhāna
अधिष्ठानं दूष्यम्। (चक्र.-च.सू. 20/3), 'दूष्य' रक्तादि धातुओं को अधिष्ठान कहा जाता है, tissues, site

अधीरता adhīratā
कातरत्वम् (विज.-मा.नि. 20/6), चित्त की अस्थिरता, panic state

अधीवास adhīvāsa
सहावस्थानम्, यावदधीवासादिति यावच्छरीरनिवासात्। (चक्र.-च.सू. 26/66), साथ में रहना, द्रव्य के रस का शरीर में निवास, इससे द्रव्य के वीर्य का ज्ञान होता है, inhabitation

अधृति adhṛti
अधृति: अधैर्ययुक्त:।। (ड.-सु.शा. 4/65), धैर्यहीन, अधीर होना (वातिक प्रकृति का एक लक्षण), impatient

अधोगुरुता adhogurutā
कुक्षी पार्श्वोदर कटीपृष्ठरुक् पर्वभेदनम्। शुष्ककासोऽङ्गमर्दोऽधोगुरुता मलसंग्रह:।। (मा.नि. 35/6), अधो (नाभि से नीचे) प्रदेश में भारीपन का अनुभव, feeling of heaviness in the lower abdomen

अधोभक्त adhobhakta
यदधोभक्तस्येति। (सु.उ. 64/70), अधोभक्तस्येति भोजनान्त इत्यर्थ:। (ड.-सु.उ. 64/70), भोजन करने के बाद औषध सेवन करना अधोभक्त कहलाता है, giving medicine after meal

अधोमार्ग adhomārga
अधोगुदेन दोष निर्हरणं भजत इत्यधोभागम्। (चक्र.-च.क. 1/4), गुदामार्ग से दोषों का निर्हरण अधोमार्ग कहलाता है, elimination of impurities through anus is adhomarga

अध्यस्थि adhyasthi
अध्यस्थि अधिकमस्थि। (हे.-अ.हृ.सू. 11/11), अस्थि का अधिक बढ़ना, hypertrophy of bone

अध्यात्म adhyātma
आत्मानमधिकृत्याध्यात्मम्। (चक्र.-च.सू. 8/13), अध्यात्मं आत्मादिस्वरूपम्। आत्मा से संबन्धित 'अध्यात्म' है, आत्मा एवं परमात्मा के स्वरूप का ज्ञान अध्यात्म है, related with Atma is adhyatma, knowledge of Atma is adhyatma

अध्यात्मद्रव्यगुणसंग्रह adhyātmadravyaguṇasaṃgraha
आत्मानमधिकृत्य यानि द्रव्याणि ये च गुणा:, तेषां संग्रहोऽध्यात्मद्रव्यगुण संग्रह:। (चक्र.-च.सू. 8/13), आत्मा के अधिकार क्षेत्र में जो द्रव्य तथा गुण आते हैं उनके संग्रह को अध्यात्म द्रव्यगुण संग्रह कहते हैं, the collection of dravya and guna pertaining to soul

अध्याय adhyāya
अधीयते इत्यध्याय:। (चक्र.-च.सू. 1/1), अधिकृत्यार्थमध्यायनामसंज्ञा प्रतिष्ठिता। (च.सू. 30/70), अधीयतेऽस्मिन्, अध्येत्यनेन वा, अधीयते वेत्यध्याय:। (चक्र.-च.सू. 30/70), अधीयतेऽस्मिन्ननेन वाऽर्थविशेष इत्यध्याय:। (चक्र.-च.सू. 1/1), जिसका अध्ययन किया जाता है, उसे अध्याय कहते हैं। किसी विषय को आधार मानकर उसका वर्णन जहाँ किया जाता है, उसे अध्याय कहते हैं। जिसमें या जिसके द्वारा अध्ययन किया जाता है, उसे अध्याय कहते हैं, chapter is that which is studied or by which it is studied is called the chapter, where considering a topic as the subject matter, being explained is called a chapter

अध्वगमन adhvagamana
अध्वगमनं दीर्घमार्गगमनम्।। (ड.-सु.नि. 3/7), लंबी दूरी तक चलना, long walk

अनतिविकृतचेष्ट anativikṛtaceṣṭa

नाति विकृत्। (योगे.-च.नि. 8/8), कफज अपस्मार का लक्षण, अधिक विकृत चेष्टाओं का न होना, less violent activities

अननुक्रोश ananukrośa

अननुक्रोशमिति निर्दयम्।। (चक्र.-च.शा. 4/38), निर्दयी होना (आसुर सत्व का लक्षण), cruel

अननुवास्य ananuvāsya

रोग एवं रोगी जिनमें अनुवासन कर्म वर्जित है। (च.सि. 2/17), contraindications of unctous enema

अनन्त ananta

सुवर्णम्। (सु.शा. 10/13), स्वर्ण धातु, gold

अनन्तपार anantapāra

अविद्यमानावन्तपारौ यस्यासावनन्तपारः। (चक्र.-च.सू. 1/25), जिसका अन्तिम छोर या किनारा न हो, मोक्ष को अनन्त या उत्कृष्ट फल कहते हैं, उत्कृट फल प्रदान करने वाला होने के कारण आयुर्वेद को अनन्तपार कहते हैं, which has no end is called anantapara, the final emancipation is regarded as endless and excellent result, since Ayurveda imparts the endless and excellent result i.e. emancipation, it is called anantapara

अनपवाद anapavāda

अनपवादमिति अव्यभिचारि। (चक्र.-च.सू. 25/32), अव्यभिचारी (दोषरहित) या अपवाद रहित होना अनपवाद कहा गया है, faultless, without controversy

अनलदल analadala

मृतेन वा बद्धरसेन वाऽन्यल्लोहेन वा साधितं अन्यलोहम्। पीतत्वमुपागतं तद्दलं हि अनलयोः प्रसिद्धम्।। (र.र.स. 8/17), पारदभस्म, बद्धपारद अथवा अन्य किसी धातु की सहायता से किसी धातु को यदि पीत वर्ण का बना दिया जाये तो उसे अनलदल कहते हैं, changing a metal into yellow colour

अनवमत anavamata

अनवमतः अनवज्ञातो बहुमानगृहीत इति भावम्। (चक्र.-च.सू. 11/5), बिना उपमानित हुए अथवा अधिक सम्मान के साथ जीवन जीना 'अनवमत' कहा जाता है, to live honorable life without being insulted

अनवस्थितचपलरूपदर्शन anavasthitacapalarūpadarśana

अनवस्थितचपलरूपदर्शनं पतनकाले ज्ञेयं, पतितस्तु न बुध्यत एव। (च.नि. 8/8-2), गिरते हुए अस्थिर रूप का दर्शन होना, वातज अपस्मार का एक लक्षण, unstable images

अनागत anāgata

अनागत ईषदागतः। (ड.-सु.चि. 24/1), भविष्य में होने वाला, future

अनाग्नेयस्वेद anāgneyasveda

अनाग्नेयं पुनर्मेदःकफावृत्ते वायौ। (अ.सं.सू. 26/17), व्यायाम उष्णसदनं गुरुप्रावरणं क्षुधा बहुपानं भय क्रोधावुपनाहाहवातपाः।। (च.सू. 14/64), स्वेदयन्ति दशैतानि नरमग्निगुणादृते। (च.सू. 14/65-1), जिस स्वेद क्रिया में अग्नि का उपयोग न हो, उसे अनाग्नेय स्वेद कहा जाता है; यह मेद एवं कफ से आवृत वात के लिए उपयोगी हैं। (ड.-सु.चि. 32/15), व्यक्तियों में बिना अग्नि के स्वेदन के 10 प्रकार हैं जैसे व्यायाम, उष्णनिवास, भारी वस्त्र, भूख, मद्य, भय, क्रोध, उपनाह, युद्ध एवं धूप सेवन आदि, Nonthermal sudation, there are ten procedures of sudation where fire heat is not used; those are known as anagneya Sveda, niragni sveda is its synonym, Charaka describes ten anagneya sveda or non thermal sudation

अनाप्त anāpta

अनाप्ताः स्वे तन्त्र इति स्वतन्त्रानभिज्ञानात्। (चक्र.-च.सू. 30/82), अपने शास्त्र का ज्ञान (सम्यक् ज्ञान) न होने से अज्ञ को अनाप्त कहा गया है, adherent to false

अनार्तव anārtava

अनार्तवस्तना षण्डी खरस्पर्शा च मैथुने।। (सु.उ. 38/18), आर्तव का न होना, षण्डी योनि का एक लक्षण, amenorrhea, cessation of menstruation

अनार्य anārya

आराद् दूरात् पापेभ्यो यात आर्यः, तद्विपरीतो अनार्यः। (चक्र.-च.सू. 8/19), आर्य के विपरीत अर्थात् जो पाप कर्म करे वह 'अनार्य' है, one who indulges in sins is anarya

अनास्थाप्या anāsthāpyā

रोग एवं रोगी जिनमें आस्थापन बस्ति वर्जित है। (च.सि. 2/14), contraindications of asthapana basti

अनिग्रहसन्दंशयन्त्र anigrahasandaṃśayantra

अनिग्रहोऽनिबन्धनः सुवर्णकारस्येव। (ड.-सु.सू. 7/11), कीलरहित सन्दंशयन्त्र जो सुवर्णकार प्रयुक्त करते हैं, dissecting forceps without catch

अनिमिषाक्ष animiṣākṣa

अनिमिषाक्षस्य निमेषासमर्थ चक्षुषः। (विज.-मा.नि. 22/47), आंखों के पलक का झपकने में असमर्थ होना, असाध्य अर्दित का एक लक्षण, inability to blink eye lids

अनीशता anīśatā

वाग्वाहिनी सिरासंस्थो जिह्वां स्तम्भयते अनिलः। जिह्वा स्तम्भः स तेन्नानपा वाक्येष्वनीशताः।। (अ.हृ.नि. 15/31), अन्नपान वाक्येषु अनीशता - असमर्थता भवति। (अरु.-अ.हृ.नि. 15/31), जिह्वास्तम्भ के कारण, अन्नपान ग्रहण एवं बोलने में असमर्थता होती है, inability to ingest and speech

अनीश्वर anīśvara

प्रनष्टाग्निबलाहारा: सर्वचेष्टास्वनीश्वरा:। दीना: प्रतिक्रियाभावाज्जहतोऽसून-नाथवत्। (च.चि. 13/6), अक्षम, असमर्थ होना, उदर रोग का एक लक्षण जिसमें रोगी कोई भी चेष्टा करने में असमर्थ हो, immobile

अनुकार anukāra

भूतस्य रूपप्रकृति भाषागत्यादिचेष्टितैः। यस्यानुकारं कुरुते तेनाविष्टं तमादिशेत्।। (अ.ह.उ. 4/2), भूतबाधा से ग्रस्त व्यक्ति उसी प्रकार की चेष्टाएं करता है जैसे भूत, राक्षस, गंधर्व आदि से वह ग्रस्त होता है, to follow

अनुक्त anukta

अनुक्ते अप्रकाशिते। (आढ.-शा.सं.प्र. 1/47), जिसे प्रकट नहीं किया गया है, lack of specific information

अनुग्रहार्थ anugrahārtha

अनुग्रहार्थमिति उपकारार्थम्। (ड.-सु.सू. 13/3), अनुग्रह का अर्थ है उपकार, सुविधा, कृपा आदि, for favour, for convenience, for better acceptability

अनुत्थितविद्धा anutthitaviddhā

दु:स्थान बन्धनाद्वेपमानाया: शोणितसंमोहो भवति सा वेपिता, अनुत्थितविद्धायामप्येवम्। (सु.शा. 8/18-19), एक प्रकार का दुष्ट सिरावेध, उचित प्रकार से यन्त्रण न करने पर ठीक से न उठी हुई सिरा का उचित वेधन न होना, इससे रक्त उचित प्रकार से स्रावित नहीं होता है, a defective venesection

अनुध्यायति anudhyāyati

अनुध्यायति मनसा चिन्तयति। (चक्र.-च.सू. 30/29), जिसका मन से चिन्तन किया जाता है, उसे अनुध्यायति कहते हैं, meditation, thinking

अनुपक्रम anupakrama

अकिञ्चित्करत्वेनाविद्यमान उपक्रमो यस्य तदनुपक्रमम्। (चक्र.-च.सू. 10/9), जिस रोग में रोगशान्ति के लिए कुछ नहीं किया जा सकने के कारण उसकी उपक्रम (चिकित्सा) विद्यमान नहीं हो, उसे अनुपक्रम कहा जाता है, a disease/disorder that does not respond to any kind of treatment

अनुपतापाय anupatāpāya

अनुपतापाय अनुपघाताय; उपघातकहेतुवर्जनेनेत्यभिप्राय:।। (चक्र.-च.सू. 8/17), रोग रहित अर्थात् आरोग्यता, व्याधिकारक हेतुओं से शरीर की रक्षा करना, to keep body healthy, avoidance of causative factors of diseases

अनुपहत्य anupahatya

अनुपहत्य विकारमकृत्वेत्यर्थ:| (चक्र.-च.सू. 5/4), विकारोत्पत्ति न करना, इसका यह अर्थ है, the term refers to the causative factors which do not manifest the disease

अनुपान anupāna

अन्नादनुपश्चात् पीयत इत्यनुपानम्। (ड.-सु.सू. 46/419), अनु पश्चात् सह वा पीयते इत्यनुपानम्। (हे.-अ.ह.सू. 8/50), तत्तद्रोगहन भैषज्यं भैषजस्यानुपीयते। यच्च साहाय्यकारि स्यादनुपानं तदुच्यते।। अन्न के पश्चात् पीया जाने वाला, जो मुख्य औषधि सेवन के पश्चात् औषधि की क्रिया को बढ़ाने के लिये दिया जाता है, उसे अनुपान कहते हैं, after drink

अनुबन्ध anubandha

1.अनुबध्नात्यायुरपरापरशरीरादिसंयोगरूपतयेत्यनुबन्ध:। (चक्र.-च.सू. 1/42), पूर्व देहादि संयोग से अनुबन्ध बनाए रखने के कारण आत्मा को अनुबन्ध कहते हैं, यह आत्मा के सन्दर्भ में है, since being united with the body etc. of successive life is called anubandha; it refers to Atma 2. अनुबन्ध: पश्चात् काल जात:। (चक्र.-च.सू. 19/7), मुख्य रोग के कुछ काल के व्यतीत हो जाने पर उत्पन्न होने वाला, that produced after some time of main disease 3. अनुबन्ध सततम्। (चक्र.-च.सू. 24/53), लगातार सम्बन्ध बने रहना अनुबन्ध कहलाता है, continous association 4. अनुबन्ध: अप्रधान:। (चक्र.-च.सू. 19/7), जो व्याधि प्रधान नहीं होती, secondary disease

अनुमान anumāna

व्याप्तिग्रहणादनु अनन्तरं मीयते सम्यग्निश्चीयते परोक्षार्थो येन तदनुमानम्। (चक्र.-च.सू. 11/21), व्याप्तिग्रहण के बाद परोक्ष विषयों का, जिसके द्वारा सम्यक् निश्चय किया जाये, उसे अनुमान कहा जाता है, inference

अनुमानगम्य anumānagamya

अनुमानेन प्रतीयन्त इत्यनुमानगम्यानि। (चक्र.-च.सू. 8/14), जिसका ज्ञान अनुमान प्रमाण के द्वारा हो वह अनुमानगम्य है, perceived through inference

अनुयोग anuyoga

मुखवाद्यनृत्यगीतान्नपानस्नानमाल्यधूपगन्धिरतिं रक्तवस्त्र बलिकर्म हास्यकथानुयोगप्रियं शुभगन्धं च गन्धर्वोन्मत्तं विद्यात्। (च.चि. 9/20), पृच्छा:। (योगे.-च.चि. 9/20), जो प्रश्न पूछने में रुचि रखता हो (गन्धर्वोन्माद का एक लक्षण), one who is interested in putting question (a sign of gandharvonmada)

अनुरस anurasa

अव्यक्तोऽनुरस: किञ्चिद् अन्ते व्यक्तोऽपि चेष्यते। (अ.ह.सू. 9/4), यस्तूक्तावस्थाचतुष्टयेऽपि व्यक्तो नोपलभ्यते, किंतर्ह्यव्यपदेश्यतया छायामात्रेण कार्यदर्शनेन वा मीयते, सोऽनुरस इति वाक्यार्थ:।। (चक्र.-च.सू. 26/28), जो द्रव्य में अव्यक्त रूप से रहता है एवं प्रधान रस की प्रतीति के पश्चात् अनुभव होता है, उसे अनुरस कहते है, द्रव्यों के रस उक्त चारों अवस्थाओं (शुष्क, आर्द्र,

आदि एवं अन्त) में व्यक्त न होने के कारण उनके अल्प व्यक्त कार्यों को देखकर जिसका ज्ञान होता है, वह अनुरस है, after taste, subsidiary taste

अनुलोम
anuloma

1. अनुलोमयोः विरेचनयोः। (चक्र.-च.सि. 6/3), अनुलोम विरेचन का पर्याय है, purgation 2. अनुलोममिति लोमानुकूल्येन, येनैवावर्तेन लोमानि सन्ति तेनैवावर्तेन व्यर्थः। (ड.-सु.सू. 5/7), लोम की दिशा में, in the direction of body hair 3. अनुलोमं पराचीनम्। (सु.सू. 27/6) पराचीनमिति दूरप्रविष्टम्; कायस्थ पराधनिर्गतं शल्यमुच्यते। (सु.सू. 27/6), दूरस्थ प्रविष्ट शल्य को उसी मार्ग में आगे ले जाकर निकालने को भी अनुलोम कहते हैं, shalya situated far away from its entry point should be taken out by pushing it forward is known as anuloma

अनुलोमन
anulomana

कृत्वा पाकं मलानां यद् भित्वा बन्धमधो नयेत्, तच्चानुलोमनं ज्ञेयम्। (शा.सं.प्र.ख. 4/4), जो मलों का पाक कर तथा उनके विबन्ध को भेद कर अधोमार्ग द्वारा बाहर निकालता है, वह अनुलोमन है, जैसे हरीतकी, downward evacuation of faeces, laxative, aperients

अनुवर्ण सुवर्ण
anuvarṇa suvarṇa

भागादद्व्याधिके क्षेपमनुवर्ण सुवर्णके। (र.र.स. 8/51) जब एक नियत भाग रजत या अन्य धातु सुवर्ण में मिलाई जाती हैं तो उसे सुवर्ण का अनुवर्ण कहते हैं, mixing a definite portion of metal in gold

अनुवर्तते
anuvartate

अनुवर्ततेऽनुबध्नाति। (चक्र.-च.सू. 8/6), सम्बन्ध स्थापन करना, imitation, following

अनुवासन
anuvāsana

1.अनुवसन्नपि न दुष्यत्यनुदिवसं वा दीयत इत्यनुवासनः। (ड.-सु.चि. 35/17), शरीर में रहने पर भी हानि न पहुंचाने वाली अथवा प्रतिदिन दी जा सकने वाली बस्ति, स्नेहबस्ति, **tonifying enema** 2. पारद का एक संस्कार जिससे पारद में अत्यधिक शक्ति उत्पन्न हो जाती है, (रस रत्नाकर-पारद प्रकरण), excessive energization of mercury

अनुविधीय
anuvidhīya

अनुविधीयत इति तदनुगुणं देहेनानुतिष्ठति। (चक्र.-च.सू. 30/29), चिन्तनानुरूप कार्यों को करना, अनुविधीय कहलाता है; जो स्वयं आयुर्वेद में कहे गये वचनों के अनुसार आचरण करे, अनुविधीय है, practicing spiritual truth

अनुषंगी
anuṣaṅgī

अनुषंगी पुनर्भावी। (चक्र.-च.सू. 25/40), पुनः उत्पन्न होने वाले रोगों को अनुषंगी कहा जाता है, relapsing

अनृत
anṛta

अनृतं अपार्थकम्। (चक्र.-च.सू. 7/28), झूठ, false

अन्तरपान
antarapāna

अन्तरपानं पाचनमाहुः। (चक्र.-च.सि. 8/23), पाचन औषध के कषाय को पीना, drinking of decoction prepared with pachana drugs

अन्तराभक्त
antarābhakta

अन्तराभक्तं नाम यत् पूर्वाह्ने भोजनमुपयुज्य तस्मिन् जीर्णे मध्याह्न औषधमुपयुज्यते। (सु.उ. 64/73), पूर्वाह्न में किए हुए भोजन के जीर्ण होने पर मध्याह्न में दी जाने वाली औषधि को अन्तराभक्त कहते हैं, administration of drug afternoon on digestion of breakfast

अन्तर्गतस्वर
antargata svara

क्रिया विशेष कण्ठस्यान्तर्गतं यथा भवति तथा स्वरं वचनं वदतीति योज्यम्। (विज.-मा.नि. 13/4), स्वर का कंण्ठ के अन्तर्गत ही रुकना, dysphasia

अन्तर्धूममूर्च्छना
antardhūma mūrcchanā

सगन्धा तु बहिर्धूमान्तर्धूमनिर्धूमस्त्रिविधा। (आ.प्र. 1/137), पारद की सगन्ध मूर्च्छना, बहिर्धूम, अन्तर्धूम एवं निर्धूम भेद से 3 प्रकार की है, closed heating process of mercury to make it curative

अन्तर्वेगज्वर
antarvegajvara

अन्तर्दाहोऽधिकस्तृष्णा प्रलापः श्वसनं भ्रमः। सन्ध्यस्थिशूलमस्वेदो दोषवर्चोविनिग्रहः। अन्तर्वेगस्य लिङ्गानि ज्वरस्यैतानि लक्षयेत्॥ (च.चि. 3/39-40), एक प्रकार का ज्वर जो शरीर के अन्तः भाग में स्थित होता है, a type of fever, in the inner part of the body, least felt externally

अन्तेऽभिहता
anteabhihatā

अन्तेविद्धा, दुष्ट सिरावेध का एक प्रकार। (सु.शा. 8/19), इसके लक्षण अंतेविद्धा के समान होते हैं, a type of defective venepuncture

अन्तेविद्धा
anteviddhā

अल्परक्तस्राविण्यऽन्तेविद्धा। (सु.शा. 8/19), अन्दर से विद्ध होने के कारण अल्परक्त का स्राव करने वाली सिरा, दुष्टवेध का एक प्रकार, a defective venesection

अन्धपूतना
andhapūtanā

यो द्वेष्टिस्तनमतिसारकासहिक्काच्छर्दीभिर्ज्वरसहितमिर्द्यमानः। दुर्वर्णः सततमधःशयोऽम्लगन्धिस्तं ब्रूयुर्भिषज इहान्धपूतनार्तम्।। (सु.उ. 27/13), बालकों में होने वाला एक ग्रह रोग, a graha roga in children

अन्नप्राशन
annaprāśana

षण्मासं चैनमन्नं प्राशयेल्लघु हितं च। (सु.शा. 10/49), बालक में प्रथम अन्न भोजन देने का संस्कार, first introduction of cereals to an infant

अन्नाभिनन्दन
annābhinandana

स्यन्दे तु कफसंभवे। जाड्यं शोफो महान् कण्डूर्निद्राऽन्नानभिनन्दनम्।। (अ.हृ.उ. 15/10), अन्न (भोजन) की इच्छा न होना (कफज अभिष्यन्द का एक लक्षण), anorexia

अन्नेऽश्रद्धा anneaśraddhā

अर्शस्य पूर्वरूपः। तेषां तु भविष्यतां पूर्वरूपाणि अन्नेऽश्रद्धा। (सु.नि. 2/8), भोजन में अरुचि, anorexia, dislike for food, a prodromal feature of piles/hemmorrhoids

अन्विच्छन् anvicchan

अनुरूपमिच्छन् अन्विच्छन्निति अनुरूपं दीर्घमिच्छन्। (चक्र.-च.सू. 1/3), अभिलषित इच्छा, दीर्घ आयु की इच्छा करते हुए, desire, having a desire for appropriate longevity

अपकर्तन apakartana

अपरकर्तनं अधश्छेदः। (ड.-सु.सू. 9/4), नीचे की ओर काटना, incision in lower direction

अपक्वपित्त apakvapitta

अपरिपुष्टि पित्त, अपक्वपित्त, immature pitta

अपतानक apatānaka

आक्षेपकोऽन्तरान्तरा पातयति सोऽपतानक इत्यर्थः। (ड.-सु.नि. 1/52), जिसमें आक्षेप (दौरे आने) के कारण बार बार (रोगी) गिरता हो वह अपतानक रोग है, convulsive disorder

अपरत्व aparatva

अपरत्वं अप्रधानत्वम्। (चक्र.-च.सू. 26/29), अप्रधान, हीनगुण, inferior quality

अपरिज्ञात कोष्ठ aparijñāta koṣṭha

अज्ञात कोष्ठः, अनिर्धारित कोष्ठ, unknown bowel habit

अपविद्धा apaviddhā

बहुशःक्षता हीनशस्त्रप्रणिधानेनापविद्धा। (सु.शा. 8/19), हीन या अनुचित शस्त्र के प्रयोग से अनेक बार क्षत को प्राप्त हुई सिरा अपविद्धा या अविद्धा कहलाती है, multiple punctured venesection

अपुनर्भव apunarbhava

गुडगुञ्जासुखस्पर्शमध्वाज्यैः सह योजितं नायाति प्रकृतिं ध्मानादपुनर्भवमुच्यते।। (र.र.स. 8/29), गुड, गुंजा, टंकण, मधु, घृत आदि के साथ भस्म को मिलाकर धमन करने से अपने स्वरूप में न आने को अपुनर्भव कहते हैं। यह भस्म परीक्षा है, धातु का भस्म हो जाने पर मूल रूप में न आना, irreversible calcined preparations

अपूर्णदिवस apūrṇa divasa

समयपूर्व, कालपूर्व preterm, immature

अप्रकम्प्या aprakampyā

अप्रकम्प्या अप्रचाल्या भवन्ति गुणा इति सम्बन्धः। (चक्र.-च.सू. 7/38), स्थिर, अचलायमान, stable, unshakable

7—4 Min. of HRD/2016

अप्रतिषिद्ध apratiṣiddha

अप्रतिषिद्धं अधिगतमित्यर्थः। (ड.-सु.उ. 65/28), अधिगत, अनिषिद्ध, indicated

अप्रभाषित aprabhāṣita

अप्रभाषितं इत्यत्र अननुभाषितम्। (ड.-सु.सू. 4/3), पढे हुए विषय का व्याख्यान न कर पाना, unable to reciprocate, or reproduce whatever learnt or read

अप्रमाद apramāda

अप्रमादः अवधानेनानुष्ठानम्। (चक्र.-च.सू. 11/4), सावधानी पूर्वक पालन करना 'अप्रमाद' कहा जाता है, to follow carefully

अप्रमादि apramādi

सावधानी से, carefully

अप्रशान्त apraśānta

प्रचण्डः। (विज.- मा.नि. 18/8), शान्त नहीं होना, violent

अप्रसुता aprasrutā

शीतभयमूर्च्छाभिरप्रवृत्तशोणिता अप्रसुता। (सु.शा. 8/19), शीत, भय, एवं मूर्च्छा के कारण सिरा से रक्त का स्राव न होना, यह दुष्टवेध का एक प्रकार है, a type of defective venesection

अप्रहर्ष apraharṣa

स्त्रीविषयेऽनभिलाषः। (ड.-सु.सू. 24/9), मैथुन की इच्छा न होना, किसी भी कार्य, विषय में हर्ष का न होना। (मा.नि. 2/5), loss of libido, lack of pleasure

अप्सुमज्जन apsumajjana

अप्सुमज्जतीति पानीमध्ये यदा क्षिप्यतस्तदा निमग्नो भवति। (आढ.-शा.सं.म. 8/3), पानी में डालने पर अवलेह का डूब जाना, सुपक्व अवलेह का एक लक्षण है, sinking of confection in water is an indication of good preparation

अबद्धवाक्तव abaddhavāktva

असंबद्धवचनत्वम्। (विज.-मा.नि. 20/6), असम्बद्धवाक्। (गंगा.-च.चि. 9/6), विषय से असम्बन्धित वचनों का बोलना, irrelevant talking, incoherent speech

अभक्त abhakta

यत् केवलमन्नरहितमौषधमुपयुज्यते तदभक्तम्। (ड.-सु.उ. 64/66), केवल औषध का बिना अन्नसहित सेवन अभक्त कहलाता है, administration of drug empty stomach

अभक्तच्छन्द abhaktacchanda

भक्तारुचिः। (विज.-मा.नि. 10/7), वृद्धभोजेन, कुपितस्य भयार्तस्य अभिचारहतस्य च, यस्य नान्ने भवेच्छ्रद्धा सोऽभक्तच्छन्द उच्यते। (विज.-मा.नि. 14/4), भय आदि से ग्रस्त व्यक्ति में अन्न सेवन की इच्छा न होना अभक्तच्छन्द कहलाता है, anorexia nervosa

अभिजन abhijana
अभिजनो विशुद्धकुलम्। (चक्र.-च.सू. 8/18), उच्च कुल वाले पुरुष 'अभिजन' कहलाते हैं, person belonging to higher cast

अभिताप abhitāpa
शूलविशेषणम्। (विज.-मा.नि. 11/10), पीडा। (विज.-मा.नि. 10/5), एक प्रकार की वेदना, a type of pain

अभिध्या abhidhyā
अभिध्या मनसा पराभिद्रोहचिन्तनम्, परद्रव्यविषये स्पृहा। (चक्र.-च.सू. 7/27), मन में दूसरे को हानि पहुंचाने के बारे में सोचना, दूसरे के द्रव्य को पाने की इच्छा अभिध्या है, malice

अभिनिवर्तन abhinivartana
तृतीये मासि सर्वेन्द्रियाणि सर्वाङ्गावयवाश्च यौगपद्येनाभिनिर्वर्तन्ते।। (च.शा. 4/11), (तृतीय मास में) गर्भ में अंगों के अवयवों का प्रकट होना, differentiation of foetal body parts during (3rd month of) pregnancy

अभिवोढा abhivoḍhā
अभिवोढेवाभिवोढा सर्वेन्द्रियार्थग्राहकत्वेन। (चक्र.-च्र.सू. 12/8), सभी इन्द्रियों के विषयों को ग्रहण करने वाला अभिवोढा कहा जाता है, conveyer, conveyer of all the sense stimuli

अभिषेक abhiṣeka
द्रुते वह्निस्थिते लोहे विरम्याष्टनिमेषकम्। सलिलस्य परिक्षेपः सोऽभिषेक इति स्मृतः।। (र.र.स. 8/55), अग्नि द्वारा द्रुत लोह में आठ निमेष (पल) रुककर जो जल का परिक्षेप किया जाता है, उसे अभिषेक कहते हैं, sprinkling, submerge

अभिष्यण्ण abhiṣyaṇṇa
अभिष्यण्णः द्रवप्रधानश्लेष्मविकारः। (चक्र.-च.सू. 13/54), ऐसे कफज विकार जिसमें द्रव स्राव होता रहता हो, kapha disorders with mucoid discharge

अभिष्यन्दी abhiṣyandī
1. अभिष्यन्दी स्तैमित्यकारको मस्तुसुरासवादीनाम्। (चक्र.-च.सू. 11/37), स्तैमित्य कारक मस्तु, सुरा, आसव आदि को अभिष्यन्दी कहा गया है, channel blocker 2. अभिष्यन्दी दोषसङ्घातविच्छेदकम्। (चक्र.-च.सू. 13/98), दोषों के संघात को काटने वाला अभिष्यन्दी कहा गया है, that disintegrates the compact doshas

अभिसंस्कार abhisaṃskāra
सततोपयोगेन शरीरभावनम्। (चक्र.-च.सू. 26/104), निरन्तर उपयोग द्वारा शरीर को किसी भाव के अनुकूल करना अभिसंस्कार है, to make body compatible by continuous use

अभीक्ष्ण abhīkṣṇa
पुनःपुनः। (चक्र.-च.सू. 8/6), अनवरत, repeatedly, continous

अभुक्तवत abhuktavata
भोजनं अकृतवत्। (ड.-सु.सू. 12/6), खाना न खाना, भूखा रहना, यह शल्यचिकित्सा से पहले की क्रिया है, not taking food, one of the pre-operative procedures

अभुक्तवत अग्निकर्म abhuktavata agnikarma
मूढगर्भाश्मरीभगन्दरोदरार्शोमुखरोगेष्वभुक्तवतः कर्म कुर्वीत।। (सु.सू. 12/6), बिना भोजन खिलाए अग्निकर्म (मूढगर्भ, अश्मरी, भगन्दर, उदररोग, अर्श तथा मुखरोगों में), empty stomach cauterization

अभूत्वोत्पत्ति abhūtvotpatti
अभूत्वोत्पत्ति पूर्वमसत उत्पत्तिः। (चक्र.-च.सू. 30/27), जिसकी सत्ता पहले न हो, उसका उत्पन्न होना, अभूत्वोत्पत्ति कहा जाता है अर्थात् किसी भी काल में आयुर्वेद का अस्तित्व न रहा हो, ऐसा कहीं उपदेश प्राप्त नहीं होता, evolution of previously non-existent

अभ्यास abhyāsa
भावाभ्यसनमभ्यासः। (च.सू. 26/34), भावस्य षष्टिकादेर्व्यायामादेश्चाभ्यसनमभ्यासः। अभ्यसनमेव पर्यायाभ्यां-शीलनं सततक्रियेति। (चक्र.-च.सू. 26/34), किसी भाव का निरन्तर सेवन जैसे साठी, व्यायाम आदि का निरन्तर सेवन अभ्यास है, इसके पर्याय शीलन एवं सततक्रिया हैं, practice

अमरवारुणी amaravāruṇī
जिह्वाप्रवेश सम्भूतवह्निनोत्पादितः खलु, चान्द्रः स्रवति यः सारः स स्यादमरवारुणी।। (र.चू.), तालु विवर में जिह्वा को प्रवेश करने से वहाँ पर ऊष्मा उत्पन्न होकर साररूपी चन्द्रस्राव होता है, यह अमरवारुणी कहलाता है, यह मधुर एवं शीतल होता है, salivary secretion

अमर्ष amarṣa
अक्षान्तिः। (चक्र.-च.चि. 9/12), क्रोध, असहिष्णुता, anger, intolerance, impatience

अमर्षहन amarṣahana
अमर्षः अक्षमा, तां हन्तीति अमर्षहनः। (चक्र.-च.सू. 8/18), अमर्ष का अर्थ असहनशीलता या क्रोधित होना है, अपने स्वभाव में क्रोध को खत्म करने वाला अमर्षहन कहलाता है, forgiver who does not become angry

अमार्गप्रसृता amārgaprasṛtā
अमार्गे अधर्मे प्रसृता अमार्गप्रसृता। (चक्र.-च.सू. 11/16), जो अधर्म में फैली हुई हो, उसे अमार्गप्रसृता कहा जाता है, unethical, which is not based on righteousness

अमितसंकल्प amitasaṅkalpa
अमितसंकल्प इति युगपदपरिमितस्थावरजङ्गमरूपकार्यकर्तृत्वेनापरिमित तज्जनन संकल्प इत्यर्थः। (चक्र.-च.सू. 25/23), एक साथ ही स्थावर जंगम रूप कार्य के

कर्ता होने से असीमित पदार्थों की उत्पत्ति के संकल्प वाला होना अमितसंकल्प कहा गया है, boundless determination

अमितायु
amitāyu
अमितमिवामितं अतिदीर्घत्वात्। (चक्र.-च.सू. 1/26), अति दीर्घ आयु को अमितायु कहते हैं; रसायनादि से भरद्वाज ने अमितायु प्राप्त की थी, a person having unlimited life span, Bhardwaj attained amitayu with the help of rejuvenating drugs

अमृतीकरण
amṛtikaraṇa
लोहादीनां मृतानां वै शिष्टदोषानुपत्तये, क्रियते यस्तु संस्कार अमृतीकरणं मतम्।। (र.त. 2/58), धातुओं की भस्म निर्माण करने पर उसमें रहे हुये शेष दोषों को दूर करने के लिये जो संस्कार किया जाता है, उसे अमृतीकरण कहते हैं, यह ताम्र एवं अभ्रकभस्म के लिये विशेष रूप से किया जाता है, refining calcined preparation

अम्लपञ्चक
amlapañcaka
कोलदाडिमवृक्षाम्लचुल्लिकाचुक्रिकारसः। पञ्चाम्लकं समुद्दिष्टं तच्चोक्तं चाम्लपञ्चकम्।। (र.र.स. 10/80), अम्लवेतसजम्बीरमातुलुङ्गनारङ्गनिम्बुकैः।। फलपञ्चाम्लकं ख्यातं कीर्तितञ्चाम्लपञ्चकम्।। (र.त.), बेर, अनार, वृक्षाम्ल, लोनी शाक, चुक्रिका, अम्लपंचक कहे जाते हैं, अम्लवेतस, जम्बीरी नींबू, मातुलुंग, नारंगी, निम्बुक अम्लपंचक हैं, a group of five sour herbs

अम्लरस
amlarasa
जिह्वामुद्वेजयति, उरकण्ठं विदहति, मुखं स्रावयति, अक्षिभ्रुवं सङ्कोचयति, दशनान् हर्षयति रोमाणि च। (अ.सं.सू. 18/4), जो जिह्वा को उत्तेजित करता है, उर एवं कण्ठ में दाह उत्पन्न करता है, मुख से स्राव कराता है, अक्षि एवं भौंह का संकोच करता है, दन्तहर्ष एवं रोमहर्ष करता है, वह अम्लरस है, sour taste

अम्लवर्ग
amlavarga
अम्लवेतसजम्बीरनिम्बुकंबीजपूरकम्। चाङ्गेरी चणकाम्लं च अम्लीकं कोलदाडिमम्। अम्बष्ठा तिन्तिडीकञ्च नारङ्गं रसपत्रिका। करवन्दं तथा चान्यदम्लवर्गः प्रकीर्तितः।। (र.र.स. 10/77-79), अम्लवेतस, जम्बीरीनींबू, निम्बू, बिजौरा नींबू, चांगेरी, चणकाम्ल, इमली, बेर, अनार, अम्बष्ठा, वृक्षाम्ल, नारंगी, रसपत्रिका (चूकम) और करौंदा, यह अम्लवर्ग के द्रव्य हैं, a group of sour drugs

अम्लविपाक
amlavipāka
पित्तकृत् सृष्टविण्मूत्रः पाकोऽम्लः शुक्रनाशनः। (च.सू. 26/62), जो पित्तवर्धक, मल, मूत्र का प्रवर्तक एवं शुक्र का नाशक हो, वह अम्लविपाक है, sour type post-digestive changes

अर्दयति
ardayati
पीडयति। (विज.-मा.नि. 22/45), पीड़ित करना, to compress

अर्धावभेदक
ardhāvabhedaka
अर्धावभेदः अर्धमस्तक वेदना। (चक्र.-च.सू. 7/16), आधे सिर में पीड़ा करने वाला एक शिरो रोग, hemicrania

अर्बुद
arbuda
1.एक रोग (सु.नि. 11) 2. अर्बुदं वर्तुलोन्नतम्। (चक्र.-च.शा. 4/10), गोलाकार उभरी हुई आकृति (गर्भावस्था के द्वितीय मास में गर्भ आकृति), spherical foetus (during 2nd month of intrauterine life)

अर्श
arśa
अरिवत् प्राणान् शृणोति हिनस्तिः। अरिवत् प्राणिनो मांसकीलका विशंसन्ति यत्। अर्शांसि तस्मादुच्यते गुदमार्ग निरोधतः। (अ.हृ.नि. 7/1), जो शत्रु के समान प्राणों को कष्ट में डाले, जो मांसकीलक गुदमार्ग एवं अन्य मार्गों में अवरोध उत्पन्न करके मनुष्यों को शत्रु के समान नष्ट करते हैं, वे अर्श कहलाते हैं, polypoidal mass, haemorrhoids

अलक्तक
alaktaka
जरायुमात्र प्रच्छन्ने रविरश्म्यावभासिते। घृतस्य निश्चलं सम्यग्लक्तक रसांकिते।। (अ.हृ.उ. 1/31), अलक्तरसेन यावकेन। (अ.हृ.उ. 3/31), लाक्षारस (से चिह्नित करना), महावर, red juice of lac

अलगर्दा
alagardā
रोमशा महापार्श्वा कृष्णमुखी अलगर्दा। (सु.सू. 13/11), वलियुक्तत्वात् रोमावततेव प्रतिभाति। (ड.-सु.सू. 13/11), सविष जलौका, शरीर के ऊपर रोमों से पूर्ण, बड़े पार्श्वयुक्त एवं काले वर्ण के मुख वाली जौंक अलगर्दा है, a poisonous leech

अलाबु
alābu
1. वल्लीफलशाक। (च.सू. 27/112), अलाबुः तुम्बिनी। (ड.-सु.सू. 46/211), अलाबुर्भिन्नविट्का। (सु.सू. 46/215), बेल पर उगने वाली सब्जी, अलाबु, लौकी, यह मल भेदक है, bottle gourd, laxative property of bottle gourd 2. अलाबु कटुकं रुक्ष तीक्ष्णं च परिकीर्तितम्। तस्माच्छ्लेष्मोपसृष्टे तु हितं तदवसेचने।। (सु.सू. 13/7), यह कटुरस वाली, रुक्ष और तीक्ष्ण होती है इसलिए श्लेष्मा से दुष्ट रक्त के अवसेचन में हितकर है, bottle gourd, used for drawing kapha afflicted blood

अल्पप्रज
alpapraja
सहजार्श लक्षण। (सु.नि. 2/15), अल्प संतान वाला, a person with few progeny/offspring, a feature of a person with hereditary piles

अवगाह स्वेद
avagāha sveda
अवगाहः अवगाह स्वेदः। (चक्र.-च.सू. 14/45), वातनाशक द्रव्यों के क्वाथ में शरीर निमज्जन द्वारा स्वेद, immersion sudation

अवगुण्ठन avaguṇṭhana

अक्ष्णश्चूर्णवस्त्रादिभिराच्छादनम्। (अ.सं.उ. 19), चूर्ण एवं वस्त्रादि से नेत्रों का आच्छादन, to cover

अवधमन avadhamana

विलिखतीत्यर्थः। (चक्र.-च.सू. 27/4), शीधुरवधमयति वाय्वग्निप्रबोधनात्। (हारीत), लेखन करना जैसे शीधु, वायु एवं अग्नि को प्रेरित करने से लेखन करता है, scrapping

अवनामित avanāmita

अधोगतम्। (ड.-सु.चि. 3/17), नीचे की ओर झुका या दबा हुआ, depressed, pushed downwards

अवन्तिसोम avantisoma

अवन्तिसोमे काञ्जिके।। (हे.-अ.हृ.सू. 26/40), कांजी, sour drink prepared by fermentation of rice water, sour vinegar

अवपीडक avapīḍaka

1. अवपीडको बहुमात्र प्रयोगः, मात्राधिकत्वेन हि भेषजं दोषान् पीडयनीति कृत्वा। (चक्र.-च.सू. 7/7), अधिक मात्रा में औषध का प्रयोग, बहुमात्र में प्रयुक्त स्नेह औषध दोषों को पीडित करके दूर करती है, use of unction in high does 2. मूत्रजेषु तु पाने च प्रागभक्तं शस्यते घृतम्। जीर्णान्तिकं चोत्तमया मात्रया योजनाद्वयम्।। अवपीडकमेतच्च संज्ञितमिति। (अ.हृ.सू. 4/16), वाग्भट मतानुसार मूत्रविकारों में भोजन से पूर्व एवं भोजन के जीर्ण होने के अंत में, घृत की उत्तम मात्रा का प्रयोग अवपीडक है, taking high dose of ghee prior to meal and on digestion of meal, it is particularly indicated in urinary disorders 3. नासाया प्रणीयमानः कल्को अवपीड संज्ञः। (अ.सं.सू. 29), कल्क को दबाकर नासा में नस्यकर्म के लिए डालने को अवपीड कहते हैं, putting drops in nostrils by pressing the kalka of the drug

अवम्या avamyā

रोग एवं रोगी जिनमे वमन कर्म वर्जित है। (च.सि. 2/8), contraindication of emesis

अवलम्बमान avalambamāna

नीचे की ओर लटकता हुआ। (सु.शा. 8/8), hanging down

अवलेह avaleha

क्वाथादीनां पुनः पाकाद् घनत्वं सा रसक्रिया। सोऽवलेहश्च लेहः स्यात्तन्मात्रा स्यात्पलोन्मिता।। (शा.सं.म.ख. 8/1), जिह्वा लेह्या अवलेहिका। (श.क.द्रु.), क्वाथ आदि को पुनः पाक कर उसको घन बनाकर जो कल्पना बनती हैं, वह रसक्रिया है, यही लेह, अवलेह है, इसकी मात्रा 'पल' है, semisolid lickable preparation, confection

8—4 Min. of HRD/2016

अवसादन avasādana

अवसादनं उन्नतव्रणस्य निम्नत्वकरणम्।। (सु.चि. 1/18), उभरे हुए व्रण को निम्न करना, व्रण के उठे भाग को लेखन कर नीचे समतल करना, depression, degranulation

अवाक्शिर avākśira

नतमस्तकः। (च.वि. 8/13), शिर को नीचे की ओर झुकाना, downward bending of head

अविक्लेद avikleda

अविक्लेदः पाककालादर्वागविक्लिन्नत्वम्। (चक्र.-च.सू. 12/8), धान्य के पाककाल से पहले उसे सड़ने न देना अविक्लेद है, removal of humidity from the cereals prior to their ripening

अविद्धा देखें अपविद्धा

अविरेच्या avirecyā

रोग एवं रोगी जिनमें विरेचन कर्म वर्जित है। (च.सि. 2/11), contra indications of virecana

अविशोषी aviśoṣī

अविशोषी अपीडयितव्ये व्रणशोफे। (ड.-सु.सू. 18/6), जो व्रणशोफ को न दबाए, इस प्रकार का प्रलेप, paste which does not press the vrana shopha

अव्यङ्ग avyaṅga

अव्यङ्ग सम्पूर्णाङ्गः। (इंदु.-अ.हृ.उ. 16), अव्यङ्गमिति अहीनाङ्गः। (चक्र.-च.शा. 8/52), सम्पूर्ण अंग युक्त, perfect body parts

अव्यध्या avyadhyā

अशस्त्रकृत्या अव्यध्या। (सु.शा. 8/19), जो सिरा व्यधन के योग्य नहीं हैं या शस्त्रप्रयोग के योग्य नहीं हैं, एक प्रकार का दुष्टवेध, a defective venepuncture

अव्याहत avyāhata

अव्याहतमिति क्वचिदपि विषयेऽकुण्ठितशक्तित्वेन। (चक्र.-च.सू. 11/18), अव्याहतबलाङ्गमुखरोगो वर्धते सुखम्। शिशुधात्र्योरनापत्तिः शुद्धक्षीरस्थ लक्षणम्।। (का.सं.सू. 19), किसी विषय के ज्ञान में कोई भी रुकावट न होना अव्याहत कहा जाता है, शिशु के बल, अंग तथा आयु निर्बाधित हों, रोगमुक्त होकर सुखपूर्वक वृद्धि को प्राप्त होता हो तथा शिशु एवं धात्री को कोई कष्ट न हो तो दूध को शुद्ध समझना चाहिए, uninterrupted, unimpeded growth (of infant because of pure breast milk)

अव्याहतबल avyāhatabala

1. अव्याहतबल इति कालमार्गमेघवातादिभिस्तदा सूर्यस्य सोम परिपन्थिनो हतबलत्वात्। (चक्र.-च.सू. 6/5), विसर्ग काल में काल, मार्ग, मेघ एवं वायु के सौम्य होने से सूर्य का बल कम हो जाता है तथा चन्द्रमा का बल बढ़ जाता है; यह अव्याहतबल है, decrease in power of sun and increase in power of

moon due to saumya environment 2. अव्याहता पक्तिश्च वेगश्च पुरीषादीनां यस्य स तथा। (चक्र.-च.सू. 24/24), जिसकी जठराग्नि प्रदीप्त हो एवं पुरीषादि वेग अवरूद्ध न हो, a condition in which a person has a good digestion and proper movements of excreta

अशक्य aśakya

अशक्य परिहर्तुमिति बलवत्कर्मजन्यत्वादित्यर्थ:। (चक्र-च.सू. 28/44), दैव के आगत व्याधियाँ चिकित्सा के उपचार योग्य नहीं होती है, यही रोग की अशक्यता का अर्थ है, incurable and unavoidable (supernatural) disorders

अशन aśana

अशनं चतुर्विधमपि भोज्यम्। (चक्र.-च.सू. 5/4), अशन से चार प्रकार के अन्न (अशित, खादित, पीत, लीढ़) का ग्रहण किया गया है, food ingestion of four types

अशब्दश्रवण aśabdaśravaṇa

अशब्दश्रवण शब्दाभावेऽपि शब्दश्रवणम्। (चक्र.-च.सू. 20/11), शब्द न होने पर भी शब्दों का सुनाई देना अशब्दश्रवण कहलाता है, auditory hallucination

अशस्त aśasta

अशस्तानां अप्रशस्तानामनिष्टफलानामिति यावत्। (चक्र.-च.सू. 7/26), अनिष्ट फल देने वाले अप्रशस्त कार्य, bad habit

अशस्तकर्म aśastakarma

अशस्तानां अप्रशस्तानमनिष्टफलानामिति यावत्। (चक्र.-च.सू. 7/26), ऐसा कर्म जिनको करने से प्रतिकूल फल की प्राप्ति हो, action that leads to untoward effect

अशिरोविरेचन aśirovirecana

रोग एवं रोगी जिसमें नस्य कर्म वर्जित है, contraindications of nasal insufflation

अश्रुमोक्ष aśrumokṣa

अश्रुमोक्ष: अश्रुनि:सारणम्। (सु.उ. 55/28), आंसुओं को निकालना, प्रवृत्त करना, अश्रुज उदावर्त की चिकित्सा के संदर्भ में, to promote tear secretion, lacrimation

अश्मगर्भ aśmagarbha

1. अश्मा गर्भेऽभ्यन्तरे यस्य तत् मणिविशेष:। (अ.सं.सू. 21/4), मरकत मणि, a precious stone 2. अश्मवान् गर्भ, stony dull foetus

अश्मघनस्वेद aśmaghanasveda

एक शयन योग्य प्रमाण में पत्थर की पट्टी लेकर उस पर लकड़ी जलाकर गर्म करें, फिर राख को हटाकर गर्म पानी से धोकर, पट्टी पर चादर बिछाकर रोगी को लिटाकर स्वेदन करने को अश्मघन स्वेद कहते हैं। (च.सू. 14/47-49), take a stone slab sufficient for lying down a person, fire the woods on it, when

hot, remove the ash and wash the slab; on this hot slab put a bed sheet and the person gets sudation by tying on it, warm stone bed sudation

अश्मरी aśmarī

रोग:। तत्रसंशोधनशीलस्यापथ्यकारिण: प्रकुपित: श्लेष्मा मूत्रसम्प्रक्तोऽनुप्रविश्य बस्तिमश्मरीं जनयति।। (सु.नि. 3/4), असंशोधनशील व अपथ्यकारी व्यक्ति का प्रकुपित कफ मूत्र के साथ मिलकर बस्ति (मूत्राशय) में प्रविष्ट होता है व अश्मरी को उत्पन्न कर देता है, urinary bladder stone, urolithiasis

अश्रद्धा aśraddhā

अश्रद्धायां मुखप्रविष्टस्याहारस्याभ्वहरणं भवन्त्येव परत्वनिच्छा। (चक्र.-च.सू. 28/9), जिसमें अन्न का आमाशय में प्रवेश होता है परन्तु खाने की इच्छा सर्वथा नहीं होती है, वह अश्रद्धा है, disinclination for food

असंज्ञता asaṃjñatā

संज्ञानाश:। (विज.-मा.नि. 2/74), संज्ञा का नाश होना, loss of consciousness

असंमोह asaṃmoha

असंमोह असंमूढता, स चामपक्वव्रण परिज्ञाने तथा प्राप्तानुष्ठाने च। (ड.-सु.सू. 5/10), मूढ़ता न होना, शस्त्र चिकित्सा के समय मोह न होना, apprehension, not becoming sentimental while doing surgical procedure

असङ्घात asaṅghāta

असंघात: अनुत्पादोऽपचयो वा। (चक्र.-च.सू. 12/8), असंघातमिति पित्तश्लेष्मवदवयवसङ्घात रहितम्। संघात रहित, अनुत्पन्न, अनुपचय, unproduced, undeveloped, formless

असत् asat

असदिति निषेधविषयप्रमाणगम्यमभावरूपम्। (चक्र.-च.सू 11/17), अस्तित्वहीनता के विषय, जो प्रमाणों से अस्तित्वहीन वाले असत् कहे जाते हैं, non existent object

असन्त asanta

अधार्मिकास्तु विद्यमाना अप्यप्रशस्तावस्थानत्वेन असन्त इत्युच्यन्ते। (च.सू. 8/17), अप्रशस्त कार्य करने के कारण अधार्मिक लोग 'असन्त' हैं, unreligeous persons indulged in unethical things

असात्म्येन्द्रियार्थ संयोग asātmyendriyārtha saṃyoga

तत्र असात्म्येन्द्रियार्थ संयोगो अयोगातियोगमिथ्यायोगयुक्तारूपरसाद्या:। (विज.-मा.नि. 1/15), रूप, रस आदि इन्द्रियार्थों के साथ (चक्षु आदि) इन्द्रियों का हीनयोग, अतियोग और मिथ्यायोग असात्म्येन्द्रियार्थ संयोग कहलाता है, less, excessive and improper contact of sensory organs with their subjects

असार asāra

अशुद्धलोहादिघटितम्। (ड.-सु.सू. 7/19), अशुद्ध लोहादि धातु से निर्मित (यंत्र), एक प्रकार का यन्त्रदोष, made of impure metals, a type of defect in instruments

अस्निग्ध asnigdha

रूक्षे अस्निग्धे। (अरु.-अ.हृ.सू. 16/31), अस्निग्धलक्षणामाह रूक्ष इति। (हे.-अ.हृ.सू. 16/31), ऐसे व्यक्ति जिनमें रूक्षता बनी रहे, वह अस्निग्ध कहलाते हैं, inadequate oleation leading to persistent roughness

अस्नेह्य asnehya

ऐसे रोग या रोगी जिनमें स्नेहन नहीं करना चाहिए, contraindications of oleation/unction

अस्वेद्य asvedya

न स्वेदयेतिस्थूलरूक्षदुर्बलमूर्च्छितान्।। (अ.हृ.सू. 17/21), अतिस्थूल, रूक्ष, दुर्बल एवं मूर्च्छित व्यक्तियों को स्वेद नहीं देना चाहिए, persons unfit for sudation

अहन्यहनि ahanyahani

रक्षामत: प्रवक्ष्यामि बालानां पापनाशिनीम्।। अहन्यहनि कर्त्तव्या या भिषग्भिरतन्द्रितै:।। (सु.उ. 28/10), (स्कन्दापस्मार ग्रह से ग्रस्त के लिए) प्रतिदिन किए जाने वाले कर्म, daily

अहर्षण aharṣaṇa

अहर्षणं च सत्यपि ध्वजोत्थाने मैथुनाशक्ति। (चक्र.-च.सू. 28/18), शिश्न (लिंग) का उत्थान होने पर भी मैथुन कर्म असमर्थता का होना, अहर्षण कहलाता है, erectile dysfunction

अहिपूतन ahipūtana

1. कण्डूयनात्तत: क्षिप्रं स्फोटा: स्रावश्च जायते। एकीभूतं व्रणैर्घोरं तं विद्यादहिपूतनम्।। (सु.नि. 13/58), बच्चों के गुद प्रदेश में कंडू, स्फोट एवं स्राव से युक्त व्रणों का उत्पन्न होना, anal suppuration in neonates, napkin rash 2. केचित्तं मातृकादोषं वदन्त्यन्येऽहिपूतनम्। कुछ आचार्यों के मतानुसार अहिपूतन मातृका (ग्रह) दोष है, a disorder caused by graha (supernatural powers)

आकण्ठ ākaṇṭha

तृप्तिपर्यन्तम्। (अ.हृ.सू. 18/14), तृप्ति होने तक, आहार लोलुप व्यक्ति द्वारा कण्ठ पर्यन्त आहार सेवन, full satiety meal

आकर ākara

उपादानम्। (अ.सं.सू. 6/133), कारणरूपद्रव्य, आसव अरिष्ट आदि औषध बनाने में जिस द्रव्य से औषध बनता है, उस कारणभूत द्रव्य को आकर कहा जाता है, raw material for drug preparation (fermented preparation)

आकरालका ākarālakā

विदलधान्य, मसूरिका। (ध.नि. 6/95), शिम्बीधान्य, मसूर की दाल, a lentil

आकर्णिक ākarṇika

कर्णिकां मर्यादिकृत्य। (ड.-सु.चि. 38/3), कर्णिका पर्यन्त, बस्तिकर्म में बस्तिनेत्र का गुदा में कर्णिका के स्तर तक प्रयोग, use of enema nozzle in anus up to ridge

आकाश ākāśa

1. महाभूत, सत्वबहुलम्। (सु.शा. 1/20), पञ्चमहाभूत में से एक महाभूत, प्रथम महाभूत, one among five basic evolutionary elements, first mahabhuta 2. अवकाशदानेन आकाश:। रिक्त स्थान, empty space

आकाशात्मक ākāśātmaka

आकाशगुणभूयिष्ठ, आकाशीय। (च.शा. 4/12), (च.सू. 26/11), आकाश महाभूत प्रधान द्रव्य, predominant in akash mahabhuta

आकुञ्चन ākuñcana

संकोचन, संकुचन। (सु.शा. 7/3), कुटिलीकरणमिव। (ड.-सु.सू. 22/11), संकोच सदृश वेदना, contraction

आकुली ākulī

गन्धनाकुली। (र.र.स. 17/44), भीमपराक्रमरस में वर्णित एक आयुर्वेदिक औषधि, a herb

आकोटन ākoṭana

पीडनम्। (चक्र.-च.शा. 8/41), ताडन या पीडन, percussion

आकोठित ākoṭhita

ताडित। (च.चि. 13/48), ताडन द्वारा रोगी परीक्षा, percussed

आक्त ākta

मिश्रित:। (ड.-सु.चि. 9/16), मिलित, मिश्रित, युक्त, mixed, coated

आक्रन्द ākranda

आक्रोशस्वन:। (ड.-सु.सू. 29/44), क्रन्दन, रोदन, दु:ख से रोना, crying

आक्रमण ākramaṇa

क्रामण, संक्रामणम्।' (र.र.स. 30/90), पारद के अष्टादश संस्कार में एक, चतुर्जात, कंकोल, कटुकाफल, ताम्बूलवल्ली से किया पारद संस्कार, one among eighteen processings of mercury

आक्ष ākṣa

बिभीतकफलम्। (ड.-सु.सू. 46/200), बिभीतकफल, बिभीतक से सम्बन्धित, बहेडा, Beleric myrobalan, Beddanut, lat - *Terminalia belerica*

आक्षिक ākṣika

अक्षिकीफलम्। (ड.-सु.सू. 46/194), बिभीतक फल, बहेडा फल, fruit of Beleric myrobalan

आक्षिकी ākṣikī

पाण्डुरोव्रणहिता दीपनी। (च.सू. 27/186), बिभीतकफल कृत मद्य जो पाण्डुरोग एवं व्रण में प्रशस्त एवं दीपन है, alcohlic preparation derived from fruit of Beleric myrobalan

आक्षिपति ākṣipati

देहं हस्त्यारुढपुरुषस्येव गात्रं चालयति। (म.को.- 22/27), हाथी के ऊपर रुढ पुरुष के समान गात्र का चलना, convulsions

आक्षेप
ākṣepa
1. आकर्षणम्। (अरु.-अ.हृ.सू. 28/5), क्षोभ: (अरु.-अ.हृ.सू. 5/9), चालन, आकर्षण या आकुंचन, शरीर में बार-बार आकुंचन गति होना, convulsions 2. आदानम्। (अरु.-अ.हृ.सू. 21/12), अन्दर लेना या खींचना, धूम्रपान के प्रसंग में धूम को अन्दर लेना, inhalation 3. मुहुर्मुहुरंगानामाक्षेपणमाक्षेप:। (चक्र.-च.सू. 7/19), अंगों का बार बार संकोच प्रसार 'आक्षेप' है, frequent involuntary movements of the body parts

आक्षेपक
ākṣepaka
मुहुरेव देहमाक्षिपति स आक्षेपणादाक्षेपक इति। (गय.-सु.नि. 1/52), बार-बार देह का चालन या कम्पन होना, अस्सी वात विकारों में से एक। (च.सू. 20/11), convulsive disorder, one among eighty vatarogas

आक्षेपण
ākṣepaṇa
अतिशयेन चालनम्। (ड.-सु.नि. 15/3), अङ्गस्याकर्षणेन त्रोटनम्। (इन्दु), अंगविक्षेप, हस्तपाद अतिशय चालन, हाथ पैर में संकोच प्रसार का बार-बार होना, convulsions, inoluntary contractions

आक्षोड
ākṣoḍa
अक्षोट:। (ध.नि. 5/60), आक्रोड, अखरोट, walnut

आखु
ākhu
मूषिका। (सु.शा. 4/67), वृक्षमूषिक:। (ड.-सु.उ. 41/36), मूषिक, चूहा, rat, mouse, a rodent

आगति
āgati
उत्पादककारणस्य व्याधिजननपर्यन्तं गमनम्। (चक्र.-च.नि. 1/11), सम्प्राप्ति का पर्याय, उत्पादककारण से दोष दूषित होकर एवं व्याधि के उत्पन्न होने तक की अवस्था, a synonym of samprapti (pathogenesis)

आगन्तु
āgantu
पश्चात्कालभावि, लिंगयारोग्यमागन्तु वक्तव्यं भिषजा ध्रुवम्। (च.इ. 12/65), चत्वारो रोगा भवन्ति - आगन्तुवातपित्तश्लेष्मनिमिता:। (च.सू. 20/3), पूर्वमुत्पन्नत्वादागन्तो: प्रागभिधानम्। (ड.-सु.सू. 1/24), अभिघातनिमित्ता, अभिघात: अभिहननं शरादिप्रहार:। (ड.-सु.सू. 1/25), बाह्यकारण विशेष अर्थात् अभिघात से उत्पन्न, exogenous factor

आगन्तुक
āgantuka
शारीरशल्यव्यतिरेकेण यावन्तो भावा दु:खमुत्पादयन्ति। (सु.सू. 26/6), भावा इति पदार्थास्तृणकाष्ठपाषाणलोहलोष्टप्रभृतय:। (ड.-सु.सू. 26/6), शरीर के अलावा अन्य शल्य जैसे तृण, काष्ठ, पाषाण, लोह, मिट्टी का ढेला आदि बाह्य विजातीय पदार्थ, exogenous foreign materials

आगन्तुकी
āgantukī
रिष्टभूता:। (चक्र.-च.सू. 21/58), निद्रा का एक भेद, जिसका प्रादुर्भाव बाह्य कारण से होता है, one of a types of sleep

आगन्तुज
āgantuja
आगन्तु या बाह्य कारण से उत्पन्न, exogenous

आगम
āgama
1. आगच्छत्यस्मादिति आगमो हेतु:। (चक्र.-च.चि. 22/24), कारण विशेष, जिससे उत्पन्न होकर दूसरा कारण बनता है, causative factor, 2. आगमो हि शास्त्रमुच्यते। (सु.सू. 40/4), वेद:, आप्तानां शास्त्रं वा। (ड.-सु.सू. 1/16), शास्त्र, आप्त, वेद, authoritative text/person 3. आरम्भ:। (अरु.-अ.हृ.नि 2/10), उत्पत्ति:। (हे.-अ.हृ.नि. 2/10), आरम्भ, उत्पत्ति, genesis 4. एक प्राचीन रसाचार्य। (र.र. 6/52)

आगमावर्ता
āgamāvartā
वृश्चिकाली। (रा.परि. 9/8), बिछुआ, बिच्छू बूटी, *lat- Martynia diandra*

आगस्त्य
āgastya
अगस्त्यवृक्ष से प्राप्त पुष्पादि। (सु.सू. 46/282), *lat- Sesbania grandiflora*

आगार
āgāra
गृह, स्थान। (सु.चि. 6/4), घर, निवासस्थान, a house

आगारकर्णिका
āgārakarṇikā
आगारकर्णिका गृहाच्छादनमध्ये गृहाच्छादनकाष्ठ निबन्धनी लोके 'आडकम्' इत्यच्युते। (चक्र.-च.सू. 30/5), आधार काष्ठों को बाँधने वाली मुख्य स्थल काष्ठ आगारकर्णिका कहलाती है। लोक व्यवहार में उसे 'आडक' या धरन कहा जाता है या घर के मध्य प्रयुक्त वह बड़ी लकडी जिस पर सहारा देकर अन्य काष्ठ बांधे जाते है, उसको आगारकर्णिका कहते हैं, central pole of the roof

आग्नेय
āgneya
1. अग्निगुणभूयिष्ठम्। (ड.-सु.शा. 3/3), अग्नि गुण की बहुलतायुक्त, predominant in agni quality 2. कृत्तिकानक्षत्रम्। (अ.सं.उ. 41), कृत्तिकानक्षत्र, 3. सुवर्णम्। (रा.नि. 13/3), स्वर्ण, सोना, gold 4. आग्नेयौषधिगुणभूयिष्ठत्वात् कटुक उष्णस्तीक्ष्ण: पाचनो विलयन: शोधनो रोपण: शोषण: स्तम्भन: लेखन: कृम्यामकफकुष्ठ विषमेदसामुपहन्ता पुंस्त्वस्य चातिसेवित:।। (सु.सू. 11/5), अग्नि महाभूत प्रधान (औषधियों से निर्मित क्षार), a caustic agent made up of agnimahabhut predominant drugs

आग्नेयी
āgneyī
छाया का एक भेद, विशुद्धरक्ता दीप्ताया दर्शनप्रिया। (च.इ. 7/11), यह छाया शुद्धरक्तवर्ण, दीप्त आभा एवं दर्शनप्रिय होती है, a type of complexion

आघट्टक
āghaṭṭaka
अपामार्ग भेद: रक्तापामार्ग:। (रा.नि. 4/390), चिर्चिटा, चिरचिरा, prickly chaff flower, *lat- Acyranthes aspera*

आघात
āghāta
1. अवरोध: केचिदाघातशब्देन दुष्टिमाहु:। (ड.-सु.उ. 58/1), अवरोध, दुष्टि, obstruction, vitiation 2. आवेशावकाश:। (चक्र.-च.चि. 9/19), ग्रहादि आवेश, affliction by supernatural powers

आघातन āghātana
वधस्थानम्। (चक्र.-च.सू. 8/19), प्राणियों का घात स्थान, कसाई घर, प्राणी वध स्थान, slaughter house

आघ्रात āghrāta
घ्राणेन गृहीतम्। (च.सू. 17/9), नाक से सूंघना, नासा से गन्धग्रहण, snuffing

आचमन ācamana
योनिप्रक्षालनोदकम्। (ड.-सु.शा. 2/13), योनि मार्ग को औषधियों के क्वाथ आदि से प्रक्षालित करना, cleansing, vaginal douche

आचमनीय ācamanīya
आचम्यते येन पात्रेण तदाचमनम्। (चक्र.-च.सू. 15/7), आचमन से सम्बन्धित पात्र, the pot containing cleansing water

आचय ācaya
समन्ताच्चयनम्। (अरु.-अ.हृ.सू. 7/23), समुदाय, सामग्रिक भाव से तथा चारों ओर से किये गये संचय को आचय कहा जाता है, accumulation from all around

आचार ācāra
1. शास्त्रशिक्षाकृतो व्यवहारः। (चक्र.-च.इ. 1/3), कुलदेशाद्यनुगतं लौकिकं विधानम्। (ड.-सु.सू. 2/3), शास्त्र मतानुसार वर्णित या उपदेशित व्यवहार, कुल देशादि के अनुरूप व्यवहार, विधान, model code of conduct. 2. कायवाङमानसं कर्मः। (ड.-सु.सू. 1/27), कायिक, वाचिक और मानसिक कर्म, physical, vocal and psychological acts

आचारिक ācārika
आहारादिनियमम्। (हे.-अ.हृ.सू. 28/25), शल्योत्तर परिचर्या नियम। (सु.चि. 6/4), शोधन कर्म या शस्त्रकर्म के पूर्व एवं पश्चात् में आहारादि एवं चर्या को आचारिक कहते हैं, dietary and daily regimen, pre and post operatively

आचित ācita
व्याप्तम्। (ड.-सु.नि. 16/6), युक्त, व्याप्त, परिपूर्ण, afflicted, covered, full of

आचूची ācūcī
बालकों में औषध प्रदान करने का साधन। (का.सि. 3), a spoon to give medicines to a child

आचूषण ācūṣaṇa
विषदुष्टस्तन्यरुधिरेषु श्रृङ्गालाबूभ्यां मुखेन वा। (सु.सू. 7/13), मुखश्रृंगैः कृत्वा यच्चूष्येत्। (ड.-सु.सू. 27/4), श्रृंग, अलाबू या मुख द्वारा विषदुष्ट स्तन्य एवं रुधिर को निकालना, suction

आच्छादन ācchādana
वस्त्रादि। (ड.-सु.सू. 14/36), आवरण या आवृत करना। (अ.हृ.सू. 26/41), covering

आज āja
अजा या बकरी से सम्बन्धित जैसे दुग्ध, मूत्र आदि। (सु.सू. 45/47), related to goat

आजन्म ājanma
जन्मप्रभृतिः। (अरु.-अ.हृ.सू. 10/7), जन्म से प्रारम्भ होकर अद्यतन, जन्म से विद्यमान, inherited, present since birth

आज्य ājya
घृतम्। (र.त. 2/20), घृत, घी, गोघृत, ghee

आञ्छन āñchana
ईषन्मुखानयनम्, ईषन्मुखे आनयनमित्यर्थः। (ड.-सु.सू. 7/17), अतिक्षिप्तस्यास्थ्नः कुञ्चितस्य वाङगुल्यादेरायमनम्। (हारा.-सु.सू. 7/17), छोटे मुख को फैलाना, संकुचित अंग को फैलाना, extension

आटक āṭaka
गुग्गुलुः। (र.र.स. 20/130-136), गूगल, Indian Bdellium, *lat- Commiphora mukul*

आटरूष āṭarūṣa
वासा का पर्याय। (भा.प्र. गुडूच्यादि 88), हिं.- अडूसा, eng- malabar nut, *lat - Adhatoda vasica*

आटरूषक āṭarūṣaka
वासकः। (ड.-सु.सू. 46/262), वासा, देखें आटरूष

आटव्या āṭavyā
कण्टकारीभेद, कासघ्नी इति। (ध.नि. 1/98), छोटी कटेरी, *lat - Solanum xanthocarpum*

आटा āṭā
आटीपक्षी। (अ.हृ.सू. 26/10), आटा पक्षी के मुख सदृश एक शस्त्र, a bird, an instrument resembling mouth of ata bird

आटी āṭī
जलवर्धनी नाम पक्षीविशेषः। (ड.-सु.सू. 8/3) समुद्र किनारे कोंकण प्रान्त में पाया जाने वाला बक सदृश पक्षी, a bird

आटोप āṭopa
गुडगुडाशब्दविशेषो। (चक्र.-च.नि. 8/6), उदरापूरः। (ड.-सु.उ. 42/8) आध्मानम्, क्षोभमित्यन्ये। (ड.-सु.सू. 15/15), उदर में आध्मान एवं गुडगुडशब्द होना, distension of abdomen with gurgling

आडूक āḍūka
पात्रविशेष, बालकों को औषध प्रदान करने हेतु क्षुद्रनौकाकार पात्र। (का.सि. 3), a spoon for giving medicine to children

आढ āḍha
मान का एक प्रकार, आढक मान। (र.त. 11/11), चार प्रस्थ एवं 64 तोला के बराबर, a measurement equivalent to 64 tola

आढक āḍhaka
चतुःप्रस्थमाढकम्। (च.क. 12/94), मान का एक भेद, चार प्रस्थ के तुल्य, a measurement equivalent to 4 prastha

आढकी
āḍhakī
1. तुवरी। (चक्र.-च.सू. 21/26), अरहर दाल, तौरदाल, a lentil, 2. सौराष्ट्री (ध.नि. 3/106), फिटकरी, alum

आढ्य
āḍhya
धनवान्। (अरु.-अ.हृ.सू. 1/29), धनवान व्यक्ति, rich

आढ्यवात
āḍhyavāta
आढ्यानां प्रायो भवतीतिः। (चक्र.-च.चि. 29/11), आढ्यवात मेदसा रुद्धमार्ग वातम्। (इन्दु.-अ.हृ.सू. 15/22), वातरक्तरोग, धनवान व्यक्तियों को अधिक होने से इसे आढ्यवात कहते हैं, मेद से वायु का मार्ग अवरुद्ध होने से उत्पन्न वातरोग, gout

आणि
āṇi
वैकल्यकार मर्म, जानुन ऊर्ध्वमुभयतस्त्र्यङ्गुलं आणी। (सु.शा. 6/24), जानु के दोनों ओर से तीन अंगुल छोडकर मध्यवर्ती स्थान में स्थित स्नायुमर्म, इसके वेधन से शोफ वृद्धि, सक्थिस्तब्धता होती है, a vital spot, ligaments of knee joints

आणी
āṇī
देखें आणि

आण्डूक
āṇḍūka
वंग। (रा.नि. 13/14), खनिजद्रव्य वंग, रांग, मिश्रधातु, tin

आतङ्क
ātaṅka
भयमप्युच्यते। (चक्र.-च.नि. 1/5), यह व्याधि का पर्याय है, यह भय का बोध कराता है, a synonym of disease, depicting fear

आतत
ātata
व्याप्त। (सु.शा. 9/9), त्वक्संकोचरहितम्। (ड.-सु.सू. 17/5), व्याप्त, चारों ओर विस्तारित होना, spreading in all directions

आतप
ātapa
तेजः परमाणुपुञ्जः। (ड.-सु.चि. 24/86), सूर्यप्रकाश, सूर्यकिरण, परमाणु समूह, sunrays

आतपासहत्व
ātapāsahatva
सूर्य का प्रकाश सहन न होना, सूर्य प्रकाश असहिष्णुता। (च.नि. 1/33), photo hypersensitivity

आतस्य
ātasya
उमातैलम्। (चक्र.-च.सू. 27/292), अतसीतैल, linseed oil

आतुर
ātura
रोगी। (च.सू. 1/24), रोगी, पीडित, आहत, उत्सुक, patient, sufferer, hurt, eager

आतुरावस्था
āturāvasthā
कार्याकार्ये प्रति कालाकालसंज्ञा। (च.वि. 8/128), रोगी की अवस्थाविशेष, रोग की जिस अवस्था में औषध प्रयोग करना है वह काल, तथा जिसमें नहीं करना है, वह अकाल है, stages in a disease

आतुरोपक्रमणीय
āturopakramaṇīya
यादृश आतुर उपक्रम्यो भवति तादृशोपक्रमणधिकृत्य कृतोऽध्यायः। (ड.-सु.सू. 35/1), सुश्रुतसंहिता सूत्रस्थान का 35 वाँ अध्याय, रोगी की चिकित्सा जिस प्रकार से करनी चाहिये, उस विधि के सम्बन्ध में वर्णित अध्याय, a chapter depicting treatment procedure of patient

आतुरोपद्रवचिकित्सित
āturopadravacikitsita
स्नेहादिनां निरूहान्तानामुपक्रमाणामन्तेऽग्निमाद्यमेवावश्यम्भावि, तत्सन्धुक्षणार्थं पेयादिसंसर्जनोपदेशाय वर्ज्यानां च क्रोधादीनां प्रज्ञापराधात् करणे तज्जव्याधिप्रशमनाय चातुरोपद्रवचिकित्सताभिधानम्। (ड.-सु.चि. 39/1), स्नेहादि विधि से निरूह बस्ति तक की चिकित्सा के बाद जो अग्निमांद्य होता है, उसमें अग्निवृद्धि के लिये पेयादि संसर्जन क्रम का प्रयोग, क्रोधादि वर्ज्य विषयों का उपदेश एवं प्रज्ञापराध जन्य व्याधियों के प्रशमन का उपाय इस अध्याय में किया गया है, a chapter depicting complications and their management in biopurification therapy

आतुर्य
āturya
आतुरभाव, रोग, अनारोग्य। (च.चि. 1(1)/79), रोगी को आतुर कहते हैं, उसके भाव को आतुर्य कहते हैं, disease

आत्त
ātta
गृहीतम्। (अरु.-अ.हृ.सू. 1/28), प्राप्त करना, ग्रहण करना, वैद्यलक्षण, attained, knowledge attained from precepter, a quality of physician

आत्मगुप्ता
ātmaguptā
कपिकच्छूः। (ड.-सु.सू. 46/36), (ड.-सु.उ. 52/42), कौंच, केंवाच, cowhage, cowitch, *lat - Mucuna pruriens*

आत्मजा
ātmajā
पुत्रजीवख्याता। (चक्र.-च.चि. 3/267), पुत्रजीवक, जियापोता, *lat - Putranjiva roxburghii*

आत्मवत्
ātmavat
जितेन्द्रियाणाम्। (ड.-सु.सू. 23/3), बुद्धिमान, संयमी, जितेन्द्रिय, self controlled, wise

आत्मवान
ātmavāna
1.बुद्धिमान्। (ड.-सु.सू. 34/9), intelligent 2. आत्मवानिति प्रशंसायां मतुप्प्रत्ययः। (चक्र.-च.सू. 17/119), जितेन्द्रिय, प्रशंसायोग्य, praise worthy

आत्मशल्या
ātmaśalyā
शतावरी। (रा.नि. 4/439), शतावर, *lat- Asparagus racemosus*

आत्मा
ātmā
आत्मा चेतनप्रतिसन्धाता। (चक्र.-च.सू. 8/4), ज्ञानप्रतिसन्धाता। (चक्र.-च.सू. 1/42), क्षेत्रज्ञ देहः। (ड.-सु.शा. 3/7), कर्मात्मा बद्धपुरुषः। (ड.-सु.सू. 15/41), चेतना प्रदान करने वाला आत्मा है, आत्मा, जीवात्मा, एक धातु पुरुष, आत्मा, जीवात्मा, एक धातु पुरुष, that which gives consciousness, soul

आत्मोद्भवा
ātmodbhavā
माषपर्णी। (रा.नि. 3/172), वनउडद, जीवनीयद्रव्य, *lat - Teramnus labialis*

आत्ययिक
ātyayika
अत्यय का अर्थ विनाश होता है, जो विनाशकारि हो, शीघ्र नाशक हो। (च.नि. 2/11), life threatening

आत्रेय
ātreya
अत्रि के पुत्र, पुनर्वसु अपर नाम, भरद्वाज के शिष्य एवं अग्निवेश के गुरु, एक ऋषि। (च.सू. 1/8), आत्रेय ने भरद्वाज से आयुर्वेद का ज्ञान प्राप्त कर अग्निवेश को प्रदान किया था, a sage, son of Atri, disciple of Bhardwaja and preceptor of Agnivesha

आत्रेयशासन
ātreyaśāsana
पुनर्वसु आत्रेय द्वारा रचित वैद्यकशास्त्र को आत्रेयशासन कहते हैं। (च.सू. 1/93), text written by sage Atreya

आथर्वण
ātharvaṇa
अथर्ववेदः। (सु.सू.- 24/7), अथर्ववेद, चार वेदों में से एक, one among four vedas

आदंशशोफ
ādaṃśaśopha
आसमन्ततो दंशस्य शोफः। (ड.-सु.क. 4/37), दंशस्थान के चारों ओर उत्पन्न शोफ, inflammation around insect bite

आदर्श
ādarśa
प्रतिबिम्बदर्शनार्थं सम्पूर्णचन्द्रमाकारः कांस्यमय उच्यते। (ड.-सु.सू. 30/21), दर्पण (च.इ. 12/77), छवि दर्शन हेतु प्रयुक्त दर्पण, mirror

आदान
ādāna
आददाति क्षपयति पृथिव्याः सौम्यांशं प्राणिनां च बलमित्यादानम्। (चक्र.-च.सू. 6/4), पृथिवी के सौम्यांश (स्नेहांश) एवं प्राणियों के बल को खींच लेने के कारण इस काल को आदान काल कहा जाता है या जिस काल में सूर्य प्राणियों के सौम्यांश को ग्रहण कर लेता है तथा बल को क्षीण कर देता है, आदान काल कहलाता है, इसमें सूर्य उत्तरायण होता है, शिशिर, वसन्त एवं ग्रीष्मऋतु आदान काल के अन्तर्गत होती हैं, period of absorption, absoption period in which unctuousness and strength of living beings are decreased or weakened, northern solstice

आदानी
ādānī
घोषकभेदः। (भै.र.क्षुद्ररोग महानीलतैल), कोशातकी, तोरई, sponge gourd

आदारिबिम्बी
ādāribimbī
आदारि वेल्लन्तरसदृशपुष्पा आलिरिति लोके, बिम्बी रास्नानुकारिविटपा लोहितफला च। (ड.-सु.उ. 44/19), आऊलि, a herb

आध्मान
ādhmāna
वायुना जठरापूरणम्। (इन्दु.-अ.हृ.सू. 2/18), वायुना सवेदनमुदरपूर्णत्वम्। (विज.-मा.नि. 2/9), वायुना कुपितेन नाभेरधः सशूलमापूरणमाध्मानम्। (इन्दु.-अ.हृ.सू.

4/7), वायु के द्वारा नाभि के नीचे शूलयुक्त पूर्णता का होना, distention of abdomen

आन्तिकीशुद्धि
āntikīśuddhi
आन्तिकी, वैगिकी, मानिकी, लैंगिकी चेति चतुर्विधा शुद्धिरिहोच्यते वमनविरेचनयोः। (चक्र.-च.सि. 1/13-14), सम्यक् शुद्धि के लक्षणों में जो वमन के अन्त में पित्त का निकलना या विरेचन के अन्त में कफ का निकलना वर्णित है, वह आन्तिकी शुद्धि है। शोधन कर्म के अन्त को बताने वाले लक्षण की उपस्थिति आन्तिकी शुद्धि होने का द्योतक है, appearance of pitta in vomitus in vamana karma and of kapha is virechan karmra indicates end point of that procedure

आन्त्रकूजन
āntrakūjana
अर्शस्य पूर्वरूपः, आन्त्रकूजनम्। (सु.नि. 2/8), आंतों में गुड़गुड़ाहट borborygmi, gurgling sounds in abdomen, a prodromal feature of piles/hemorrhoids

आप्त
āpta
आप्ताज्ञानवन्तो रागद्वेषरहिताः पुरुषाः। यद् वक्ष्यति "रजस्तमोभ्यां निर्मुक्ता"। (चक्र.-च.सू. 7/55), आप्ती रजस्तमोरूपदोषक्षयः तद्युक्ता आप्ताः। (चक्र.-च.सू. 11/19), राग द्वेष और रज तम से रहित ज्ञानी पुरुष आप्त माने जाते हैं, रज और तम रूप दोषों का क्षय होना 'आप्ती' है, इन गुणों से मुक्त व्यक्ति 'आप्त' कहा गया है, learned person devoid of affection or envy, credible person, the reduced state of raja and tama is called apti, a person on this state is known as apta

आभासबन्ध
ābhāsabandha
पुटितो यो रसो याति योगं मुक्त्वा स्वभावतां, भावितो धातुमूलाद्यैराभासो गुणवैकृतः।। (र.र.स. 11/67), धातुओं एवं औषधियों द्वारा भावित एवं पुट दिये गये पारद का स्वाभाविक गुणों से मुक्त होकर योग को प्राप्त होना 'आभास बन्ध' कहलाता है, processing of mercury with metals and herbs to change its qualities to usage form

आभ्यन्तरयातनेत्र
ābhyantarayātanetra
कोटरान्तः प्रविष्टाक्षिगोलकः। (विज.-मा.नि. 6/23), अक्षिगोलक का कोटर के अन्दर प्रवेश, enopthalmos, sunken eyes

आभ्यन्तरहेतु
ābhyantarahetu
आभ्यान्तरः यथा दोषो दूष्याश्च। (विज.-मा.नि. 1/5), आभ्यन्तर कारण, दोष और दूष्य होते हैं, endogenous causes

आभ्यन्तरायाम
ābhyantarāyāma
क्रोडेनतम्। (विज.-मा.नि. 22/35), शरीर का आगे की ओर झुकना, opisthotonus

आमगर्भ
āmagarbha
आमगर्भः षण्मासं यावत्। (ड.-सु.उ. 42/13), अपरिपक्व गर्भ, प्रथम छः मास तक का गर्भ, immature foetus (during 1st six months)

आमय āmaya
आमयशब्देन च लिंगमुच्यते। (चक्र.-च.सू. 29/4), आमय शब्द से व्याधियों के लक्षण का यहाँ पर ग्रहण किया गया है, disease/disease features

आयत āyata
आयतो दीर्घः। (ड.-सु.सू. 5/8), लम्बा, long

आयतन āyatana
आयतनानि बाह्यहेतवो दुष्टाहाराचाराः। (चक्र.-च.सू. 20/3), आयतन से बाह्य हेतुओं, यथा दूषित आहार, विहार आदि का ग्रहण किया जाता है, external aetiological factors that lead to disease

आयास āyāsa
श्रमः। (विज.-मा.नि. 22/8), थकावट, fatigue

आयुर्वेदोत्पत्ति āyurvedotpatti
अन्यत्रावबोधोपदेशाभ्यामिति यत्र यत्रायुर्वेदस्योत्पत्तिरुक्ता, तत्र तत्रावबोधादुपदेशाद्वा; अवबोधादुत्पत्तिर्यथा - ब्रह्माण आयुर्वेदोत्पत्तिः, उपदेशाच्चोत्पत्तिर्यथा-इन्द्रोपदेशाद्भरद्वाजेन मर्त्यलोके आयुर्वेद उत्पादित इत्यादि। एतद्द्वयमिति अवबोधोपदेशौ। (चक्र.-च.सू. 30/27), जहाँ कहीं भी आयुर्वेद की उत्पत्ति का विचार हुआ है, वहाँ पर अवबोध या उपदेश का ही वर्णन है। अवबोध से आयुर्वेद की उत्पत्ति, यथा ब्रह्मा द्वारा आयुर्वेद की उत्पत्ति या उपदेश (ब्रह्मा को आयुर्वेद का अवबोध हुआ), उपदेश से आयुर्वेद की उत्पत्ति - जिस आयुर्वेद का ब्रह्मा को अबबोध हुआ उसका उपदेश उन्होंने दक्ष प्रजापति को दिया। दक्ष प्रजापति, अश्विनी कुमार द्वय, इन्द्र, भरद्वाज, इस क्रम में उपदेश परम्परा से जाना गया। इस प्रकार दो प्रकार (अवबोध एवं उपदेश) से आयुर्वेद ज्ञान मृत्युलोक में आया, evolution of life sciences (by perception to Brahma and by teaching from Brahma to other sages such as Daksha, Ashwaini kumar, Indra and Bhardwaj etc.

आयुष्य āyuṣya
आयुःप्रकर्षकारित्वेन। (चक्र.-च.सू. 26/43(1)), जो आयु की वृद्धि करता हो, वह आयुष्य है, longevity promoting

आरोग्य ārogya
आरोग्यं रोगाभावाद्धातुसाम्यम्। (चक्र.-च.सू. 1/15), धातुसाम्य की अवस्था जिसमें रोगाभाव रहता है, उसे आरोग्य या निरोग कहते हैं, the state of equilibrium of doshas and absence of diseases

आरोटबन्ध ārotabandha
सुशोधितो रसः सम्यारोट इति कथ्यते। स क्षेत्रीकरणे श्रेष्ठः शनैर्व्याधिविनाशनः।। (र.र.स. 11/66), उत्तम प्रकार से शुद्ध किये हुये पारद को 'आरोटबन्ध' कहा जाता है, यह क्षेत्रीकरण (शरीर को दृढ बनाना) हेतु श्रेष्ठ है एवं सेवन करने से धीरे-धीरे व्याधि का शमन कर देता है, adequately purified mercury

आर्त ārta
आर्तेषु आर्तियुक्तेषु। (चक्र.-च.सू. 9/26), अरति (कष्ट) युक्त व्यक्ति 'आर्त' कहा जाता है, a person heaving pain or disease

आर्तव ārtava
ऋतुकालजं शोणितम्। (ड.-सु.शा. 2/36), रजःस्राव, menstrual blood

आर्ति ārti
शूलम्। (इन्दु.-अ.हृ.सू. 7/20), वेदना, pain

आर्य ārya
आराद्दूरात् पापेभ्यो यात आर्यः। (चक्र.-च.सू. 8/19), जो पाप कर्मों से दूर रहे वह आर्य है, a person who does not indulge in sins

आर्ष ārṣa
आर्षं ऋषिकृतम्। (चक्र.-च.सू. 30/17), ऋषियों द्वारा रचित 'आर्ष' कहा जाता है या ऋषि प्रणीत या ऋषियों द्वारा लिखा 'आर्ष' कहा जाता है, written by a sage

आलवाल ālavāla
मिट्टी या अन्य पदार्थ से बनाई गई जलरोधी भित्तिका, तरुमूलादि में जल सेचन हेतु, making of water resistant barrier of clay or any other material

आलस्य ālasya
समर्थस्याप्यनुत्साहः कर्मण्याः। (विज.-मा.नि. 2/12), कर्म में समर्थता होते हुये भी उत्साह का न होना, laziness

आवस्थिक āvasthika
क्रियां चावस्थिकीमिति ग्रहणीदोष एव अवस्थाविशेषे कर्तव्यां क्रियां श्रृणु। (चक्र.-च.चि. 15/198), (ग्रहणी आदि रोगों में) दोषों की अवस्थाओं के अनुसार (विशेष क्रियाओं की योजना), according to stage/condition

आवाप āvāpa
द्रुते द्रव्यांतरक्षेपो लोहाद्ये क्रियते हि यः। स आवापः प्रतीवापस्तदेवाऽऽच्छादनं मतम्।। (र.र.स. 8/54), किसी धातु आदि को मूषा में रखकर तीव्राग्नि में पिघलाकर ऊपर से उस पिघले हुये धातु द्रव के ऊपर किसी द्रव्य चूर्ण को छोड़ना आवाप कहलाता है, इसे ही प्रतीवाप या आच्छादन भी कहते हैं, adding powder in molten metal

आविक āvika
आविक संस्तराम्।। (च.सू. 14/48), कम्बल, woolen

आविल āvila
समलम्। (ड.-सु.उ. 6/12), कलुषम्। (हे.-अ.हृ.सू. 27/41), मलयुक्त, मलिन, turbid, contaminated, dirty

आविशन्त āviśanta
आवेशं कुर्वन्। (ड.-सु.सू. 27/17), आविशन्तश्च लक्ष्यन्ते केवलं शास्त्रचक्षुषा। शुद्धेन देहं बालानां गन्धर्वा इव योषिताम्।। (अ.सं.उ. 30/7), प्रवेश करते हुए (अदृश्य ग्रहों के संदर्भ में), invading grahas (supernatural powers), by entering, by intruding

आशुक्रिया āśukriyā

आशुक्रिया लघुहस्तता शीघ्रं शस्त्रकर्मणम्। आशुक्रिययाऽऽतुरस्य चिरं क्लमो न भवति। (ड.-सु.सू. 5/10), हलके हाथ से शीघ्र शस्त्रकर्म करना, रोगी पर शस्त्र चलाने से न हिचकिचाना, doing surgical procedure with skilled and free hand, very rapidly, not hesitating during surgical procedure

आशुगा āśugā

आशुगा, शीघ्र गामिनी इति। (ड.-सु.सू. 13/12), तेज चलने वाली, fast moving, having rapid movement

आशुप्रवर्तक āśupravartaka

अल्पेन हेतुनाऽऽशु शीघ्रं प्रवर्तनं यस्य तदाशुप्रवर्तकम्। (चक्र.-च.सू. 10/17), जो व्याधि अल्प कारणों से ही शीघ्र बढ़ जाती है, the disease that gets aggravated even by a mild causative factor

आश्च्योतन āścyotana

आश्च्योतनं नेत्रविरेकार्थं द्रवौषधदानम्। (चक्र.-च.सू. 5/19), आंख के दोष को निकालने के लिए द्रव औषध को आंख में डालना, आश्च्योतन कहलाता है या नेत्रों से कफ दोष के स्रवणार्थ प्रयुक्त होने वाली द्रव औषधि को आश्च्योतन कहा जाता है, liquid medicaments used to remove/expell vitiations of eye

आसन्ननिदान āsannanidāna

आसन्नं यथा-वातादयः प्रकुपिताः। (अरु.-अ.हृ.नि. 1/2), वातादि दोष आसन्न (निकट के) हेतु हैं, immediate cause, provoked dosha are sannikrishta hetu

आसव āsava

यदपक्वौषधाम्बुभ्यां सिद्धं मद्यं स आसवः। (शा.सं.म.ख. 10/2), आसुतत्वादासव संज्ञा। आसुतत्वादिति सन्धानरूपत्वात्। (चक्र.-च.सू. 25/49), तद्वन्मृद्वीकेक्षुरसाभ्यां मिलिताभ्यां कृत आसवो ज्ञेय। (चक्र. च.सू. 27/188), अपक्व औषध एवं जल के संयोग से सन्धान करके जो मद्य बनता है, उसे आसव कहते हैं, इसकी मात्रा एक पल है, आसवन प्रक्रिया द्वारा निर्मित, माध्वीक के समान अंगूर रस और इक्षु के रस से मिलाकर निर्मित मद्य आसव कहलाती है, an alcoholic preparation prepared by fermentation like madhveeka, alcoholic preparation prepared from grapes or sugarcane juice

आसीनप्रचलायित āsīnapracalāyita

आसीनप्रचलायितं उपविष्टस्य किंचिन्निद्रासेवनं; यदाहुर्जनाः प्रधानं विहारेषु। (चक्र.-च.सू. 21/50), बैठे-बैठे कुछ सो ले लेना या झपकी लेना, asleep in sitting position

आसुत āsuta

आसुतत्वादिति संधानरूपत्वात्। (चक्र.-च.सू. 25/49), तदासुतमिति शुक्तमध्यस्थितं मूलककूष्माण्डादि। (च.सू. 27/385), आसुतं चान्यदिति संधानान्तरम्। (चक्र.-च.सू. 27/285), संधान रूपत्व से अर्थात् संधान क्रिया से बनाए जाने से मद्यों को, आसव संज्ञा दी जाती है, शुक्त में ही मूलक (मूली),

10—4 Min. of HRD/2016

कूष्माण्ड आदि को रखकर जो संधान किया जाता है, उसे आसुत कहते हैं, संधान के पश्चात् ही अन्य आसुत निर्मित होते हैं, distillation or fermentation process, when sukta is distilled after being fermented with radish & pumpkin mixed in it, the other distillates are prepared only after fermentation

आस्यमाधुर्य āsyamādhurya

मुखस्य मधुररसत्वम्। (विज.-मा.नि. 15/8), मुख में मधुर रस की प्रतीति होना, a feeling of sweet taste in mouth

आस्यवैरस्य āsyavairasya

आस्यवैरस्यं उचितादास्यरसादन्यथात्वम्। (चक्र.-च.सू. 28/9), मुख के उचित स्वाद से अन्य स्वाद की प्रतीति होना आस्यवैरस्य है, disguesia

आहतात āhatāta

आहतात् क्षतात् शकलीकृतात् तत्क्षणकृष्टादिति सद्य उत्पाटितात्। (आढ.-शा.सं.मा. 1/2), ताजी औषधियों को संग्रहित कर उन्हें छोटे-छोटे टुकड़ों में विभाजित करना, chopping of fresh drugs (herbs) into small pieces

आहरण āharaṇa

आनयनम्। (ड.-सु.सू. 7/17), पकड़कर बाहर निकालना, extraction

आहार āhāra

आह्रियत इत्याहारो भेषजमपि। (चक्र.-च.सू. 26/85), जिसका आहरण या ग्रहण किया जाये, वह आहार कहा जाता है, इसे भेषज भी कहते हैं, diet, drug

इक्षु ikṣu

गन्ना, suger cane

इक्षुमेह ikṣumeha

प्रमेह भेद, प्रमेह रोग का एक प्रकार, a type of prameha, diabetes mellitus

इक्षुर ikṣura

इक्षुभेद, गन्ना का प्रकार, a type of sugar cane

इक्षुरक ikṣuraka

कोकिलाक्षः। (भा.प्र.गुडूच्यादि 225), तालमखाना, *Hygrophila spinosa*

इक्षु विकार ikṣuvikāra

इक्षु जातं द्रव्यम्। गन्ने से बनने वाला द्रव्य, sugar cane product, sugar, jaggery etc.

इक्षुशुक्त ikṣuśukta

एवमेवेक्षुशुक्तं स्यान्मृद्वीकासम्भवं तथा। (शा.स.म. 10/10), गुडशुक्त की भांति ही इक्षुरस होता है, तैल एवं कन्दमूलादि के सन्धान से उत्पन्न अम्लतायुक्त पदार्थ, a fermented product obtained by sugar cane juice, oil etc.

इन्द्र indra

इन्द्र शब्देन प्राण उच्यते। (चक्र.-च.इ. 1/2), इन्द्र शब्द से तात्पर्य प्राण से है, the word indra means life

इन्द्रमद indramada
दुर्वान्ताया व्याधिरसाध्य इन्द्रमदो नाम भवति।। (सु.सू. 13/22), असम्यक् वामित जलौका को होने वाली असाध्य व्याधि, blood intoxication of leeches

इन्द्रवज्राग्निदग्ध indravajrāgnidagdha
इन्द्रवज्राग्निनादग्धम्। (सु.सू. 12/39), इन्द्रवज्राग्नि से जलाया गया, आकाशीय बिजली से जलाया गया, burn from lightening

इन्द्रायुधा indrāyudhā
इन्द्रायुधवदूर्ध्वराजिभिश्चित्रा इन्द्रायुधा। (ड.-सु.सू. 13/11), इन्द्रधनुष के वर्ण के समान चित्रविचित्र धारियों वाली जौंक इन्द्रायुधा होती है, poisonous leech having variegated lines of different colours like rainbow

इन्द्रिय indriya
इन्द्रशब्देन प्राण उच्यते, तस्यान्तर्गतस्य लिङ्गरिष्टाख्यमिन्द्रियम्। (चक्र.-च.इ. 1/2), इन्द्र शब्द से तात्पर्य प्राण से है, उसके नष्ट होने के लक्षण को रिष्ट कहा जाता है वही इन्द्रिय है, the word indra means life, the sign and symptom manifest at the end of life is called indriya

इन्द्रियदौर्बल्य indriyadaurbalya
दर्शनादीनामशक्तत्वं स्वविषयग्रहणे दौर्बल्यम्। (इन्दु.-अ.हृ.सू. 4/8), इन्द्रियों का अपने-अपने विषयों के ग्रहण करने में असमर्थ होना, neurasthenia, sensesthenia

इन्द्रियद्रव्य indriyadravya
इन्द्रियाणां प्राधान्येनाराम्भकं द्रव्यं इन्द्रियद्रव्यम्। (चक्र.-च.सू. 8/9), इन्द्रियों के प्रधान एवं आरम्भक द्रव्य को उस इन्द्रिय का इन्द्रिय द्रव्य कहा जाता है, inherent matter of sensory organs

इन्द्रियबुद्धि indriyabuddhi
असाधारणेन कारणेनेन्द्रियेण व्यपदिष्टा बुद्धयः इन्द्रिबुद्धयः। (चक्र.-च.सू. 8/12), विशिष्ट कारण से इन्द्रिय में उत्पन्न बुद्धि इन्द्रियबुद्धि कहलाती है, knowledge generated in the sense due to specific cause

इन्द्रियविजय indriyavijaya
यन्त्रणाभ्यासात्तदिन्द्रियं जीयत इत्युक्तमिन्द्रियविजयं चेति। (चक्र.-च.सू. 8/18), सद्वृत्त का पालन करके इन्द्रियों को जीतना, controlling of senses by observing rules of good deeds

इन्द्रियविषय indriyaviṣaya
इन्द्रिय जिसका ज्ञान करती है वह इन्द्रिय विषय है, object of sense

इन्द्रियाधिष्ठान indriyādhiṣṭhāna
इन्द्रियाधिष्ठानमिन्द्रियाश्रयः। (चक्र.-च.सू. 8/10), जिस अंग में इन्द्रिय का आश्रय होता है वह उस इन्द्रिय का अधिष्ठान है, the organ in which a particlar sense is situated, site of sense

इन्द्रियाभिग्रह indriyābhigraha
इन्द्रियाभिग्रहः इन्द्रियाधिष्ठानं मनसः कर्म। (चक्र.-च.शा. 1/21), इन्द्रियों में रहकर कार्य करना यानी इन्द्रियों का संचालन करना, to control the function of sense faculty

इन्द्रियार्थ indriyārtha
इन्द्रियार्था इन्द्रियविषयाः। (चक्र.-च.सू. 8/11), इन्द्रिय का विषय उसका अर्थ है, object of senses

इन्द्रियोपशम indriyopaśama
इन्द्रयोपशमं इन्द्रियाणां स्वविषयेऽलम्पटत्वम्। (चक्र.-च.सू. 7/52), इन्द्रियों को अपने वश में रखना, control on senses

इष्टिकास्वेद iṣṭikāsveda
उष्मस्वेदस्तु कपालपाषाणेष्टकालोहपिण्डान्। (सु.चि. 32/5), उष्म स्वेद का एक प्रकार जिसमे गर्म ईट से स्वेदन दिया जाता है, hot brick sudation

ईरित īrita
ईरितो विलायितो वसन्ते। (चक्र.-च.सू. 6/22), सूर्य की किरणों से कफ का पिघलना ईरित है, liquification of kapha in spring season

ईर्ष्या īrṣyā
समाने द्रव्ये परसंबन्धप्रतिषेधेच्छा ईर्ष्याः। (चक्र.-च.सू. 7/27), एक समान द्रव्य में दूसरे व्यक्ति के सम्बन्ध को रोकने की इच्छा ईर्ष्या है, jealousy, envy

उग्रगन्ध ugragandha
उग्रो वमनकारको वचादीनाम्। (चक्र.-च.सू. 11/37), वच जैसे वमनकारक गन्ध को 'उग्रगन्ध' कहा जाता है, the smell that stimulates vomiting, sweet flag *(Acorus calamus)*

उचित ucita
उचितनप्यभ्यस्तानपीत्यर्थः। (चक्र.-च.सू. 7/34), उचित अर्थात् अभ्यस्त हुए भाव, pleasurable, aggreable

उच्चैःश्रुति ucchaiḥśruti
उच्चैःश्रुति तारस्वरमात्रश्रवणम्, अल्पशब्दस्य तु सर्वथैवाश्रवणम्। (चक्र.-च.सू. 20/11), तार के स्वरों का मात्र सुनाई देना या धीमी आवाज का बिल्कुल न सुनाई देना या तीव्र आवाज सुनाई देना, hard of hearing

उच्छीर्षक ucchīrṣaka
उच्छ्रितशिरस्कम्। (ड.-सु.चि. 36/23), तकिये के प्रयोग से ऊपर उठा शीर्षभाग, raised with pillow

उच्छ्रित ucchrita
उच्छ्रित कठिन सुप्तमांसे इति उच्छ्रितमुत्सेधवत् सुप्तचेतनम्। (ड.-सु.सू. 12/10), उभरा हुआ, उन्नत, सुप्त, अचेतन, elevated, swollen, infatuated and numb

उच्छ्रिताक्ष ucçhritākṣa
उच्छूननेत्रः। (विज.-मा.नि. 12/33), नेत्रों का बाहर की ओर आना, ऊपर की ओर आना, exophthalmos, proptosis

उच्छवास ucchavāsa
श्वासस्योद्गमनम्। (इन्दु.-अ.हृ.सू. 11/1), श्वास का बाहर निकलना, expiration

उण्डुक unḍuka
आन्त्रदेशस्थः शोणितकिट्टप्रभवः, पोट्टलक लोके। (ड.-सु.शा. 4/17), महास्रोतस का एक पर्वताकार (बड़ा) अवयव, caecum, an intrabominal organ

उत्कट utkaṭa
प्रबल। (सु.शा. 4/63), predominating 2. उभरा हुआ, elevated

उत्कर्तन utkartana
उत्कर्तनं उर्ध्वकर्तनम्। (ड.-सु.सू. 9/4), ऊपर की ओर काटना, incision in upward direction

उत्कारिका utkārikā
उत्कारिका माषादिकृतोत्काराकृतिव्यञ्जन विशेषः। (चक्र.-च.सू. 14/42), रोटी या लप्सी जैसा एक व्यंजन जो कि उड़द से बनाया जाता है, a pouding or flour cake like preparation made of black gram

उत्क्रुष्ट utkruṣṭa
उत्क्रुष्टं दर्पादतिमात्रं शब्दितम्। (चक्र.-च.सू. 11/37), अहंकारवश उच्चस्वर में बोलना, yell, outcry, shouting out of false ego

उत्क्लेद utkleda
1.धातूनामुत्क्लेदः। (इन्दु.-अ.हृ.सू. 8/26), धातुओं में क्लिन्नता, wetness 2. कण्ठोपस्थितवमनत्वमिव। (विज.-मा.नि. 2/13), कण्ठ में उपस्थित वमन के समान प्रतीति, eructation

उत्क्षिप्त utkṣipta
ऊर्ध्वगमनम्। (ड.-सु.सू. 32/4), ऊपर की ओर खिसकना, upward movement

उत्क्षिप्तयोनि utkṣiptayoni
उपर उठी हुई गर्भाशय ग्रीवा वाली योनि, vagina having upward pushed cervix

उत्तमाङ्ग uttamāṅga
उपरिष्टादङ्गमुत्तमाङ्गम्। (चक्र.-च.सू. 17/2), शरीर के सबसे ऊपर स्थित शिर को उत्तमांग कहते हैं, शिर, head

उत्तान uttāna
स्तनं व्युदस्यते रौति चोत्तानश्चावभज्यते। उदस्तब्धता शैत्यं मुख स्वेदश्च शूलिनः।। (का.सं.सू. 25/15), पीठ के बल लेटना, शिशुओं में उदरशूल का एक लक्षण, to lie in supine position, a sign of abdominal pain in neonates

उत्त्रास uttrāsa
तथा हि सहसा बोधनोत्क्षेपेण चास्य बालस्य वेगरोध उत्त्रासश्च जायते। (इन्दु.-अ.सं.उ. 1/30), भय, सोए हुए बालक को सहसा उठाना या उछालना नहीं चाहिए, अन्यथा उसके मन में डर बैठ जाता है और उसके मल मूत्रादि वेग रुक जाते हैं, fear, one should avoid sudden waking or tossing up of child for, it may cause fear in the child

उत्थान utthāna
1. उत्थाननेति क्रियारम्भेण। (चक्र.-च.वि. 4/8), क्रिया का आरम्भ करना, to start an activity 2. हेतु, कारण, causative factors 3. सम्प्राप्ति, pathogenesis

उत्थापन utthāpana
मृतस्य पुनरुद्भूतिः सम्प्रोक्तोत्थापनाख्यया। (र.र.स. 8/42), पारद का चौथा संस्कार जिसमें मूर्छित पारद को पुनः अपने स्वरूप में लाया जाता है, the process of obtaining the original metal from its ashes; it is fourth samsakara of parada

उत्पादकहेतु utpādakahetu
तत्रोत्पादको यथा- हेमन्तजो मधुररसः कफस्य। (विज.-मा.नि. 1/5), जैसे हेमन्त ऋतु में मधुर रस कफ को उत्पन्न करता है, यहां मधुर रस कफ का उत्पादक कारण है, evolving factor

उत्पेषण utpeṣaṇa
उत्पेषणं शिलोत्पेषणमिव। (चक्र.-च.सू. 18/4), शिला में पीसने के समान आघात जन्य वेदना विशेष, grinding, grinding pain

उत्सङ्ग utsaṅga
उत्सङ्गे इवोत्सङ्गाः (ड.-सु.सू. 5/12), उभरा हुआ, elevated, swollen

उत्सर्ग utsarga
प्रवृत्तिः। (चक्र.-च.सू. 28/22), विसर्जन, उत्सर्जन, त्याग करना, छोड़ना, laying, leaving aside, to give up, suspension

उत्सा utsā
उत्सा निम्नादुत्तिष्ठज्जलस्थानम्। (च.सू. 27/214), जो जल की धारा नीचे के स्थान से ऊपर की ओर जाती है, प्रस्रवण, fountain, a natural sprout or jet of water (moves upwards)

उत्सादन utsādana
1. उत्सादयेदिति उद्वर्तयेत्। (चक्र.-च.चि. 8/175), मलना (औषध चूर्ण के संदर्भ में), trituration, anointment 2. उत्सादनं निम्नव्रणस्योन्नतिकरणम्। (ड.-सु.चि. 1/82), निम्न व्रण को उपर उठाना (शल्यतन्त्र के संदर्भ में), elevation, granulation promotion

उत्साह utsāha
सत्वं मनः, मनसो बलं वा यत् 'उत्साह' उच्यते। (चक्र.-च.सू. 11/36), उत्साहः कार्येषूद्योगो मनसः। (चक्र.-च.सू. 12/8), चैतसिको धर्मः। (सु.चि. 38/50), सर्वचेष्टासूद्योगः। (अरु.-अ.हृ.सू. 11/1), उत्साहः अध्यवसायः। (हे.-अ.हृ.सू. 11/1), कार्योत्थानशक्तिः। (इन्दु.-अ.हृ.सू. 11/1), शरीरमनसोर्बलम्। (विज.-मा.नि. 6/24), सत्व से मन अर्थ लिया गया है, मानसिक बल को उत्साह कहते है, कार्यों में मन को लगाना 'उत्साह' कहा जाता है, मन का धर्म, मन का उल्लास, सभी चेष्टाओं में तत्परता, a function of mind, will power, the term satva means mind, the strength or power of mind is will power, exhilaration, ability to initiate all types of activities, enthusiasm

उदकं व्येति udakamvyeti
उदकं व्येतीति उदकं विशेषेण इति व्याप्नोतीत्यर्थ। (चक्र.-च.शा. 8/54), (शुद्ध स्तन्य का) पानी में घुलना, easily assimible in water (in reference of pure breast milk)

उदकुम्भ udakumbha
पूर्णो रिक्तश्च घटो। (ड.-सु.सू. 29/27), घड़ा, earthen pot

उदगयन udagayana
उदग् उत्तरां दिशं प्रति, अयनं गमनमुदगयनम्। (चक्र.-च.सू. 6/4), सूर्य के उदग् (उत्तर) दिशा के अयन (गमन) को उदगयन अर्थात् उत्तरायण कहा जाता है, northward movement of the sun

उदञ्चन udañcana
उदञ्चनं पिधान शरावः। (चक्र.-च.सू. 15/7), शराव, सिकोरा, ढक्कन, lid

उदमन्थ udamantha
उदक प्रधानो मन्थ उदमन्थः। (चक्र.-च.सू. 6/35), अधिक पानी युक्त मंथ, a thin mantha prepared with adding more water

उदर udara
अन्तराधेरेकमुपाङ्गम्। पेट, एक उपांग, abdomen

उदरस्तब्धता udarastabdhatā
उदर में जकड़ाहट, stiffness in abdomen

उदरावेष्ट udarāveṣṭa
उदरस्यावेष्टनमिवोदरावेष्टः। (चक्र.-च.सू. 20/11), उदर में मरोड़ने की सी वेदना होना, abdominal cramps

उदर्क udarka
उदर्क उत्तरकालीनं फलम्। (चक्र.-च.सू. 25/36), उत्तरकालीन फल (परिणाम) को उदर्क कहा जाता है, consequetive effect

उदर्दप्रशमन udardapraśamana
उदर्दो वरटीदष्टाकारः शोथः, तत्प्रशमनः उदर्दप्रशमनः। (चक्र.-च.सू. 4/8), बर्रे के दंश के आकार का शोथ उदर्द कहलाता है; उसका शमन करने वाली चिकित्सा उदर्द प्रशमन कहलाती है, the swelling resembling the one occuring due to the sting of wasp is called udarda; the treatment which subsides udarda is called udardaprashamana

उदान udāna
उदानो नाम यस्तूर्ध्वमुपैति पवनोत्तमः। (सु.नि. 1/14), एक प्रकार की वात जिसकी गति ऊपर की ओर होती है, इसे पवनोत्तम भी कहा जाता है, one of five types of vata which has upward movement

उदीर्ण udirṇa
उत्कटम्। (ड.-सु.सू. 35/23), स्थानात् परिभ्रष्टम्। (इंदु.-अ.हृ.उ. 26/16), प्रकुपित, उभड़ा हुआ, उत्पन्न वेग, excited, ready to come out (particularly excretory impulses)

उद्गार udgāra
उद्गतस्य वायोरुद्गिरणमुद्गारः। (ड.-सु.सू. 26/13), भोजन के पश्चात् वायु के बाहर आने से डकार का आना, belching, erructation

उद्गारबाहुल्य udgārabāhulya
अर्शस्य पूर्वरूपः, उद्गारबाहुल्यम्। (सु.नि. 2/8), अधिक डकार आना, excessive belching, a prodromal feature of piles/hemmorrhoids

उद्गाररोध udgārarodha
उद्गाराप्रवृत्तिः। (विज.-मा.नि. 14/4), उद्गार का न होना, absense of erructation

उद्गिरण udgiraṇa
वान्तिः उद्गारो वा। (विज.-मा.नि. 18/19), उद्गार, डकार, वमन जैसी अनुभूति, erructation, nausea

उद्घाटन udghāṭana
विद्धद्रव्यस्य सूतेन कालुष्यादिनिवारणं प्रकाशनच्च वर्णस्य तद् उद्घाटनमीरितम्। (रसेन्द्र चूड़ामणि. 4/12), पारद से विद्ध द्रव्य की कालिमा अर्थात मैल को नष्ट कर स्वर्णादि धातुओं का वर्ण प्रकाशन 'उद्घाटन' है, brightening the colour of metals which become discolored due to combination with mercury by elimination of impurities

उद्दीपन uddīpana
जो अग्नि बढ़ाए, that enhances the digestive power

उद्देश uddeśa
उद्देशोहयल्पकथनम्। (चक्र.-च.सू. 1/71), उद्देशो नाम संक्षेपाभिधानम्। (चक्र.-च.सि. 12/42), समास वचनमुद्देशः। (सु.उ. 65/12), किसी भी विषय पर संक्षिप्त कथन उद्देश कहलाता है, a brief statement on a desired topic

उद्ध्वंसन uddhvaṃsana
कण्डूयते। (विज.-मा.नि 12/31), (कण्ठ) में कण्डू की प्रतीति, irritation in throat

उद्वर्तन udvartana
उद्वर्तनं गात्रमर्दनम्। (ड.-सु.चि. 24/51), शरीर का मर्दन (मालिश), body massage

उद्विग्न udvigna
उद्विग्ना इति भीताः (ड.-सु.सू. 29/8), डरा हुआ, व्याकुलचित्त, afraid, anxious

उद्वेग udvega
उद्वेग ऊर्ध्ववातवेगः, किंवा भैषज्यानभिलाषः। (चक्र.-च.सू. 22/40), ऊर्ध्ववात का वेग उद्वेग कहा जाता है या औषधि सेवन के प्रति अभिलाषा का न होना उद्वेग कहलाता है, agitation of vata in upward direction (erructation), aversion towards medication

उद्वेजन udvejana
अथ कुमार उद्विजते त्रस्यति रोदिति नष्टसंज्ञो भवति। (सु.शा. 10/51), खिन्न होना, बालकों में ग्रहोपसर्ग का लक्षण, depression, aversion

उन्नमन

unnamana

अधःस्थितस्य शरकर्णादेरूर्ध्वं नयनम्। (ड.-सु.सू. 7/17), नीचे स्थित शल्य या अस्थि को ऊपर उठाना, elevation

उन्मथन

unmathana

प्रनष्टस्य शल्यस्य मार्गे शलाकादिभिरालोडनम्। (ड.-सु.सू. 7/17), छिपे शल्य के मार्ग में शलाका डालकर विलोडन करना, मथना, stirring

उपकरण

upakaraṇa

उपकरणं आरोग्यभोगधर्मसाधनीभूतो धनप्रपञ्चः। (चक्र.-च.सू. 11/5), निरोगी पुरुष के भोग हेतु जिन-जिन सुख सुविधाओं की आवश्यकता पडती है उन्हें उपकरण कहा गया है, the means and meterials required for the comfort of a person

उपक्रोश

upakrośa

उपक्रोशो जनापवादः। (चक्र.-च.सू. 10/8), जनता के द्वारा निन्दा किया जाना, public despise

उपघात

upaghāta

1.उपघात किंचिदुपहननम्। (चक्र.-च.सू. 30/6), हृदय का अल्प में विनिष्ट होना, उपघात कहलाता है, या हृदय प्रदेश मे थोडे आघात (चोट) से ही व्यक्ति का मूर्च्छित हो जाना, उपघात कहलाता है, slight injury to heart leading one to fall into swoon 2. उपघातो विनाशः। (चक्र.-च.सू. 28/30), उपघात से विनाश अर्थ लिया जाता है, loss (of senses)

उपचय

upacaya

शरीरोपचयं वर्ण बलमारोग्यमायुषः। कुरुते परिवृद्धिं च बस्तिः सम्यगुपासितः।। (सु.चि. 35/4), शरीर की वृद्धि, body growth

उपचारज्ञता

upacārajñatā

उपचारज्ञता यूषरसादिकरण संवाहन स्वापनादिज्ञता। (चक्र.-च.सू. 9/8), सेवाकुशलता, यूष, रस आदि के निर्माण, संवाहन (आतुर के शरीर का हाथों से सुखपूर्वक मर्दन) तथा स्वापन (रोगी को नींद लाने की विधि का प्रयोग) आदि विधियों की जानकारी उपचारज्ञता कही जाती है, the skill of a trained therapist/nurse to prepare medicated soups, to do mild massage with hands, to apply proper mothods to bring sleep etc.

उपताप

upatāpa

उपतापस्तु किंचिद्वैकल्यम्। (चक्र.-च.सू. 28/20), उपताप से इंद्रियों में किंचित् विकार उत्पन्न होना अर्थ किया है, impairment of sense organ

उपधान

upadhāna

सुप्रक्षालितेत्यादौ उपधानः शिलापुत्र इति प्रसिद्धः। (चक्र.-च.सू. 14/7), अच्छी प्रकार से धोया हुआ लोढ़ा या शिला पुत्र, properly washed motar and pastle

उपधारयितु

upadhārayitu

उपधारयितुं आवर्तनेन स्मृत्यारूढं कर्तुम्। (चक्र.-च.सू. 4/22), बार बार आवृत्ति करते हुए स्मरण करके धारण करना, to adopt the object which is to be remembered by continuous repeatings

उपनय

upanaya

उपनयः सिद्धान्तोपपादितस्य साधनधर्मस्य साध्ये पुनः कथनं, यथा-तथा चायं धूमवानिति। (चक्र.-च.सू. 30/18), सिद्धान्त से उपपादित साधन धर्म का साध्य में पुनः कथन 'उपनय' कहा जाता है, या व्युत्पादित सिद्धान्त के साधन धर्म का साध्य में पुनः कथन 'उपनय' कहलाता है। उदा- महानस (रसोईघर) धूम वाला है, यह उपनय है, conceptual derivation

उपनाह

upanāha

बहलं लेपं दत्त्वा चर्मादिभिरावृत्य व्याधियुक्तस्याङ्गस्य बन्धनम्; चर्मभिश्चोपनद्धव्य इत्यत्र उपनाहो अनग्निस्वेदो ग्राह्यः। (चक्र.-च.सू. 14/35), उपनाहैरिति सोष्णबहल लेपैः। (चक्र.-च.चि. 25/50), व्याधि स्थान पर गाढ़ा लेप लगाकर फिर चर्म आदि से बन्ध करना उपनाह है। चमड़े से लेप को बांधने के कारण उपनाह अनग्नि स्वेद भी है। उपनाह दो प्रकार का है साग्नि और निराग्नि। जिस उपनाह में प्रयुक्त लेप हेतु अग्नि की आवश्यकता पड़ती है उसे साग्नि उपनाह कहते हैं; संकर स्वेद साग्नि उपनाह के अन्तर्गत आता है। जिस स्वेद में बिना गर्म किए/गाढ़ा लेप लगाया जाता है, जो कि शरीर की उष्मा के बहिर्निर्गमन को रोक कर स्वेदन करता है वह निराग्नि उपनाह है, poultice

उपनोद

upanoda

मक्षिकामलक व्योषबृहतीमूल सैन्धवैः। लालोपनोदरुच्यर्थं मुखमन्तः परामृशेत्।। (अ.सं.उ. 1/31), कम करना, शिशु की लार को कम करने के लिए एवं भोजन में रुचि जगाने के लिए आंवला, त्रिकटु, बड़ी कटेरी और सैंधव को शहद में मिलाकर मुख के अन्दर लगाया जाता है, to reduce (in reference to reduce excessive salivation in a child)

उपयन्त्र

upayantra

यन्त्र समीपवर्तीनि, हीनयन्त्राणित्यन्ये। (ड.-सु.सू. 7/15), उपमितानि यन्त्रैरित्युपयन्त्राणि। (हारा.-सु.सू. 7/15), स्वल्पयन्त्रकार्यकरणात्। (अरु.-अ.हृ.सू. 25/39), वह जो यन्त्र न होते हुये भी कुछ अल्प यन्त्रकर्म हेतु प्रयुक्त होते हैं उनको उपयन्त्र कहते हैं, वाग्भट न इनको अनुयन्त्र संज्ञा दी है, accessary instruments

उपल

upala

पिष्टकं छगणं छाणमुत्पलं चोपलं तथा। गिरिण्डोपलसाठी च वराटी छगणाभिधा। (र.र.स. 10/65), स्वयं शुष्क गोबर को उपला कहते हैं, पिष्टक, छगण उत्पल आदि इसके पर्याय हैं, sefl dried cowdung

उपलिप्याध

upalipyādha

उपलिप्य नवघटपङ्कन्यायेन। (ड.-सु.नि. 3/8), श्लेष्मिक अश्मरी लक्षण, (श्लेष्मा से) लिपा हुआ होना, जैसे नये घड़े में कीचड़ नीचे जमता है, deposition/smearing (of kapha)

उपवास

upavāsa

उपवासः क्रोधादिपरित्यागः सत्याद्युपादानं च। उपावृतस्य पापेभ्यः सहवासो गुणे हि यः। उपवासः स विज्ञेयो न शरीरस्य शोषणम्।। (चक्र.-च.सू. 1/6), क्रोधादि

दोषों का परित्याग एवं सत्य का अनुपालन, उपवास कहलाता है। आहार त्याग द्वारा शरीर का कर्षण उपवास नहीं है, अपितु पाप कर्मों का परित्याग एवं प्रशस्त कार्यों में संलग्नता को उपवास कहते हैं, to keep away from evil activities and continuation of chaste and pious activities, the avoidance of food only for reducing the body is not upavasa

उपविषवर्ग upaviṣavarga

अर्कक्षीरं स्नुहीक्षीरं लाङ्गली करवीरकः, गुञ्जाऽहिफेनो धत्तूरः सप्तोपविषजातयः। (भा.प्र. धात्वादि 206), अर्कदुग्ध, स्नुहीदुग्ध, कलिहारी, कनेर, गुञ्जा, अहिफेन, धतूरा, यह सप्तद्रव्य उपविष वर्ग में गिने जाते हैं, a sub group of seven poisonous drugs

उपविष्टक upaviṣṭaka

स कालमवतिष्ठतेऽतिमात्रं तमुपविष्टकमित्याचक्षते केचित्।। (च.शा. 8/26), गर्भाशय में गर्भ का देर तक रहना, overstaying of foetus in the uterus, a variant of IUGR

उपवेशन upaveśana

1. उपविष्टस्थितिः। (का.खि. 12/8:14), छठे मास में शिशु को बैठाने की प्रक्रिया का संस्कार, sitting posture ceremony 2. मलविसर्जन। (सु.चि. 36/40), defecation

उपशमनीय upaśamaniya

उपशमनीय इति बृंहणः। (चक्र.-च.सू. 26/8), बृंहण करने वाला उपशमनीय कहलाता है, nourishing process

उपशोषण upaśoṣaṇa

उपशोषणं च पाकेन यवादीनामार्द्रणामेव, अविक्लेदोपशोषणे शस्यानामेव। यव, शालि आदि आर्द्र शस्य को पाक क्रिया द्वारा सुखाना, removing of humidity from cereals after their ripening

उपसर्ग upasarga

उपसर्गः मरकादिप्रादुर्भावः। (चक्र.-च.सू. 12/8), महामारियों का फैलना, epidemic

उपसृष्ट upasrṣta

उपसृष्टानां गृहीतानाम्। (ड.-सु.उ. 28/3), (बालक का ग्रह से) ग्रस्त होना, affliction by a greha

उपस्तम्भ upastambha

अन्येन स्तभ्यमानं धार्यमाणमुपसमीपं प्रधानकारणस्य गत्वा स्तम्भयति धारयतीत्युपस्तम्भः। (चक्र.-च.सू. 11/35), जो अन्य द्वारा धारित प्रधान कारण के पास जाकर यानि समीप में रहकर धारण करता है उसे 'उपस्तम्भ' कहा जाता है, sub support, that which supports by staying along with a main support

उपस्थ upastha

मूत्रेन्द्रिय, कर्मेन्द्रिय। (च.श. 7/7), motor organ for urination

उपादान upādāna

कारणम्, आधारः अर्थः आश्रयः। (च.शा. 1/135), कारण, आधार, अर्थ, आश्रय, cause, base, object, dependence

उपान upāna

उपानहौ चर्मकृते। (इंदु.-अ.सं.सू. 8/43), चर्म से बनाया पादुका, leather foot wear

उभयहेतु ubhayahetu

दोषप्रकोपपूर्वकमेव व्याधिजनकम्। (विज.-मा.नि. 1/5), जिन कारणों से (विशिष्ट) दोषों का प्रकोप होते हुए (विशिष्ट) व्याधि की उत्पत्ति होती है, etiological factors which vitiate doshas as well as produce specific disease

उल्ब ulba

उल्बं जरायुः। (ड.-सु.शा. 10/12), अथ खलु जातमात्रमेव बालमुल्वात् सैन्धवसर्पिषा मार्जयेत्। (अ.सं.उ. 1/2), जरायु, सद्यजात शिशु के चर्म के ऊपर हटाया जाने वाला स्तर, vernix caseosa

उषा uṣā

प्रादेशिको दाहः। (अरु.-अ.हृ.सू. 7/19), शरीर के एक देश में दाह होना, localized buring sensation

उष्ट्रग्रीवभगन्दर uṣṭragrivabhagandara

उष्ट्रग्रीवा सदृशत्वेन पिडिकाया उष्ट्रग्रीवः, धनुस्तम्भवत्। (गय.-सु.नि. 4/6), पित्तजभगन्दर, उष्ट्रग्रीवा के समान पिड़का, व्रण में से अग्नि एवं क्षार के समान दाहयुक्त, पीडायुक्त, दुर्गन्धित उष्णस्राव निकलता है, pittaja anal fistula, suppurative anal fistula

उष्णदाह uṣṇadāha

उष्णेन कालेनोष्णेनाहारादिना च दाहः।। (इन्दु.-अ.हृ.सू. 5/15), उष्ण काल एवं उष्ण आहारादि से उत्पन्न दाह, burning sensation

उष्णवातातपदग्ध uṣṇavātātapadagdha

उष्णवातो ग्रैष्मिक शारदो वा; उष्णवातेनातपेन च दग्ध इव दग्धः। उष्णवातातपाभ्यां इति द्विवचने प्राप्ते बहुवचनमनुक्तोष्णप्रापणार्थम्। (ड.-सु.सू. 12/38), गर्म हवा, ग्रीष्म ऋतु अथवा शरद ऋतु वाली गर्म हवा। गर्म वायु के आतप से दग्ध होने जैसा रोग, द्विवचन होने पर भी उष्णता की तीव्रता के लिए बहुवचन का प्रयोग किया गया है, hot weather (sunlight) of summer and winter seasons, disease as a result of sun stroke, to define the severity of heat, plural is used

उष्णवीर्य uṣṇavirya

तत्रोष्णं भ्रमतृड्ग्लानि स्वेददाहाशुपाकिताः। शमं च वातकफयोः करोति। (अ.हृ.सू. 9/18:19), जो भ्रम, पिपासा, ग्लानि, स्वेद, दाह एवं आशुपाक करता हो, तथा वातकफ का शमन करता हो, वह उष्णवीर्य है, hot potency

उष्णसदन uṣṇasadana

उष्णसदनमिति अग्निसन्तापव्यतिरेकेण निर्जालकतया घनभित्तितया च यद् गृहं स्वेदयति तद् बोद्धव्यम्। (चक्र.-च.सू. 14/64), खिड़की, झरोखे आदि रहित कमरा

जो कि मोटी दीवार वाला हो और बिना बाह्य अग्नि के भी गर्म रह सके, उसे उष्णसदन कहते हैं, a thick walled room without window and ventilations, which remains hot without using external heat

उष्णोदक uṣṇodaka

अष्टमेनांशशेषेण चतुर्थेनार्धकेन वा। अथवा कथनेनैवसिद्धमुष्णोदक वदेत्।। (शा.सं.म. 2/159), अष्टमांश, चतुर्थांश या अर्धांश तक उबाला हुआ पानी 'उष्णोदक' है, boiled water or water reduced to one eight or one fourth or half by boiling

उष्यत uṣyata

उष्यते समीपाग्निनैवोपतप्यते। (ड.-सु.नि. 3/9), समीप में अग्नि जलने सदृश तपन की अनुभूति, पित्ताश्मरी लक्षण, feeling of heat as if sitting next to fire

उष्यते uṣyate

उष्यते पार्श्वस्थेनेव वह्निना दह्यते। (चक्र.-च.सू. 18/7), समीपस्थेनैव वह्निना तप्यते। (विज.-मा.नि. 19/2), ऐसी जलन अनुभव होना जैसे बगल में अग्नि रखी हो, समीप स्थित अग्नि के समान ताप का अनुभव होना, burning sensation as the part is exposed to fire

ऊरुदौर्बल्य ūrudaurbalya

सक्थिशैथिल्यम्। (हे.-अ.हृ.सू. 7/74), ऊरु में बल की हानि होना, सक्थि शिथिलता, weakness in thigh

ऊर्ध्वपातन ūrdhvapātana

वाष्पित कर पुनः ऊपर की ओर पारद की प्राप्ति। (र.र.स. 11/35), upward sublimation

ऊर्ध्ववात ūrdhvavāta

ऊर्ध्वे काये वात ऊर्ध्ववातः। (चक्र.-च.सू. 22/37), ऊर्ध्ववातः श्वासादिर्यत्रोर्ध्वं वायुर्याति; किंवातंत्रान्तरोक्तो रोगविशेष एव, यथा- अधः प्रतिहितो वायुः श्लेष्मणा कुपितेन च। करोत्यनिशमुद्गारमूर्ध्ववातः स उच्यते इति। (चक्र.-च.सू. 23/29), शरीर के ऊर्ध्व भाग में वायु का जाना ऊर्ध्ववात कहलाता है, यथा - हिक्का, श्वास, जृम्भा न कि उद्गार विशेष का पाया जाना, ऊर्ध्ववात से तात्पर्य है, श्वास आदि रोग जिसमें वायु ऊपर की ओर (ऊर्ध्वगमन) चली जाती है अथवा अन्य शास्त्र में वर्णित रोग विशेष कफ के प्रकोप से शरीर के अधोभाग से टकराती हुई वायु जब निरन्तर उद्गार उत्पन्न करती है, उसे ऊर्ध्ववात कहते हैं, upward movement of vata dosha

ऊषर ūṣara

ऊषरदेशभवमूषरम्। (चक्र.-च.सू. 25/39), ऊषर स्थान से निर्मित नमक को ऊषर कहा जाता है, impregnated with salt, salty

ऊषा ūṣā

अरतिमान् दाह उषा उच्यते। (अरु.-अ.हृ.सू. 29/4), एकाङ्गदाह, local burning sensation

ऊष्मायते ūṣmāyate

ऊष्मायते बहिः परैरप्युष्णत्वेनोपलभ्यते। (चक्र.-च.सू. 18/7-2), (शोथ) का बाहरी भाग गर्म रहना जो कि स्पर्श ज्ञेय भी हो, hotness which can be felt on palpation also

ऊह्य ūhya

ऊह्यं नाम यदनिबद्धं ग्रन्थे प्रज्ञया तर्क्यत्वेनोपपद्यते। (चक्र.-च.सि. 12/44), ग्रन्थ में अनुक्त तथ्य को बुद्धि एवं तर्क के आधार पर समझना, the technique of logically deducting the sense of subject which is not explicitly mentioned in the text

ऋजुकरण ṛjukaraṇa

ऋजूकरणं कुटिलशल्यस्य। (ड.-सु.सू. 7/17), कुञ्चितस्य गात्रस्य बन्धनादिना सरलीकरणम्। (हारा.-सु.सू. 7/17), वक्र या तिरछे शल्य को सीधा करना, एक प्रकार का यन्त्रकर्म, straightening

ऋतु ṛtu

1. काल। (च.सू. 6/3), काल का पर्यायवाची शब्द है, synonym of time 2. द्विमासिकमृतुं कृत्वा षडर्तवो भवन्ति। (सु.सू. 6/6), दो महीनों की एक ऋतु होती है, two months each make one season 3. स्त्रीणामार्तवकालः। (च.नि. 3/13), महिलाओं का मासिक धर्म, the menstual cycle

ऋतुमती ṛtumatī

गते पुराणे रजसि नवे चावस्थिते शुद्धास्नातां स्त्रियमव्यापन्नयोनिशोणित गर्भाशयामृतुमतीमाचक्षते।। (च.शा. 4/7), पुराने माह के संचित आर्तव के निकल जाने पर नूतन रज के गर्भाशय मे स्थित होने पर स्त्री जब शुद्ध होकर स्नान कर लेती है, जिसकी योनि, शोणित एवं गर्भाशय विकार रहित हो ऐसी स्त्री ऋतुमती कही जाती है, a woman in reproductive age whose menses flow is completed in that cycle

ऋतुसन्धि ṛtusandhi

ऋत्वोरन्त्यादि सप्ताहावृतुसन्धिरिति स्मृतः। (अ.सं.सू. 4/6), (अ.हृ.सू. 3/58), ऋतु का अन्तिम सप्ताह और अग्रिम ऋतु का प्रथम सप्ताह (इन चौदह दिनों) को ऋतुसन्धि कहते हैं, last one week of outgoing season and first week of incoming season; these two weeks are ritusandhi

ऋषभ ṛṣabha

1. ऋषभ। (सु.चि. 26/7), बैल, ox 2. ऋष्य, एक वनस्पति, a plant

ऋषभी ṛṣabhī

कपिकच्छुः। (सु.सू. 36/4, भा.प्र.नि. गुडूच्यादि 31), केवाँच, कौंच, *Mucuna pruriens*

ऋष्य ṛṣya

नीलाण्डो हरिणः। (चक्र.-च.सू. 27/46), नीले अण्डकोश युक्त हिरन, dear with blue scrotum

एककारण
ekakāraṇa
एकं-प्रधानं च तत्कारणं-निमित्तमेककारणम्।। (अरु.-अ.हृ.सू. 12/32), मुख्य कारण को एक कारण कहा जाता है, main causative factor

एककालिक
ekakālika
तत्र शीतोष्णस्निग्धरूक्षद्रव शुष्कैककालिकद्विकालिकौषधयुक्त मात्राहीन दोषप्रशमन वृत्यर्थाः।। (सु.उ. 64/56), केवल एक बार प्रयुक्त भोजन, आहार के बारह प्रकारों में से एक, given only once, one among twelve types of food administration

एककुष्ठ
ekakuṣṭha
अस्वेदनं महावास्तु यन्मत्स्यशकलोपमम्। तदेककुष्ठं चर्माख्यं बहलं हस्तिचर्मवत्।। (च.चि. 7/21), कुष्ठ प्रभावित भाग से पसीने का न निकलना, बड़े स्थान में फैला होना तथा जिसकी आकृति मछली की त्वचा जैसी हो, ऐसा कुष्ठ एक कुष्ठ कहलाता है, a type of leprotic condition characterized by absence of sweat in the affected area, which is of bigger extent and having fish scaled like appearance

एकताल
ekatāla
अत्र तालशब्देन प्रदेश उच्यते: ऐतेन एकं तालं एक: प्रदेशो यस्य तदेकतालम्।। (ड.-सु.सू. 7/12), तालयन्त्र का एक प्रकार, यहां पर ताल शब्द प्रदेश से सम्बन्धित है इसलिए एक ताल अर्थात् एक प्रदेश जिसका हो, वह एक ताल कहलाता है, a type of instrument, single sided spatula

एकदेशप्रकोपण
ekadeśaprakopaṇa
यथा रस एक देशे विकारं करोति, एवं दोषा अप्येक देश विकारं कुर्वन्तीत्याह दोषाणामित्यादि। (चक्र.-च.चि. 37/38), प्रकुपित हुआ दोष स्रोतस में रहकर वहीं विकृति उत्पन्न करता है, तथा अन्य दोष भी एक देश में विकार उत्पन्न करते हैं, vitiated dosha causes the deformity in the srotas, and other doshas cause deformity at the other sites

एकनाभिका
ekanābhikā
एक नाभिकायो: कस्मात्तुल्यं मरणजीवितम्। रोगारोग्यं सुखं दुखं न तु तृप्तिः समानजा। (का.सं. रेवतीकल्प 58), एक नाभि से उत्पन्न होने वाले (अर्थात् यमल-जुड़वां) पुत्रों की तृप्ति-पोषण समान न होने पर भी मृत्यु, जीवन, रोग, आरोग्य एवं सुख दु:ख आदि समान क्यों होते हैं, twins having a single umbilical cord

एककोलीसक
ekakolīsaka
कोष्ठिका शिखरपूर्णः कोकिलैर्ध्मानयोगतः। मूषाकण्ठमनुप्राप्तैरेककोलिशिखो मतः।। (रसे.चू. 4/39), (र.र.स. 8/37), कोष्ठी को पूरी तरह से शिखराकार कोयले से भरकर अग्नि प्रज्वलित कर धमन करने से जब कोयला मूषा के कण्ठ तक ही बचा रहे, शेष भाग जल जाये तो इस आँच को एककोलीसक कहते हैं, a stage of firing with charcoal in which it remains up to neck of furnace

एकत्व
ekatva
एकत्वेनेति एकीकृत्य समुदायमात्रश इत्यर्थः। (चक्र.-च.सू. 26/44), अनेक रसों को मिलाकर समुदाय रूप में मात्रा के अनुसार प्रयोग करना एकत्व कहलाता है, combination, unification

एकदंष्ट्रा
ekadaṃṣṭrā
एकदंष्ट्रार्दितः इति एकयैव दंष्ट्रया कृत इत्यर्थः। (चक्र.-च.चि. 23/154), एक ही विषाक्त दांत से काटा जाना, मंडूक विष के संदर्भ में, a single sting poisonous bite

एकदेश
ekadeśa
अंशात्मक एक भाग, एक विभाग, एक अंश। (अ.सं.सू. 7/210), partial part, one part

एकद्वार
ekadvāra
एक मुखः यथाबस्तिः। (अ.सं.शा 7/9), एक मुख वाला, जैसे बस्ति क्योंकि इसका एक ही मुख होता है, having only one opening or orifice or outlet

एकनाडिका
ekanāḍikā
प्रतीवापं ततो दत्वा प्रतीक्ष्यैवैकनाडिकाम्। (अ.सं.सू. 8/55), समय की एक इकाई, एक घटीका, इसमें प्रतीवाप देकर एक घण्टे तक प्रतीक्षा करनी चाहिए, a unit of time (required to wait)

एकाङ्गस्वेद
ekāṅgasveda
एकाङ्गताः सङ्करनाडयादयः। (चक्र.-च.सू. 14/66), संकर आदि स्वेद के प्रकार जो एक ही अंग में दिए जाएं, localised sudation/fomentation

एकाशन
ekāśana
एकाशनभोजनमिति एककालभोजनम्। (चक्र.-च.सू. 25/40), दिनभर में एक बार भोजन ग्रहण करना एकाशन कहा जाता है, one meal per day

एण
eṇa
कृष्णसारः। (चक्र.-च.सू. 27/47), कृष्णसार वर्ण का हरिण, एण कहलाता है, black coloured deer

एषणा
eṣaṇā
इष्यतेऽन्विष्यते साध्यतेऽनयेत्येषणाः। (चक्र.-च.सू. 11/3), जिसकी खोज की जाये अथवा जिसकी प्राप्ति के लिए प्रयत्नशील रहा जाये, उसे एषणा कहा जाता है या जिसकी इच्छा की जाये, जिसका अन्वेषण (चिन्तन, मनन) किया जाये, जिसे साध्य मानकर जिसमें सिद्धि के लिए प्रवृत्त हुआ जाये, उसे एषणा कहते हैं, ardent desire

ओक
oka
ओकः अभ्यासः। (चक्र.-च.सू. 13/28), अभ्यास, practice

ओकसात्म्य
okasātmya
अपथ्यमपि हि निरन्तराभ्यासाद् विषमिवाशीविषस्य नोपघातकं भवतीति भावः। (चक्र.-च.सू. 6/49), निरन्तर अभ्यास से जब अपथ्य भी सात्म्य की तरह हो जाता है तो उसे ओकसात्म्य कहते हैं, habituation

ओज
oja
ओजः प्रसादो धातूनामिति यावत्। (चक्र.-च.सू. 17/80), रसादीनां शुक्रान्तानां धातूनां यत् परं तेजस्तत् खल्वोजः तदेव बलमित्युच्यते, स्वशास्त्र सिद्धान्तात्। (सु.सू. 15/19), धातुओं का सार अंश ओज है। रस से शुक्र तक धातुओं के श्रेष्ठ तेज को ओज कहते हैं, बल इसका पर्याय है, essence of all the dhatu is oja, bala is its synonym

ओष
oṣa
ओषः पार्श्वस्थितेनेव वह्निना पीडा। (चक्र.-च.सू. 20/14), पार्श्व में स्थित अग्नि के समान पीड़ा की अनुभूति, localised burning sensation

ओषधि
Oṣadhi
ओषध्यः फलपाकान्ताः। (च.सू. 1/72), फलस्य पाकादन्तो विनाशी येषां तिलमुद्गादीनां ते फलपाकान्ताः। (चक्र.-च.सू. 1/72), फल आने के बाद विनाश को प्राप्त, herbs that perish after fruiting

औत्सुक्य
outsukya
औत्सुक्यं हर्षोद्रेकः। (चक्र.-च.सू. 10/20), प्रसन्नता के अतिरेक (अतिशय आनन्द) को 'औत्सुक्य' कहा जाता है, intense pleasure, euphoria

औद्भिद
oudbhida
1.उद्भिद्य पृथिवीं जायत इति औद्भिदं वृक्षादि। (चक्र.-च.सू. 1/68), जो जमीन से वृक्षादि उत्पन्न होते हैं उन्हें औद्भिद कहते हैं, sprouting from the earth is called oudbhida, it refers to plants. 2. औद्भिदं औत्कारिका लवणं, केचिच्छाम्भरीलवणमाहुः। (चक्र.-च.सू. 1/89), जमीन से प्राप्त होने वाले नमक के नाम औद्भिद लवण, औत्कारिक लवण और साम्भरी लवण आदि हैं, salt obtained from the earth

औद्भिदगण
Oudbhidagaṇa
औद्भिदोगण इत्यौद्भिदसमुद्भूतो गणः। (चक्र.-च.सू. 1/74), औषधि के सभी भाग तना, पत्ते, बीज आदि औद्भिदगण कहलाते हैं, the parts of the herb like root, leaf, seed etc. are cellectively called audbhidagana

कंस
kaṃsa
कंस आढकः। (चक्र.-च.सि. 3/44), मान या प्रमाण का एक भेद, यह एक भार का प्रमाण है (तोलने में प्रयुक्त), this term is used for measurement of weight

कंसहरीतकी
kaṃsaharītakī
दशमूलकषायस्य कंसे पथ्याशतं गुडात्, तुलां पचेत्ततो दद्याद् व्योषक्षारचतुःपलम्।। (चक्र.-च.चि. 12/50), शोथ चिकित्सा में चरक द्वारा वर्णित एक योग, इसमें कंसप्रमाण दशमूलकषाय, 100 हरीतकी एवं गुड का प्रयोग होता है, a confection prepared of 2560 gms dashmula, 100 haritaki and jiggery, it is used in oedema

कंसीय
kaṃsīya
कंसीयं कास्यकं कास्यं घोषपुष्पञ्च घोषकम्। (र.त. 22/21), धातु कांस्य, it is a type of metal

12—4 Min. of HRD/2016

ककारादिगण
kakārādigaṇa
कण्टकारीफल, काञ्जिक, कलमीशाक, राजिका, निम्बूक, कतक, कलिंगक, कूष्माण्ड, कर्कटी, कारी (कण्टकारीभेद) कुक्कुट, कारवेल्लक, कर्कोटिका, वृन्ताक, कपित्थक इनको ककारादि गण कहा जाता है। (र.र.स. 11/128), a group of drugs contraindicated in parada ingestion period

ककुद
kakuda
दर्वीकर सर्प। (सु.क. 4/33-1) एक प्रकार का फणयुक्त सर्प, one of the poisonous snake having hood

ककेरुक
kakeruka
पुरीषजा: कृमि। (च.वि. 7/13), पुरीषज कृमि, one of a varieties of purishaja krimi

कक्ष
kakṣa
काष्ठसमूहः। (चक्र.-च.सू. 13/72), लकडियों का समूह, a group of woods

कक्षग्रन्थि
kakṣagranthi
कक्षायां जायमानो ग्रन्थिः कक्षा। (र.र.स. 24/131), कक्ष प्रदेश में उत्पन्न होने वाली गोल एवं ऊँची गाँठ की उत्पत्ति को कक्षग्रन्थि कहते हैं, tumour or abscess appearing in the axillary region

कक्षधरमर्म
kakṣadharamarma
विटपमेवं वक्षःकक्षयोर्मध्ये कक्षधरम्। कक्षधरे पक्षाघातः। (सु.शा. 6/24), यह एक वैकल्यकर मर्म है। वक्ष स्थल और कक्षा के मध्य स्थित कक्षधर मर्म के विद्ध होने से पक्षाघात हो जाता है, it is a vital point present is between chest and axilla, trauma to this point leads to paralysis

कक्षा
kakṣā
1.कक्षा बाहुमूलम्। (ड.-सु.सू. 5/13), कक्षा को बाहुमूल कहा जाता है, base of the arm i.e. axilla 2. अष्टकौ स्कन्धे कक्षे च। (अ.सं.शा. 8/36), शरीर का अङ्ग है जिसका प्रमाण आठ अंगुल है, it is one of the part of body having eight angul measurement 3. यज्ञोपवीतव्याप्यस्थानमात्रव्यापकाः स्फोटा एव, कक्षाशब्दाख्याः। (चक्र.-च.चि. 12/91), कक्षा कक्षदेशगतमांसदारणाः स्फोटाः सुश्रुतक्षुद्ररोगोक्ताः। (चक्र.-च.सू. 20/15-16), बाहुपार्श्वांसकक्षासु कृष्ण स्फोटां सवेदनाम्। पित्तप्रकोपसंभूतां कक्षामिति विनिर्दिशेत्। (सु.नि. 13/15), शोथ रोग, बाहु, पार्श्व, कन्धे एवं कांख में वेदनायुक्त स्फोट, क्षुद्र रोगों में से एक रोग, पित्तज विकारों में से एक रोग जिसमें बाहु के पार्श्व, अंस के मध्य कक्षा में काले वर्ण की वेदना युक्त फुंसियाँ उत्पन्न होती है, इस रोग को 'कक्षा' के नाम से कहा गया है, one of the ksudra roga, one of the pittaja disorder in which black coloured painful papules appear in the axillary region

कक्ष्या
kakṣyā
कक्ष्यावत् - सुविभक्तयथोदितस्थानम्। (इंदु.-अ.सं.सू. 8/57), ऐसी जगह जो अच्छी तरह से विभाजित हो, well differentiated place

कङ्क kaṅka

कंक शारपदेन्द्राभगोनर्दगिरिवर्तका। (च.सू. 27/49), कङ्कोदीर्घचञ्चुर्महाप्रमाण: उक्तं च कङ्क: स्यात् कङ्कमल्लाख्यो बाणपत्राईपक्षक:। (ड.-सु.सू. 46/74), एक प्रकार का पक्षी जो अपना खाना छीन कर खाता है, a type of bird named 'ostrich' who eats food by capturing

कङ्कमुख kaṅkamukha

यन्त्रेष्वत: कङ्कमुख प्रधानं स्थानेषु सर्वेष्वधिकारि यच्च। (अ.सं.सू. 34/19). एक प्रकार का यन्त्र जिसका आकार कंकमुख जैसा होता है, जो सब स्थानों में प्रयुक्त हो सकता है, one type of instrument, having shape of ostrich mouth, it is considered as a principal instrument because of its use at all place

कङ्कु kaṅku

कपोतशुकशारङ्गश्चिरटीकङ्कुयष्टिका:। (च.सू. 27/52), यह प्रतुद वर्ग का एक पक्षी है जो चोंच से प्रहार कर आहार खाता है, it is a type of pecker bird which eats its food by bitting with beak

कङ्कोल kaṅkola

कंकोल वनस्पति। (सु.चि. 24/21), (च.चि. 26/210), कंकोल एक वनस्पति द्रव्य है, a type of herb

कच kaca

बाल, hair

कचशतन kacaśatana

केशपतनम्। (अ.सं.सू. 31-12), बालों का गिरना/झड़ना, falling of hair

कचान्त kacānta

कचान्तकृत् केशविनाशकारीत्यर्थ:। (ड.-सु.चि. 1/108), केश (बालों) को विनाश करने की विधि, व्रण के साठ उपक्रमों में से एक विधि जिसमें व्रण के रोहण हेतु बालों को हटाया जाता है, to remove the hair

कचामोद kacāmoda

बालकम्। (रा.नि. 10/165), सुगन्धबाला नामक द्रव्य, *lat.-Andropogan muricatus*

कचोर kacora

कचूरो वेधमुख्यश्च द्राविड: कल्पक: शटी। (भा.प्र. कर्पूरादि 95), एक वनस्पति द्रव्य कर्चूर, a herbal drug (rhizome)

कच्छप kacchapa

1. कूर्मोत्सनोऽवेदनोऽशीघ्रजन्माऽरक्तो ज्ञेय: कच्छप: श्लेष्मणा स्यात्। (सु.नि. 16/43), कच्छप, तालु रोगों में वर्णित एक व्याधि है, a palatal disorder 2. कूर्म:। (च.चि. 19/38), कछुआ, a tortoise

कच्छपयन्त्र kacchapayantra

बलिजारणसिद्धयर्थं यन्त्रं कच्छपसंज्ञकम्। (र.त. 4/20), पारद संस्कार, बलि, जारण और सिद्ध करने में प्रयुक्त होने वाले यन्त्र का नाम 'कच्छपयन्त्र' है, it is one of instruments used in samskara of mercury

कच्छपिका kacchapikā

महामूलाऽवगाढाऽर्त्तितोदा श्लक्ष्णा कच्छपपृष्ठनिभा कच्छपिका। (अ.सं.नि. 10/22), प्रमेह पिडिकाओं में से एक पिडिका कच्छपिका है जो महामूलवाली घन अर्ति तीद सहित कच्छप की पृष्ठ के समान दिखने वाली पिडिका है, carbuncle, one type of eruptions generally found in diabetic patient

कच्छपी kacchapī

मध्योन्नतत्वेन पर्यन्तेष्वनतत्वेन काठिन्येन च कच्छपिका, सा कफवातोत्था। (गय.-सु.नि. 13/8), एक क्षुद्ररोग, मध्य में उन्नत एवं किनारों पर नत, कठिन, कच्छपपृष्ठ समान कफवातज पिड़का जो पांच व छ: होती है, a type of eruptions/furunculosis

कच्छू kacchū

सैव पाण्यो: स्फिजोश्च तीव्रदाहै: स्फोटेरूपगता कच्छूरुच्यते। (सु.नि. 5/14-15), एक क्षुद्र रोग, हाथ, पैर, नितम्ब प्रदेश में तीव्र दाह युक्त स्फोट को कच्छू कहते हैं, one type of ksudra roga is which painful and burning eruptions appear on hands, feet and gluteal region

कज्जल kajjala

कज्जली कज्जलश्चैव मता कज्जलिका च सा। रससम्पादनादौ च विशेषात्सा विधीयते। (र.त. 2/28), पारद और गन्धक को समभाग में एकत्र पीसकर काले वर्ण का जो सूक्ष्म चूर्ण तैयार होता है, उसे कज्जल कहते हैं, black coloured fine powder prepared by thoroughly grinding equal quantity of mercury and sulpher

कज्जली kajjalī

धातुभिर्गन्धकाद्यैश्च निर्द्रवैर्मर्दितो रस:। सुश्लक्ष्ण: कज्जलाभोऽसो कज्जलीत्यभिधीयते।। (र.र.स. 8/5), किसी द्रव पदार्थ के बिना गन्धकादि धातुओं के साथ पारद को मर्दन कर चिकना तथा कज्जल के समान जो काला चूर्ण बनाया जाता है, उसे कज्जली कहते हैं, a preparation made by triturating mercury with that of sulpher, black sulphurate of mercury

कज्जलीबन्ध kajjalībandha

कज्जली रसगन्धोत्था सुश्लक्ष्णा कज्जलोपमा। तत्योगेन संयुक्ता कज्जलीबन्ध उच्यते।। (र.र.स. 11/71), पारद एवं गन्धक से निर्मित कज्जली जिन योगों में डाली जाती है, उनको कज्जलीबन्ध कहते हैं, the formulations in which mercuric sulphide is added

कञ्चक kañcaka

कञ्चको मध्य लेखनिचित: ऋजुक पत्र ईषद्रक्त मूल: 'कवहक' इति मालवके प्रसिद्ध:, अन्ये तु कञ्चक स्थाने ककुभ इति पठन्ति। 'कवहक' नामक वनस्पति, अश्मरी में प्रयुक्त, a herb used in the treatment of urolithiasis

कञ्चुक kañcuka

पारददोष, कंचुक: आवरणम्, पारदस्य पर्पटयाद्या गुणाच्छादका दोषा:। (र.र.स. 1/80), ये पारददोष हैं, ये पारद के ऊपर एक प्रकार का आवरण है, impurities of mercury, as its cover

कञ्चुका
kañcukā
वनस्पति, अश्वगंधा। (ध.नि. 1/271), अश्वगंधा, असगंध, *Withania somnifera*

कञ्चुकावरण
kañcukāvarana
पारद में स्थित दोष, जो कभी-कभी इसके पृष्ठ पर लेप के रूप में होता है। (र.र.स. 11/24), impurity of mercury as coating on its surface

कट
kaṭa
कट: तृणादिरचितमासनम्। (चक्र.-च.सू. 15/7), घासफूस द्वारा निर्मित आसन या चटाई, carpet made of grass

कटपूतना
kaṭapūtanā
बालग्रह, शीतपूतना। (का.चि. 4/48), यह शीतपूतना नामक बालग्रह का पर्यायवाची है, it is a synonym of bala graha 'sheet putana'

कटशर्करा
kaṭaśarkarā
अग्निदग्ध शर्करा। (ड.-सु.चि. 23/4), गाङ्गेष्ठी (ड.-सु.सू. 11/11), कटशर्करा, burnt sugar

कटि
kaṭi
श्रोणि:। (हे.-अ.हृ.सू. 12/1), श्रोणी, अस्थि से बना हुआ और ऊर्वस्थि से जुड़ा हुआ अवकाश कटि कहलाता है, इसका पर्याय श्रोणी है, it is formed by union of pelvic bones i.e. (iliam, ischium, pubis) and joined by femur

कटिग्रह
kaṭigraha
रोगलक्षण, कटेर्ग्रह:। (च.चि. 11/13), कट्या ग्रहणम्। (सु.उ. 40/108), कमर का अकड़ना, lumbo sacral spasm

कटिदौर्बल्य
kaṭidaurbalya
कटिस्थानस्य दौर्बल्यम्। (च.चि. 14/133), कटि में दुर्बलता की प्रतीति, weakness in lumbar region

कटिभग्न
kaṭibhagna
वंक्षणसंधिविश्लेषणम्। (सु.चि. 3/28), वंक्षण संधि का विश्लेषण होना, कटि प्रदेश का भग्न, dislocation of hip joint

कटिशूल
kaṭiśūla
रोग, चतु:षष्टि सूतिकारोगष्वेक:। (का.खि. 11/8), 64 रोगों में से एक सूतिका रोग जिसमें कटि प्रदेश में शूल होता है, one of the 64 diseases of puerperum in which pain occurs in lumbar region

कटीकतरुण
kaṭīkataruṇa
उभयत: प्रतिश्रोणिकाण्डमस्थिनी कटीकतरुणे। (सु.शा. 6/26), पृष्ठमर्म। (सु.शा. 6/6), कालान्तरप्राणहरमर्म। (सु.शा. 6/11), अस्थिमर्म। (सु.शा. 6/7), पृष्ठमर्म, कालान्तर प्राणहरमर्म एवं अस्थिमर्म, पृष्ठवंश, a vital point

कटीकपाल
kaṭīkapāla
कटीकपाल: कटीफलक:। (ड.-सु.नि. 4/4), कटी फलक अस्थि, bone of pelvis i.e. ischium

कटु
kaṭu
स्वादुम्लोऽथ लवण: कटुकस्तिक्त एव च। कषायश्चेति षट्कोऽयं रसानां संग्रह: स्मृत:। (च.सू. 1/65), पिप्पली नागरं कटौ। (सु.सू. 46/336), उद्वेजयति जिह्वाग्रं कुर्वेश्चिमिचिमां कटु:। स्रावयत्यक्षिनासास्यं कपोलौ दहतीव च।। (अ.हृ.सू. 10/5), छ: रसों में से एक रस, जैसे पिप्पली एवं नागर, यह जिह्वाग्र को उद्वेजित करता है, चिमचिमायन एवं अक्षि, नासा, एवं मुख से स्राव तथा कपोल दाह करता है, acrid taste

कटुकास्यता
kaṭukāsyatā
मुखस्य कटुरसत्वम्। (च.चि. 1/24), पित्तज ज्वर का एक लक्षण, मुख में कटु रस की अनुभूति होना, bitter taste/acrid taste in mouth

कटुतैल
kaṭutaila
सर्षपतैलम्। (अरु.-अ.हृ.सू. 7/41), कटुतैलविमिश्रैर्योनिमुखं धूपयेत्। (सु.शा. 10/21), सरसों का तैल, योनिधूपन में प्रयुक्त, कण्डूहर, mustard oil

कटुत्रय
kaṭutraya
पिप्पली मरिचं शुण्ठी त्रयमेतद्विमिश्रितम्। त्रिकटु त्र्यूषणं व्योषं कटुत्रयमिहोच्यते।। (ध.नि. 7/5), दीपनं रुचिदं वातश्लेष्ममन्दाग्निशूलनुत्।। (ध.नि. 7/6), पिप्पली, मरिच, शुण्ठी को सम्मिलित रूप से कटुत्रय कहते हैं, यह दीपन, रुचिप्रद, वात, कफ, मन्दाग्नि एवं शूलहर है, three acrid drugs

कटुरस
kaṭurasa
कटुको भृशं उद्वेजयति जिह्वाग्रं, चिमिचिमायति कण्ठकपोलं, स्रावयति मुखाक्षिनासिकं विदहति देहम्। (अ.सं.सू. 18/4), वायु तेजसो कटुक:। जो जिह्वा के अग्रभाग में उद्वेग, कण्ठ एवं कपोल में चिमिचिमायन, मुख, नेत्र एवं नासिका से स्राव तथा देह में दाह उत्पन्न करता है, वह कटु रस कहलाता है, वायु और अग्नि की अधिकता से कटु रस उत्पन्न होता है, pungent taste, katu rasa is due to excess of air and fire, it stimulates and causes tingling sensation in tongue, throat and cheeks, increases secretion in mouth, eyes and nose and produces burning sensation in the body

कटुविपाक
kaṭuvipāka
शुक्रहा बद्धविण्मूत्रो विपाको वातल: कटु:। (च.सू. 26/61), जो शुक्रनाशक, मल एवं मूत्ररोधक तथा वात की वृद्धि करता है, वह कटुविपाक है, acrid type post digestive changes

कटोरी
kaṭorī
चषकं च कटोरी च वाटिका खारिका तथा। कञ्चोली ग्राहिका चेति नामान्येकार्थकानि हि।। (र.र.स. 7/20), चषक, वाटिका, खारिका, कंचोली, ग्राहिका आदि कटोरी के पर्यायवाची शब्द हैं, a bowl

कट्वर
kaṭvara
तक्रम्, सौवीराम्लमथात्यम्लं काञ्जिकं कट्वरं विदु:, अन्ये तु तदधोभागं तक्रं वाऽत्यम्लतां गतम्, सस्नेहं दधिजं तक्रमाहुरन्ये तु कट्वरम्।। (ड.-सु.सू. 46/451), सस्नेह दही का मन्थन करके बना तक्र, दही में पानी न मिलाकर उसका मथकर बनाया हुआ तक्र, अम्लता युक्त तक्र, sour buttermilk

कठिन kaṭhina
गुर्वादिगुण, मृदुविपरीतगुण। (चक्र.-च.सू. 1/49), दृढने कठिनः। (हे.-अ.हृ.सू. 1/18), मृदुस्तद्विपर्ययः कठिनः। (अरु.-अ.हृ.सू. 1/18), मृदु के विपरीत कठिन गुण होता है, दृढीकरण गुण युक्त कठिन होता है, यह पार्थिव द्रव्यों का गुण है, hard

कडार kaḍāra
मृदु कण्टं कडारं च त्रिविधं मुण्डमुच्यते। (ध.नि. 6/25), यद्हतं भज्यते भंगे कृष्णं स्यात्तत्कडारकम्। (र.र.स. 5/71), यह मुण्डलौह का एक भेद है, इस पर प्रहार करने से यह टूट जाता है, टूटने पर यह काले रंग का दिखता है, a variety of mundaloha

कण kaṇa
खण्डतण्डुलाः। (इन्दु-अ.सं.उ. 1/18), चावल का टुकडा, a piece of rice grain

कणकणिका kaṇakaṇikā
तण्डुल, धान्यनिष्तुष। (च.शा. 8/47), निष्तुष धान, तण्डुल, कणक, rice

कणभ kaṇabha
कणभाश्चतुष्पदाः कीटाः साध्याश्च। (ड.-सु.क. 8/26), मक्षिका कणभ मुखसन्दंश विषाः। (सु.क. 3/5), विसर्पः श्वयथुः शूलं ज्वरश्छर्दिरथापि च, लक्षणं कणभैर्दष्टे दंशश्चैव विशीर्यते।। (च.चि. 23/152), साध्य चतुष्पद कीट, मुखसंदंश विष कीट, दंश से विसर्प, शोथ, शूल, ज्वर, छर्दि आदि लक्षण होते हैं, भौंरा, a poisonous insect

कणभक kaṇabhaka
विषयुक्त कीट, पित्तप्रधान विषयुक्त कीट, पित्तविष कीट। (सु.क. 8/8), one of a poisonous insects predominating in pitta

कणवीरका kaṇavīrakā
मनःशिला भेद। (र.र.स. 3/91), तेजस्विनी च निर्गौरा ताम्राभा कणवीरका। (र.र.स. 3/92), चमकीला पीलिमा रहित ताम्र वर्ण का मनः शिला का एक भेद, a variety of realgar

कण्टकवेधीपत्र kaṇṭakavedhīpatra
स्वर्ण, रजत एवं ताम्र का बनाया गया इतना पतला पत्र जिसे कांटे से वेधा जा सके, इन पत्रों का उपयोग भस्म बनाने के लिये किया जाता है, thinest possible sheet of gold, silver etc. that can be pierced by thorn, used to make calcined preparation

कण्ठ kaṇṭha
शरीरावयव, दश प्राणायतनों में से एक। (च.शा. 7/9), गलः। (इन्दु-अ.सं.उ. 25), गला, कण्ठ, throat

कण्ठकूजन kaṇṭhakūjana
अव्यक्त शब्दोत्थानं कण्ठे। (ड.-सु.उ. 39/37), कण्ठ से अस्पष्ट शब्द निकलना, sound from the throat that is not clear

कण्ठक्षणन kaṇṭhakṣaṇana
कण्ठ में क्षत्वत् पीड़ा। (अ.सं.क. 3), कण्ठ में क्षत् होने के सदृश पीड़ा, pain in throat

कण्ठगतरोग kaṇṭhagataroga
सप्तदश कण्ठे। (सु.नि. 16/3), गलरोग, कण्ठ में 17 रोग होते हैं - पांच रोहिणी, कण्ठशालूक, अधिजिह्वा, वलय, बलास, एकवृन्द, वृन्द, शतघ्नी, गिलायु, गलविद्रधि, गलौघ, स्वरघ्न, मांसतान, विदारी (सु.नि. 16/46), disease of throat

कण्ठघ्न kaṇṭhaghna
स्वरसादकृत्। (हे.-अ.हृ.सू. 6/126), आमं कपित्थं कण्ठं हन्ति। (अरु.-अ.हृ.सू. 6/126), स्वरनाश करने वाला, कच्चा कैथ कण्ठ एवं स्वरनाशक है, harmful to voice

कण्ठजनन kaṇṭhajanana
कण्ठ्यगण, कण्ठाय हितम्, हंसपदी बृहतीद्वय मृद्वीकासारिवेक्षुमूलानि, कैडर्यमधुककृष्णाः सविदार्य कण्ठजननानि। (अ.सं.सू. 15/7), कण्ठ के लिये हितकर औषध गण जिसमें हंसपदी, बृहती, कण्टकारी, मृद्वीका, सारिवा, इक्षुमूल, पर्वतनिम्ब, मधुक, पिप्पली, विदारी आदि सम्मिलित हैं, beneficial for throat

कण्ठतालु kaṇṭhatālu
कण्ठस्योर्ध्वतनो भागः। (च.शा. 8/41), कण्ठ का ऊपरी भाग, palate

कण्ठधूम kaṇṭhadhūma
कण्ठे धूमोद्वमनमिव। (ड.-सु.उ. 47/21), कण्ठ से धुंआ निकलने जैसा अनुभव होना, smoky eructation

कण्ठधूमायन kaṇṭhadhūmāyana
कण्ठादधूमनिर्गम इव प्रतीतिः। (विज.-मा.नि. 9/4), कण्ठ से धूम निकलने की प्रतीति, smoky eructation

कण्ठध्वंस kaṇṭhadhvaṃsa
अस्सी वातविकारों में से एक। (अ.सं.सू. 20/15), स्वर का नाश होना, aphonia

कण्ठनाडी kaṇṭhanāḍī
स्वरस्थान, श्वासमार्ग। (सु.शा. 5/19), respiratory passage, trachea

कण्ठपाक kaṇṭhapāka
कण्ठ में पाक का होना, पित्तज्वर लक्षण। (च.नि. 1/24), pharyngitis

कण्ठपीडन kaṇṭhapīḍana
बाहुरज्जुलतापाशैः कण्ठपीडनाद्वायुः प्रकुपितः। (सु.सू. 27/22), बाहु, रस्सी, लता, पाश आदि से कण्ठ को दबाना, जिससे वायु का अवरोध होता है, strangulation

कण्ठोध्वंस kaṇṭhodhvaṃsa
कण्ठभेदः, उत्कासिकेति। (विज.-मा.नि. 10/6), शुष्ककासः। (गंगा.-च.सू. 30) कण्ठ में क्षोभ से उत्पन्न शुष्क कास, pharyngitis

कण्डक kaṇḍaka
तण्डुलक्षोदचूर्णनम्। (इन्दु-अ.सं.उ. 1/18), चावल से निर्मित आटे को कंडक कहते हैं, rice flour

कण्डराभा kaṇḍarābhā
कण्डराभा स्थूल स्नाय्वाकारा। (चक्र.-च.सू. 17/90), स्थूल स्नायु के आकार का, resembling to sthula snayu

कतक kataka
कतकं छेदनीयञ्च कतं कतफलं मतम्। (ध.नि. 1/152), निर्मली, *Strychnos potatorum*

कथन kathana
वर्णन करना, describe

कथा kathā
कथा तत्वजिज्ञासार्थमन्योन्यपृच्छा। (चक्र.-च.सू. 25/3), तत्वज्ञान की इच्छा से किया गया परस्पर विचार कथा है, scientific conversation to gain knowledge

कदम्ब kadamba
एक वनस्पति। (भा.प्र.पू. पुष्पव. 36), हिं - कदम, *Anthocephalus cadamba*

कदल kadala
केला, केली, banana tree

कन्द kanda
भू गत मूल, गांठदार जड़, tubers, bulbous root

कन्दली kandalī
श्वेतश्लक्ष्णबहुपुटकन्दविशेषः 'सर्पच्छत्रकम्' इति लोके। (ड.-सु.सू. 39/8), श्वेत एवं चिकना, अनेक पुटयुक्त कन्द विशेष, जो लोक में सर्पछत्रक नाम से जाना जाता है, पित्तसंशमन वर्ग में सम्मिलित एक द्रव्य, mushroom, a herb of pitta pacifying group

कन्दु kandu
लोहमयं न्युब्जं कन्दुः। (हे.-अ.हृ.सू. 6/42), अंगीठी के आकार की अग्नि रखने की भड़ोली, a small circular mud pot for keeping fire

कन्धरानति kandharānati
कन्धों का झुका हुआ होना (स्कन्दापस्मार का लक्षण), having stooping shoulder

कपिला kapilā
मनःशिला रञ्जिताभ्यामिव पार्श्वाभ्यां पृष्ठे स्निग्धा मुद्गवर्णा कपिला। (सु.सू. 13/12), मुद्गवर्णा हरितमुद्गवर्णा, पिङ्गला कपिला। (ड.-सु.सू. 13/12), मनःशिला के समान पीतवर्ण रंजित पार्श्व युक्त, स्निग्ध पृष्ठयुक्त एवं हरी मुद्ग समान वर्ण युक्त जलौका, कपिला है यह निर्विष होती है, a type of non poisonous leech

कपोतपुट kapotapuṭa
वन्योत्पलैरष्टसंख्यैः क्षितौ यद्दीयते पुटम्, रसादीनान्तु सिद्ध्यर्थं तत्कपोतपुटं स्मृतम्।। (र.त. 3/43), यत्पुटं दीयते भूमावष्टसंख्यैर्वनोत्पलैः। बद्ध्वा सूतार्कभस्मार्थं कपोत पुटमुच्यते।। (र.र.स. 10/57), पारदादि भस्म निर्माणार्थ आठ वन्योपल का भूमि के अन्दर गड्ढा बनाकर दिया गया पुट, कपोतपुट

13—4 Min. of HRD/2016

कलम kalama
कलमो वेदाग्रहारेषु स्वनामप्रसिद्धः। (चक्र.-च.सू. 27/8), शूकधान्यविशेष, जो राजाओं द्वारा ब्राह्मणों को दी गई भूमि में उगाया जाता है, a cereal grown on land donated to branhmins by kings

कलल kalala
तथा प्रथमे मासि कललं जायते। (सु.शा. 3/18), कललं सिङ्घाण प्रख्यम्। (ड.-सु.शा. 3/18), प्रथमेमास्यव्यक्तलिङ्गः कललावस्थो गर्भो भवेत्। (अरु.-अ.हृ.शा. 1/49-1), प्रथम मास में गर्भ की संज्ञा, प्रथम मास में अव्यक्त लक्षणों वाला गर्भ, conceptous/embryo in first month, undifferentiated stage of embryo during first month

कला kalā
1.कला गुणः। (चक्र.-च.सू. 12/2), गुण, quality 2. त्रिंशत्काष्ठाः कला। (सु.सू. 6/5), समय गणना, तीस काष्ठा की एक कला होती है, measurement of time where one kala is of thirty kashta 3. धात्वाशयान्तरमर्यादा। (सु.शा. 4/5), धातु एवं आशय के बीच में रहने वाली कला, membrane (kala) which is situated between ashaya and dhatu

कलायखञ्ज kalāyakhañja
गमनारम्भ एव वेपते कलायखञ्ज इत्ययं खञ्जाद्विशेषः। (सु.नि. 1/78), कलाय दाल के सेवन से उत्पन्न विषाक्तता जिसमें लंगडापन होता है, lathyrism

कलुषेन्द्रिय kaluṣendriya
आविलचक्षुः, व्याकुलसर्वेन्द्रियो वा। (विज.-मा.नि. 5/27), नेत्रों में गंदलापन होना, सभी इन्द्रियों का व्याकुल होना, turbid eye, disturbed function of senses

कल्क kalka
द्रव्यमार्द्रं शिलापिष्टं शुष्कं वा सजलं भवेत्। प्रक्षेपावापकल्कास्ते तन्मानं कर्षसंमितम्।। (शा.सं.म. 5/1), आर्द्रद्रव्य अथवा शुष्कद्रव्य में जल मिलाकर उसको शिला के ऊपर पीसकर निर्मित कल्पना कल्क कहलाती है, a paste

कल्प kalpa
विधि, सामर्थ्य, योजना, औषध योग, method, capacity, planning, drug preparation 2. विषभेषजकल्पनादितिः विषौषधविज्ञानात्। (ड.-सु.सू. 3/28), विष विज्ञान, toxicology

कल्पन kalpana
1.कर्तनं। (च.शा. 8/44), गर्भनालकर्तन, गर्भनाल को काटना, excision, to cut (in reference to umbilical cord) 2. कल्पनमुपयोगार्थं प्रकल्पनं संस्करणमिति यावत्, स्वरसादि बहुलक्षणम्। (चक्र.-च.सू. 4/7), स्वरस कल्कादि लक्षणों वाली कल्पनाओं अथवा संस्कार को कल्पन कहते हैं, the term kalpana refers to the processing or preparation of the medicines

कल्पोपनिषत् kalpopaniṣat
कल्प एवोपनिषत् कल्पोपनिषत्। (चक्र.-च.सू. 4/4), कल्प से सम्बन्धित वर्णन अर्थात् उपनिषत्, refers to the kalpasthana of Caraka samhita

कल्य
kalya
नीरोगः। (चक्र.-च.वि. 8/7), स्वस्थ, निरोग, healthy, free from disease

कल्याणमातृक
kalyāṇamātṛka
कल्याणमातृक-कल्याणी माता यस्य। (का.सं.सू. लेहाध्याय), जिसकी माता कल्याण युक्त हो, कल्याण का अर्थ अक्षय स्वर्ग से है। मोदिनी में कहा गया है- कल्याणमक्षयस्वर्गे। जिस बालक की माता अक्षय स्वर्ग (मोक्ष) को प्राप्त हो गयी है तथा जिसकी माता विमाता हो उसे कल्याणमातृक कहते हैं, a child who has step mother because of demise of his mother

कवल
kavala
मुखे अपूर्णे सति यः संचारयितुं शक्यते, स कवल उच्यते। (अरु.-अ.हृ.सू. 22/12), कपोलौ कण्ठं च संचार्य। (हे.-अ.हृ.सू. 22/12), मुख में इतना द्रव लें जिसको कि कण्ठ एवं कपोलों के बीच में घुमाया जा सके, इस प्रकार की प्रक्रिया को कवल कहते हैं, rinsing or filling of mouth with medicated liquids, gargle

कषायमद्य
kaṣāyamadya
कषाय द्रव्यकृतं मद्यं कषायमद्यं, किंवा कषायशब्दो अमधुरवचनः। कषाय या अमधुर द्रव्यों से बनी मद्य, alcohol prepared from astringent or non sweet articles

कषायरस
kaṣāyarasa
कषायस्तु जडयतिजिह्वां बध्नाति कण्ठं पीडयति हृदयम्। (अ.हृ.सू. 18/4-5), वाय्व्योः कषायः। जो जिह्वा में स्तब्धता, कण्ठ में अवरोध एवं हृदय का पीडन करता है, वह कषाय रस है, कषाय रस वायु और पृथिवी की अधिकता से होता है। यह जिह्वा को जड़ कर देता है, गले को बन्द कर देता है और हृदय में पीड़ा उत्पन्न करता है, astringent taste, it is constituted by air and earth, it causes stiffness in the tongue, constriction in throat and produces pain in cardiac region

कषायास्यता
kaṣāyāsyatā
मुख में कसैलापन या कषाय रस की अनुभूति। (च.नि. 1/21), astringent taste in mouth

काकवी
kākavī
फाणितं क्षुद्रगुडः 'काकवी' इति लोके। (ड.-सु.सू. 45/159), फाणित का लोक प्रचलित नाम काकवी है, a colloquial term used to describe confection preparation

काचकूपी
kācakūpī
काचमृत्तिकयोः कूपी हेम्नोऽयस्तारयोः क्वचित्। (रसे.चि. 2/18), एक काच की बोतल के ऊपर कपड़मिट्टी से सात बार लेप करके उसकी ताप सहनशीलता को बढ़ाया जाता है, a glass bottle smeared with clay and cloth for seven times to increase its temparature tolerance

काचोपल
kācopala
जलौकःक्षारदहन काचोपल नखादयः। अलौहान्यनुशस्त्राणि, तान्येवं च विकल्पयेत्।। (अ.हृ.सू. 26/27), कांच का टुकड़ा, एक प्रकार का अनुशस्त्र, a piece of glass, a type of anushastra

काञ्जी
kāñjī
कुल्माषधान्यमण्डादि संधितं काञ्जिकं विदुः।। (शा.सं.म. 10/12), कुल्माष (कुत्सित अन्न) एवं चावल आदि के मण्ड का सन्धान करने से निर्मित अम्ल पदार्थ, sour vinegar

काण
kāṇa
काण शब्दोऽल्पवचनः, यथा-काणो मेघ इति। (चक्र.-च.सू. 25/39), काण शब्द अल्पता का द्योतक है, यथा अल्पमेघ, little, less

कादम्बरी
kādambarī
परिपक्वान्न संधान समुत्पन्नां सुरांजगुः। सुरामण्डः प्रसन्ना स्यात्ततः कादम्बरी घनः। (शा.सं.म.ख. 10/5), यह प्रसन्ना की अपेक्षा कुछ गाढ़ा होता है, यह दूसरी परत प्रथम परत की अपेक्षा गाढ़ी होती है, इसे कादम्बरी कहते हैं, the second layer from the top of the fermented formulations is thicker than the first layer i.e. prasanna, it is called kadambari

कानन
kānana
वनम्। (सु.सू. 6/27), वृक्षों का झुरमुट, पौधों का समुच्चय, ग्रामों से दूर प्रकृति में होने वाले पेड़-पौधों का समुच्चय, जो जंगली जानवरों का आश्रय स्थल है, collection of trees, sanctury

कान्ति
kānti
शोभाः। (ड.-सु.सू. 45/96), तेज, शोभा, lusture

कापिल
kāpila
धेनुसम्बन्धी। (अ.सं.उ. 16), काली गाय से सम्बन्धित जैसे दूध, मूत्र, घी आदि, pertaining to black cow

काम
kāma
काम्यत इति कामो वनिता परिष्वङ्गादि। (चक्र.-च.सू. 1/15), इच्छित भाव काम कहलाता है, जैसे स्त्री संसर्गादि, इसका सन्दर्भ शब्द, स्पर्श, रूप, रस और गन्ध से है, a strong wish to attain desirables like sexual pleasure etc., this implies the desires of shabda, sparsha, rupa, rasa and gandha

कामरूपिणी
kāmarūpiṇī
षण्मुखी नित्यललिता वरदा कामरूपिणी षष्ठी चैव तिथिः पूज्या पुण्या लोके भविष्यति। (का.सं.चि. बालग्रह चि.), रेवती ग्रह का एक नाम (जो इच्छानुसार रूप धारण करने की सामर्थ्य रखती हो), a synonym of revati graha

कामला
kāmalā
हारिद्रनेत्रः स भृशं हारिद्रत्वङ्नखाननः। (च.चि. 16/35), नेत्र, मुख, नयन एवं त्वचा का हारिद्रवर्ण होना, jaundice

कामारि
kāmāri
प्राचीन रसशास्त्र के एक आचार्य, an expert of metallurgy

कामेश्वरमोदक kameśvaramodaka

क्षयनाशक, कृशता हर योग। (र.र.स. 27/115-118), a herbomineral preparation for tuberculosis and debility

कामेश्वररस kāmeśvararasa

शोथपाण्डुहरः सोऽयं रसः कामेश्वरः स्वयम्। (र.र.स. 19/100-103), शोथ एवं पाण्डुनाशक रस योग, a metalic preparation for oedema and anaemia

काम्बलिक kāmbalika

काम्बलिको दधिलवणस्नेहतिलादिकृत् ईषदम्लः। यथा तक्रे कपित्थचाङ्गेरी मरिचाजाजिचित्रकैः। सुपक्व खडयूषोऽयमथं काम्बलिको मतः। दध्यम्लो लवण स्नेहतिलमाषन्वितः श्रृतः इति। (चक्र.-च.सू. 13/23), दही, लवण, स्नेह, तिलादि से पकाया यूष या खड जो कि थोड़ा खट्टा भी हो, वह काम्बलिक है, जैसे तक्र, कपित्थ, चांगेरी, मरिच, जीरा एवं चित्रक से पकाये हुए खडयूष में खट्टा दही, लवण, स्नेह, तिलकल्क एवं उबाले हुए उड़द डालकर पीना काम्बलिक है, a soup prepared with yogurt, curd, salt, sneha, and sesame, which is slightly sour is known as kamblika, a soup prepared with butter milk, kapittha, changeri, blackpepper, cumin and chitraka; the time of its drinking yogurt, curd, salt, sneha, sesame paste and boiled black gram are added

काम्बोजी kāmbojī

1. बाकुची कटुतिक्तोष्णा क्रिमिकुष्ठकफापहा। त्वग्दोष विषकण्डूतिखर्जुप्रशमनी च सा।। (रा.नि. 4/62-65), बाकुची का पर्याय, बावची का अन्य नाम काम्बोजी है, synonym of *Psoralia corylifolia* 2. माषपर्णी रसे तिक्ता शीतला रक्तपित्तजित्। कफपित्तशुक्रकरी हन्ति दाह ज्वरानिलान्। (ध.नि. 1/132-133), माषपर्णी का पर्याय, synonym of *Teramnus labialis*

काम्भोजी kāmbhojī

विट्खदिरः कटुरूष्णस्तिक्तो रक्तव्रणोत्थदोषहरः। कण्डूतिविषविसर्पज्वर-कुष्ठोन्मादभूतघ्नः।। (रा.नि. 8/28), विट्खदिर का एक पर्याय, one of synonym of vitkhadira

काय kāya

चीयतेऽन्नादिभिः चित्र+घञ्-निःदेहे। (शब्दस्तोम), काय शब्द 'चित्र्-चयने' धातु से बना है, इसका अर्थ देह है, काय सकलं शरीरम्। (शिव.-च.सू. 30/284), देह, शरीर, जाठराग्नि, body

कायचिकित्सा kāyacikitsā

कायस्यान्तरग्नेश्चिकित्सा कायचिकित्सा। (चक्र.-च.सू. 30/28), आयुर्वेद का वह अङ्ग जिसमें जठराग्नि की चिकित्सा की जाती है, कायचिकित्सा कहलाता है, internal medicine

कायाग्नि kāyāgni

कायाग्निमिति कायनिर्वर्तकमग्निं जाठरम्। (चक्र.-च.सू. 6/22), जाठराग्नि, digestive enzymes

कारुण्य kāruṇya

कारुण्यं परदुःखप्रहाणेच्छा। (चक्र.-च.सू. 9/26), अन्यों के दुःख को दूर करने की इच्छा का होना 'कारुण्य' कहा जाता है, sympathy

कार्य kārya

कार्यं तु तद् यस्याभिनिर्वृत्तिरिष्यते। (च.वि. 8/73), कार्यं धातुसाम्यम्। (च.वि. 8/89), कर्ता जिसकी उत्पत्ति को लक्ष्य में लेकर प्रवृत्त होता है वह कार्य है, जो किया जाना चाहिए, आयुर्वेद में वैद्य का कार्य धातुओं को सम करना है, action, it is that for the fulfilment of which the doer endeavours

कार्श्य kārśya

कार्श्यं मांसक्षयः। (ड.-सु.नि. 3/17), लक्षण, मांसधातु के क्षय से शरीर का पतला होना, emaciation

काल kāla

खादीन्यात्मा मनः कालो दिशश्च द्रव्यसंग्रहः। (च.सू. 1/48), कालो हि नित्यगश्चावस्थिकश्च। (च.वि. 1/21-6), नौ कारण द्रव्यों में से एक, नित्यग एवं आवस्थिक भेद, आवस्थिक से अभिप्रायः बाल वृद्धादि से है, नित्यग ऋतु आदि से सम्बद्ध है, time, season

कालज kālaja

कालाभिव्यञ्जनीयाः कालजाः। (चक्र.-च.सू. 1/54), काल के द्वारा अभिव्यक्त होने वाले भाव कालज कहलाते हैं, the features manifested or generated due to time

कालसम्प्राप्ति kālasamprāpti

काल नक्तमित्यादि। (म.को.), दोषों के कालानुसार रात्रि, दिन, ऋतु एवं भोजन के अंशों में व्याधि की वृद्धि या हानि का निर्धारण करना काल सम्प्राप्ति है, disease pathogenesis based on time

कालाम्ल kālāmla

कालाम्लमिति चिरकालावस्थानादम्लं, नत्वम्लद्रव्यसंयोगात्। (चक्र.-च.सू. 27/285), अधिक काल तक रखने से संधानीय द्रव्य अम्ल हो जाता है, उसे कालाम्ल कहा गया है, न कि अम्ल द्रव्य के संयोग से कालाम्ल बनता है, a fermentable liquid which becomes excessive sour over long duration and not the one which becomes sour because of mixing with other sour substances

कालिका kālikā

तत्राजेन यदृच्छया विद्धासु सिरासु कालिका मर्मरिका लोहितिकासूपद्रवा भवन्ति। (सु.सू. 16/5), अजानतावश कर्णवेधन करने से कालिका, मर्मरिका एवं लोहितिका सिराओं के वेधन से उपद्रव होते हैं, kalika, a vessel in ear lobule which shouldn't be injured while ear piercing

कास kāsa

कसनात् कासः, कसति शिरः कण्ठादूर्ध्वं गच्छति वायुः इति कासः। (मधु.-मा.नि. 11), कास, coughing

किटिभ kiṭibha
श्यावं किणखरस्पर्श परुषं किटिभं स्मृतम्। (सु.नि. 5/13), एकादश प्रकार के क्षुद्रकुष्ठों में एक, यह किण के समान खर एवं परुष होता है, श्याववर्ण होता है, a type of skin disease

किण्व kiṇva
सुराबीजं च किण्वकम्। (शा.स.म. 10/6), सुरा निर्माण प्रक्रिया का वह मूलभाग जो अधस्तल में स्थित होता है, इसको किण्व भी कहते हैं। किण्व का पर्याय सुराबीज है, the lowest part of sura having the initiation capacity of fermentation

कितव kitava
चोरकः। (ध. 3/71), चोर, जुआरी, gambler

किलाट kilāṭa
किलाटः कूर्चिकपिण्डः; नष्टक्षीरस्य घनो भाग इत्यन्ये। (चक्र.-च.सू. 5/11), किलाटो नष्टक्षीरभागः यं लोकाः क्षीरसामित्याहुः। (चक्र.-च.सू. 27/234), कूर्चिकपिण्ड को किलाट कहा जाता है, कुछ आचार्य फटे हुए दूध के घनभाग को किलाट कहते है, फटे दूध का भाग अर्थात् छेना (चक्रपाणि इसे क्षीरस नाम देते हैं) को किलाट कहते हैं, solid portion of inspissated milk, thick part obtained from inspissated milk

किलास kilāsa
श्वित्रम्। (इन्दु.-अ.हृ.सू. 6/11), (सु.नि. 5/17), श्वित्र व्याधि, श्वेत कुष्ठ, यह त्वचा तक सीमित रहता है, एवं स्राव रहित होता है, यह वातज, पित्तज, कफज भेद से तीन प्रकार का होता है, leucoderma

किष्कु kiṣku
किष्कुरिह हस्तप्रमाणम्। (चक्र.-च.वि. 8/11), हाथ का परिणाम, hand span, hand measure

कीर्ति kīrti
कीर्तिः कीर्तनं वक्तुं ज्ञानमित्यर्थः, न तु कीर्ति यशोरूपा। (चक्र.-च.सू. 1/39), सस्वर नियमानुसार पाठ करने को कीर्ति कहते हैं, न यश की, efficiency to read the text properly, not the sense of the fame

कील kīla
चर्मकीलम्। (इन्दु.-अ.हृ.सू. 30/41), त्वचा में होने वाला कील सदृश रोग, इसका वर्ण त्वचा के समान होता है, सुश्रुत ने इसको अर्श प्रकरण में वर्णित किया है, व्यान वायु, श्लेष्मा के साथ संयुक्त होकर उसे उत्पन्न करता है, skin warts

कुकूणक kukūṇaka
कुकूणकः शिशोरेव दन्तोत्पत्तिनिमित्तजः। (अ.हृ.उ. 8/19), स्तन्यप्रकोप कफमारुत पित्तरक्तैर्बालाक्षिवर्त्मभव एव कुकूणकोऽन्यः। (सु.उ. 19/9-1) कुकूणक शिशुओं में दन्तोत्पत्ति के समय होने वाला पक्ष्म रोग है, कफ, वायु, पित्त और रक्त से दुष्ट स्तन्य के कारण बच्चों के नेत्र एवं वर्त्म को प्रभावित करने वाला नेत्र रोग, blepharoconjunctivitis of neonates or small child

कुकूल kukūla
बध्वा गोशकृता लिप्तं कुकूले स्वेदयेत्ततः। रसेन लिम्पेत्ताल्वास्यं नेत्रे च परिषेचयेत्।। (अ.हृ.उ. 2/67), कुकूल तुषाग्नौ, धान्य तुष की आग, the fire of hay

कुक्षि kukṣi
कुक्षीगते इति कुक्ष्येकदेशगतगर्भाशय गते। (चक्र.-च.शा. 4/5), गर्भाशय, उदर के निम्न भाग को कुक्षि कहते हैं, uterus where the implantation of fertilized ovum takes place

कुञ्चन kuñcana
संकुचन, सिकुड़ना। (का.चि. बालग्रहचि.), रेवतीग्रह का एक लक्षण, convulsion, symptom of revatigraha

कुञ्चित kuñcita
कुञ्चितायामिति कुटिलीभूतायामित्यर्थः। (ड.-सु.शा. 8/19), कुटिल सिरा, असम्यक् सिरावेध का एक प्रकार, इसमें अतिविद्धा के ही लक्षण मिलते हैं जैसे सिरा का दब जाना और रक्त की अतिप्रवृत्ति, disfigured vein because of improper phlebotomy

कुट्टिता kuṭṭitā
अनासादिता पुनःपुनरन्तयोश्रय बहुशः शस्त्राभिहता कुट्टिता।। (सु.शा. 8/19), ठीक से न उठी हुई, बार-बार दोनों पार्श्वों पर शस्त्र से प्रहारित हुई सिरा कुट्टित है, असम्यक् सिरा वेध का एक प्रकार, a type of improper phlebotomy where multiple incisions have been made on an improminent vein

कुडव kuḍava
कुडवोऽर्धशरावकः, अष्टमानं च स ज्ञेयः। (शा.सं.प्र. 1/26), मान का एक भेद, दो प्रसृति के तुल्य, अर्धशरावक एवं अष्टमान इसके पर्याय हैं, a measurement equivalent to two prasriti

कुणप kuṇapa
शवदुर्गन्धिः। (विज.-मा.नि. 3/16), शव के समान दुर्गन्ध का आना, corpse odour, smell like of a dead body

कुणि kuṇi
संकुचित बाहुमध्यः। (ड.-सु.शा. 6/24), बाहु की विकृति, crooked upper limb

कुण्डभेदी kuṇḍabhedī
कुण्डभेदी भ्रष्टयोनिः। (चक्र.-च.सू. 30/77), भ्रष्टयोनि अर्थात् जो जाति से गिरा हुआ हो, वह कुण्डभेदी कहा जाता है, low born idiot

कुथक kuthaka
कुथकश्चित्रकम्बलः। (चक्र.-च.सू. 6/15), चित्रितकम्बल, colourful wooden blanket

कुथित kuthita
पूतिः। (विज.-मा.नि. 3/16), पूययुक्त, putrid

कुन्तवेध kuntavedha
सन्दंशघृतसूतेन द्रुतद्रव्याद्दतिश्च या, सुवर्णत्वादिकरणी कुन्तवेधः स कथ्यते।। (रसे.चू. 4/109), क्रामणसंस्कार से युक्त सिद्ध पारद को मूषा में पिघलाई हुई धातु के अन्दर सन्दंश से पकडकर मज्जन करना, ताकि गलित धातु स्वर्ण या रजत रूप में परिणत हो जाये, इसे कुन्तवेध कहते हैं, holding mercury with a forceps and immersed into motlten metal for making gold, silver etc

कुब्जत्व kubjatva
अस्सी वातविकारों में एक। (च.सू. 20/11), कुबड़ा, kyphosis

कुमारधर kumāradhara
बालक की देखभाल करने वाला, child caretaker

कुमारी kumārī
रेवतीग्रह का एक नाम। (का.चि. बालग्रहचि.), a name of revatigraha

कुम्भ kumbha
1.कुम्भो दृढावयवोऽल्पमुखो घटः। (चक्र.-च.सू. 15/7), घड़ा, pot to keep water
2. देखें शूर्प

कुम्भकामला kumbhakāmalā
कुम्भः कोष्ठः, अन्तः सुषिरसाधर्म्यात्, तद्‌गता कामला कुम्भकामला, कोष्ठाश्रयेन्यर्थः। (विज.-मा.नि. 8/18), कुम्भ, कोष्ठ को कहते हैं, इसमें होने वाला कामला, कुम्भकामला कहलाता है, jaundice with ascites

कुम्भीस्वेद kumbhīsveda
कुम्भी वातहरक्वाथपूर्णा भूमौ निखानयेत्। अर्धभागं त्रिभागं वा शयनं तत्रयोपरि।। (च.सू. 14/56-58), घड़े में वातहर क्वाथ को त्रिभाग अथवा अर्धभाग भरकर भूमि में गाड़कर उसके ऊपर शय्या लगा कर घड़े में तप्त पत्थर डुबाए जाते हैं, उससे उठने वाली बाष्प से शय्या पर स्थित व्यक्ति को स्वेद दिया जाता है, the pitcher sudation

कुम्भीक kumbhīka
पुरुषः स्वगुदे स्वकीयपायौ, अब्रह्मचर्यात् अन्यपुरुषपार्श्वाद्व्यवायं कारयित्वा पश्चात्, स्त्रीषु विषमे पुमानिव प्रवर्तते पुरुषवद्व्यवायं करोति स कुम्भीक नामा षण्डो ज्ञेयः।। (सु.शा. 2/40-1), ऐसा नपुंसक जो अन्य पुरुष द्वारा गुदा मैथुन करवाकर उत्तेजित होता है, पश्चात स्त्री से (सामान्य) पुरुषवत् मैथुन करता है, an impotent who is able to perform intercourse only after getting sodomised by an another person

कुलिङ्ग kuliṅga
वनचटकाकारः पीतमस्तकः 'वाऐ' इति लोके। (चक्र.-च.सू. 27/51), जंगली चटक के समान पीले मस्तक वाली होती है, पश्चिम बंगाल में 'बाये' नाम से प्रसिद्ध तथा हिन्दी में इसको बया कहते हैं, a sparrow

कुल्माष kulmāṣa
यवपिष्टमुष्णोदक सिक्ततमीषत्स्विन्नमपूपीकृतं कुल्माषमाहुः। (चक्र.-च.सू. 27/260), जौं के आटे को गरम जल में घोलकर हल्का उबालें, जब अपूप (केक)

की तरह हो जाये, तब इसी को उपयोग करें, यही कुल्माष कहलाता है। कुल्माष से तात्पर्य है जौं के आटे का बना पीठा जो कि गरम जल में भिगोकर तैयार किया जाता है तथा जिसे थोड़ा ही पकाया जाता है और जो पूआ के समान नहीं होता, a kind of dish of barley flour obtained by mixing it in hot water and boiling

कुविन्दी kuvindī
स्त्री बुनकर, a female weaver

कुवेध kuvedha
आमच्छेदेऽत्ययो ह्यत्र कुवेधाद्वोपजायते। अभिषक् तत्र मन्दात्मा किं करिष्यत्यशास्त्रवित्।। (का.सं.सू. 20), कान का अनुचित स्थान पर वेधन, piercing of ear at improper place

कुशहस्तक kuśahastaka
कुशहस्तकं संमार्जनी; अन्ये तु आर्द्रद्रव्यपरिपचनमभिदधति। (चक्र.-च.सू. 15/7), झाड़ू, broom

कूजति kūjati
कूजति कपोत इव शब्दं करोति। (ड.-सु.नि. 1/65), कबूतर के समान शब्द करना, अपतन्त्रक का एक लक्षण, sound like cooing of pigeon

कूजन kūjana
अव्यक्तशब्दोत्थानं कण्ठे। (ड.-सु.उ. 39/37), अस्फुटध्वनिः। (विज.-मा.नि. 2/52), कण्ठ से अस्पष्ट ध्वनि का निकलना, गले से अस्फुट स्वर का निकलना, groaning sound from throat

कूजिता kūjitā
चतुर्भागासिदता किंचित्प्रवृत्तशोणिता कूणिता।। (सु.शा. 8/19), चौथाई हिस्से में कटी हुई, अल्परक्त के स्राव वाली सिरा कूणिता है, असम्यक् (दुष्ट) सिरावेध का एक प्रकार, a type of improper phlebotomy where vein has been cut only one fourth of its extent and discharges less blood

कूर्चिक kūrcika
कूर्चिकः क्षीरेण समं दधि तक्रं वा पक्वं। (चक्र.-च.सू. 5/11), दूध के साथ दही या तक्र को मिलाकर पकाने से कूर्चिक बनता है या कूर्चिक का तात्पर्य दूध के साथ दही या तक्र का होना है, preparation formed by boiling the milk with curd or butter milk

कृच्छ्र kṛcchra
1. कठिन, कठिनता, hard 2. मूत्रकृच्छ्रम्। मूत्रत्याग में कष्ट, dysuria

कृच्छ्रात्पक्ति kṛcchrātpakti
अर्शस्य पूर्वरूपः, कृच्छ्रात्पक्तिः। (सु.नि. 2/8), कठिनाई से भोजन का पचना, difficulty in digestion, a prodromal feature of piles/hemmorrhoids

कृच्छ्रावसाद kṛcchrāvasāda
कृच्छ्रावसादो कष्टयुक्ता अङ्गग्लानिः। (ड.-सु.नि. 3/5), अश्मरी पूर्वरूप, कष्टयुक्त अंगग्लानि, malaise, a prodromal feature of urinary stone

कृतान्न kṛtānna
कृतान्नानामिति करणनिष्पादितमण्डपेयादीनाम्। (चक्र.-च.सू. 27/285), विभिन्न साधनों से निर्मित मण्ड, पेया आदि भोज्य पदार्थ 'कृतान्न' कहलाते हैं, the dietary articles which are prepared using different processes

कृतेऽप्यकृतसंज्ञता पुरीष kṛteapyakṛtasamjñatā puriṣa
कृतेऽप्यकृतसंज्ञा इति कृते अपि वेगे न वेगं कृतं बुध्यत इत्यर्थः।" (चक्र.-च.चि. 19/7), पुरीष त्याग करने के बाद भी पुरीष वेग की अनुभूति होना, feeling of urge of defecation even after defecation

कृतेऽप्यकृतसंज्ञा मूत्रे Kṛteapyakṛtasamjñā mutre
कृतमपि मूत्रोत्सर्गमकृतमिव मन्यते। (हे.-अ.हृ.सू. 11/13), मूत्रत्याग करने के उपरांत भी मूत्र त्याग नहीं किया ऐसी अनुभूति होना, urge of urination even after urination

कृशरा kṛśarā
यवागूः.... स्यातकृशरा घना। (शा.सं.म. 2/165), द्विदलमिश्रित अन्नम्, 'खिचड़ी' इति भाषा। (श.क.द्रु.), यवागू का घन रूप, दो भाग चावल में एक भाग द्विदल (दाल), 1/2 भाग तिल एवं छः भाग जल मिलाकर पकाने से तैयार कल्पना, a gruel

कृष्णा kṛṣṇā
अञ्जनचूर्णवर्णा पृथुशिराः कृष्णाः।। (सु.सू. 13/11), अञ्जनं कज्जलं पृथुशिरा महामस्तका। (ड.-सु.सू. 13/11), कृष्णाञ्जन के समान काले वर्ण की तथा बड़े सिर वाली सविष जलौका, a type of poisonous leech which is black in colour like black collirium and has a stout head

केवलस्नेहपान kevalasnehapāna
केवलस्नेहपानं तु स्नेहने शक्यतिशयवत्वेन न विचारणासंज्ञयोच्यते। (चक्र.-च.सू. 13/26), केवलं त्वसंस्कृतं विशेषतो न पेयं सामपित्त एवेति योजना। (चक्र.-च.सू. 13/74), असंस्कृत स्नेहपान अथवा बिना विचारणा के स्नेहपान, केवल स्नेहपान कहलाता है, केवल घृत (असंस्कृत घृत) का पान विशेषतः सामपित्त में नहीं करना चाहिए, simple (unprocessed) unction, use of sneha without making its prepation

केशलुञ्चन keśaluñcana
संज्ञानाशो मुहुः केशलुञ्चनं कन्धरानतिः।। (अ.हृ.उ. 3/9), बालों का नोचना (स्कन्दापस्मार ग्रह से ग्रस्त बालक का एक लक्षण), plucking of hair, a clinical feature of child afflicted by skandapasmara graha

केशभूमि keśabhūmi
केशोत्पत्तिस्थानम्। (च.चि. 26/132), मस्तकम्। (अ.सं.सू. 29/7), कपालचर्म, scalp

केशभूमिस्फुटन keśābhūmisphuṭana
कपाल·त्वक् का फटना, अस्सी वातविकारों में से एक। (च.सू. 20/11), crack in scalp

कोकिल kokila
शिखित्र पावकोच्छिष्टा अङ्गार कोकिला मताः। कोकिलाश्चेतितांगारा निर्वाणाः पयसा विना।। (र.र.स. 7/15-16), बिना पानी के स्वयं बुझे हुये कोयलों को कोकिल कहते हैं, burnt charcoal prepared without spinkling water

कोठ koṭha
मण्डलानि सकण्डूनि रागवन्ति बहूनि च। (मा.नि. 50/16), क्षणिकोत्पादविनाशः (विज.-मा.नि. 50/16), श्यावानि मण्डलानि। (इन्दु.-अ.हृ.सू. 4/16), कोठो वरटीदष्टाकारः शोथः। (चक्र.-च.सू. 7/14), कण्डूयुक्त रक्तवर्ण के अनेक मण्डल जो क्षण में उत्पन्न एवं नष्ट होते रहते हैं, वरटी दष्ट के समान शोथ एवं कण्डू युक्त विकार, edematous erythematic patches, allergic rashes

कोल kola
टङ्क स एव कथितस्त द्वयं कोल उच्यते, क्षुद्रको वटकश्चैव द्रंक्षण स निगद्यते।। (शा.सं.प्र. 1/20), कोलो बदरसंज्ञ इति केचित्। (आढ.- शा.सं.प्र. 1/20), मान का एक भेद, जो टंक के तुल्य एक कोल होता है, कोल शब्द से 'बदर' लिया जाता है, क्षुद्रक, वटक, द्रंक्षण आदि इसके पर्याय हैं, a unit of weight, equivalent to wild zuzaba fruit

कोष्ठ koṣṭha
1. कोष्ठशब्देनाहारपाकाधारो रसदोषमूत्रपुरीषविभागाश्रयो ग्रहण्यभिधान उच्यते। (गय.-सु.नि. 7/6), ग्रहणी, वक्षोदरीय गुहा, thoraco-abdominal cavity, gastrointestinal tract 2. मृदु, मध्य एवं क्रूर कोष्ठ जो मल प्रवृत्ति की आदत के द्योतक है। (च.सू. 13/65-68), bowel evacuation habit such as constipated bowel

कोष्ठिका koṣṭhikā
सत्वादि पातनाद्यर्था द्रव्य ढालन साधिका। वह्नि सन्धानिका यातु कोष्ठिका सा निगद्यते।। (र.त. 3/24), सत्वादि के पातनार्थ तथा पिघले हुए द्रव्यों के ढालनार्थ जो कोयलों की भट्टी बनाई जाती है, उसे कोष्ठिका कहते हैं, the apparatus (furnace) which provides optimum temperature to the materials during different pharmaceutical processes like satvapatan, dalana etc

कोष्ठी koṣṭhī
सत्वानां पातनार्थाय पातितानां विशुद्धये, कोष्ठिका विविधाकारास्तासां लक्षणमुच्यते।। (रसे.चू. 5/127), धातुओं का सत्वपातन करने के लिये निकाले गये सत्वों का शोधन करने के लिये प्रयुक्त कोष्ठी, an instrument used for extraction of metalic essence

कोहल kohala
यव सक्तुकृतः कोहलः "कौहलिका" इति लोके। (ड.-सु.सू. 45/180), यवसक्तु से निर्मित मद्य को कोहल कहते हैं, इसका लोकनाम कौहलिका है, a fermented preparation of roasted barley

कौमारभृत्य kaumārabhṛtya
कुमारस्य भरणमधिकृत्य कृतं कौमारभृत्यम्। (चक्र.-च.सू. 30/28), जिस विभाग में कुमार के भरण को ही मुख्य मानकर कार्य किया जाता है अर्थात् कुमार की

चिकित्सा (रक्षा) जिस विभाग द्वारा की जाती है, उसे कौमारभृत्य कहते हैं, pediatrics

कौम्भ kaumbha

कौम्भं सर्पिदशाब्दिकम्। (चक्र.-च.सू. 24/57), दस वर्ष पुराना घी कौम्भ कहा जाता है, ten year old ghee

कौरव kaurava

कौरवं कार्पासम्। (चक्र.-च.सू. 14/49), कपास, cotton

कौषेय kauṣeya

कौषेयं कोषकारकीट तन्तुमयम्। (चक्र.-च.सू. 6/15), रेशम कीट के तन्तु से बना वस्त्र 'कौषेय' है, silk cloth

क्रमश: kramasaḥ

क्रमशो वक्ष्यमाणेन क्रमेण। (चक्र.-च.सू. 7/36), क्रम से किया गया वर्णन, in sequence, in order

क्रियाकाल kriyākāla

षट्क्रियाकाल - संचयं च प्रकोपं च प्रसरं स्थानसंश्रयं व्यक्तिं भेदं च यो वेत्ति दोषाणां स भवेद्भिषक्। (सु.सू. 21/36), चिकित्सावसर:। (ड.-सु.सू. 21/27), चिकित्सा का अवसर, सुश्रुत ने रोग के आदि से अन्त तक के लिए छ: क्रिया काल बताए हैं - संचय, प्रकोप, प्रसर, स्थानसंश्रय, व्यक्ति एवं भेद, stages of a disease for the treatment, six stages of treatment such as accumulation, vitiation, dispersion, prodroma, symptoms, complications

क्रिया kriyā

1.क्रिया चिकित्सा। (ड.-सु.उ. 41/4), क्रिया पुन: पुनश्चिकित्साकरणम्। (चक्र.-च.सू. 9/21), पुन: पुन: चिकित्सा कार्य को करना क्रिया कहा गया है, चिकित्सा, treatment, theraputic measure, administraion of a therapeutic measure repeatedly 2. क्रियाश्चात्रोत्क्षेपणअपक्षेपणप्रसारणाकुञ्चन लक्षण:। (ड.-सु.सू. 26/37), उत्क्षेपण, अपक्षेपण, प्रसारण, आकुंचन आदि शारीरिक क्रियाएँ, flexion, extension etc. activities

क्रियाहीनबन्ध Kriyāhinabandha

असंशोधितलोहाद्यै: साधितो यो रसोत्तम:। क्रियाहीन: स विज्ञेयो विक्रियां यात्यपथ्यत:।। (र.र.स. 11/68), उत्तम पारद का अशोधित धातु, खनिज आदि से संस्कार करने से जो ठोस स्वरूप होता है, उसे क्रियाहीन बंध कहते हैं, इसके सेवन का यदि उचित विधान न अपनाया जाये तो विभिन्न विकार उत्पन्न हो जाते हैं, conversion of processed mercury in to solid form by treating it with unprocessed metals

क्रोध krodha

क्रोध: प्रद्वेषो येन प्रज्वलितमिवात्मनं मन्यते। (चक्र.-च.सू. 7/27), ऐसा द्वेष जिसमें व्यक्ति स्वयं को जलता हुआ अनुभव करता है, anger

क्रोशन krośana

कम्पोद्दषितरोमत्वं स्वेदश्चक्षुर्निमीलनम्। बहिरायामनं जिह्वादंशो अन्त:कण्ठकूजनम्। धावनं विट्सगन्धत्वं क्रोशनं च श्ववच्छुनि॥ (अ.हृ.उ. 3/15-

16), शुन इव क्रोशनम् इति चंद्र:, श्वग्रह से ग्रस्त शिशु का एक लक्षण जिसमें बालक अत्यधिक चिल्लाता है, excessive crying, screaming, a clinical feature of a child afflicted with shvagraha

क्रोशेत् krośet

उदरस्थो ययो क्रोशेत् क्रोशना नाम सा स्मृता।। (का.सं. रेवतीकल्प 41), क्रोशना नामक जातहारिणी के कारण उदरस्थ बालक आक्रोश करता है, चिल्लाता है, excessive crying by intrauterine foetus when afflicted by jataharini

क्रोष्टुकशीर्ष kroṣṭrukaśirṣa

जानुमध्ये वातशोणितजो महारुज: क्रोष्टुकमूर्धवत् श्रृगालमस्तकवत् स्थूल:।। (विज.-मा.नि. 22/58), जानु में होने वाला वातरक्तजन्य शोफ, जिसमें अत्यधिक रुजा होती है, इसकी आकृति श्रृगाल के शिर के समान होती है, septic arthritis of knee joint, the shape of which is like head of a jackal

क्लम klama

यो अनायास: श्रमो देहे प्रवृद्ध: श्वासवर्जित:। क्लम स इति विज्ञेय इन्द्रियार्थ प्रबाधक:।। (सु.शा. 4/51), क्लम इह मनइन्द्रियग्लानि:। (चक्र.-च.सू. 7/33), अनायासकृत: श्रम: क्लम:। (चक्र.-च.सू. 16/13), बिना किसी परिश्रम के शारीरिक थकावट होना और इन्द्रियों को विषय ग्रहण में कठिनता होना परन्तु श्वास का न बढ़ना, क्लम कहलाता है, मन एवं इन्द्रियों की थकावट (ग्लानि) की अवस्था क्लम है, बिना शारीरिक काम किए जो थकावट होती है, वह क्लम है, physical exhaustion and blurred perception without any physical exertion; breath remains normal, fatigue of mind and senses, fatigue without doing physical work

क्लान्त klānta

क्लान्त इति निष्क्रिये। (चक्र.-च.सू. 21/35), क्लान्ततमेति हीनतमा। (चक्र.-च.शा. 4/23), थका हुआ, थक कर निष्क्रिय हुआ, exhausted, inactive due to fatigue

क्लिन्न klinna

क्लिन्नं पर्णादिभिर्युतं सदित्यर्थ:। (चक्र.-च.सू. 27/215), पत्ते आदि से युक्त जल को क्लिन्न कहा जाता है, water mixed with leaves, mosh, slush

क्लिष्ट kliṣṭa

क्लिष्टो निन्दितो रोगादिना। (चक्र.-च.सू. 8/25), निन्दित रोगों से पीड़ित पुरुष 'क्लिष्ट' है, a person suffering from communicable diseases

क्लीब klība

क्लीबो हीनसत्व:। (चक्र.-च.सू. 8/25), क्लीबाविति दुष्टबीजौ। (चक्र.-च.शा. 2/19), क्लीब: क्षीणशुक्र:। (ड.-सु.सू. 11/28), दुर्बल मन वाला, नपुंसक, पुरुषार्थहीन, impotent

क्लेद kleda

क्लिद् आर्द्रतायां शरीरस्थ द्रव, द्रव्यविशेष:। (वाच.-च.सू. 26/43-3), आहारपरिणामकरभाव। (च.शा. 6/14), क्लेद: शैथिल्यमापादयति। (च.शा. 6/15), क्लेदो व्रणस्यार्द्रत्वम्। (ड.-सु.सू. 18/21), गीलापन, आर्द्रता, wetness, moisture

क्लेशक्षम kleśakṣama

क्लेशक्षमो मानयिता गुरुणा ज्ञेयो बलास प्रकृतिर्मनुष्यः। (सु.शा. 4/74), कफज प्रकृति के मनुष्य गुरु एवं कष्ट सहने वाले होते हैं, those who have endurance

क्लैब्य klaibya

स्त्रीष्वनुत्साहः। (विज.-मा.नि. 5/22), क्लैब्यमिति ध्वजानुच्छ्रायः। (चक्र.-च.सू. 28/18), मैथुन कर्म में उत्साह का न होना, शिश्न उत्थान में अशक्ति का होना, क्लैब्य कहलाता है, erectile dysfunction, impotency

क्वाथ kvātha

पानीयं षोडशगुणं क्षुण्णं द्रव्यपले क्षिपेत्। मृत्पात्रे क्वाथयेद् ग्राह्यमष्टमांशावशेषितम्।। तज्जलं पाययेद् धीमान्कोष्णं मृदवग्नि साधितं श्रृतः क्वाथ कषायश्च निर्यूहः स निगद्यते। (शा.सं.म. 2/12), क्वथति वैद्य निष्पलति इति अर्थः। (श.क.द्रु), दरदरे चूर्णित एक पल द्रव्य में 16 गुना पानी डालकर मंदाग्नि पर पाक करें, आठवां भाग अवशिष्ट रहने पर उतार लें, तत्पश्चात् इसे छान कर कुछ कोष्ण क्वाथ का सेवन करना चहिए, इस परिपक्व जल का नाम श्रृत, क्वाथ, कषाय, निर्यूह है, decoction, one pala of coarsely powdered drug is to be boiled with 16 parts of water in an earthen pot over a mild fire till it is reduces to 1/8th of the original quantity, the filterate is known as kvatha and is synonymous with kasaya, shrita, and niryuha, dection is water extract

क्षणन kṣaṇana

1.क्षणनं अस्थि चूर्णनम्। (चक्र.-च.सू. 18/4), अस्थि का चूर-चूर होना, breaking of bone into fragments 2. क्षणनात् त्वङ्मांसादि हिंसनात्। (ड.-सु.सू. 11/4), त्वचा, मांस आदि को नष्ट करने वाला, to destroy the diseased, damaged skin, muscle etc

क्षणिक kṣaṇika

क्षणिका इति आशुतरविनाशिन्यः। (चक्र.-च.सू. 8/12), जिसका उत्पन्न होते ही शीघ्रता से नाश हो जाए, वह क्षणिक है, transient, momentary

क्षत kṣata

घाव, चोट, व्रण। (सु.सू. 18/7), injury, trauma, wound

क्षतगुद kṣataguda

क्षतयुक्त गुद। (च.सि. 2/12), ulcerated anus

क्षति kṣati

हानि, चोट, नाश, loss, trauma, destruction

क्षपण kṣapaṇa

क्षपणं शोधनमभिप्रेतम्। (ड.-सु.सू. 11/4), क्षपण से तात्पर्य शोधन से है, abstinence, fasting is meant for cleansing, purifying

क्षपाशय kṣapāśaya

क्षपायामेव स्वपितीति क्षपाशयः। (चक्र.-च.सू. 13/62), रात्रिशयन, sleep in night only

क्षम kṣama

धैर्यवान, सहनशील, योग्य, having patience, tolerable

क्षमा kṣamā

क्षमा सहिष्णुता। (चक्र.-च.सू. 18/51), सहन करने की शक्ति 'क्षमा' है, tolerance

क्षय kṣaya

1.धातुक्षयः। (चक्र.-च.सू. 7/33), धातुहानि। (सु.सू. 15/27), धातु आदि का प्राकृत मात्रा से कम होना, depletion, tissue depletion 2. उत्साहोपचयबलरहितम्। (ड.-सु.उ. 40/21), emaciation, weak 3. राजयक्ष्मा का पर्याय, synonym of tuberculosis

क्षरण kṣaraṇa

तत्र क्षरणात् क्षणनाद्वा क्षारः। (सु.सू. 11/4), क्षरणाद् दुष्टत्वङ्मांसादिचालनात्, शातनादित्यर्थः; अन्ये तु क्षरणाद्दोषाणां चालनात्। (ड.-सु.सू. 11/4), दुष्ट त्वचा, मांस आदि को नष्ट करने वाला, कुछ आचार्य इसका काटने वाला अर्थ करते हैं, अन्य आचार्य क्षरण क्रिया से दोषों को हटाना अर्थ मानते हैं, a substance which removes the diseased, necrosed body parts like skin, muscle etc

क्षव kṣava

1.छिक्काः। (अरु.-अ.हृ.सू. 4/1), छींक, sneez 2. कृष्णराजिका। (भा.प्र.पू. धान्यव. 72), राई,

क्षवथु kṣavathu

1.ऊर्ध्वस्रोतोवस्थितप्राणोदानयोराकुलितयोर्नासाविवरतो निर्गमनं क्षवथुः। (ड.-सु.सू 26/13), छींक, sneez 2. नासारोग। (सु.उ. 22/12), एक नासारोग, vasomotor rhinorrhoea

क्षामाक्ष kṣāmākṣa

क्षामनेत्र स्वरता। (अ.सं.शा. 2/8), तृष्णा ग्रहीतः क्षामाक्षो हन्ति ते शुष्करेवती। (अ.हृ.उ. 3/32), व्यक्तगर्भा का एक लक्षण, नेत्र और स्वर में शिथिलता, शुष्करेवती ग्रह से ग्रस्त शिशु का एक लक्षण, fatigued eyes

क्षार kṣāra

तत्र क्षरणात् क्षणणाद्वा क्षारः।। (सु.सू. 11/4), जो पदार्थ दूषित मांसादि को क्षरण/क्षणन से नष्ट करता है वह क्षार कहलाता है, an alkali, used for cauterization to destory the diseased/damaged/necrosed tissues

क्षारत्रय kṣāratraya

क्षारत्रयं समाख्यातं यवसर्जिकटंकणम्। (र.र.स. 10/68), यवक्षार, सर्जिक्षार और टंकणक्षार तीनों को सम्मिलित रूप से क्षारत्रय कहते हैं, yavakshara, svarjikshara and tankana kshara are collectively called as ksharatraya, a group of three alkaline drugs

क्षारत्रिक kṣāratrika

स्वर्जिक्षारो यवक्षारः क्षारद्वयमुदाहृतम्। सौभाग्येन समायुक्तं क्षारत्रिकमुदाहृतम्।। (र.त. 2/6), स्वर्जिक्षार, यवक्षार एवं सुहागा, ये तीन सम्मिलित रूप से क्षारत्रिक

कहे जाते हैं, svarjikshara, yavakshara and borax are collectively known as ksharatrika, a group of three alkaline drugs

क्षारदहन kṣāradahana
देखें. काचोपल। (अ.हृ.सू. 26/27), क्षार से दहन कर्म करना, chemical cauterization

क्षारद्वय kṣāradvaya
स्वर्जिक्षारो यवक्षारः क्षारद्वयमुदाहृतम्। (र.त. 2/6), स्वर्जिकाक्षार एवं यवक्षार संयुक्त रूप से क्षारद्वय कहे जाते हैं, svarjikakshara and yavakshara are collectively known as ksharadvaya, a group of two alkaline drugs

क्षारपञ्चक kṣārapañcaka
मुष्ककक्षारो यवक्षारः किंशुकक्षार एव च स्वर्जिक्षारस्तिलक्षारः क्षारपञ्चकमुच्यते। (र.त. 2/7), पलाशमुष्कको क्षारौ यवक्षारः सुवर्चिका। तिलनालोद्भवः क्षारः संयुक्त क्षारपञ्चकम्। (र.र.स. 10/69), मुष्ककक्षार, यवक्षार, किंशुकक्षार, सर्जिक्षार एवं तिलक्षार सम्मिलित रूप से क्षारपंचक कहे जाते हैं, पलाशक्षार, मुष्ककक्षार, यवक्षार, सुवर्चिकाक्षार और तिलनालक्षार को सम्मिलित रूप से क्षारपञ्चक कहते हैं, alkali prepared with mushkaka (Sterospermum chlorodies), kinshuka (Butea monosperma), svarjikshara, yavakshara and tila (Seasamum indicum) are collectively called as ksharapanchak, a group of five alkaline drugs

क्षाराष्टक kṣārāṣṭaka
सुधापलाशशिखरचिञ्चार्कतिलनालजाः। स्वर्जिकायावशूकश्च क्षाराष्टकमुदाहृतम्।। (र.त. 2/8), सुधा, पलाश, अपामार्ग, चिंचा, अर्क, तिलनाल, स्वर्जिका एवं यावशूक इन आठ से बनाए गए क्षार द्रव्य सम्मिलित रूप से क्षाराष्टक कहलाते हैं, the eight alkalies prepared from Euphorbia nerifolia, Butea monosperma, Achyranthus aspera, Tamarindus (Calotropis procera) and Sesamum indicum along with sajji kshara and yavakshara, a group of eight alkaline drugs

क्षालन kṣālana
प्रक्षालन। (सु.चि. 20/30), धोना, wash

क्षि kṣi
क्षीण, क्षय, कम होना, decay, loss, reduction

क्षीर kṣira
1. जीवनीयानाम्। (च.सू. 25/40), जीवनीय द्रव्यों में श्रेष्ठ, दुग्ध, milk 2. वनस्पतियों से दुग्ध समान स्राव, latex

क्षीरपाक ksirapāka
द्रव्यादष्टगुणं क्षीरं क्षीरात् तोयं चतुर्गुणम्, क्षीरावशेषः कर्त्तव्यः क्षीरपाके त्वयं विधिः। (चक्रदत्त.-ज्वरचि. 262), क्षीरमष्टगुणं द्रव्यात्क्षीरांन्नीरं चतुर्गुणम्, क्षीरावशेषं तत्पीतं शूलमामोद्भवं जयेत्। (शा.सं.म. 2/161), द्रव्य से आठ गुना दूध एवं दूध से चौगुना जल मिलाकर उसे पकाना चाहिए, पकते-पकते जब दूध मात्र शेष रह जाये तो इसे क्षीरपाक कहते हैं, medicated milk preparation

क्षु kṣu
छींकना, sneez

क्षुद् kṣudha
बुभुक्षाः। (ड.-सु.चि. 1/13), भूख, hunger

क्षुर kṣura
छुरा। (सु.चि. 1/104), चाकू, knife, razor

क्षेत्रनिर्माण kṣetranirmāṇa
रसायन सेवनार्थ शरीर शोधन क्रिया, purification of body for rejuvenation therapy

क्षेत्रीकरण kṣetrikaraṇa
पारद सेवन योग्य शरीरत्वविधानम्। (र.र.स. 11/67), संशोधन तथा संशमन द्वारा शरीर को रसायन सेवन योग्य बनाना क्षेत्रीकरण कहलाता है, preparation of body by using pacification and purification therapy for effective administration of rasayan therapy

क्षेपवेध kṣepavedha
प्रक्षेपण द्रुते लोहे वेधः स्यात् क्षेपसंज्ञितः। (रसे.चू. 4/108), पिघलाई हुई किसी भी धातु में सिद्ध पारद का अल्प मात्रा में क्षेपण कर उक्त धातु को स्वर्णादि रूप में परिणत करना क्षेपवेध कहलाता है, putting treated mercury into molten metal

क्षोद kṣoda
चूर्ण का पर्याय। (शा.सं.म. 6/1), a synonym of powder

क्षौति kṣouti
क्षौति हिक्कतीत्यर्थः। (हारा.-सु.सू. 12/30), चात्यर्थमिति अतिशयेन छिक्कति। (ड.-सु.सू. 12/30), अत्यधिक छींक या अधिक हिक्का, rapid hiccup

क्षौमसूत्र kṣoumasūtra
अतसीसूत्र। (ड.-सु.सू. 25/27), तन्तुनिर्मित् वस्त्र सूत्र, रेशम का धागा, silk thread

खज khaja
खजः पञ्चाङ्गुलो हस्तः, मन्थानं वा। (चक्र.-च.चि. 29/78), अंगुलियों से युक्त एक हाथ लम्बी मन्थानी, a kind of pestle having one hastha length

खञ्ज khañja
वायुः कट्यां स्थितः सक्थ्नः कण्डरामाक्षिपेत्। (सु.नि. 1/77), वायु का कटि में आश्रित होकर सक्थि की कंडरा को कार्य अक्षम करना, लंगडापन, lameness

खञ्जता khañjatā
कुन्थ पादः। (इन्दु.-अ.हृ.चि. 21/40), विकृत पादः। (इन्दु.-अ.हृ.शा. 7/3), लंगडापन, limping

खट्वाखादी khaṭvākhādi
खट्वाखादी यः शय्यादि उत्थाप्य वातवेगात् पादेन शय्यां आहन्ति। (इन्दु.-अ.हृ.चि. 21/25), वातवेग के कारण शय्या आदि को लात मारना, kicking the coat due to vatavega

खड
khaḍa
सशाकपल्लवेन कृतो यूष: खड:। (चक्र.-च.सू. 13/23), पत्तियों सहित शाक से बनाया यूष खड़ है, soup prepared from vegetables along with their leaves

खण्डिका
khaṇḍikā
खण्डिका: त्रिपुटकलाय:। (चक्र.-च.सू. 27/28), त्रिपुटकलाय का पर्यायवाची शब्द है, खेंसारी, मटर भेद, *Lathyrus sativus*

खनिजगन्धक
khanijagandhaka
1. एक प्रकार का खनिज। (ध.नि. 3/103-104), गन्धक का पर्याय, synonym of sulpher 2. कुन्दुरु का पर्याय। (ध.नि. 3/118-119), synonym of kunduru plant

खम्
kham
आकाश:। आकाश का पर्यायवाची शब्द, a synonym of akash

खर
khara
खर: अमृदु:। (अरु.-अ.हृ.नि. 2/30), जो मृदु नहीं है वह खर है, which is not soft

खरस्पर्श
kharasparśa
खरस्पर्शा गोजिह्वावत्। (चक्र.-च.चि. 3/105), गाय के जीभ सदृश खुरदरा, which is rough like cow's tongue

खर्जु
kharju
कण्डू: खर्जु:। (अरु.-अ.हृ.सू. 12/53), खुजली, itching

खर्जूरी
kharjūrī
क्षतक्षयापहं हृद्य शीतलं तर्पणं गुरु। रसे पाके च मधुरं खर्जूरं रक्तपित्तजित्। (ध.नि. 5/45-47), खजूरी, पिण्डखर्जूरी इसी का भेद विशेष है, *Phoenix sylvestris, Phoenix dactylifera* is a latin name of pinda-kharjuri

खलति
khalati
तेजोऽनिलाद्यै: सहकेशभूमिं दग्धवाऽऽशुकुर्यात् खलतिं नरस्य। (च.चि. 26/132-1), शरीर की ऊष्मा वायु आदि के साथ मिलकर केशभूमि (कपाल) को दग्ध करके उसे केशविहीन कर देती है, उसे खालित्य (खलति) कहते हैं, alopecia

खलि
khali
खलि: सर्षपखलि:। (चक्र.-च.सू. 22/29), खलि से सरसों की खली का ग्रहण किया जाता है, mustard oil cake

खलु
khalu
खलुशब्द: प्रकाशने। (च.सू. 4/3), 'खलु' शब्द का अर्थ प्रकाशन या निश्चयार्थ होता है, this term is used as assertive

खल्ली
khallī
खल्ली करपादावमोटनम्। (चक्र.-च.सू. 28/21), खल्ली हस्तपादवमोटनम्। (चक्र.-च.सू. 14/23), हाथ-पैर में ऐंठन होना 'खल्ली' कहलाता है, cramps in the extremities, cramps

खारिक
khārika
महापारेवत गौल्यं बलकृत्पुष्टिवर्धनम्। वृष्यं मूर्च्छाज्वरघ्नञ्च पूर्वोक्तादधिक गुणै:।। (रा.नि. 11/89-90), महापारेवत का एक पर्याय खारिक भी है। महापारेवत में पारेवत की अपेक्षा अधिक गुण होते हैं, one of synonyms of mahaparevata

खारी
khārī
द्रोणीचतुष्टयं खारी कथिता सूक्ष्मबुद्धिभि:। चतु:सहस्रपलिका षण्णवत्यधिका च सा।। (शा.सं.पू. 1/50), मान का एक भेद, चार द्रोणी के तुल्य, चार हजार पल, a weight measurement

खालित्य
khālitya
खल्वाटत्वं 'चांदिलत्वम्' लोके। (ड.-सु.सू. 35/29), खलति केशानां प्रच्युति:। (योगे.-च.वि. 1/17), सिर के केशों का गिरना, गंजापन, baldness

खिल
khila
परिशिष्टम्, परिशिष्ट, शेष, सम्पूरक, annexure, supplement

खिलस्थान
khilasthāna
काश्यप संहिता का नौवां एवं अन्तिम स्थान, last ninth section of kashyapa samhita

खिलीभवन
khilībhavana
खिलीभवतीति अपथ्यग्राहिणी भवति। (चक्र.-च.इ. 12/47), पथिग्रहणे इन्द्रियार्थसन्निकर्षजज्ञानग्रहणे असामर्थ्यम्। इन्द्रिय एवं विषय का सन्निकर्ष होते हुए भी इन्द्रियों द्वारा ज्ञान न ग्रहण करने की स्थिति खिलीभवन है, the condition where the senses are unable to get the knowledge even though the sense and its object are in contact

खुड
khuḍa
खुड देश प्राप्त्या खुड:, खुडशब्देन संधिरुच्यते। (चक्र.-च.चि. 29/11), खडुकाश्रित खलुकाश्रित इति पादजङ्घासन्धि संश्रय इत्यर्थ:, 'पाष्र्ण्योश्रय: इत्यन्ये'। (ड.-सु.नि. 1/79), खुड शब्द सन्धि का द्योतक है, वातरक्त रोग सन्धि में होता है अत: उसका एक पर्याय खुड भी है, वातकण्टक खडुकाश्रित होता है, पाद और जंघा की सन्धि अथवा पार्ष्णि को भी खुड कहते हैं, khuda denotes to joint, as vatarakta occurs in sandhi, therefore khuda is its synonym, vatakantaka occurs in khalu, the joint of pada and jangha (ankle) is also known as khuda

खुडलक
khuḍalaka
पादजङ्घासन्धि, पार्ष्णि। (ड.-सु.नि. 1/79), गुल्फसन्धि, पार्ष्णि, ankle joint

खुडुक
khuḍuka
पादजङ्घासन्धि, पार्ष्णि। (ड.-सु.नि. 1/79), गुल्फसन्धि, पार्ष्णि, ankle joint

खुडुकानात
khuḍukānāta
देखें. वातकण्टक

खुडुल
khuḍula
पादजङ्घासन्धि, पार्ष्णि (ड.-सु.नि. 1/79), गुल्फ सन्धि, पार्ष्णि, ankle joint

खुड्डाक khuḍḍāka

खुड्डाक शब्दोऽल्पवचनः। (चक्र.-च.सू. 9/1), संक्षिप्त विवरण युक्त को खुड्डाक कहते हैं, brief description

खुड्डिका khuḍḍikā

खुड्डिकामिति अल्पम्। (चक्र.-च.शा. 3/31), अल्प, little

खुर khura

नखम्। (ध. 3/55,56), नख नामक औषध का पर्याय, a synonym of nakha herb

खुरक khuraka

खुरक, वंग का एक प्रकार है। (र.र.स. 5/153), a type of vanga

खुरखुरायन khurakhurāyana

कफज स्वरभेद में 'खुरखुर' जैसा शब्द गले से निकलता है। (अ.सं.नि. 5/17), rattling sound from the throat

खुलक khulaka

पादजङ्घासन्धि। (ड.-सु.नि. 1/79), गुल्फसन्धि, पार्ष्णि, ankle joint

खेचर khecara

खनिज पारदः। (रा.नि. 13/42), आकाश गामित्व। (र.र.स. 11/79), पारद का गत्यात्मक पर्याय, synonym of mercury, indicative of motion

खेचरीमुद्रा khecarīmudrā

तत्पानं द्वारशब्देन् देहसिद्धिं करोति हि, एषैव खेचरीमुद्रा चिराभ्यासेन सिध्यति। (रसे.चू. 1/10), उसका अहर्निश पान निश्चित रूप से देहसिद्धि को करता है, यही वह खेचरी मुद्रा है जो बहुत दिनों के अभ्यास से सिद्ध होती है, regular use of dehasiddhi

खेट्भूत kheṭbhūta

खेटतः श्लेष्मा; तेन खेट्भूत इति श्लेष्मा सदृश इत्यर्थः। (चक्र.-च.शा. 4/9), खेट्भूत से अभिप्राय श्लेष्मा से है, गर्भ की प्रारम्भिक अवस्था, undifferentiated stage of embryo resembling mucous

खेद kheda

अवसादः। (च.नि. 1/24), साद, depression

खेदित khedita

खेदितं जातक्षोभमुदकं यासां ताः खेदितोदकाः, या हिमवन्मलयोद्रभूतास्ता एव पथ्याः। (अरु.-अ.हृ.सू. 5/9), खेदितं खेदादवत्लाघवम्। (हे.-अ.हृ.सू. 5/9), छिन्नविच्छिन्न, पर्वत शिला से टकराकर लघु हुआ जल, broken into small particles

खोट khoṭa

1. पिण्ड। (र.र.स. 19/69), पिण्ड, गोला, bolus 2. खोट बन्ध। (र.र.स. 11/71), पारद का एक प्रकार का बन्ध जिससे कि वह अग्नि पर तपाने पर भी नहीं उड़ता है, a type of parada bandha process due to which parada does not evaporate even if put on fire

गगनाम्बु gaganāmbu

दिवार्ककिरणैर्जुष्टं निशायमिन्दुरश्मिभिः अरुक्षमनभिष्यन्दि तत्तुल्यं गगनाम्बुका।। (सु.सू. 45/25), आकाशीय जल, वर्षा जल, rain water

गजचर्मन gajacarmana

हस्तिचर्मवत् खरस्पर्शं चर्माख्यं कुष्ठम्।' (अ.हृ.नि 14/20), क्षुद्रकुष्ठ का एक भेद जिसमें त्वचा हाथी के चर्म के समान हो जाती है, a type of minor kustha where skin becomes thick like that of an elephant

गजपुट gajapuṭa

राजहस्त प्रमाणेन चतुरस्रं च निम्नकम्। पूर्णं चोपलसाठीभिः कण्ठावधात विन्यसेत्।। विन्यसेत्कुमुदीं तत्र पुटनद्रव्यपूरिताम्। पूर्णच्छगणतोऽर्धानि गिरिण्डानि विनिक्षिपेत्।। एतद्गजपुटं प्रोक्तं महागुणविधायकम्।। (र.र.स. 10/54), भस्म निर्माण हेतु जमीन में राजहस्त (एक गज/सवा हाथ) लंबा चौड़ा और गोल गड्ढा बनाकर, उपले भरकर पुट देना, to prepare bhasma by incinerating in a round pit of depth and circumfteres of $1\frac{1}{4}$ hand

गण्ड gaṇḍa

गण्डः कपोलः। (ड.-सु.सू. 5/13), गण्डौ गल्लौ। (ड.-सु.सू. 23/5), गाल, कपोल cheek

गण्डकर्ण gaṇḍakarṇa

गण्डकर्ण इति सानुबन्ध कपोलमांसमुत्कृत्य बाह्यदीर्घपाल्यग्रभागः संधीयते यस्मिन स गण्डकर्णः। (ड.-सु.सू. 16/10), कर्णसंधान की एक विधि, जिसमें कपोल से मांस का भाग निकालकर बाह्यकर्ण के साथ जोड़ा जाता है, a type of lobuloplasty

गण्डमाला gaṇḍamālā

गलस्य पार्श्वे गलगण्ड एकः स्याद्गण्डमाला बहुभिस्तु गण्डैः।। (च.चि. 12/79), गले में पार्श्व में अनेक ग्रन्थियों का उत्पन्न होना, cervical lymphadinitis

गण्डस्थल gaṇḍasthala

कपोलदेशे। (वै.नि.) कपोल, गाल, cheek

गण्डस्पन्दन gaṇḍaspandana

तत्र हृद्यभिहते कासश्वास........अक्षिनिमीलन...गण्डस्पन्दन.......चिकित्सिते सक्रियाविधीन्युक्तानि।। (च.सि. 9/6), गण्ड (कपोल) में स्पन्दन, या स्फुरण, हृदयोपघात का एक लक्षण, pulsation in cheek

गण्डालजी gaṇḍālajī
गण्डालजी स्थिर: शोफो गण्डे दाहरुजान्वित:। (अ.सं.उ. 25/13), गण्ड (कपोल) प्रदेश में दाह और वेदना युक्त स्थिर शोफ, cellulitis of cheek

गण्डाशय gaṇḍāśaya
मध्यत: कर्णपीठस्य किञ्चित् गण्डाशयं प्रति। जरायुमात्रप्रच्छन्ने रविरश्म्यवभासिते। (अ.सं.उ. 1/38), कपोल का कर्ण के समीपस्थ स्थान, base of cheek

गण्डास्थि gaṇḍāsthi
गण्डकर्ण शङ्खेष्वेकैकं, षट्शिरसीति। (सु.शा. 5/19), गण्डकर्ण शङ्खेष्वित्यत्र गण्डौ च कर्णौ च शङ्खौ चेति विग्रहे षडस्थीनि भवन्ति। (ड.-सु.शा. 5/19), गण्डस्थलं कपोलदेशम्। (वै.नि.), दोनों गण्डप्रदेशों में एक एक अस्थि होती है, इसे गण्डास्थि कहते हैं, maxillary bone

गण्डूपद gaṇḍūpada
अजवा विजवा: क्रिप्याश्चिप्या: गण्डूपदास्तथा। चूरवो द्विमुखाश्चैव ज्ञेया: सप्त पुरीषजा। (सु.उ. 54/8), गण्डूपद (केंचुए) की आकृति जैसा सप्त प्रकार के पुरीषज कृमियों में से एक, a type of intestinal worm resembling earthworm, round worm

गण्डूष gaṇḍūṣa
मुखे पूर्णे सति य: सञ्चारयितुमशक्य: स्यात् स गण्डूष उच्यते।' (अरु.-अ.हृ.सू. 22/12), मुखरोगों में प्रयुक्त एक उपक्रम जिसमें द्रव, औषधद्रव, क्वाथ आदि को मुख में इतना भर लिया जाता है कि उसे चलाना सम्भव नहीं होता, oral rinse

गण्डोपधान gaṇḍopadhāna
गण्डोपधानानि गल्लमसू(स्त)रिकादीनि:। (ड.-सु.चि. 5/16), गण्डपदेन मस्तकादीनामप्युपधानानि बोध्यानि। कपोल एवं मस्तक (शिर) के नीचे लगाने वाला तकिया, pillow

गतरसत्व gatarasatva
ज्ञात्वा गतरसान्येतान्यौषधान्यय गतरसम्, गम्यते इति। विनष्ट होना, द्रव्य का कार्यकारीशक्ति से रहित हो जाना, औषध रस का नष्ट होना, loss of active principle of a drug, tastelessness of a drug

गतव्यथा gatavyathā
गतशोकादय। (चक्र.-च.सू. 7/58), शोकादि उपशम, alleviation of grief

गतायु gatāyu
द्विषच्छब्देषु रमते सुहृच्छब्देषु कुप्यति। न श्रृणोति च योऽकस्मात् ब्रुवन्ति गतायुषम्।। (सु.सू. 30/6), जिसकी मृत्यु समीप हो वह मित्रों से द्वेष एवं शत्रुओं से प्रीति करता है तथा कारण के बिना जो शब्द को नहीं सुनता, one who is near death

गति gati
1. गतिं नाडीम्। (ड.-सु.सू. 5/12), व्रण की नाड़ी की दिशा, दोषों का एकत्र होना, direction of wound, drainage, accumulation of doshas at one place 2. गति: चङ्क्रमणम्।। (अरु.-अ.हृ.सू. 12/7), चलना, गमन, movement

6—4 Min. of HRD/2016

गतिक्षय gatikṣaya
कौण्यं गतिक्षयोऽङ्गानां संभेद: क्षतसर्पणं शुक्रस्थानगते लिङ्गं प्रागुक्तानि तथैव च। (सु.नि. 5/27), शुक्रधातुगत कुष्ठ का एक लक्षण, जिसमें रोगी को चलने में असमर्थता होती हैं, unable to walk

गतिमता gatimatā
गतिमतामिति पुरीषादीनां बहिर्निसरणम्। (चक्र.-च.सू. 18/48), पुरीषादिमलों की बाहर निकलने की गति सामान्य होना, proper expulsion of excreta

गतिमन्त gatimanta
गतिमन्तमिति प्रव्यक्तमतिमन्तम्। (चक्र.-च.सू. 22/11), जिसकी गति स्पष्ट हो, उसे गतिमन्त कहते हैं, visibly mobile

गद gada
तत्र व्याधिरामयो गद आतङ्को यक्ष्मा ज्वरो विकारो रोग इत्यनर्थान्तरम्। (च.नि. 1/5), व्याधि (रोग) का एक पर्याय, synonym of disease

गदातिचार gadāticāra
गदातिचार इति रोगाणामसम्यगुपचार:। (चक्र.-च.चि. 26/77), व्याधि की समुचित चिकित्सा का न होना, inappropriate treatment of diseases

गदौघ gadougha
गदौघान् विकारसमूहान्। (ड.-सु.सू. 35/50), विकार (रोगों) का समूह, group of disorders/diseases

गद्याण gadyāṇa
यह मान (कालिङ्गमान) की एक ईकाई है, 6 माष को एक गद्याण कहते हैं, a weight unit equivalent to six masha

गद्गद gadgada
गद्गदोऽव्यक्तवाक्।। (ड.-सु.नि. 1/185), अस्पष्ट वाणी, stuttering speech

गद्गदवत् स्वर gadgadavat svara
गद्गदवत् स्वरं इत्यत्र केचित् गर्दभवत् स्वरं इति पठन्ति। (ड.-सु.उ. 53/4), गर्दभ (गदहे) के समान स्वर, वातज स्वरभेद का एक लक्षण, hoarseness of voice (resembling that of a donkey sound)

गन्ध gandha
पञ्चेन्द्रियार्था: शब्दस्पर्शरूपरसगन्धा:। (च.सू. 8/11), इन्द्रियों के विषयो में से एक, घ्राणेन्द्रिय का विषय, smell

गन्धक gandhaka
श्रेष्ठं गन्धकयोगात् सुवर्णमाक्षिकप्रयोगाद्वा। सर्वव्याधिनिबर्हणमद्यात् कुष्ठी रसं च निगृहीतम्। (च.चि. 7/71), गंधाश्मगैरिकासीस कांक्षीतालशिलांजनम्। कंकुष्ठं चेत्युपरसाश्चाष्टौ पारदकर्मणि। (र.र.स. 3/1), गंधक तथा स्वर्णमाक्षिक का प्रयोग जातीस्वरस के साथ कुष्ठ रोगी करे, आठ उपरसों में से एक, sulpher (mentioned in the context of skin disorders), one of eight uprasas

गन्धकतैल gandhakataila
कलांशव्योषसंयुक्तं गन्धकं श्लक्ष्णचूर्णितम्। द्रुतो निपतितो गन्धो बिन्दुषःकाचभाजने।। (र.र.स. 3/29-30), गन्धक को पिघलाकर बनाया तैल, oil prepared by melting sulpher

गन्धजीर्ण gandhajirṇa
जीर्णगन्धे तु यत्कूपीवक्त्ररोधनपूर्वकम् पाचनं मूर्च्छना सा तु बहिर्धूमाभिधा मत्ता। (र.त. 6/6), बालुकायन्त्र में रखकर अग्नि देने पर जब शीशी का गन्धक धुआँ निकलकर धीरे धीरे जीर्ण हो जाय, वह स्थिति गन्धजीर्ण है, तब डाट लगाकर बनाए गए रससिन्दूर आदि को बहिर्धूम मूर्च्छना कहते हैं, the glass bottle filled with the kajjali of parad and gandhak is kept in baluka yantra, slowly the smell of gandhak becomes very ineffective, that is called jirna, then the cork is put and ras sindoor etc. is prepared

गन्धनामा gandhanāmā
एतामेतादृशी कक्षानिर्दिष्टं स्फोटसदृशी गन्धनामां वदन्ति। (गय.-सु.नि. 13/17), एक प्रकार का क्षुद्र रोग जिसमें कक्षा प्रदेश में पित्त प्रकोप के कारण एक बड़े फोड़े जैसी पिडिका होती हैं, axillary lymphadenitis

गन्धपिष्टि gandhapiṣṭi
भागा द्वादश सूतस्य द्वौ भागौ गन्धकस्य च, मर्दयेद् घृतयोगेन जायते गन्धपिष्टिका।। (रसे.चि. 5/19), बारह भाग पारद एवं दो भाग गन्धक को घृत के साथ मर्दन करने से गन्धपिष्टि का निर्माण होता है, यह सगन्ध मूर्च्छना का एक भेद है, a type of sagandha murchchna, a paste formed by 12 parts of mercury and two parts of sulpher

गन्धर्वतैल gandharvataila
तथा गन्धर्वतैलं वा श्रेष्ठं स्नेहविरेचनम्। (का.खि. 7/62), गन्धर्वतैल (एरण्डतैल) श्रेष्ठ स्नेह विरेचन कहा गया है, castor oil (best for sneha-virechana)

गन्धाज्ञान gandhājñāna
घ्राणमार्गमुभयतः स्रोतोमार्गप्रतिबद्धे अभ्यन्तरतः फणे, तत्र गन्धाज्ञानं। (सु.शा. 6/27), गन्ध का ज्ञान न होना, फणमर्म के विद्ध होने का लक्षण है, anosmia (because of injury to phana marma)

गम्भीरिका gambhīrikā
दृष्टिर्विरूपा श्वसनोपसृष्टा सङ्कुच्यन्तेभ्यन्तरश्च याति। रुजावगाढा च तमक्षिरोगं गम्भीरिकेति प्रवदन्ति तज्ज्ञाः।। (सु.उ. 7/41-42), नेत्र का दृष्टिगत रोग जिसमें वायु के प्रकोप से दृष्टि विकृत रूप धारण कर, संकुचित एवं अंदर की ओर धँस जाती है और इसमें तीव्र वेदना भी होती है, an occular disorder resembling chronic iridocyclitis

गर gara
गरः कृत्रिमविषम्। (चक्र.-च.सू. 13/55), गरं संयोगजं चान्यद्गरसंज्ञं गदप्रदम्। कालान्तरविपाकित्वान्न तदाशु हरत्यसून्। (च.सू. 26/14), गरान् कृत्रिमविषाणि यस्मै प्रयच्छन्ति।। (ड.-सु.नि. 7/11-12), कृत्रिम रूप से बना या बनाया विष, स्थावर एवं जंगम विष के अतिरिक्त द्रव्यों के संयोग से उत्पन्न विष 'गरविष'

है, इसका पाक देर से होता है अतः यह शीघ्र मारक नहीं है, कृत्रिम विष, synthetic poison, artificial (man made) poison

गर्दभि gardabhi
पञ्चालः पाकमत्स्यश्च सूक्ष्मतुण्डोत्थ गर्दभिः। (अ.सं.उ. 4), चौबीस आग्नेय विषाक्त कीटों में से एक, a type of poisonous insect which is pittaja in nature

गर्दभी gardabhī
पद्मकर्णिकाकारा पिटका पिटकाचिता। सा विदग्धा वातपित्ताभ्यां ताभ्यावेव च गर्दभीः। (अ.सं.उ. 36/1), यह एक प्रकार का क्षुद्र रोग है, जिसमें वात एवं पित्त के कारण गोलाकार, रक्तवर्ण की पिड़का होती है, a type of kshudraroga characterized by round, reddish eruptions

गर्भ garbha
शुक्रशोणितजीवसंयोग तु खलु कुक्षिगते गर्भ संज्ञा भवति। (चक्र.-च.शा. 4/5), शुक्र शोणित एवं जीव का संयोग जब कुक्षि में स्थापित होता है तो उसकी गर्भ संज्ञा होती है, conceptous, foetus

गर्भकालव्यतिक्रम garbhakālavyatikrama
गर्भकालव्यतिक्रमेति दशममासरूपस्य गर्भकालस्य व्यतिक्रमे। (चक्र.-च.चि. 5/172), गर्भकाल के दस मास बीत जाने पर, prolongation of pregnancy beyond ten months

गर्भकालातिगम garbhakālātigama
गर्भकालातिगमे प्रसूतिकालेऽतिक्रान्तेः। (ड.-सु.उ. 42/15), प्रसूति काल (10 मास) बीत जाने के बाद, रक्तज गुल्म का लक्षण, overdue of delivery, a sign of raktaja gulma

गर्भकोष garbhakoṣa
मूढगर्भः गर्भकोषपरासङ्ग इति गर्भाशयस्य परः श्रेष्ठ आसङ्गो अतिशयेन निरोध इत्यर्थः। (ड.-सु.सू. 33/13), मूढगर्भ के प्रसंग में गर्भकोष परासंग का अर्थ होता हैं गर्भाशय का अत्यन्त निरोध (गर्भाशय का बन्द हो जाना), uterus (here it has been used in reference to uterine inertia)

गर्भक्षमा garbhakṣamā
इत्येवमनन्तरोक्तेन प्रकारेण प्रथममासान्मासाद गर्भाधानात् प्रभृति पुनरार्त्तवदर्शनेन गर्भयोग्यता तावदस्या विधिरस्मिन्नध्याये दर्शित इति। (इंदु.-अ.सं.शा. 3/38), गर्भधारण योग्यता, capability of conception

गर्भक्षय garbhakṣaya
गर्भक्षये गर्भास्पन्दनमनुन्नतकुक्षिता च। (सु.सू. 15/12), गर्भज विकार, इसमें गर्भ के स्पन्दन का अभाव व माता की कुक्षि का उभार नहीं होता है, abscence of foetus movements which is a sign of intrauterine growth retardation

गर्भगति garbhagati
संक्षेपेण त्रिविधा गतिरूर्ध्वादि भेदेन। (इंदु.-अं.स.शा. 4/29), गर्भ के बाहर निकलने की तीन प्रकार की गतियाँ (मार्ग) होती हैं, ऊपर, नीचे व तिरछी, type of foetal movements

गर्भगृह
garbhagṛha
गर्भगृहं गृहकोष्ठकम्। (चक्र.-च.सू. 6/14), घर का भीतरी कमरा, inner room of a house

गर्भच्यवन
garbhacyavana
गर्भच्युति। (का.सं.सू. 22/14), गर्भ का अपने स्थान से हटना, abortion

गर्भज
garbhaja
अष्टौ गर्भजा गदा:। (शा.सं.प्र. 7/181), गर्भ के कारण होने वाले आठ विकार, disease retated to pregnancy

गर्भदाह
garbhadāha
पयसि दध्नि, मधुमये तूक्ते नोष्णोदकं भवेत् पथ्यम्। पित्ते रक्तस्रावे गर्भच्यवने च गर्भदाहे च। (का.सं.सू. 22/14), दूध, दही व मधु युक्त द्रव्य के सेवन के बाद व पित्तकोप, रक्तस्राव, गर्भच्युति व गर्भदाह में उणोदक का सेवन नहीं करना चाहिए, गर्भिणी को दाह की अनुभूति, buring sensation during pregnancy

गर्भद्रुति
garbhadruti
ग्रस्तस्य द्रावणं गर्भे गर्भद्रुतिरुदाहृता। (र.र.स. 8/81), ग्रास दिये हुये पदार्थ को पारद के गर्भ (भीतर) में द्रवीभूत कर देने की क्रिया को गर्भद्रुति कहते हैं, internal liquifaction of assimilated substance in mercury

गर्भधारिणी
garbhadhāriṇī
गर्भधारिणी अपरा। (चक्र.-च.शा. 8/32), गर्भ को धारण करने वाली अपरा, placenta

गर्भनाभिनाडी
garbhanābhināḍī
मातुर्गर्भिण्या रसवहायां नाड्यां गर्भनाभिनाडी या प्रतिबद्धा सा अस्य गर्भस्य मातृभुक्तमाहाररसवीर्यमभिवहति प्राप्यतीत्यर्थ:। (ड.-सु.शा. 3/31), जो गर्भ की नाभि व गर्भाशय में अपरा के साथ में संबद्ध होती है व माता के आहाररस से गर्भ को पोषण पहुंचाने का कार्य करती है, umbilical cord

गर्भनिर्हरण
garbhanirharaṇa
जीवति तु गर्भे सूतिका गर्भनिर्हरणे प्रयतेत्।। (सु.चि. 15/5), गर्भ को बाहर निकालने का उपक्रम (मूढ़गर्भ के प्रसंग में), procedure to deliver/extract an obstructed foetus

गर्भपरिवर्तन
garbhaparivartana
ग्लानिश्च जायते अत्यर्थं योन्युत्पीडनभेदनम्। इत्येतै: कारणैर्विद्याद्गर्भस्य परिवर्तनम्। (का.सं.जातिसूत्रीय), जब गर्भिणी को अत्यधिक ग्लानि हो, योनि में अत्यधिक उत्पीड़न व भेदनवत् पीड़ा हो, तब गर्भ का नीचे की ओर परिवर्तन हो गया है ऐसा समझना चाहिए, descent of engagement of foctus in the birth passage

गर्भपरिस्राव
garbhaparisrāva
हितं गर्भपरिस्रावे यच्चोक्तं तच्च कारयेत्। काश्मर्य कुटजक्वाथ सिद्धमुत्तरबस्तिना। (च.चि. 30/100), अकाल में (चौथे महीने से पूर्व) गर्भ के बाहर आने की स्थिति से बचने के लिए काश्मर्य, कुटज आदि औषधियों से सिद्ध क्वाथ का प्रयोग, miscarriage

गर्भपात
garbhapāta
गर्भविच्युति:। (सु.नि 8/10), abortion

गर्भपातन
garbhapātana
गर्भस्यौषधं शस्त्र अरूपायै: पतनार्थ प्रयोग:।। (सु.चि. 15/11), औषधि, शस्त्रादि उपायों से गर्भ को बाहर निकालने के उपाय, termination of pregnancy by using medicinal, surgical etc. procedures

गर्भयन्त्र
garbhayantra
चतुरङ्गुलदीर्घान्तु त्र्यङ्गुलोन्मित विस्ताराम्। मृण्मयी सुदृढां मूषां वर्तुलं कारयेन्मुखम्। लोणस्य विंशतिर्भागा भाग एकस्तु गुग्गुलो:।। सुश्लक्ष्णं पेषयित्वा तु वारं वारं पुन: पुन:। मूषालेपं दृढ कृत्वा लवणार्द्वमृदम्बुभि:।। कर्षेत्तुषाग्निना भूमौ स्वेदयेन्मृदु मानवित्।। (रसे.चू. 5/44, र.र.स. 9/27-30), सैन्धव लवण या मृत्तिका से एक हाण्डी को भरकर उस पर औषधि का गोलक रखकर पुन: लवण एवं अम्लद्रव्यों का चूर्ण भरा जाता है, हांडी का मुख शराव से बन्द कर दिया जाता है, इसे गर्भयन्त्र कहते हैं, एक चार अंगुल लम्बी एवं तीन अंगुल चौडी दृढ़ गोल मुख वाली मूषा को बीस भाग लवण, एक भाग गुग्गुलु एवं 10 भाग मुल्तानी मिट्टी एवं जल से बने लेप से कई बार लेपित कर सुखाया जाता है, तत्पश्चात् भूमि के अन्दर गड्ढा खोदकर उसमें धान की भूसी पर मूषा को रखकर अग्नि प्रज्वलित करते हैं इसे गर्भयन्त्र कहते हैं, इसका प्रयोग पारद भस्म निर्माण में होता है, an instrument used in preparation of calcined mercury

गर्भरस
garbharasa
यत्तगर्भरसाद्रस इति गर्भरसाच्छुक्रं शोणितसंयोगपरिणामेन कललरूपात्, रस इति सारभूतम्।। (च.स.), गर्भाशय में शुक्र और शोणित के संयोग होने पर कलल स्वरूप गर्भ का निर्माण होना, जिसमें माता के सप्तधातु के सार से निर्मित रस का समावेश होता है, foetus containing essence of seven dhatu of mother

गर्भविघातक
garbhavighātaka
गर्भविघातत्वेनोक्ता गर्भविघातोक्ता:। (चक्र.-च.शा. 4/45), ऐसे भाव जो गर्भ को बाधा पहुँचाते हैं, factors which are harmful to foctus

गर्भविच्युति
garbhavicyuti
गर्भविमुक्ति:। (ड.-सु.नि. 8/10), गर्भपात, detached enbryo, inevitable abortion

गर्भव्यापद्
garbhavyāpad
गर्भसम्भवजो व्याधि:। (अ.सं.शा. 4/1), गर्भ के कारण होने वाले विकार, disorders of pregnancy (foetus related)

गर्भशोष
garbhaśoṣa
गर्भस्य शुष्कत्वम्। (का.खि. 22), गर्भशुष्कत, intrauterine growth retardation

गर्भसङ्ग
garbhasaṅga
विलोमवायुना गर्भो जीवन्यदि न नि:सरेत्। स गर्भसंग इत्युक्तो मूढगर्भो। (र.र.स. 22/102), निम्न अंग में गतिप्रसादक वायु की विकृति से यदि जीवित गर्भ बाहर

न आ सके तो इस गर्भ की रुकावट को गर्भसंग या मूढ़गर्भ कहते हैं, obstruction of foetus in uterus

गर्भस्थापन garbhasthāpana

संप्रति स्थितस्य गर्भस्य गर्भोपघातकभाव प्रभावखण्डकत्वेन यत्र पुनः स्थितिकारकं।। तद्गर्भस्थापनमुच्यते। (चक्र.-च.शा. 8/20), स्थित गर्भ को हानि पहुंचाने वाले भावों के प्रभाव को नष्ट कर पुनः गर्भ को स्थापित करने वाले भाव गर्भस्थापन कहलाते हैं, factors responsible for stabilization of foetus

गर्भस्फुरण garbhasphuraṇa

गर्भस्फुरणे मुहुर्मुहुस्तत्सन्धारणार्थं क्षीरमुत्पलादिसिद्ध पाययेत्। (सु.शा. 10/57), गर्भस्राव/पात का एक लक्षण, गर्भ के स्फुरणशील होने पर उत्पल सिद्ध दुग्ध का पान कराना चाहिए, frequent quickening of foetus (a sign of threatened abostion)

गर्भादि garbhādi

गर्भादि गर्भाधानादि, शुक्रशोणित जीव संमूर्च्छनादि यावत्। (चक्र.-च.सू. 7/39), शुक्र, शोणित और जीव मिलकर गर्भाशय में जिसको उत्पन्न करते हैं, वह गर्भादि है, combination of shukra, shonita and life (jiva) in uterus

गर्भाधान garbhādhāna

तस्मादत्यन्तबालायां गर्भाधानं न कारयेत्। (सु.शा. 10/55), गर्भधारण, अत्यंत छोटी बाला को गर्भ धारण नहीं कराना चाहिए, to concieve

गर्भाप्यायन garbhāpyāyana

एवमाप्यायते गर्भस्तीव्रारुक् चोपशाम्यति।। (सु.शा. 10/65), गयदासेन चैते गर्भस्रावचिकित्सितयोगाः प्रागेव गर्भश्चाप्यायत इत्यनन्तरं पठिता। गर्भ का पोषण, गर्भवृद्धि, nourishing to foetus

गर्भाम्भ garbhāmbha

गर्भाम्भः सैन्धववता सर्पिषा वामयेत्ततः।। (अ.हृ.उ. 1/10), गर्भोदक, नवजात शिशु में सैंधव युक्त घृत से गर्भोदक का वमन कराना चाहिए, amniotic fluid (in context of vomiting/suction of amniotic fluid ingested by new born)

गर्भावक्रान्ति garbhāvakrānti

गर्भस्यावक्रान्तिः मेलकः, उत्पत्तिरितिमानत्। (चक्र.-च.शा. 3/1), गर्भ की उत्पत्ति कैसे होती है इसका समग्र वर्णन, process of development of foetus

गर्भिणी garbhiṇī

गर्भिणीसूतिकाबालवृद्धान् ग्रीष्मेपरानपि। (अ.हृ.सू. 14/9), गर्भवती, pregnantlady

गर्भोदक garbhodaka

आविप्रादुर्भावादनन्तरं योनितोयद् उदकं वर्तते तत्। (अ.सं.शा. 3), गर्भाशय में गर्भ की रक्षा करने वाला द्रव, amniotic fluid

गर्भोपघातकर भाव garbhopaghātakara bhāva

तत्रेमे गर्भोपघातकराः। (अ.सं.शा. 2/56), गर्भ के लिए हानिकर भाव, harmful factors for foetus

गलगण्ड galagaṇḍa

निबद्धः श्वयथुर्यस्य मुष्कवल्लम्बते गले। (सु.नि 11/29), महान् वा यदि वा ह्रस्वो गलगण्डं तमादिशेत्।। (मा.नि. 38/1), गले में अभिन्न रूप से बंधे हुये एवं बढे अण्डकोष के समान लटकने वाले शोथ को चाहे छोटा हो या बडा, गलगण्ड कहते हैं, goitre

गलग्रह galagraha

यस्य श्लेष्मा प्रकुपितस्तिष्ठत्यन्तर्गले स्थिरः, आशु संजनयेच्छोफं जायतेऽस्य गलग्रहः। (च.सू. 18/22), कफ प्रकोप के कारण कफ का गले में स्थिर होकर आशु शोफ करने से गले में जकडाहट उत्पन्न होती है, choking of throat

गलपाक galapāka

गलपाकश्च......चत्वारिंशत्पित्तविकाराः पित्तविकाराजामपरिसंख्येयानामाविष्कृत तमाख्याताः। (च.सू. 20/14), गले का पकना, यह पित्त के चालीस विकारों में से एक है, suppuration in throat, pharyngitis

गलरोग galaroga

गलेऽष्टादश (रोगाः)। (चन्द्र.-अ.हृ.उ. 21/64-66), गले में होने वाले 18 रोग, diseases of throat

गललेप galalepa

भविष्यस्तस्य तु कण्ठकण्डूर्भोज्योपरोधो गलतालुलेपः। (सु.उ. 52/7), कास का पूर्वरूप, गले का (कफ से आवरण होने के कारण) लिपा हुआ प्रतीत होना, stickiness in throat

गलविद्रधि galavidradhi

सर्व गलं व्याप्येत्यादिना गलविद्रधिः। स्थानप्रभावेण सान्निपातिक एव। तस्यैव सान्निपातिक विद्रधेरयं सदृशः। (गय.-सु.नि. 16/59), कंठगत 18 रोगों में से एक जिसमें तीनों दोषों के प्रकोप से गले में एक विद्रधि होती है तथा जिसके लक्षण सन्निपातिक विद्रधि सदृश होते हैं, pharyngeal abscess

गलशालूक galaśālūka

श्रृणुमांसप्रदोषजान्। अधिमांसार्बुदं कीलं गलशालूकशुण्डिके।। (च.सू. 28/13-14), शालूकमुत्पलकन्दः। (गय.- सु.नि. 16/51), गले में होने वाला मांसप्रदोषज विकार, कमल के कन्द के समान गले में होने वाली वृद्धि, resembling lotus tuber, tonsilitis

गलशुण्डिका galaśuṇḍikā

तालुगतास्तु गलशुण्डिकादयः। श्लेष्मासृग्भ्यां तालुमूलाग्र वृद्ध इत्यादिना गलशुण्डिका। (गय.-सु.नि. 16/41), नव तालुरोगों में से एक, कफ एवं रक्त के प्रकोप से तालुमल में होने वाली वृद्धि, uvular hypertrophy

गलशोफ galaśopha

गले तु शोफ इत्यादिना बलासः। (गय.-सु.नि. 16/54), गले में शोफ होना, बलास रोग का लक्षण, inflammation of throat, a sign of balas, one of the 18 disorders of throat, pharyngitis

गलशोष galaśoṣa
ज्वरभ्रमदवथुपिपासागलतालुमुखशोष प्रमोहविड्भेदाश्चैनमुपद्रवन्ति। (च.नि. 3/9), गले में शुष्कता होना, पित्तज गुल्म का एक लक्षण, dryness of throat

गलस्तम्भ galastambha
गलस्तम्भो गलग्रहः। (ड.-सु.उ. 55/11), गले का जकड़ना, जृम्भा उदावर्त का लक्षण, stiffness of throat

गलस्रोतस galasrotasa
गलस्रोतोरोगच्छेदन भेदने। (अ.हृ.सू. 26/15), गलमार्ग, गला, कंठमार्ग, throat

गलार्बुद galārbuda
मला वातादयो जिह्वाया अवसाने कण्ठस्यादौ प्रारम्भे वा पाकरहित स्थिरमचलं लोहितं रुजारहितं चय श्वयथुं जनयन्ति तद् गलार्बुदं भवति।। (इन्दु.-अ.सं.उ. 25/54), सभी दोषों के कारण जिह्वा को दबाने वाला, पाकरहित, स्थिर, रक्तवर्ण का वेदनारहित शोफ गलार्बुद कहलाता है, a painless, nonsuppurative inflammatory lesion of throat

गलौघ galaugha
शोफो महानन्नजलावरोधी तीव्रज्वरो वातगतेर्निहन्ता। कफेन जातौ रुधिरान्वितेन गले गलौघः परिकीर्त्यतेऽसौ। (सु.नि. 16/60), कफ एवं रक्त दोष के प्रकोप से तीव्र ज्वरयुक्त, गले में होने वाला महान शोफ जिससे प्राण वायु, अन्न व जल का अवरोध होता है, severe inflammatory condition of throat leading to obstruction of passage of food, water and air

गल्लिर gallira
वातकफात् पाल्यां शोफः सर्वतो निर्व्यथः स्थिरः स्तब्धः समानवर्णः कण्डूयुत उन्मन्थ उच्यते। स एव गल्लिराख्यः।। (अरु.-अ.हृ.उ. 17/23), वात एवं कफ के प्रकोप से कर्णपाली में वेदनारहित, स्थिर, स्तब्ध, समानवर्ण का एवं कण्डूयुक्त शोथ उन्मन्थ कहलाता है। इसे ही गल्लिर भी कहते हैं, inflammation of ear lobe

गवेधुकान्न gavedhukānna
गवेधुकान्नं कर्शनीयानाम्। (च.सू. 25/40), गवेधुकातोयपर्णीमुकुन्दकवेणुयव प्रभृतयः कुधान्यविशेषः। (हे.-अ.हृ.सू. 6/11), एक प्रकार का कुधान्य जो कृशता कारक है, an inferior quality cereal which reduces body mass

गाढवर्चस gaḍhavarcasa
उन्मत्ताः कृच्छ्रमूत्राश्च गाढवर्चस एव च। (च.सू. 13/32), ऐसी अवस्था जिसमें मल गाढ़ा हो, स्नेहपान योग्य व्यक्तियों में, thick stool, which can be corrected by ingestion of unction

गाढोच्छादन gaḍhocchādana
वातप्रकोप का एक कारण। (अ.सं.नि. 1/24), जोर से रगड़ना, rubbing with pressure

गात्र gātra
तनुस्तनूः संहननं शरीरं कलेवरं क्षेत्रवपुः पुराणि। गात्रं च मूर्त्तिर्घनकायदेहावष्टङ्गपीडानि च विग्रहश्च। (रा.नि. 18/30), शरीर का एक पर्याय, a synonym of body

17—4 Min. of HRD/2016

गात्रकम्प gātrakampa
गात्राणां कम्पः सर्वाङ्गचलनम्। (इन्दु.-अ.सं.सू. 21/5), सभी अंगों का चलना या हिलना, body tremors

गात्रपारुष्य gātrapāruṣya
नखादीनां च शुक्लत्वं गात्रपारुष्यमेव च।। (च.सू. 17/56), शारीरिक अवयवों की कठिनता, stiffness of body parts

गात्रभञ्जन gātrabhañjana
गात्रेषु भङ्गवत् पीडा। (च.चि. 28/25), शरीरावयवों में टूटने जैसी वेदना होना, breaking pain in body

गात्रविक्षेप gātravikṣepa
हस्तादेरितस्ततो विक्षेपः। (च.चि. 3/78) हाथ, पैर आदि का आकुंचन प्रसारण, clonic contraction of hands and feet

गात्रविश्लेष gātraviśleṣa
गात्रविश्लेषो विघटनम्। (ड.-सु.सू. 12/16), (अग्निकर्म के प्रसंग में) अतिदग्ध का एक लक्षण जिसमें शरीरावयव अलग एवं शिथिल हो जाते हैं, laxation of body parts because of excess cauterization

गात्रवेष्टन gātraveṣṭana
पीडाविशेषः विलोमनसमुद्भूतो रुजत्यऽग्नि देहिनः। गात्रवेष्टन निस्तोदभेस्फुरण जृम्भणैः।। (च.सू. 7/49), शरीरवयवों में ऐंठनवत वेदना, Tortuous pain, cramps

गात्रसदन gātrasadana
गात्रसदनं अङ्गग्लानि। (ड.-सु.चि. 35/23), शरीरावयवों में थकान का अनुभव होना, malaise, fatigue

गात्रसुप्तता gātrasuptatā
गात्रस्य स्पर्शज्ञानाभावः। (च.चि. 28/22), शरीरावयवों में स्पर्शज्ञान का अभाव होना, loss of sensation in body parts

गात्रस्फुरण gātrasphuraṇa
गात्राणां स्पन्दनं कम्पो वा। (च.चि. 28/25), शरीरवयवों में स्पन्दन या कम्पन की अनुभूति होना, pulsatile sensation or feeling of tremors in body

गालयेत् gālayet
गालयेदिति यत्नेन मुखे प्रक्षिपेत्। (चक्र.-च.सू. 24/48), प्रयत्नपूर्वक मुख में डालना गालयेत् कहा जाता है, forceful insertion in mouth

गिरिदोष giridoṣa
भूमिजा गिरिजा वार्जाः च द्वौ नागवंगजौ। (र.र.स. 11/22), पर्वतीय अथवा खनन पाषाण के संपर्क से पारद में जो दोष आते है उन्हें गिरिदोष कहते हैं, impurities due to toxic substances present in the stone with which it comes in contact

गिलायु gilāyu
ग्रन्थिर्गले त्वामलकास्थिमात्रः स्थिरोऽल्परुक्स्यात् कफरक्तमूर्तिः, संलक्ष्यते सक्तमिवाशनं च स शस्त्रसाध्यस्तु गिलायुसंज्ञः।। (सु.नि. 16/58), कंठगत एक

रोग जिसमें कफ व रक्त के कारण गले में आंवले के समान बड़ी स्थिर, मंदवेदना युक्त ग्रन्थि उत्पन्न हो जाती है। इसमें रोगी को ऐसा प्रतीत होता है जैसे गले में भोजन अटक रहा हो, यह शस्त्रसाध्य है, tonsillar hypertrophy

गुडशुक्त guḍaśukta
गुडाम्बुना सतैलेन सन्धानं काञ्जिकं तु यत्, कन्दशाकफलैर्युक्तं गुडशुक्तम्। (ड.-सु.सू. 45/212), गुडाम्बुना सतैलेन कन्दमूलफलैस्तः सन्धितं चाम्लतां यातं गुडशुक्तं तदुच्यते। (शा.सं.म. 10/9), गुडयुक्त जल, तैल, कन्द, मूल फल अथवा कन्द शाकफल आदि के सन्धान से बना अम्लता को प्राप्त कांजी समान पदार्थ, a fermented sour product of jaggery, oil, tuber and fruit, sour vinegar

गुडसौहित्य guḍasauhitya
गुडसौहित्यं गुडवासितं भक्तं दद्यादित्यर्थः। (ड.-सु.चि. 7/35), प्रचुर मात्रा में गुड़ का सेवन (मूत्रविशोधनार्थ), eating jaggery to the fullest

गुण guṇa
समवायी तु निश्चेष्टः कारणं गुणः। (च.सू. 1/51), जो द्रव्य में समवाय सम्बन्ध से रहता हो एवं स्वयं निष्क्रिय होने पर भी कर्म का कारण हो, उसे गुण कहते हैं, inherent property of substance, quality

गुद guda
दशैवायतनान्याहु प्राणा येषु प्रतिष्ठिताः। शंखौ मर्मत्रयं कण्ठो रक्तं शुक्रौजसी गुदम्। (च.सू. 29/3), श्रवणनयनवदन घ्राणगुदमेदानि नव स्रोतांसि नराणां बहिर्मुखानि। (सु.शा. 5/10), दशविध प्राणायतनों में से एक, नव बहिर्मुख स्रोतसों में से एक, anus, one of the ten vital organs, one of the nine external orifices,

गुदपरिकर्तन gudaparikartana
गुदपरिकर्तनं गुदस्य सर्वतः कर्तनमिव वेदनाविशेषः। (ड.-सु.चि. 34/8), गुद प्रदेश के चारों ओर काटने के समान वेदना होना, excruciating pain around anal region

गुदपाक gudapāka
पितज चालीस विकारों में से एक। (च.सू. 20/14), गुदा में पाक होना, proctitis

गुदभ्रंश gudabhraṃsa
प्रवाहणातिसाराभ्यां निर्गच्छति गुदं बहिः। (सु.नि. 13/61), प्रवाहण एवं अतिसार के कारण गुद का बाहर निकलना, prolapse of rectum

गुदवली gudavalī
तस्मिन् वलयस्तिस्रोऽध्यर्धाङ्गुलान्तरसम्भूताः प्रवाहिणी विसर्जनी संवरणी चेति। (सु.नि. 2/5), गुदावयव, गुदा में डेढ़ अंगुल के अन्तर से तीन वलियाँ हैं जिनके नाम प्रवाहणी, विसर्जनी और संवरणी हैं, anal sphincters

गुदार्ति gudārti
गुदशूलः। (अ.सं.सू. 20/15), अशीतिवातविकारेष्वेकः। (च.सू. 20/11), गुदा में वेदना, वातज 80 विकारों में एक, proctalgia

गुदौष्ठ gudauṣṭha
रोमान्तेभ्यो यवाध्यर्धो गुदौष्ठः परिकीर्तितः। (सु.नि. 2/7), रोमप्रान्तों से डेढ यव ऊपर का भाग, गुदद्वार, anal orifice

गुप्ति gupti
गुप्तिः पिशाचादिभ्यो रक्षा। (चक्र.-च.सू. 5/101), गुप्तिः मन्त्रादिना रक्षा। (चक्र.-च.चि. 3/15), पिशाच आदि से रक्षा गुप्ति कहलाता है, मंत्रादि द्वारा रक्षा करना या शास्त्र निर्दिष्ट रक्षोघ्न कर्म करना गुप्ति है, protection against demons

गुरु guru
गुर्वित्यादौ बहलं घनम्। (चक्र.-च.सू. 22/13), गुरुत्वं जलभूम्योः पतनकर्मकारणम्। (प्र.पा.भा.), यस्य द्रव्यस्य बृंहणे कर्मणि शक्तिः स गुरुः (हे.), बहल या घन को गुरु कहा जाता है, जो द्रव्यों के स्वाभाविक अधःपतन में कारण होता है, जो शरीर में बृंहण एवं गौरव उत्पन्न करता है, वह गुरु है, heaviness, compactness

गुरुकोष्ठ gurukoṣṭha
गुरुकोष्ठः क्रूरकोष्ठः जडकोष्ठो वा। (जेज्जट-च.सि. 6/61), क्रूर कोष्ठ या जड़ कोष्ठ, constipated bowel

गुरुगात्रता gurugātratā
गात्राणां गौरवं विंशतिश्लेष्मविकारेष्वेकः। (च.सू. 20/17), शरीर में भारीपन का अनुभव होना, heaviness of body

गुरुप्रावरण guruprāvaraṇa
कफमेदोन्वितवायौनिवातातपगुरुप्रावरणनियुद्धाध्वव्यायामभारहरणामर्षैः स्वेदमुत्पादयेदिति। (सु.चि. 32/15), निराग्नि स्वेद का एक प्रकार, कम्बल, रजाई आदि घन वस्त्रों से आच्छादित करना, covering by thick (woolen) cloths for inducing sudation

गुरुभोजन gurubhojana
गुरुभोजनं दुर्विपाकानाम्। (अ.सं.सू. 13/2), पचने में भारी भोजन, heavy diet

गुरुसमुत्थान gurusamutthāna
गुरुसमुत्थानानीति संशोधन क्लिष्टानि शरीराणि तदा महता प्रयत्नेन चिरेण च कालेन प्रकृति प्राप्तुवन्तीत्यर्थः। (चक्र.-च.वि. 8/127), शोधन के कारण त्रस्त एवं कृश हुआ शरीर बहुत प्रयास के बाद प्राकृत स्वरूप में आता है, prolonged recovery period of body emaciated because of purification procedure

गुल्फ gulpha
जङ्घाङ्घ्रिसन्धिग्रन्थौ तु घुटिका गुल्फ इत्यादि। (रा.नि. 18/78), जंघा तथा अंघ्रि (पैर) की सन्धिग्रन्थि को घुटिका तथा गुल्फ कहते हैं, ankle

गुल्फग्रह gulphagraha
गुल्फस्तम्भ, अस्सी वातविकारों में से एक। (च.सू. 20/11), ankle stiffness

गुल्फशूल gulphaśūla
गुल्फस्थ शूलः। (च.सि. 2/16), ऐड़ी में वेदना, pain in ankle

गुल्फशोष gulphaśoṣa
गुल्फस्य शोषः। (च.सि. 2/10), गुल्फ (ऐड़ी) का सिकुड़ना, छोटा होना, atrophy of ankle

गुह्य guhya
गुह्यं गुप्तम्। (सु.उ. 60/4), गुप्त, hidden, concealed

गुह्यरोग guhyaroga
गुह्य शब्देनोपस्थो भव्यते। (इन्दु.-अ.सं.उ. 38/1), गुह्य शब्द से उपस्थ (भग और लिंग) दोनों का ग्रहण होता है, इन अवयवों को आक्रांत करने वाले रोग गुह्य रोग कहलाते हैं, disorders of genital organs

गृञ्जनक gṛñjanaka
स्वल्पनालपत्रः पलाण्डुरेव। (चक्र.-च.सू. 27/174), सूक्ष्म नाल एवं सूक्ष्म पत्र युक्त पलाण्डु, a variety of onion having short leaves

गृद्धि gṛddhi
गृद्धि सर्वरसानामिति सप्तम्यर्थे षष्ठी। (चक्र.-च.चि. 15/62), सभी रसों का सेवन करने की अभिलाषा, longing to consume all the tastes

गृध्रसदृशस्वर gṛdhrasadṛśasvara
गृध्र (गीध) के समान स्वर, sound resembling the scream of vulture

गृध्रसी gṛdhrasī
अशीतिं वातविकारेष्वेकः। (च.सू. 20/11), गृध्रसी 'रंघिणी' इति लोके। (ड.-सु.नि. 1/74), पार्ष्णिप्रत्यङ्गुलीनां तु कण्डरा याऽनिलार्दिता। सक्थ्नः क्षेपं निगृह्णीयद्गृध्रसीति हि सा स्मृता।। (सु.नि. 01/74), वात के अस्सी विकारों में से एक, रंघिणी नाम से प्रसिद्ध व्याधि, इसमें एड़ी और प्रत्यंगुलियों की कण्डराएं प्रकुपित वात से आक्रान्त होकर अधःशाखा की गतियों को अवरुद्ध कर देती हैं, तो यह रोग गृध्रसी कहलाता है, sciatica

गृहीतगर्भा gṛhītagarbhā
लब्धगर्भा। (सु.शा. 4/24), गर्भिणी स्त्री, pregnant lady

गोकर्ण gokarṇa
गोमुखहरिण विशेषः। (चक्र.-च.सू. 27/45), गाय के मुख के समान मुख युक्त हरिण विशेष, a deer resembling face with that of a cow

गोचन्दना gocandanā
गोवृषणवदधोभागे द्विधाभूताकृतिरणुमुखी गोचन्दनेति। (सु.सू. 13/11), गोवृषणवदधोभागे द्विधाभूताकृतिरिति वृषभाण्ड इवोधोभागे द्विप्रकारभूताकृतिः। (ड.-सु.सू. 13/11), बैल के वृषण की तरह अधोभाग में द्विधाभूत (दो भाग में विभक्त किन्तु जुड़ी हुयी) आकृति वाली तथा छोटे मुख वाली गोचन्दना जलौका होती है, सविष जलौका का एक प्रकार, a type of poisonous leech with bifid belly resembling the scrotum of an ox

गोणी goṇī
शूर्पाभ्यां च भवेद् द्रोणी वाही गोणी च सा स्मृतजा। (शा.सं.प्र 1/30), गोणी, द्रोणी का पर्याय वाचक शब्द है, synonym of droni

गोपानसी gopānasī
गोपानस्यः गृहाच्छादनाधारकाष्ठानि। (चक्र.-च.सू. 30/5), घर के निर्माण में प्रयुक्त आधारभूत कोष्ठों को गोपानसी कहते हैं, wooden poles of the roof

गोमांस gomāṃsa
गोशब्देनोदिता जिह्वा तत्प्रवेशो हि तालुनि। गोमांसभक्षणं तत्तु महापातकनाशनम्। (रसे.चूड़ा. 1/3), गो शब्द से अभिप्राय जिह्वा से है, जिह्वा के तालु विवर में प्रवेश करने को गोमांसभक्षण कहा जाता है, यह महापापों का नाशक है, entry of tongue into pharynx

गोमेद gomeda
गोमेदः समरागत्वाद् गोमेदं रत्नमुच्यते। (र.र.स. 4/53), गाय के भेद के समान वर्ण युक्त होने से इसे गोमेदरत्न कहते हैं, a precious stone having colour resembling cow's fat

गोर्वर gorvara
गोखुरैस्ताडितं गोष्ठे शुष्कं चूर्णापमञ्च यत्र। गोमयं तत्समाख्यातं बुधैर्गोर्वरसंज्ञकम्। (र.त. 2/12), गोशाला या गाय बांधने के स्थान में गाय के खुरों से गोबर के कुचलने के पश्चात् वह टुकड़े-टुकड़े हो जाता है, शुष्क होने के बाद मोटे चूर्ण के समान हुये गोबर को गोर्वर या गोमय कहा जाता है, cow dung (dried & powdered)

गोलक golaka
प्रावाराजिनकौशेयकुथकम्बलगोलकैः। (च.सू. 14/53), लोहे का गोलक, iron ball

गोष्ठ goṣṭha
अलङ्कता रूपवती सुभगा कामरूपिणी। गोष्ठमध्यालयरता पातुत्वां मुखमण्डिका। (सु.उ. 35/9), गौशाला, उसमें रहने वाली मुखमण्डिका, cow shed

गौड gauḍa
गौडः गुडप्रकृतिकम्। (चक्र.-च.सू. 27/186), गुड़ निर्मित मद्य गौड़ कहा जाता है, alcoholic beverage prepared by jaggery

गौरव gaurava
आर्द्रचर्मावनद्धं वा यो गात्रं मन्यते नरः। (सु.शा. 4/55), गौरवं प्रकृतं शरीरगौरवम्। (चक्र.-च.सू. 18/51), शरीर की गीले कपड़े से लिपटा होने की प्रतीति एवं शिर में गुरुता, शरीर का स्वाभाविक भारीपन गौरव है, heaviness of the body, heaviness

ग्रथित grathita
1.ग्रथितं ग्रन्थ्यर्बुदादिषु रक्तं जलौकाभिरपहरेत्। (अ.हृ.सू. 26/53), ग्रन्थि, अर्बुद आदि का गाढ़ा रक्त, coagulated blood 2. ग्रंथिरिवोन्नतः, 'जातबहुग्रंथि' इत्यन्ये। (ड.-सु.सू. 17/3), ग्रंथिलं पाषाणवत्। (विज.-मा.नि. 5/14), गांठयुक्त, ग्रंथियुक्त, nodular, knotted 3. शूकदोष। (सु.नि. 14/6), एक प्रकार का शूक दोष, a type of balanitis

ग्रह graha
ग्रहैरपि हि जायन्ते प्रच्छन्नैर्व्याधयः शिशोः। कर्म शस्तमतस्तेषु दैवयुक्त्यापाश्रयं सदा। (अ.सं.उ. 2/57), ग्रहाणां स्कन्दादीनाम्। (ड.-सु.उ. 37/1), शिशुओं में पाए जाने वाली विशेष व्याधियां जो बालग्रह के नाम से जाने जाते हैं, स्कन्द आदि नव ग्रह जो शिशुओं को आक्रांत करते हैं, a specific group of paediatric disorders caused by affliction of supernatural powers

ग्रहणी grahaṇī
ग्रहणी कोष्ठस्था अग्न्यधिष्ठानभूता नाडीः। (च.सू. 13/68), यदुक्तम्- 'अग्न्यधिष्ठानमन्नस्य ग्रहणाद् ग्रहणी मता।' (च.चि. 15/56), आन्त्र का वह भाग जिसके आश्रय जठराग्नि रहती है, यह अन्न का ग्रहण भी करती है, a part of the small inestine where jatharagni is situated, it retains food also for the required period, duodenum

ग्राम्यधर्म grāmyadharma
ग्राम्यधर्मो मैथुनम्। (चक्र.-च.सू. 7/36), मैथुन, sexual intercourse

ग्रासक्षेपण grāsakṣepaṇa
पारद में ग्रास मिलाना ग्रासमान एवं अनुवासन के बाद पारद में स्वर्ण, रजत आदि के मिलाये जाने को ग्रासक्षेपण कहा जाता है, mixing of metals in mercury

ग्रासमान grāsamāna
इयन्मानस्य सूतस्य ग्रासद्रव्यात्मिकामितिः। (रसे.चू. 4/91), ग्रास (स्वर्ण रजत आदि) की मात्रा, पारद में ग्रास दिये जाने वाले द्रव्य की मात्र का निश्चय, amount of mixer substance

ग्रासान्तर grāsāntara
ग्रासान्तरं तु यद् ग्रासान्तरेषु। (सु.उ. 64/80), ग्रासयोर्मध्यः। (अ.सं.सू. 23), भोजन करते समय दो भोजन ग्रास के मध्य औषधि का सेवन करना ग्रासान्तर या कवलान्तर कहलाता है, administration of drug between two bolus of food

ग्रासार्थ grāsārtha
ग्रास हेतु तैयार, ग्रास लेने में सक्षम, ग्रासलोलुप, पारद संस्कार के क्रम में दीपन संस्कार के पश्चात् पारद में ग्रास लोलुपता विकसित होती है, ग्रास हेतु प्रयुक्त द्रव्य स्वर्ण, रजत, अभ्रकसत्व आदि हैं, mouthful lump, desired to be swallowed

ग्राही grāhī
दीपनं पाचनं यत्र स्याद् उष्णत्वाद् द्रवशोषकं ग्राहि तत्। (शा.सं.प्र. 4/11), जो द्रव्य अग्नि को दीप्त कर, आम का पाचन कर, उष्ण होने के कारण द्रवांश का शोषण कर पुरीष का बन्धन करता है, उसको ग्राही कहते हैं, adsorbants

ग्रीवास्तम्भ grīvāstambha
ग्रीवा में जकडाहट, वात के 80 नानात्मज विकारों में से एक। (च.सू. 20/11), neck stiffness

ग्लपन glapana
हर्षक्षयम्। (चक्र.-च.सू. 26/43), हर्ष या प्रसन्नता का क्षय होना, depression

ग्लानि glāni
ओजक्षयात् दुःखाद् अजीर्णात् च श्रमात् भवेत्। (शा.सं.पू. 6/25), ग्लानिस्तु क्लमापरपर्यायवाचको हर्षक्षय इत्यर्थः। (आढ.-शा.सं.पू. 6/25), ओजक्षय, दुःख, अजीर्ण एवं श्रम से उत्पन्न, क्लम का पर्याय, हर्षक्षय का होना, lassitude

घटिका ghaṭikā
घटिकाख्यां नाडीमाह; तद्वद्घटीति। (हे.-अ.हृ.सू. 25/28), नाड़ीयुक्त (अलाबु) यन्त्र, रक्तनिर्हरण हेतु, tubular instrument (horn) for blood letting

घटितकर्णिक ghaṭitakarṇika
घटिता सम्पादिता, कर्णिका-छत्राकारा गुदाधिकान्तःप्रवेशरोधिनी। (अरु.-अ.हृ.सू. 19/14), गुदा दर्शनार्थ प्रयुक्त यन्त्र, जिसमें बाहर की तरफ छत्र के आकार की पाली बनी हो जिससे यन्त्र गुदा में अधिक अंदर तक न जा सके, a guarded proctoscope

घटी ghaṭī
तद्वदेव च मानकर्माभ्यां घटी। सा तु गुल्मोन्नमनविलयनार्थं च। (अ.सं.सू. 34/13), (अलाबूयन्त्र) के समान घटीयंत्र बनाना चाहिए, इसका परिमाण और कार्य अलाबू के समान है। साथ ही गुल्म के उभार को कम करने के लिए भी इसका उपयोग होता है। एक प्रकार का यन्त्र जो रक्त के चूषण हेतु प्रयुक्त होता है, cup used for blood letting

घटीयन्त्रग्रहणी ghaṭīyantragrahaṇī
स्वपतः पार्श्वयोः शूलं गलज्जलघटीध्वनिः। तं वदन्ति घटीयन्त्रमसाध्यं ग्रहणीगदम्। (मा.नि. 4/17-4), लेटने पर पार्श्व में शूल तथा जल में डूबते हुए घड़े के समान ध्वनि से युक्त ग्रहणी रोग को घटीयन्त्र ग्रहणी कहते हैं, a variant of sangrahani, borborygmi, intestinal tuberculosis

घट्टयेत् ghaṭṭayet
उत्पिष्टमथ विश्लिष्टं सन्धिं वैद्यो न घट्टयेत्। (सु.चि. 3/20), न घट्टयेत् न चालयेत्। (ड.-सु.चि. 3/20), वैद्य को चूर्णित एवं अपने स्थान से हटी हुई संधि को नहीं चलाना या हिलाना चाहिए, to move, (one should not attempt to move the fractured or dislocated joints)

घण्टा ghaṇṭā
1. रक्तानि माल्यानि तथा पताका रक्ताश्च गन्धा विविधाश्च भक्ष्याः। घण्टा च देयाय बलिर्निवेधः सकुक्कुटः स्कन्दग्रहे हिताय। (सु.उ. 28/8), घण्टा (मंदिर का), स्कन्दग्रह की चिकित्सा में प्रयुक्त, bell, striking or gifting a bell in the treatment of skanda graha 2. बलिकाऽतिबला बल्या विकंकता वाट्यपुष्पिका घण्टा। शीता च शीतपुष्पा भूरिबला वृष्यगन्धिका दशधा। (रा.नि. 4/101), अतिबला के दश नामों में से एक, a synonym of Sida rhombifolia

घण्टाख्य ghaṇṭākhya
घन्टालो मादनो हर्षो घण्टाख्यो बस्तिरोधनः। ग्रन्थिफलो गोलफलो मदनाह्वश्च

विंशतिः। (रा.नि. 8/67), मदनफल के बीस नामों में से एक, a synonym of bushi garcinia, *Randia dumatorum*

घण्टाजीव
ghaṇṭājīva
दन्तीबीज (जयपाल) के 14 पर्यायों में से एक। (रा.नि. 6/164), a synonym of purging croton

घण्टाल
ghaṇṭāla
देखें. घण्टाख्य। (रा.नि. 8/67), मदनफल के बीस नामों में से एक, a synonym of bushi garcinia

घण्टाली
ghaṇṭālī
कोशातकी कृतच्छिद्रा जालिनी कृतवेधिनी। क्ष्वेडा सुतिक्ता घण्टाली मृदङ्गफलिका मता। (ध.नि. 1/92), कोशातकी का एक पर्याय, a synonym of Luffa acutangula

घन
ghana
1.क्वाथादीनां पुनः पाकाद् घनत्वम्। (भा.प्र.म. 2/3), सांस्कारिकमिति बहुमांसस्नेहादिसंस्कृत्वाद् घनम्। (चक्र.-च.सू. 27/262), जलप्रभूत कल्पना के पुनः पाक द्वारा प्राप्त ठोस पदार्थ को घन कहा जाता है, कृतमांसरस में संस्कारक द्रव्यों की मात्रा अधिक होने से अर्थात् मांस स्नेहादि की मात्रा अधिक होने से वह गाढ़ा होता है, उसे ही घन कहा जाता है, reheating aqueous solution to make them solid, solidification of aqueous solution, meat soup of thick consistency 2. घनं स्रावरहितम्। (अ.ह्.सू. 27/41), स्राव रहित, सघन, कफ दुष्ट रक्त का एक लक्षण, dense

घनत्व
ghanatva
रसक्रिया निर्माण में द्रव को ठोस रूप में परिवर्तित करना, solidification of aquous solution during preparation of confection

घनात्यय
ghanātyaya
घनात्यय इति पुनर्वचनां शरत्प्रवेशः। (च.सू. 6/43), घनात्यय इति मार्गशीर्ष। (च.शा. 2/45), शरद ऋतु का प्रारम्भ, मार्गशीर्ष मास, autumn, beginning of winter season

घनान्त
ghanānta
शरदवसन्तयो रूक्षं शीतं घर्म घनान्तयोः। (अ.ह्.सू. 3/56), शरद ऋतु, autumn

घनीभूत
ghanībhūta
घनीभूतमिति कठिनतां गतम्। (चक्र.-च.इ. 4/7), कठिनता को प्राप्त, hardened, solidified

घर्म
gharma
1. ग्रीष्म ऋतु। (अ.ह्.सू. 3/56), summer 2. घर्मे इति आतपः। (चक्र.-च.चि. 7/18), धूप, sun shine

घर्मांशु
gharmāṃśu
घर्मांशु आदित्यः। (ड.-सु.उ. 17/64), सूर्य, sun

घर्मान्त
gharmānta
घर्मान्ते वर्षाकाले:। (ड.-सु.सू. 21/20), वर्षाकाल, rainy season

घर्माम्बु
gharmāmbu
घर्माम्बु उष्णाम्बु। (चक्र.-च.चि. 3/194), उष्णजल, warm water

घर्ष
gharṣa
1. सर्वेषामक्षिरोगाणामादावाश्च्योतनं हितम्। रक्तोदकण्डू घर्षाश्रुदाहराग निबर्हणम्। (अ.ह्.सू. 23/1), नेत्रों में होने वाली करकरिमा, किरकिराहट, foreign body sensation 2. घर्षो वर्त्मनोः परस्परं संश्लेषः। (अरु.-अ.ह्.सू. 23/6), वर्त्मों का आपस में चिपकना, sticking of eye lids

घस्मरा
ghasmarā
घस्मरा बहुभक्षकाः। (चक्र.-च.सू. 13/50), बहुत अधिक खाने वाले, glutton, having voraciours appetite

घाटा
ghāṭā
घाटा तु अवटुः ग्रीवापृष्ठसन्धिप्रदेशः किञ्चिदुन्नतः। (ज्योति.-च.सू. 17), ग्रीवा के पीछे की सन्धि का भाग जो कुछ ऊंचा उठा रहता है, Posterior part of neck, nape

घुणप्रिया
ghuṇapriyā
घुणप्रिया अतिविषा। (अरु.-अ.ह्.सू. 15/33), अतिविषा, *Aconitum heterophyllum*

घुर्घुरक
ghurghuraka
घुर्घुरकं कण्ठे घुर्घुरशब्दम्। (मा.नि. 12/28), घुर्घुरकः अव्यक्तः शब्दविशेषः। (ड.-सु.क. 4/37), कण्ठ से घुर्घुर शब्द निकलना, अस्पष्ट/अव्यक्त उच्चारण, dysphonia

घृत
ghṛta
सर्वस्नेहोत्तमं शीतं मधुरं रसपाकयोः। सहस्रवीर्यं विधिभिर्घृतं कर्मसहस्रकृत्।। (च.सू. 27/232), घी, सभी स्नेहों में उत्तम, महास्नेहों में से एक, ghee

घृतपूर
ghṛtapūra
घृतपूरा घृतपूपा इत्यर्थः। (ड.-सु.उ. 42/102), पूड़ी, poori

घोणा
ghoṇā
नासा इव घोणा। (ड.-सु.चि. 18/26), नासा, nose

घोण्टा
ghoṇṭā
घोण्टा बदरिका, छोटी गोलिका, शत्रुकण्टकः। स्थूलैरण्डो गुणाढ्यः स्याद्रसवीर्यविपक्तिषु। बेर का एक पर्याय, a synonym of *Zizyphus jujuba*

घोर
ghora
त्वग्रक्तमांसमेदांसि प्रदूष्यास्थिसमाश्रिताः। दोषाः शोफं शनैर्घोरं जनयन्त्युच्छ्रिता भृशम्।। (सु.नि. 8/4), भयंकर, दारुण, विद्रधि के संदर्भ में, severe

घोल
ghola
यत्तु सस्नेहमजलं मथितं घोलमुच्यते। (सु.सू. 45/85), जलरहित मथा हुआ स्नेहयुक्त दही, waterless churned curd

घोष
ghoṣa
1. घोषा वर्ग चतुर्था 'घझढधभाः'। (चक्र.-च.शा. 8/50), 'घ' आदि व्यञ्जनों का

चतुर्थ वर्ग (उच्चारणार्थ), group of 4th word of consonents 2. कांस्यं सौराष्ट्रिकं घोषं कंसीयं वह्निलोहकम्। दीप्तं लोहं घोरपुष्पं दीप्तकं सुमनाङ्ख्यम्।। (रा.नि. 15/32), कांसे का एक पर्याय, a synonym of bell metal

घोषाकृष्टताम्र
ghoṣākṛṣṭatāmra
स्वल्पतालयुतं कांस्यं वंकनालेन ताडितं मुक्तरंग हि तत्ताम्रं घोषाकृष्टमुदाहृतम्। (र.र.स. 8/40), कांस्य से निकाला गया ताम्र, कांस्य के छोटे-छोटे टुकड़े कर मूषा में रखें और सत्वपातन कोष्ठी में रखकर वंकनाल द्वारा धमन करने से वंग पिघल कर जल बनकर उड़ जायगा और वंग से रहित ताम्र शेष रह जायेगा, इसे घोषाकृष्ट ताम्र कहते हैं, extracted copper from bronze, bell metal mixed with a little quantity of orpiment and heated strongly through vankanala yantra when becomes free from tin metal, remaining copper is known as ghoshakrsta tamra

घ्राण
ghrāṇa
घ्राणं नासा। (हे.-अ.हृ.सू. 12/3), जिघ्रत्यनेनेति घ्राणम्। (चक्र.-च.सू. 8/18), नासा, नासिका, जिस इन्द्रिय के द्वारा गंध का ज्ञान होता है वह घ्राण है, smell perception, olfactory perception, nose

घ्राणनाश
ghrāṇanāśa
क्रिमिव्याधावपस्मारे घ्राणनाशे प्रमोहके। (च.सू. 2/6), वात नानात्मज विकार। (च.सू. 20/11), सूंघने की शक्ति का नष्ट होना, anosmia

घ्राणपाक
ghrāṇapāka
सदाहरागः श्वयथुः सपाकः स्याद् घ्राणपाकोऽपि च रक्तपित्तम्।। (च.चि. 26/115-1), प्रकुपित्त रक्त एवं पित्त नासा में दाह, रक्तवर्णता एवं शोथ सहित पाक को उत्पन्न करते हैं, suppuration of nasal vestibule by vitiated rakta and pitta

घ्राणस्रव
ghrāṇasrava
अतिस्निग्धे तु पाण्डुत्वं घ्राणवक्त्रगुदस्रवा। (अ.हृ.सू. 16/31), नासा से स्राव होना (अतिस्निग्ध का एक लक्षण), nasal discharge

घ्राता
ghrātā
स्पृष्टा घ्राता द्रष्टा श्रोता एतयिता पुरुषः। (सु.शा. 3/4), गंध का ज्ञाता, पुरुष के संदर्भ में, one who is able to perceive the sense of smell

घ्रेय
ghreya
नव योगाः कषायेषु मात्रा स्वष्टौ पयोघृते। पञ्चफाणित चूर्णे द्वौ घ्रेये वर्ति क्रियासु षट्। (च.क. 1/28), घ्राण क्रियार्हम्। गंध लेने योग्य, for inhalation

चकोर
cakora
विष्किर पक्षी। (च.सू. 27/47), रक्ताक्ष पक्षी विशेष, विष्किर वर्ग प्राणी, पपीहा, Greek partridge

चक्र
cakra
पानीयोद्धरणार्थं नियुक्तं बाह्यमानं यन्त्रम्। (चक्र.-च.चि. 15/21), चाक या पहिया, wheel

चक्रतैल
cakrataila
चक्रपीडित तिलतैलम्। (ड.-सु.सू. 44/47), सद्यः पीडितो उद्धृतमेके, अन्ये पुनरणुतैलकल्पेन गृहीतमपक्वं तैलम्।। (ड.-सु.चि. 3/12), चक्रयन्त्र से निर्मित तिल तैल, सद्यः पीडित तिलतैल, अणुतैल कल्प निर्मित अपक्वतैल, an oil of gingelly

चक्रयोग
cakrayoga
वर्तुलकुशादानपूर्वकं चक्रवद्बन्धनम् (ड.-सु.चि. 3/27), ऊर्वस्थिसंधि मुक्त में प्रयुक्त बन्ध, fixation procedure

चक्रलक्षणा
cakralakṣaṇā
गुडूची पर्याय। (ध.नि. 1/2), गुडूची, fam-menispermaceae, *lat-Tinospora cordifolia*

चक्राङ्गी
cakrāṅgī
कटुका पर्याय। (ध.नि. 1/38), हिं.-कुटकी, *lat-Picrorhiza kurroa,* fam-scrophulariaceae

चक्षु
cakṣu
चष्टे रूपं रूपवन्तं च प्रकाशयतीति चक्षुः। (चक्र.-च.सू. 8/8), जो रूप और रूपवान का ज्ञान कराता है, वह चक्षु है, vision perception

चक्षुरोधन
cakṣurodhana
अक्षिस्तम्भः। (अरु.-अ.हृ.सू. 7/23), नेत्रयोक्रियाप्रतिबन्धः। (हे.-अ.हृ.सू. 7/23), नेत्रों की क्रिया का प्रतिबन्ध होना, नेत्रस्तम्भ, ophthalmoplegia

चक्षुर्बुद्धि
cakṣurbuddhi
चक्षुषा असाधारणेन कारणेन जनिता बुद्धिश्चक्षुर्बुद्धिः। (चक्र.-च.क. 8/12), चक्षु इंद्रिय द्वारा दर्शन ज्ञान, which provides knowledge of the perceived object by vision sense

चक्षुष्य
cakṣuṣya
चक्षुषे हितम्। (च.सू. 27/300), नेत्रों के लिए हितकर, beneficial to eyes

चङ्क्रमण
caṅkramaṇa
कुटिलगत्या परिभ्रमणम्। (ड.-सु.चि. 24/80) परिभ्रमणम्। (ड.-सु.चि. 39/34), इधर-उधर घूमना फिरना, सर्वतोगमन, walking

चटक
caṭaka
देवकुलचटकः स्वल्पप्रमाणः। (चक्र.-च.सू. 27/52), प्रतुदपक्षी विशेष, आहार को चोंच से भक्षण करने वाला पक्षी, a sparrow, a hen sparrow

चटचटायन
caṭacaṭāyana
वेदनाविशेषाः। (ड.-सु.चि. 1/7), वातिकव्रण में होने वाली वेदना विशेष, a type of pain

चणक
caṇaka
शमीधान्य विशेष। (च.सू. 27/28), गुण- कफास्रपित्तपुंस्त्वहनाश्चणका वातला हिमाः। (ध.नि. 6/89), शमीधान्य, चना गुण- कफ, रक्त, पित्त, पुंसत्वनाशक, वायुकारक एवं वीर्य में शीत होता है, eng-gram *lat- Cicer arietinum,* fam-leguminosae

चणकाम्ल
caṇakāmla
चणकशाकोद्भवो द्रवः। (र.र.स. 10/77), चणक शाक से निर्मित द्रव, चणक से निर्मित अम्लीयद्रव, अम्लवर्ग द्रव्यों में सबसे श्रेष्ठ, gram sedimented water, best in acid group drugs

चण्ड
caṇḍa
शीघ्रकोपः। (सु.शा. 4/38), आसुर सत्त्व लक्षण, शीघ्र क्रोध का आना, violent in nature, a symptom of asura nature

चतुःश्रेय
catuḥśreya
चतुश्रेयःकारकं चिकित्सितम्। (चक्र.-च.नि. 8/37), देह, अग्नि, बल एवं चेतस सम्बन्धित श्रेय विषय चतुःश्रेय हैं, यह चिकित्सा से सम्बन्धित है, four great important things

चतुःसुधारस
catuḥsudhārasa
उत्तम एवं शुद्धसुवर्ण, स्वर्णमाक्षिक, रौप्य एवं ताम्र युक्त रसयोग, बुभुक्षा जनयेद् ध्रुवम् अर्थात् यह एक बार सेवन से तीन बार क्षुधा उत्पन्न करता है। (र.र.स. 21/99-110), an ayurvedic metalic preparation of gold, silver, copper and copper pyrite

चतुरङ्गुल
caturaṅgula
आरग्वधः। (ध.नि. 1/219), अमलतास का पर्याय, हिं.-अमलतास, *lat- Cassia fistula,* fam- leguminosae

चतुरम्ल
caturamla
कोलदाडिमवृक्षाम्लैरम्लवेतससंयुतैः चतुरम्लम्। (भै.र. 2/32), बेर, अनार, इमली एवं अम्लवेतस, इन चार अम्ल द्रव्यों को समभाग में ग्रहण करने से चतुरम्ल कहा जाता है, four sour drugs e.g. *Zizyphus jujuba, Punica granatum,* tamarind and amlavetasa collectively known as chaturmla

चतुरस्र
caturasra
चतुष्कोणः। (ड.-सु.सू. 22/9), चार कोनों की आकृति, चौकोनी आकृति, quadrangle

चतुर्थक
caturthaka
चतुर्थेदिने भवति इति। विषमज्वर का एक भेद, प्रति चौथे दिवस आने वाला ज्वर, quartian fever

चतुर्थकज्वर
caturthakajvara
चतुर्थेऽह्नि एककालम्, चतुर्थको दर्शयति प्रभावम्। (च.चि. 3/72), प्रति चतुर्थ दिवस आने वाला ज्वर, quartian fever

चतुर्थकविपर्यय
caturthakaviparyaya
अस्थिमज्जोभयगते चतुर्थकविपर्ययैः त्र्यहाद् द्वयहं ज्वरयति ह्यादावन्ते च मुञ्चति। (चक्र.-च.चि. 3/73), विषमज्वर एवान्यश्चतुर्थकविपर्ययः, त्रिविधो धातुरेकैको द्विधातुस्थः करोति यम्। (च.चि. 3/73), विषमज्वर भेद, इसमें वात, पित्त, कफ दो धातुओं (अस्थि एवं मज्जा) में स्थित होकर इसको उत्पन्न करते हैं, तीन या दो दिन ज्वर आकर अन्त में शमन होता है, a variant of malarial fever

चतुर्थिका
caturthikā
मान का एक भेद, पल के बराबर। (च.क. 12/92), चार तोला, a measurement equivalent of pala

चतुर्विधमग्निदग्ध
caturvidhamagnidagdha
तत्रप्लुष्टं दुर्दग्धं सम्यक्दग्धमतिदग्धं चेति चतुर्विधमग्निदग्धम्। (ड.-सु.सू. 12/16), अग्निदग्ध के चार प्रकार है- प्लुष्ट, दुर्दग्ध, सम्यक्दग्ध और अतिदग्ध, there are four types of accidental burns - burn with irritation i.e. first degree burn, burn with inflamation, burn where the wound is not deep, burn wherein the burnt muscles become functionless

चतुष्पत्री
catuṣpatrī
पाषाणभेदः। (रा.नि. 5/215), हिं.-पथरचूर, *lat- Saxifraga legulata,* fam- saxifragaceae

चतुष्पथ
catuṣpatha
मार्गचतुष्टयसंगमः। (ड.-सु.चि. 24/89) चार मार्गों का संयोगस्थान, चौक, चौराहा, cross way

चतुष्पददंश
catuṣpadadaṃśa
मुहुर्मुहुः शिरोन्यासः शोथः सस्तौष्ठकर्णता, ज्वरः स्तब्धाक्षिगात्रत्वं हनुकम्पोऽङ्गमर्दनम्, चतुष्पदां भवत्येतददष्टानामिह लक्षणम्। (च.चि. 23/230), चतुष्पद (गाय भैंस आदि) पशुओं को सर्पादि विषैले प्राणी के काटने से यह शिर को बार-बार भूमि पर रखते हैं, शरीर में शोथ, ओष्ठ एवं कर्ण का लटकना, ज्वर, गात्र एवं नेत्र में स्तब्धता, हनुकम्प, अंगमर्द, रोम का नाश, ग्लानि, बैचेनी, कम्पन एवं भ्रम आदि लक्षण होते हैं, syndrome of poisonous bite in quadrupeds

चतुष्पदाभिगमन
catuṣpadābhigamana
चतुष्पाद (गाय, बकरी आदि) पशुओं के साथ मैथुन करना, sexual intercourse with quadrupeds, bestality

चतुष्प्रयोग
catuṣprayoga
पान, नस्य, अभ्यङ्ग एवं अनुवासन का क्रमशः प्रयोग, use of drink, snuff, massage and unction enema

चत्वर
catvara
चतुष्पथः। चौराहा, चौक, crossway

चन्दन
candana
सुगन्धिद्रव्यम्। (च.सू. 4/10) चन्दन, eng. sandal wood

चन्दनगोपा
candanagopā
सारिवाविशेष। (ध.नि. 1/163), कृष्णमूली सारिवा, *lat.- Cryptolepis buchanani*

चन्दनपुष्प
candanapuṣpa
लवंग। (ध.नि. 3/39), हिं.-लौंग, *lat - Syzygium aromaticum,* fam- myrtaceae

चन्दनसारिवा candanaśārivā
कृष्णसारिवा। (रा.नि. चन्दनादि 118), काली अनन्तमूल को चन्दनसारिवा कहते हैं, black species of Indian sarsaparilla

चन्दनाञ्जन candanāñjana
षड्विध तिमिररोगहराणां अञ्जनमिदम्। छः प्रकार के तिमिरों को नष्ट करने वाला अंजन, a collyrium to relieve six types of refractive errors

चन्दनाद्यतैल candanādyataila
एतत्तैलमभ्यङ्गात् सद्योदाहज्वरमपनयति। (च.चि. 3/258), चन्दन आदि द्रव्यों के संयोग से निर्मित तैलयोग, यह दाहज्वर शामक है, a preparation of oil with santalum etc. is useful to relieve buring sensation in fever

चन्दनोदुम्बर अञ्जन candanodumbara añjana
चन्दनोदुम्बरं भृशतरं चूर्णितं वस्त्रबद्धं तोयप्लुतमाश्च्योतनाञ्जनम्। (ड.-सु.उ. 10/10), चन्दन एवं उदुम्बर को वस्त्रगलित चूर्ण करने के पश्चात् उसको पानी में भिगोकर आश्च्योतन के रूप में प्रयोग किया जाना चाहिये, a type of collyrium

चन्द्र candra
1. सोमः। (अ.हृ.सू. 18/16), देवता, चन्द्रमा, moon 2. कर्पूर पर्यायः। (ध.नि. 3/29), कपूर का अन्य नाम, चन्द्रमा के समान श्वेत एवं शीत होने से, camphor, *lat- Cinnamomum camphora* fam- lauraceae

चन्द्रक candraka
1. अश्मन्तकः। (ध.नि. 1/194), हिं.- कचनार, *Bauhinia variegate*, fam- leguminosae 2. श्वेतमरिच। (रा.नि. पिप्पल्यादि 33), गोल मरिच, decorticated Piper nigrum

चन्द्रकान्त candrakānta
मणिः। (ड.-सु.सू. 45/27), चन्द्रकान्तोद्भूत वारिः- इदं तु चन्द्रकिरणानुप्रवेशान्नाभसं, मणि प्रादुर्भूतत्वाद् भौमं इति उभयात्मकम्। (ड.-सु.सू. 45/27), आकाश से चन्द्रकिरणों के प्रवेश, मणि से उत्पन्न जल, गुण- रक्षोघ्नं शीतलं ह्लादि ज्वरदाहविषापहम्, ... पित्तघ्नं विमलं स्मृतम्। (सु.सू. 45/27), यह रक्षोघ्न, शीत, मन प्रसादकर, ज्वर, दाह, विषहर, पित्तघ्न एवं विमल होता है, water treated with moon light rays refracted through chandra kanta, water coming out of chandrakanta

चन्द्रकी candrakī
चन्द्रकी दृष्टिः कांस्यतुल्यच्छाया चन्द्रकाकारा स्यात्। (अरु.-अ.हृ.उ. 14/7), यह लिंगनाश उपद्रव है, इसमें नेत्र की छाया कांस्य के वर्ण की हो जाती है, दृष्टि चन्द्रक संस्थान तुल्य होती है, a complication of long standing cataract

चन्द्रगन्धा candragandhā
शटीः। (ध.नि. 1/61), चन्द्र, कपूर का पर्याय है, इसमें से कपूर की गन्ध निकलने के कारण इसको चन्द्रगन्धा कहते हैं, हि.-कपूरकचरी, *lat- Hedychium spicatum*, fam- scitaminaceae

चन्द्रदल candradala
मृतेन वा बद्धरसेन वाऽन्यल्लोहेन वा साधितमन्यलोहम्। सितं उपागतं तद्दलं हि चन्द्र प्रसिद्धम्। (र.र.स. 8/17), पारदभस्म, बद्धपारद अथवा अन्य किसी धातु की सहायता से किसी धातु को श्वेतवर्ण का बना दिया जाये तो उसे चन्द्रदल कहते हैं, converting colour of a metal to white

चन्द्रपुष्पा candrapuṣpā
श्वेतकण्टकारी पर्यायमिदम्। (रा.नि. शताह्वादि 35), श्वेतकण्टकारी पर्याय, इसे लक्ष्मणा भी कहते हैं, इसकी गणना दिव्यौषधियों में भी होती है, इसके सहयोग से पारद बन्धन होता है, हिं.- सफेद भटकटैया, eng.- white *Solanum xantho carpum*

चन्द्रप्रभा candraprabhā
1. बोलं जातिफलं मधूकयुगलं सारं तथा खदिरं जयेच्चन्द्रप्रभा नाम तीव्रान्मेहादिकान् गदान्। (र.र.स. 17/41-42), यह प्रमेह हर योग है, an ayurvedic preparation for urinary disorders 2. आतप्ततण्डुलो धौतो परिभृष्टो घृतेन च। खण्डयुक्तेन दुग्धेन पाचित पायसो भवेत्। भृष्टजीरक चतुर्जात चन्द्रबिन्दु सुरोचनः।। (वै.श.सि.को.), पायसविशेष, चावलों को उष्णकर धोकर एवं घृत में भूनकर खण्डयुक्त दुग्ध के साथ पाचित कर बनी पायस, खीर, a gruel 3. बाकुची पर्याय। (रा.नि. शताह्वादि 64), हिं.- बावची, eng- Esculanta lacuatia, *lat- Psoralia corylifolia* 4. कर्पूर पर्याय (वै.नि.)

चन्द्रबाला candrabālā
सूक्ष्मैला पर्याय। (ध.नि. 2/44), हि.-छोटी इलाचयी, *lat - Elettaria cardamomum* fam- zingiberaceae

चन्द्रलेखा candralekhā
बाकुची पर्याय। (ध.नि. 1/166), हिं.- बावची, *lat.- Psoralia corylifolia*, fam- leguminosae

चन्द्रवल्ली candravallī
1. प्रसारिणीः। (रा.नि. पर्पटादिवर्ग 37), हि.- परसन, गन्धप्रसारिणी, *lat.- Paederia foetida* 2. सोमवल्ली। (रा.नि. गुडूच्यादि 98), सोमलता, eng.- moon plant

चन्द्रशूर candraśūra
चन्द्र इव शूरः। पर्याय- चन्द्रिका, चर्महन्त्री, पशुमेहनकारिका, नन्दिनी, कारवी, भद्रा, वासपुष्पा, सुवासरा। (भा.प्र. हरीतक्यादि 96), हिं. चनसुर, हालों, eng.- common cress, *lat- Lepidium sativum*, fam- cruciferae

चन्द्रांशुकल्प candrāṃśukalpa
अत्यर्थ शुभ्रम्, अत्यर्थ शुभ्रत्वेऽपि चन्द्रांशुतः ऊनं धावल्य बोधव्यम्। अतिशय श्वेत, excessively white

चन्द्रा candrā
कर्कटश्रृङ्गी। (रा.नि. पिप्पल्यादि 155), हिं.-काकडासिंगी, *lat- Pistacia integerima*

चन्द्राणी candrāṇī
शटी। (ध.नि. 1/61), हिं.-कपूरकचरी, *lat- Hedychium spicatum,* fam- Scitaminaceae

चन्द्राब्ज candrābja
धवल उत्पल, कुमुद। (रा.नि. करवीरादि 196), कुमुदपुष्प, हिं.-कोई, *lat: Nymphae alsa*

चन्द्राभिधा candrābhidha
बाकुचीः। (रा.नि. शताह्वादि, 64), हिं.-बावची, *lat- Psoralia corylifolia*

चन्द्रार्क candrārka
भागाः षोडश तारस्य तथा द्वादश भास्वतः। एकत्रवर्त्तितास्तेन चन्द्रार्कमिति कथ्यते।। (र.र.स. 8/24), सोलह भाग चांदी एवं 12 भाग ताम्र को एक मूषा में रखकर हठाग्नि में धमन करने पर पिघलने के पश्चात् जो मिश्रधातु बनती है, उसे चन्द्रार्क कहते हैं, an alloy metal prepared by heating 16 part of silver and 12 parts of copper in a crucible

चन्द्रार्ध candrārdha
मध्यवक्रनाड्यनुलोममच्छेदस्यार्धचन्द्रतुल्यत्वाद्। (ड.-सु.चि. 8/27), अर्धचन्द्राकृति छेदन, कफज भगन्दर में प्रयुक्त छेदन, an incision in the shape of half moon

चन्द्रालोक candrāloka
कर्पूरः। (रा.नि. चन्दनादिवर्ग 61), हिं.-कपूर, eng- camphor, *lat- Cinnamomum camphora*

चन्द्रावती candrāvatī
बाकुची। (र.र.स. 11/94), हिं.-बावची, *lat- Psoralia corylifolia*

चन्द्रावलेह candrāvaleha
पित्तोन्मादविकारेषु शिरोभ्रमणमूर्च्छिते, ...चन्द्रवच्च चन्द्रभाषितम्।। (र.र.स. 21/171-175), पित्तज उन्माद, भ्रम, छर्दि, कास, क्षय, पाण्डुरोग नाशक एक औषध योग, an ayurvedic preparation used in pittaja unmada

चपल capala
वङ्गवद् द्रवते वह्नौ चपलस्तेन कीर्तितः। (र.र.स. 2/136), अग्नि में वंग के समान पिघलने वाली धातु चपल है, a metal of white colour and low melting point, melting like tin

चर्मकील carmakīla
कीलवत् शंकुतुल्यानित्यर्थः। (ड.-सु.नि. 2/18), अर्श का प्रकार, external pile mass (nail shaped piles)

चर्मदल carmadala
स्पुर्येन कण्डूव्यथनौषचोषास्तलेषु तच्चर्मदलं वदन्ति। (सु.नि. 5/10), क्षुद्रकुष्ठ का एक प्रकार जिसमें हाथ और पैरों के तल में कण्डू, ऊष्मा और आचूषणवत् पीड़ा होती है, a type of skin disorder characterized by itching, burning sensation etc

19—4 Min. of HRD/2016

चर्मपुटक carmapuṭaka
वस्तिः मूत्र पुटकं, प्रसेवकः चर्मखल्लपुटः। (ड.-सु.सू. 9/4), चर्मखल्लपुट, चर्म का थैला, leather bag

चर्माख्य carmākhya
बहलं हस्तिचर्मवत्। (च.चि. 7/21), क्षुद्रकुष्ठ, त्वचा का हाथी के चर्म के समान मोटा हो जाना, xeroderma

चर्मावदरण carmāvadaraṇa
चर्मावदरणं तु षण्णामपि त्वचां दरणम्। (चक्र.-च.सू. 20/14), त्वचा की सभी छः परतों का फटना चर्मावदरण कहलाता है, deep skin tear

चर्या caryā
चर्या चरणं वर्तनं आहारो विहारश्च चर्या शब्देनोच्यते, चर्या शास्त्रनियमित आचारः। (ड.-सु.सू. 6/1), शास्त्र के नियम के अनुसार आचरण, जिसमें कि आहार एवं विहार दोनों का समावेश होता है, way of life described by texts, which include both diet and life style

चल cala
चलमिति किञ्चिद्नतिमत्। (चक्र.-च.सू. 22/11), कुछ गतिशील या अल्प रूप में हिलने वाले, चल कहे जाते हैं, mobile

चलतकुण्डलिनी calatakuṇḍalinī
चलतकुण्डलिनी श्यामा रेवती ते प्रसीदतु। उपासते यां देव्यो विविधभूषणाः।। (सु.उ. 31/10-11), हिलते हुए कुंडल वाली, रेवती ग्रह का एक नाम, having moving earings, a name of revati graha

चषक caṣaka
शराव, प्याला, वाटिकी, मद्यपात्र, vessel

चाटालत्व cāṭālatva
विस्तृततत्वम्। (चक्र.-च.शा. 4/16), फैला हुआ, extended

चामीकर cāmīkara
चामीकर वचा ब्राह्मीतौताप्यथ्या रजीकृताः। लिह्यान्मधुघृतोपेता हेमधात्रीरजोऽथवा। (अ.हृ.उ. 1/9), स्वर्ण का एक पर्याय। (रा.नि.व. 13/9), a synonym of gold

चारण cāraṇa
रसस्य जाठरे ग्रासक्षपणं चारणं मता। (र.र.स. 8/80), खाने की प्रक्रिया, ग्रास, ग्रहण करने की प्रक्रिया, engulfing process

चारणा cāraṇā
रसस्य वदने ग्रासक्षेपणं चारणा मता। (रसे.चूड़ा.- 4/98), पारद के मुख में ग्रास डालने की क्रिया, पारद में ग्रास का उदरस्थ होना, पारद द्वारा ग्राह्य ग्रास तीन रूपों में होता है- सम्मुख, निर्मुख, वासनामुख। सम्मुखचारणा- मुख बनाकर ग्रास देना, निर्मुखचारणा- बिना मुख बनाये ग्रास देना, वासनामुख चारणा- पाचनद्रव्यों द्वारा पारद को उपचारित कर ग्रास देना, process of engulfing by mercury

चालन cālana
स्थानात् स्थानान्तरनयनम्, अन्ये शल्यकम्पनमाहुः। (ड.-सु.सू. 7/17), एक स्थान से दूसरे स्थान में ले जाना, शल्य कम्पन करना, displacement, vibrating foreign body

चाष cāṣa

इन्द्रनीलमणिसदृशपक्षः शस्तदर्शनः। (ड.-सु.सू. 46/74), इन्द्रनील के सदृश पंख, शस्तदर्शन युक्त, नीलकण्ठ पक्षी, blue jay

चिकित्साप्राभृतीय cikitsāprābhṛtīya

चिकित्सा प्रभृतरूपा सदा यत्नेन आतुरोपढौकनीयत्वेन च यस्य विद्यते स चिकित्सा प्राभृतीय। (चक्र.-च.सू. 16/1), यत्नपूर्वक चिकित्सा करने वाला तथा जिसमें रोगी की रक्षा करने की विशेष क्षमता हो, वह चिकित्सा प्राभृतीय है, fully equipped physician

चिक्कण cikkaṇa

स्निग्धस्त्यानम्। (ड.-सु.चि. 31/11), चिकना, पिच्छिल, slimy

चिक्कस cikkasa

ईषत् भृष्टानां यवानां चूर्ण चिक्कसम्। (इंदु.-अ.सं.उ. 1/49), भुने हुए यव का चूर्ण, roasted barly powder

चित्त citta

चित्यते संज्ञायतेऽनेन इति चित्तम्। मनः। (हे.-अ.हृ.सू. 12/4), मन, mind

चित्र citra

नानाप्रकारम्। (ड.-सु.उ. 62/13), अनेक प्रकार का, of various types

चिनोति cinoti

चिनोति कर्म, कर्मफलानि च शरीरारोग्यविकारादीनि भुङ्क्त इति योजना। (चक्र.-च.सू. 5/9), चिनोति से कर्म अर्थ लिया जाता है, कर्मफल से शरीर का आरोग्य एवं विकार युक्त होना दोनों का ग्रहण किया गया है, अर्थात् आत्मा ही कर्मों को करती है एवं उसके फलों का उपभोग करती है, result oriented action

चिन्तक cintaka

चिन्तका इति चिन्ताबहुलाः। (चक्र.-च.सू. 13/52), सोचने का काम अधिक करने वाले, constant thinker

चिन्त्य cintya

इन्द्रियनिरपेक्षं मनो यद्गृह्णाति तच्चिन्त्यम्। (चक्र.-च.सू. 8/16), इन्द्रिय की सहायता के बिना मन जिस विषय का ग्रहण करता है, उसे चिन्त्य कहते हैं, the object which mana perceives directly without the help of indriya is chintya

चिप्प cippa

नखमांसमधिष्ठाय पित्तं वातश्च वेदनां करोति दाहपाकौ। (सु.नि. 13/21), तन्त्रान्तरे अङ्गुलीवेष्टकम्। (ड.-सु.नि. 13/21), अक्षतरोगाख्यं उपनखमिति (सु.नि. 13/22), क्षुद्ररोग, नख मांस में दाह एवं पाक, whitlow

चिर cira

प्रभूतकालम्। (ड.-सु.सू. 17/9), दीर्घकाल, chronic

चिरकाल cirakāla

देखें चिर, सन्धान होने तक की समयावधि, sufficient time needed for completion of fermentation

चिलिचिम cilicima

शकली, लोहिताक्षः, सर्वतो लोहितराजिः प्रायो भूमौ चरति। (ड.-सु.सू. 20/8), अहिततम मत्स्य, रक्तनेत्र एवं रक्त रेखाओं से युक्त भूमि के ऊपर चलने वाली शकलीमत्स्य, a fish

चीन cina

चीनाभिर्बहुभिर्वृत्तम्। (ड.-सु.सू.18/17), बन्ध विशेष, नेत्र प्रदेश में प्रयुक्त बन्ध, a type of bandage

चुक्र cukra

विनष्टमम्लतां यातं मद्यं वा मधुरद्रवम्। विनष्टः सन्धितो यस्तु तत् चुक्रमभिधीयते।। (शा.सं.म. 10/9), जो मद्य या मधुर द्रव विनष्ट होकर अम्लता को प्राप्त हो जाता है, उसके संधान से निर्मित अम्ल पदार्थ को चुक्र कहते हैं, fermented liquid obtained from alcohol or sweet drug which becomes sour

चुण्टी cuṇṭī

अबद्धकूपः। (ड.-सु.सू. 45/4), बिना बंधा हुआ कुंआ, simple well

चुमचुमायन cumacumāyana

राजिसर्षपकल्कावलिप्तानामिवाङ्गानां वेदना। (ड.-सु.नि. 1/25), वेदनाविशेष, अंगों के ऊपर सरसों के लेप के समान वेदना, a type of pain

चुल्लिका cullikā

पतंगी कल्कतो जाता लोहे तारे च हेमता। दिनानि कतिचित्स्थित्वा यात्यसौ चुल्लुका मता।। (र.र.स. 8/52), पतंगी औषध के कल्क के संसर्ग से लोह तथा तार में हेमता (स्वर्णप्रभा) आ जाती है और कुछ दिन पश्चात् नष्ट हो जाती है, उसे चुल्लिका कहते हैं, temporary golden colour change of iron and silver

चूर्ण cūrṇa

अत्यन्त शुष्कं यद्द्रव्यं सुपिष्टं वस्त्रगालितम्। तत्स्याच्चूर्णं रजः क्षोदस्तन्मात्र कर्षसंमिता।। (शा.सं.म. 6/1), उचित प्रकार से शुष्क औषधि को पीस कर कपडे से छानकर बनायी कल्पना चूर्ण है, इसके पर्याय रज एवं क्षोद है, इसकी सेवन मात्र एक कर्ष होती है, a dried drug adequately powdered and filtered through fine cloth

चूर्णद्रव cūrṇadrava

क्षुण्णे द्रव्यपले सम्यग्जलमुष्णं विनिक्षिपेत्। मृत्पात्रे कुडवोन्मानं ततस्तु स्रावयेत्पटात् तस्याच्चूर्णद्रवः।। (शा.सं.म. 3/2), एक पल भली प्रकार से कूटी हुई औषधि को एक कुडव उष्णजल में डालकर कुछ समय पश्चात् इसको छानकर बना विलयन चूर्णद्रव कहलाता है, a solution made after filtering the one pala drug infused in one kudava of hot water

चूर्णप्रदेह cūrṇapradeha

चूर्णानि च प्रदेहाश्च चूर्णप्रदेहाः; यदि वा चूर्णीकृतानां प्रदेहाश्चूर्णप्रदेहाः; प्रदेहो लेपः। (चक्र.-च.सू. 3/15), बाह्य लेप के लिए प्रयुक्त चूर्ण को चूर्णप्रदेह कहते हैं, प्रदेह का अर्थ है लेपन, the powder used for external application

चूष्यत cūṣyata
चूष्यते आकृष्यत इव। (ड.-सु.नि. 3/9), चूसने जैसी पीड़ा होना, पित्ताश्मरी लक्षण, sucking pain

चेतनद्रव्य cetanadravya
सेन्द्रियं चेतनं द्रव्यम्। (च.सू. 1/48), चेतन द्रव्य उसे कहते हैं, जिसमें चेतना की अभिव्यक्ति है, a substance expressing living characteristics

चेतनानुवृत्ति cetanānuvṛtti
चेतनानुवृत्ति चैतन्यसन्तानः, एतेच्च गर्भावधिमरणपर्यन्तं बोद्धव्यं तदूर्ध्वं चेतनानुवृत्तेः, साक्षादनुपलब्धत्वेनैवाननुवृत्तिरिति भावः। (चक्र.-च.सू. 30/22), चेतनता का लगातार बने रहना चेतनानुवृत्ति कहलाता है, गर्भ से प्रारम्भ करके मरण पर्यन्त यदि चेतनता की साक्षात उपलब्धि नहीं होती तो आयु का अभाव हो जाता है, चेतना साक्षात अनुपलब्ध होने से ही उसे 'अननुवृत्ति' कहा गया है, the flow of consciousness

चेष्टा ceṣṭā
चेष्टा कायपरिस्पन्दः। (ड.-सु.सू. 2/3), शरीर की गति, प्रयत्न, body movement, effort

चैत्य caitya
1.चैत्यो ग्रामप्रधानतरु। (चक्र.-च.सू. 8/19), गांव का प्रधान वृक्ष चैत्य है, main tree of the village 2. श्मशान वृक्षः। (ड.-सु.सू. 29/29/35), श्मशान का वृक्ष, cremation ground tree

चोक्ष cokṣa
निर्मलम्। (इन्दु.-अ.सं.उ. 4), स्वच्छ, clean

चोष coṣa
आकृष्यमाणस्येव दाहप्रकारः। (ड.-सु.चि. 37/67), चूसने के समान वेदना, type of pain (burning sensation)

चौण्ट्य cauṇṭya
चुण्टीभवम्। (सु.सू. 45/8), चुण्टीजल, well water

च्युत cyuta
स्खलितं स्थानादगतम्। (ड.-सु.शा. 3/4), गिरना, स्वस्थान से गिरना, falling

छगण chagaṇa
पिष्टकं छगणं छाणमुपलं चोत्पलं तथा। गिरिण्डोपलसाठी च संशुष्कच्छगणभिधाः। (र.र.स. 7/17), पिष्टक, छगण, छाण, उपल, उत्पल, गिरिण्डोपल तथा साठी ये सात नाम सूखे गोबर के हैं, cowdung cake, one of the seven synonyms of dried cow dung

छगल chagala
बस्तश्छगलः। (ड.-सु.सू. 46/85), बकरा, male goat

छगलाम्बु chagalāmbu
छागमूत्रम्। (ड.-सु.उ. 52/22), अजामूत्र, बकरी का मूत्र, urine of goat

छत्र chatra
आतपत्रम्। (इन्दु.- अ.सं.उ. 42), छाता, umbrella

छत्रधारण chatradhāraṇa
वर्ण्यं नेत्रहितं छत्रं वातवर्षातपापहम्। (अ.सं.सू. 12/49), छाता, वर्ण एवं नेत्रों के लिए हितकर तथा वायु, वर्षा एवं धूप से रक्षा करता है, umbrella, it is beneficial for complexion and eyes and also protects from winds, rain and sun

छद chada
वृक्षस्य पत्रम्। (ड.-सु.नि. 16/37), पत्र, पत्ता, leaf

छद्मचरभिषक् chadmacarabhiṣak
भिषक् छद्मचरो वंचनर्थकृतभिषग्वेशः। (चक्र.-च.सू. 29/8), जो लोगों को धोखा देने के लिए भिषक् का वेश बनाते है, छद्मचर भिषक् कहलाते हैं, या जो लोगों को वंचित करने (ठगने) के लिए वैद्य का वेश बनाया रहते है, छद्मचर भिषक् कहलाते हैं, quack

छद्मोपसिद्ध chadmopasiddha
तस्माच्छद्मोपसिद्धानि मांसान्येतानि दापयेत्। (सु.चि. 8/57), छिपाकर पकाया गया मांस खिलाना जिससे रोगी को घृणा न हो, administration of non-vegetarian preparation without the knowledge of the patient

छन्दानुवर्तिन् chandānuvartin
छन्दानुवर्तिनः चित्तानुगुणकारिणः। (अरु.-अ.ह्.सू. 13/7), मन के अनुसार कार्य करने वाला अथवा परिस्थितियों के अनुसार कार्य करने वाला, working according to need, conducive

छर्दि chardi
छद् अपहरणे, छद् आच्छादने छर्दिरिति दोषो वक्त्र प्रधावति विनिश्चरन्। (सु.उ. 49), एक रोग जिसमें मुख द्वारा दोषों का निर्गमन होता है, वमन, वमन कर्म, vomiting, emesis

छर्दिनिग्रहण chardinigrahaṇa
छर्दिनिग्रहणस्तृष्णानिग्रहजो हिक्कानिग्रहण इति त्रिकः कषायवर्गः। (च.सू. 4/8) वमन हर, महाकषाय वर्गों में से एक, antiemetic (group of medicine)

छर्द्याघात chardyāghāta
छर्द्याघातं छर्द्याघातजमुदावर्तं, कारणे कार्योपचारात्। (ड.-सु.उ. 55/31), वमन के वेग को रोकने से होने वाला उदावर्त रोग, suppression of vomitting (leading to udavarta)

छल chala
छलं ह्यभिप्रेतार्थादर्थान्तरं परिकल्प्य परवचनोपघाताय प्रतिकल्प्यते। (चक्र.-च.वि. 8/56), अभिप्रेत अर्थ छोड़ उसका आभास निर्माण कर वाक्य विधान खंडन (विरोध) का प्रयत्न करना, deviating from main topic by making irrelevant/inappropriate arguments

छल्ल challa
छल्लं वल्कलम्। (सु.नि. 15/10), वृक्ष की छाल, tree bark

छवि chavi
कान्तिः। (अ.सं.सू. 31/14) प्रभा, कान्ति, छाया, glow, skin colour

छाग chāga
देखें. छगल। (ड.-सु.सू. 46/85), बकरा, male goat

छागमूत्र chāgamūtra
छागमूत्रमाह-कासश्वासापहामित्यादि। (ड.-सु.सू. 45/223), बकरे का मूत्र, कास, श्वास रोग नाशक है, urine of male goat cures cough and breathlessness

छागान्तराधि chāgāntarādhi
अन्तराधि शरीरमध्यं, तच्च तरुणच्छागस्यैवाद्यात्। (चक्र.-च.चि. 15/209), रक्तार्श व्याधि में बकरे के मध्य शरीर के मांस को रक्त और बहुत सी प्याज में पकाकर खिलाना चाहिए, goat's mid body meat (should be given to a patient of bleeding piles, it should be cooked along onions and goats's blood)

छाण chāṇa
देखें. छगण। (र.र.स. 7/17), उपला, cowdung cake

छात्र chātra
पीतकपिङ्गला 'बग' इति लोके; यत् कुर्वन्ति छत्रकाकारं हैमवते वने मालववचने च तच्छात्रम्। (ड.-सु.सू. 45/133), पीत-पिंगल वर्ण के 'बग' नाम से लोक में प्रसिद्ध जो हेमवत् या मालव वन में छत्रकाकार रचना बनाते हैं उसे छात्र (मक्षिका) कहते हैं, मधुमक्षिका की आठ जातियों में से एक, a type of honey bee

छादन chādana
पत्र छादने इति पत्रमेक उपक्रमः छादनं तु द्विविधं बाह्यन्तरभेदेन वक्ष्यमाणम्।। (ड.-सु.चि. 25/41), पत्ते से ढकना, व्रण का एक उपक्रम, to cover the wound with a leaf

छाया chāyā
छाया वर्णमाक्रामत्याऽऽसन्ना च लक्ष्यते पञ्चभूतात्मिका च। (इंदु.-अ.सं.सू. 9/12), वर्ण को आक्रान्त करने वाली एवं वर्ण के समीप में रहने वाली पंचभूतात्मक छाया होती है, shadow

छायापरिवर्तन chāyāparivartana
तेन संस्थानादिभिर्या छायाप्रतिच्छायारूपा, सा यस्य विवर्तते अन्यथा इवति, स प्रेत इवेति योजना। (चक्र.-च.इ. 7/7), इस प्रकार संस्थानादि की जो छाया प्रतिछाया रूप है, जिसकी वही छाया परिवर्तित अथवा भिन्न हो जाती है, वह प्रेत के सदृश होता है, altered form of shadow, abnormal shadow

छायाविप्रतिपत्ति chāyāvipratipatti
अत्र छाया शब्दानन्तरं लुप्तादिशब्दनिर्देशाद्धीश्रीतुष्ट्यादिविप्रतिपत्तयो ग्राह्याः। (ड.-सु.सू. 31/1), विपरीत ज्ञान। (च.चि. 7/8), छाया शब्द के अनन्तर आदि शब्द लुप्त होने से धी, श्री तथा तुष्टि आदि विप्रतिपत्तियों को ग्रहण करना चाहिए, विरुद्धज्ञान, distortions of shadow

छायाशुष्क chāyāśuṣka
गुटिकाश्छायाशुष्काः कोलसमास्ताः समुपयुक्ताः। (च.चि. 23/104), छाया में सुखाया हुआ, dried under shadow

छिद्र chidra
स्रोतस, रन्ध्र, छेद। 1. सु.शा. 1/19 2. च.इ. 8/20 3. च.शा. 7/12 4. च.चि. 4/16 5. सु.सू. 16/3, pore, hole, orifice

छिद्रप्रहारि chidraprahāri
अमर्षिणमनुबन्धकोपं छिद्रप्रहारिणं क्रूरमाहारातिमात्ररुचिमामिषप्रियतम स्वप्नायासबहुलमीर्ष्युं राक्षसं विद्यात्। (च.शा. 4/38), कमियां देखकर धोखे से प्रहार करने वाला, राक्षस सत्व का एक लक्षण, one who assaults by decieving

छिद्रोदर chidrodara
अष्टावुदराणि वातपित्तकफसन्निपातप्लीहबद्धच्छिद्रदकोदराणि। (च.सू. 19/4-1), आठ प्रकार के उदर रोगों में से एक, जिसमें आन्त्र में छिद्र हो जाते हैं, one of eight abdominal disorders characterized by intestinal perforation

छिन्न chinna
1. काण्डभग्नमतऊर्ध्वं वक्ष्याम.......वक्रं, छिन्नं, पाटितं, स्फुटमिति द्वादशविधम्। (सु.नि. 15/8), अस्थिभग्न के 12 प्रकारों में से एक, one of a type of fracture 2. गात्रस्य पातनं चापि छिन्नमित्युपदिश्यते। (सु.चि. 2/11-1), आगंतुक व्रण का एक प्रकार जिसमें (धारदार शस्त्र से) हस्तादि शरीरावयव या उनके हिस्से कटकर अलग हो जाते हैं, a type of wound caused by severing of body parts by trauma with sharp edged instrument/weapon

छिन्नश्वास chinnaśvāsa
पञ्चश्वासा इति महोर्ध्वच्छिन्नतमकक्षुद्राः। (च.सू. 19/4), आध्मातो दह्यमानने बस्तिना सरुजं नरः। सर्वप्राणेन विच्छिन्नं श्वस्याच्छिन्नं तमादिशेत्।। (सु.उ. 51/11), श्वास के पांच प्रकारों में से एक, पित्त की अधिकता के कारण बस्ति में दाह और आध्मान से युक्त एवं वेदना के सहित जो मनुष्य अपनी सारी शक्ति लगाकर भी बीच-बीच में रुक रुक कर श्वास लेता हो, उसे छिन्न श्वास कहते हैं, one among five shvashas, Chyne strokes breathing

छिन्नांशुका chinnāṃśukā
विषमच्छिन्नदग्धाभा सरुक् छिन्नांशुका स्मृता। (अ.हृ.उ. 14/6), लिंगनाश के छः उपद्रवों में से एक, इसमें दृष्टि विषम, छिन्न, दग्धाभा एवं वेदना युक्त होती है, a type of complication of non-operated cataract, complicated cataract

छेद cheda
छेदः संहतयोर्व्रणोष्ठयोर्द्विधाकरणम्। (ड.-सु.सू. 18/21), संहत/मिले हुए व्रणौष्ठों को दो करना, विकेशिका एवं औषधि के रूक्ष होने से व्रण का फटना, splitting of wound lips (by the use of roughly impregnated gauze piece)

छेदन chedana
1.शस्त्रप्रणिधानं पुनश्छेदनभेदनव्यधनदारणलेखनोत्पाटन प्रच्छन्न सविर्नेषण क्षारजलौकश्चेति। (च.सू. 11/55), छेदनमिति मृतस्य तु तेषु स्थानेषु सक्तस्य

तस्य तस्याङ्गस्य छेदनं द्वैधीकरणम्। (सु.चि. 15/3), शस्त्र क्रियाओं का एक प्रकार, काटना, फंसे हुए मृतगर्भ के अंगों को काटकर निकालना, excision 2. छेदनं द्विधा क्रियत इव शस्त्रादिभिः। (ड.-सु.सू. 22/11), (वातिक व्रण में) शस्त्र से काटने के समान वेदना, cutting pain 4. श्लिष्टान् कफादिकान् दोषानुन्मूलयति यद् बलात् छेदनं तत्। (शा.सं.प्र.ख. 4/9), चिपके हुये कफादि को बलपूर्वक उन्मूलन करने वाले द्रव्य छेदन कहलाते हैं, expectorant

छेदनावकाश
chedanāvakāśa
नाभिबन्धनात् प्रभृत्यष्टाङ्गुलमभिज्ञानं कृत्वा छेदनावकाशस्य द्वयोरन्तरयोः शनैर्गृहीत्वा तीक्ष्णेन रौक्मराजतायसानां छेदनानामन्यतमेनार्धधारेण छेदयेत्। (च.शा. 8/44), नाभिबन्धन से 8 अंगुल छोड़कर काटने वाले स्थान को दोनों ओर से धीरे से पकड़कर तीक्ष्ण सुवर्ण, चांदी, लोहा इनमें से किसी एक अर्ध धार वाले चाकू से काटना चाहिये, area to be incised (of umbilical cord)

छेदनीय
chedanīya
छेदनीय इति अपतर्पणकारकः। (चक्र.-च.सू. 26/8), अपतर्पण (कृशता) करने वाला छेदनीय कहलाता है, emaciation process

छेदशब्द
chedaśabda
ग्रन्थ्यर्बुदादिषु सदा छेदशब्दस्तु पूजितः। विद्रध्युदरगुल्मेषु भेदशब्दश्तथैव च।। (सु.सू. 29/42), ग्रन्थि, अर्बुद आदि में सदा छेद शब्द सुनाई देना उत्तम है तथा विद्रधि, उदररोग एवं गुल्मादि में भेदन शब्द, cutting/splitting sound emanating from cystic or neoplastic lesions

छेद्य
chedya
छेद्यं निःशेषतश्छेदनीयमर्शः प्रभृतिः। (ड.-सु.सू. 5/5), शस्त्रकर्म का एक प्रकार, कुछ भी न छोड़ते हुए काटकर अलग कर देना जैसे अर्श आदि में, to excise out (without leaving anything behind)

छेद्यरोगप्रतिषेध
chedyarogapratiṣedha
लेख्य प्रतिषेधानन्तरं भित्वालिखेदिति। (सु.उ. 15/1), वचनाद्छेद्य रोग प्रतिषेधारम्भः - अर्थात् इत्यादि सुश्रुत उत्तरतन्त्र का एक अध्याय, a chapter in subhruta samhita

जगत
jagata
विश्व। (सु.शा. 1/3), संसार, सृष्टि, world

जगल
jagala
तद् (कादम्बरी) अधो जगलो ज्ञेयो। (शा.सं.म. 10/6), घनस्तु सुराभागः एव (कादम्बरी) यः सुराया अधस्थितो भवति स जगलो ज्ञेयः। (आढ.-शा.सं.म. 10/6), सुरामण्ड से प्राप्त कादम्बरी के ठीक नीचे के घन भाग को जगल कहते हैं, the dense portion of sura just below kadambari

जग्ध
jagdha
भक्षितम्। (सु.सू. 42/13), खाया हुआ, ग्रसित afflicted

जघन
jaghana
कटेरग्रभागः। (ड.-सु.चि. 15/4), स्त्रीकट्यग्रभागः। (सु.उ. 47/61), mons pubis

जघन्य
jaghanya
1. क्रूरतम। (सु.सू. 35/9), cruel 2. अल्प। (शा.उ. 1/8), feeble 3. पीछे उत्पन्न। (च.सू. 20/7), preceding

जङ्गम
jaṅgama
गच्छतीतिः। (चक्र.-च.सू. 1/68), गतिशील सजीव प्राणी, living being

जङ्गमस्नेह
jaṅgamasneha
जो स्नेह पशुपक्षियों से प्राप्त किया जाता है वह जंगम स्नेह है, जैसे घी, वसा, मज्जादि। (च.सू. 13/9), animal fat e.g. ghee, fat, bone marrow

जङ्घा
jaṅghā
गुल्फजानुमध्यः। (ड.-सु.सू. 35/12), गुल्फ एवं जानु का मध्य भाग, अधोशाखा, shin, leg

जङ्घापिण्डिका
jaṅghāpiṇḍikā
जंघा में स्थित मांसपिण्ड। (च.शा. 7/11), calf muscles

जङ्घारुजा
jaṅghārujā
जंघा में वेदना। (अ.हृ.सू. 14/30), pain in calf muscles

जङ्घाल
jaṅghāla
प्रशस्तजङ्घावन्त। (ड.-सु.सू. 46/54), जिनकी जंघा दृढ़ हो ऐसे पशु, जांगलमांसवर्ग, swift runner

जङ्घास्थि
jaṅghāsthi
गुल्फजान्वन्तरास्थिः। (ड.-सु.सू. 23/6), गुल्फ एवं जानु के मध्य स्थित अस्थि, tibia

जज्ञे
jajñe
इत्येवं भगिनी जज्ञे षष्ठी स्कन्दस्य धीमतः। तस्मात् वा सततं पूज्या सा हि मूलं सुखायुषोः।। (का.सं.चि. बालग्रहचि.), इस प्रकार षष्ठी (रेवती) बुद्धिमान स्कन्द की बहन के रूप में जानी जाती है, इसलिए इसकी सदा पूजा करनी चाहिए क्योंकि वह सुख और आयु का मूल है, popular as

जटिलीभाव
jaṭilībhāva
अन्योऽन्यमिलनम्। (ड.-सु.नि. 6/5), एक दूसरे से चिपकना, matting together

जठर
jaṭhara
1. उदरम्। (ड.-सु.सू. 15/20), अग्न्यधिष्ठानम्। (च.चि. 13/37) उदर, आमाशय alimentary canal 2. जठरमुदराख्यं रोगम्। (ड.-सु.नि. 7/6), उदर रोग G.I. disorder 3. किसी द्रव्य को पारद में मिलाने पर वह द्रव्य पारद द्वारा अमृत हो जाता है, इस स्थिति में पारद का जठरस्थ होना जठर कहलाता है, digestion of material in to mercury

जठरामय
jaṭharāmaya
अतिसार। (च.चि. 16), diarrhoea

जड
1. जडबुद्धिः। (चक्र.-च.शा. 3/15), मूर्ख, idiot 2. सीसकम्। (रा.नि. 13/20), सीसा, lead

जडा
jaḍā
निर्व्याधिर्वर्धते शीघ्रं संसर्पत्याशु गच्छति। पङ्गुमूकाश्रुतिजडायुज्यन्ते चाशु कर्मभिः। (का.सं.सू. लेहा.), बालक शीघ्र ही व्याधिरहित होकर वृद्धि को प्राप्त होता है, शीघ्र चलने फिरने लगता है तथा पंगु (चलने में अशक्त), मूक (गूंगे), अश्रुति (बहरे) तथा जड (मूर्ख, अल्प/मंदबुद्धि), जल्दी उन क्रियाओं को करने लगते हैं, unintelligent, dumb

जतुमणि
jatumaṇi
क्षुद्ररोग, जटुल लोकनाम। (ड.-सु.नि. 13/42), कफरक्तज सहज विकार, वेदनारहित, ईषत्रक्त जन्मचिह्न, birthmark, capillary haemangioma

जतूकर्ण
jatūkarṇa
पुनर्वसु आत्रेय के शिष्य। (च.सू. 1/31), a disciple of Atreya

जत्रु
jatru
ग्रीवामूलम्। (ड.-सु.सू. 46/440), अक्षकास्थि, clavicle

जनपदोध्वंस
janapadodhvaṃsa
लोक विध्वंस। (च.वि. 3/7), जल, वायु, देश, काल में विकृति से महामारी का होना, epidemic

जन्तु
jantu
1. प्राणिनः। (ड.-सु.नि. 7/5), प्राणी, सभी जीवित प्राणियों को जंतु सम्बोधन किया जाता है, living being 2. क्रिमयः। (ड.-सु.नि. 16/10), कृमि, maggots, worms

जन्तुकार्दित
jantukārdita
जन्तुदुष्टः। (का.सू. 25/39), जन्तुदष्ट बालक स्वस्थ होते हुये भी रात को नहीं सोता है उसके अंग रक्तबिन्दु युक्त होते हैं, कीटादि का शिशु को काटना जंतुकार्दित है, insect bite

जन्मबलप्रवृत्त
janmabalapravṛtta
शुक्रशोणितदुष्टिविनाऽपि मातुरपचारबलजाता। (ड.-सु.सू. 24/5), माता के अपचार के कारण उत्पन्न विकार जैसे पंगुता, जात्यन्धता, बधिरता आदि, congenital disease

जप
japa
ओङ्कारपूर्वकगायत्र्याद्यावर्तनैरयुतलक्षकोटिप्रयुतोपलक्षितैः। (ड.-सु.उ. 60/28), ॐ गायत्री मंत्र का लाख, करोड बार उच्चारण, chanting of sacred hymns

जरण
jaraṇa
1. अन्नादिपरिणामकारी। (ड.-सु.सू. 45/185), अन्नादि का पाचन, digestion 2. वार्धक्यम्। (र.र.स. 2/74), वृद्धत्व, बुढापा, old age

जरा
jarā
वार्धक्यम्। (ड.-सु.सू. 1/25), वृद्धावस्था, senility

जरायु
jarāyu
जरायुः सूतशल्कः। (इंदु.-अ.हृ.उ. 1/31), शिशु के चर्म के ऊपर का स्तर, vernix caseosa

जर्जर
jarjara
1. त्यक्तस्थैर्यम्। (इन्दु.-अ.सं.उ. 26), अस्थिर, unstable 2. वाद्यभाण्डम्। (चक्र.-च.इ. 1/14), एक प्रकार का वाद्ययन्त्र, a music instrument

जर्जरीकरण
jarjarīkaraṇa
1. श्लथमांसाद् उपचयम्। (चक्र.-च.सू. 27/4), शिथिल मांस का उपचय होना, normalizing flaccid tissue 2. पिष्टिकरणम्। (चक्र.-च.क. 1/14), पिट्ठी बनाना, paste making

जल
jala
एक महाभूत, पानी, one of the panchamahabhutas, water

जलकोष्ठक
jalakoṣṭhaka
अवगाहार्थं कृतं महज्जलपात्रम्। (चक्र.-च.सू. 14/34), स्नान हेतु पात्र, जलद्रोणी, bath tub

जलत्रास
jalatrāsa
सलिले त्रस्यति तदा। (ड.-सु.क. 7/49), अलर्कविष लक्षण, जलस्पर्श एवं दर्शन से त्रस्त होना, hydrophobia

जलदकलधौतपाक
jaladakaladhautapāka
(संस्कारित पारद में) अभ्रक एवं स्वर्ण का जारण। (आ.प्र. 1/114), digestion of mica and gold in processed mercury

जलदात्यय
jaladātyaya
शरदिः। (चक्र.-च.क. 7/57) शरदऋतु, बादलों का नाश होकर आकाश का मेघरहित होना, autumn

जलसन्त्रास
jalasantrāsa
जलदर्शनं संस्पर्शशब्देभ्यो यश्च सन्त्रसेत्। अदष्टमपि तं जह्याज्जलसन्त्रास रोगिणाम्।। (अ.सं.उ.), पशु से काटा या न काटा मनुष्य भी यदि पानी के देखने मात्र से, पानी के स्पर्श से, पानी के शब्द से डर जाता हो तो उसे जलसन्त्रास से ग्रस्त समझना चाहिए एवं यह अवस्था असाध्य है, hydrophobia

जलाभिरमण
jalābhiramaṇa
जलक्रीडा। (मधु.-मा.नि.), जल में तैरना, swimming

जलायुका
jalāyukā
जलमासामायुः। (ड.-सु.सू. 13/9), जल ही जिसकी आयु है अर्थात् जलौका, leech

जलार्बुद
jalārbuda
ओष्ठरोग, जलबुद्बुदवत्। (अ.सं.उ. 25), ओठरोग, a disease of lips

जलास्रव
jalāsrava
वायुः कुद्धो जलवाहिनीः सिराः प्राप्य वर्त्मशुक्लसन्धिकनीनकाज्जलाभमश्रु स्रावयति। (अ.सं.उ. 13), नेत्ररोग, वायु कुपित होकर जलवाहिनी सिरा में अवस्थित होकर कनीनकसंधि से जलयुक्त अश्रु स्राव कराता है, epiphora

जलूका
jalūkā
1. जलौका। (र.र.स. 22/147), जौंक, leech 2. पारदबन्ध। (र.र.स. 11/65), पारद बन्ध भेद, a type of binding of mercury

जलौका jaloukā
जलमासामायुरिति जलायुका:, जलमासामोक: इति जलौकस:। (सु.सू. 13/9), जल ही जिनकी आयु है, उन्हें जलायुका कहते हैं, अथवा जल ही जिनका ओक या निवास स्थान है, उन्हे जलौका कहते हैं, leech

जल्प jalpa
पक्षाश्रितयोर्वचनम्। (च.वि. 8/28), युक्तिपूर्वकवचन, वादभेद, a type of discussion

जवनिका javanikā
पटल। (अ.सं.सू. 33/24), आवरण, a curtain

जागरण jāgaraṇa
निद्राया अभाव। (च.नि. 1/33), निद्रा का न होना, sleeplessness

जाङ्गम jāṅgama
गच्छतीति जङ्गमं, जङ्गमप्रभवं जाङ्गमम्। (चक्र.-च.सू. 1/68), जो गमन करता है उसे जंगम कहते हैं जंगम से उत्पन्न होने वाला जांगम कहलाता है, animal origin

जाङ्गल jāṅgala
अल्पोदकद्रुमो यस्तु प्रवात: प्रचुरातप: स्वल्परोगमतोऽपि च। (च.वि. 3/47), अल्प जल एवं अल्पवृक्ष युक्त, वायु एवं धूप युक्त देश, arid land

जाठर jāṭhara
कायाग्निमिति काय निर्वर्तकमग्निं जाठरम्। (चक्र.-च.सू. 6/22), शरीर को संचालित करने वाली अग्नि का नाम जाठर है, agni which maintains the body

जाठराग्नि jāṭharāgni
भगवानीश्वरोऽन्नस्य पाचक:। (सु.सू. 35/27), अन्न की पाचक, भगवान, ईश्वर, digestive enzymes

जाड्य jāḍya
स्तब्धता:। (ड.-सु.चि. 24/14), आपाटवम्। (ड.-सु.उ. 55/17), गौरवम्। (अ.सं.सू. 32/17), स्तब्धता, गौरव, मूर्खता, stiffness, dullness, stupidity

जात jāta
उत्पन्न:। (च.शा. 8/46), उत्पादस्य:। (चक्र.-च.सू. 24/3), उत्पन्न होने वाला, उत्पाद, borne, product

जातकर्म jātakarma
जातमात्रस्य वेदोक्तं कर्मम्। (चक्र.-च.शा. 8/46), जातमात्र (नवजात शिशु) में किया जाने वाला संस्कार, holy ceremony in newborn

जातमात्र jātamātra
जातमात्रं सद्य एवोद्भूतम्। (अरु.-अ.हृ.उ. 1/1), विडङ्गफलमात्रं तु जातमात्रस्य देहिन:। भेषजं मधुसर्पिर्भ्यो मतिमानुपकल्पयेत्।। (का.सं.सू. लेहाध्याय), उत्पन्न (पैदा) हुए बालक को विडंगफल के बराबर औषधि मधु तथा सर्पि (असमान मात्रा) के साथ दें, नवजात शिशु को जातमात्र के नाम से कहा जाता है, new born baby

जातहारिणी jātahāriṇī
सैषा वृद्धजीवक! रेवती बहुरूपा जातहारिणी पिलिपिच्छिकेति चोच्यते, रौद्रीति चोच्यते, वारुणीति चोच्यते। (का.सं.कल्प. रेवतीकल्प 7), हे वृद्धजीवक! इस प्रकार यह अनेक रूपों वाली तथा जातहारिणी (उत्पन्न हुए प्राणियों का हरण करने वाली) रेवती, पिलिपिच्छिका, रौद्री तथा वारुणी आदि नामों से कहलाती है, रेवती ग्रह का एक नाम, a synonym of revati graha

जाति jāti
1. जन्मकारणाम्। (चक्र.-च.शा. 8/1), जन्म:। (चक्र.-च.नि. 1/11), जन्म कारण, birth 2. सम्प्राप्ति पर्याय। (च.नि. 1/11), pathogenesis 3. कुल, species 4. मालती। (भा.प्र. पुष्पवर्ग 27), jasmine

जातिस्मरण jātismaraṇa
जातेरतीताया: स्मरण जातिस्मरणं; तदेव स्मरणं दर्शयति- इहागमनमितश्च्युतानामिती; इह कुले जातोऽस्मि, इतर च कुलादागतोऽस्मीत्येवयाकारं जातिस्मरणमित्यर्थ:। (चक्र.-च.सू. 11/30), यदि वा, इह जन्मानि च्युतानामिह जन्मनि पुनरागमनं अनेन च नामभ्रान्त्या यमपुरुषैर्नीतस्य पुनरागमनं दृश्यते। (चक्र.-च.सू. 11/30), अतीत की घटनाओं का स्मरण रखना जातिस्मरण कहा गया है। "इस कुल में पैदा हुआ हूँ" तथा "इस कुल में से उत्पन्न हुआ हूँ" अर्थात् पूर्वजन्म में किस कुल से सम्बन्धित था तथा इस जन्म में किस कुल से सम्बन्ध रखता है, इस प्रकार का स्मरण रखना 'जातिस्मरण' कहलाता है, अथवा मरने के बाद पुन: जीवित हो जाना, उस पुरुष द्वारा यह बताया जाना कि गलती से यमराज के दूत मुझे ले गये थे, बाद में उनकी सूची में नाम न होने से मुझे छोड दिया गया। इस प्रकार का स्मरण होना जातिस्मरण है, recollecting a former existence

जातोदक jātodaka
जातमुदकम्। (च.चि. 13/51), उदर में जल का उत्पन्न होना, ascites

जानु jānu
जङ्घोरुसन्धि:। (चक्र.-च.वि. 8/117), घुटने की संधि, knee joint

जानुभेद jānubheda
वातनानात्मज विकार। (च.सू. 20/11), जानु में भेदनवत् पीड़ा, pain in knee joint

जानुविश्लेष jānuviśleṣa
वातनानात्मज विकार। (च.सू. 20/11), जानुसंधि का विश्लेष, flaccidity of knee joint

जान्वस्थि jānvasthi
जानु अस्थि। (सु.शा. 5/20), patella

जाम्बवौष्ठ jāmbvouṣṭha
जम्बूफलसदृश मुखाग्रा कृष्णपाषाणरचिता वर्ति:। (ड.-सु.सू. 12/4), दहन उपकरण विशेष, जम्बूफल मुखाग्र के समान कृष्ण पाषाण की वर्ति, यह विशेष रूप से मांस के दहनकर्म में प्रयुक्त होती है, a wick of black stone used for cautery

जारण
jārana
ग्रासस्य चारणं, गर्भे द्रावणं जारणं तथा इति त्रिरूपा निर्दिष्टा। (र.र.स. 8/72), पारद का एक संस्कार, रसशास्त्र में गंधक इत्यादि का जारण करते हैं, अन्य द्रव्यों में भी जारण करते हैं, यथा गन्धक जीर्ण ताम्र, a kind of processing of mercury

जारणा
jāraṇā
द्रुतग्रासपरीणामो विडयन्त्रादियोगतः जारणेत्युच्यते, तस्याः प्रकाराः सन्ति कोटिशः। (रसे. चू. 4/102), जारणा हि नाम पातनगालनव्यतिरेकेन घनहेमाहिरसस्य पूर्वावस्थाप्रतिभवत्वम्। (रसे.चि. 1/102), जारणा वरवार्तिकैः। ग्रासः पिण्डः परिणामस्तिस्रश्चाख्याः पराः पुनः। (र.र.स. 8/72-73), विड़ एवं यन्त्रों के माध्यम से पिघले हुये ग्रास के पारद में पूर्ण रूपेण विलीन हो जाने की क्रिया को जारणा कहते हैं, जारणा के करोड़ो प्रकार हैं, पारद में पातन या गालन किये बिना अभ्रक, सुवर्ण आदि के ग्रास को ग्रहण करके पारद पूर्व प्रमाण में बना रहे तो उसे जारणा कहते हैं, संस्कार के संदर्भ में पारद में दिये गये ग्रास का आत्मसात् हो जाना जारणा कहलाता है, digesting process, assimilation, successful assimilation

जालकगर्दभ
jālakagardabha
देखें. जालगर्दभ। (च.चि. 12/99)

जालगर्दभ
jālagardabha
विसर्पवत् सर्पति यो दाहज्वरकरस्तनुः, अपाकः श्वयथु। (सु.नि. 13/14), विसर्पणं जालकगर्दभाख्यम्। (च.चि. 12/99), फैलने वाला तनु शोथ, अपाकी, ज्वर एवं दाहयुक्त, क्षुद्ररोग, a type of cellulitis, a type of minor disease which is spreading cellulitis, having fever and burning

जालिनी
jālinī
सिराजालवती, महाशयार्तितोदा, स्निग्धस्रावा। (च.सू. 17/83), प्रमेह पिड़का, सिराजालयुक्त, बड़ी, अर्तियुक्त एवं स्निग्धस्राव करने वाली, a type of carbuncle

जिङ्घासु
jiṅghāsu
हन्तुमिच्छुः। (ड.-सु.उ. 54/20), मारने की इच्छा, desire to kill

जिजिविषु
jijiviṣu
जीवितुमिच्छुः। (ड.-सु.उ. 55/3), जीने की अभिलाषा, desire to live

जिज्ञासा
jijñāsā
ज्ञातुमेषणीयम्। (ड.-सु.सू. 21/9), उत्सुकता, curiosity

जिह्मसूची
jihmasūcī
जिह्मसूची व्याधादवर्तिगाढत्वादथवा मलैः। जाते महति संरम्भे वर्तिमाश्वपनीय तत्।। (अ.सं.उ. 1/38), टेढ़ी सुई, टेढ़ी सुई से बींधने पर या बत्ती के मोटा होने पर अथवा दोषों के प्रकोप से अधिक सूजन होने पर बत्ती को निकाल देना चाहिए, curved needle

जिह्माक्ष
jihmākṣa
वक्रलोचनः। (ड.-सु.उ. 60/9), नेत्र का वक्र होना, strabismus

जिह्वा
jihvā
कर्मेन्द्रिय। (च.शा. 7/7), कफरक्तमांसानां साराज्जिह्वा प्रजायते। (सु.शा. 4/28), जीभ, tongue

जीर्ण
jīrṇa
जरायुक्तम्। (अ.सं.सू. 4), पुराना, old

जीर्णान्न
jīrṇānna
परिणताहारः। (अ.सं.सू. 11/9), जीर्ण आहार, पचित आहार, digested food

जीर्णौषधित्व
jīrṇouṣadhitva
भक्तत् पाकमुपैति। (ड.-सु.चि. 34/3), वमन या विरेचन औषध का भोजन की तरह पच जाना; यह वमन और विरेचन कर्म का एक व्यापत् है, digestion of vamana or virechana drugs like food; it is one of the complications of vamana and virechana

जीव
jīva
चेतनाधातुः आत्मा। (चक्र.-च.शा. 3/3), चेतनाधातु, आत्मा, प्राण, life, soul

जीवजीवक
jīvajīvaka
विषदर्शनमृत्युः। (चक्र.-च.सू. 27/50) यह पक्षी विष के दर्शन मात्र से मृत्यु को प्राप्त हो जाता है, a bird dies instantly after seeing poison

जीवद्वत्सा
jīvadvatsā
जीवद्वत्सां दोग्धी वत्सलामक्षुद्रकर्मिणीं कुले जातामतो भूयिष्ठैश्च गुणैरन्वितां श्यामामारोग्यबल वृद्धये बालस्य।। (सु.शा. 10/25), जिसकी संतान जीवित हो (प्रशस्त धात्री के संदर्भ में), the wetnurse with alive child

जीवन
jīvana
1. प्राणधारणः। (ड.-सु.सू. 46/517), ओजोवृद्धिकरम्। (र.र.स. 29/35), प्राणधारक जीवतत्व, ओजवृद्धि करने वाला, life giving 2. जलम्। (रा.नि. 14/217), जल, water 3. अभिघातादि मूर्च्छितस्य जीवनः। (चक्र.-च.सू. 26/43), अभिघातादि कारणों से मूर्च्छित हुये व्यक्ति की मूर्च्छा को दूर करना जीवन है, vital

जीवनीय
jīvanīya
1. जीवने हितम्। (चक्र.-च.सू. 4/8), जीवन के लिये हितकर, longivity promoting 2. घृतम्। (ध.नि. 6/144), घी, ghee

जीवादान
jīvādāna
जीवनहेतुधातुरूपशोणितनिर्गमः। (शिव.-च.सू. 20/14) जीवन दायक रक्तधातु का स्राव होना, haemorrhage

जीवित
jīvita
1.जीवयति प्राणान् धारयतीति जीवितम्। (चक्र.-च.सू. 1/42), प्राणों को धारण करके जो जीवित अवस्था बनाए रखता है, उसे जीवित कहते हैं, यह शब्द 'आत्मा' के संदर्भ में है, आयु, alive, life, which preserves the life by sustaining prana, refers to atma 2. दुग्धं क्षीरं पयः स्वादु रसायन समाश्रयम्। सौम्यं प्रस्रवणं स्तन्यं बालसात्म्यं च जीवितम्।। (ध.नि. सुवर्णादि वर्ग 148), क्षीर, पयस्, स्वादु, रसायन, समाश्रय, सौम्य, प्रस्रवण, स्तन्य, बालसात्म्य और जीवित ये पर्याय दुग्ध के हैं, synonym of milk

जीवोपक्रमण
jīvopakramaṇa
पूर्वकर्मप्रेरितात् सुयोगाद् भवति। (चक्र.-च.चि. 30/126), शुक्रशोणित संयोग के समय जीवात्मा के पूर्व कर्म अनुसार जीव का प्रवेश, compliance of soul at the time of conception

जुगुप्सु
jugupsu
निन्दकः। (ड.-सु.सू. 34/24), निंदा करने वाला, cynic

जृम्भ
jṛmbha
पीत्वैकमनिलोच्छ्वासमुद्वेष्टन् विवृताननः, यं मुञ्चति सनेत्रास्रं स जृम्भ इति संज्ञितः।। (सु.शा. 4/50), वायु का मुख के अन्दर प्रवेश होकर उसका मुख के द्वारा बाहर आकर मुख को विकृत करते हुये नेत्राम्बु सह बाहर आना, जृम्भा, yawning

जेन्ताक
jentāka
स्वेदन हेतु प्रयुक्त कूटागार। (च.सू. 14/46), sudation chamber

जेन्ताकस्वेद
jentākasveda
एक विशिष्ट एकद्वार की कुटि जिसके मध्य में अंगार कोष्ठिका रहती है, उसमें स्वेदन कराना जेन्ताक स्वेद कहलाता है। (च.सू. 14/46), svedana done in a specific room having one door and farnace in the contre by burning wood in it, heat chamber sudation

ज्ञ
jña
1. कुशलवैद्यः। (ड.-सु.उ. 11/10), ज्ञाता, कुशल, knowledgeous 2. आत्मा। (च.शा. 4/7), soul

ज्ञान
jñāna
1. शास्त्रम्। (चक्र.-च.वि. 4/12), शास्त्र, आयुर्वेद, knowledge 2. बुद्धिः। (च.वि. 4/7), wisdom

ज्ञानचक्षु
jñānacakṣu
ज्ञानार्थं ज्ञानरूपं वा चक्षु ज्ञानचक्षुः। (चक्र.-च.सू. 1/28), ज्ञान प्राप्ति के साधनों को ज्ञान चक्षु कहते हैं, means to acquire knowledge

ज्ञापक
jñāpaka
निदानावस्थादीनामावेदकः। (अरु.-अ.हृ.सू. 1/29), स्वानुभूयमानरोगावस्थानिरुपण समर्थः। (हे.-अ.हृ.सू. 1/29), निदानपंचक में से किसी एक अवस्था का बोध कराने वाला, बोध कराने वाला, one who gives knowledge or information

ज्ञेय
jñeya
ग्राह्यम्। (चक्र.-च.शा. 1/20), जानने योग्य, known to be learnt

ज्यायस्त्व
jyāyastva
बृहत्वम्। (च.सू. 25/42), बड़ा, big

ज्योति
jyoti
1. सकलशरीरान्तर्गतं तेजः। (चक्र.-च.इ. 11/3), अग्नि, तेज महाभूत, one among five penta-elements 2. प्रकाश पुज्ज, light, fire

ज्योत्सना
jyotsanā
1. चन्द्रिका, चन्द्रकिरण। (अ.सं.सू. 12), मधुर, शीतल चंद्रकिरण, moonlight 2. घोषातकी

ज्वर
jvara
1. संतापयति। (चक्र.-च.नि. 1/35), रसप्रदोषज विकार। (च.सू. 25/7), जो शरीर में संताप उत्पन्न करता है, pyrexia 2. व्याधि पर्याय। (च.नि. 1/5), रोग पर्याय, a synonym of disease

ज्वलन
jvalana
1. अग्निः। (च.सि. 3/64), अग्नि, digestive enzymes 2. अग्नि, आग, fire 3. चित्रक

झण्डु
jhaṇḍu
गेंदा, eng.- marigold, *Tagetes erecta*

झरत्कोष्ठी
jharatkoṣṭhī
कोष्ठीविशेषः आसवादि के निर्माण में प्रयुक्त होने वाला पात्र। (र.र.स. 7/5), a vessel used in preparation of alcohols

झर्झर
jharjhara
'खुर्खुरक' इति ख्यातः। (चक्र.-च.चि. 23/250), कटकाकरम्। (इन्दु.-अ.सं.सू. 47), नाग आदि के भय के निवारण हेतु हाथ में खुर्खुर ध्वनि युक्त दण्ड, sound as of splashing

झर्झरी
jharjharī
धूमसी रचिता चैव प्रोक्ता झर्झरीका बुधैः। (भा.प्र.पू. कृतान्नवर्ग 38), धूआंस निर्मित रोटी को झर्झरी कहा गया है, a roti made up of dhumasi

झर्झरीकृत्
jharjharīkṛt
ईषत्पिष्टम्। (र.र.स. 5/240), अधकुटा, semigrinded

झष
jhaṣa
मीनो विसारश्च झषः। (भा.प्र.पू.मांसवर्ग 38), मछली का अपर नाम है, a synonym of fish

झषा
jhaṣā
नागबला का अन्य नाम है, *Sida veronicaefolia*

झिङ्गिनी
jhiṅginī
जिंगिनी। (भा.प्र.पू.वटादि 42), *Odina woodier*

झिण्टी
jhiṇṭī
1. धान्य, श्यामाक सदृश। (च.सू. 27/18), एक प्रकार का धान्य 2. कुरण्ट। (ध.नि. 1/278), कुरण्टक

झुञ्झु
jhuñjhu
झुञ्झुरक। (अ.हृ.सू. 6/94), एक वनस्पति, a herb

टङ्क
ṭaṅka
नील कपित्थ। (ध.नि. 5/11), नील कपित्थ का पर्याय टंक है, a synonym of neela kapitha

टङ्कण
ṭaṅkaṇa
टंकण क्षार:। (ध.नि. 2/22), सुहागा, borax

टिण्टिकेर
ṭiṇṭikera
टिण्टिकेरं करीरफलम्। (चक्र.-च.चि. 14/10), करीर फल, the fruits of *Capparis aphylla*

टिण्टुक
ṭiṇṭuka
श्योनाक:, टिण्टुकस्य मूलं ग्राह्यम्। (ध.नि. 1/115), सोनापाठा, root of *Oroxylum indicum*

टीका
ṭīkā
व्याख्यानरूपा वृत्ति:। (र.र.स. 20/222), व्याख्या, commentary

टुण्टुक
ṭuṇṭuka
टिण्टुक। (च.चि. 23/70), टेंटु, *Oroxylum indicum*

डमरुयन्त्र
ḍamaruyantra
यन्त्रस्थालमुपरि स्थालीं न्युब्जां दत्त्वा निरुन्धयेत्। यन्त्रं डमरुकाख्यं तद्रसभस्मकृते हितम्।। (र.र.स. 9/57), एक घड़े के ऊपर दूसरे घडे को औंधा कर रख दें और दोनों के मुख की संधि को अच्छी तरह कपड़ मिट्टी से बंद कर दें, यह डमरुयन्त्र है, an instrument prepared by keeping two earthen pot placing on the mouth of each other and then sealing it with a cotton piece coated with a paste of clay

डम्बरी
ḍambarī
स्तब्धाक्षावलोकी; किंवा संरम्भवान्। (चक्र.-च.इ. 6/19), आकुल, डरा हुआ, श्वास कुपित, स्तब्ध नेत्र दर्शन एवं शोथयुक्त व्यक्ति 'डम्बरी' कहलाता है, यह अवस्था प्रत्याख्येय है, a state of poor prognosis

डुण्डुक
ḍuṇḍuka
टिण्टुक:। (इंदु.-अ.सं.उ. 22), डुण्डुक, टिण्टुक का पर्याय है, *Oroxylum indicum*

डोरली
ḍoralī
बृहती। (रा.नि. 4/21), बड़ी कटेरी, *Solanum indicum*

ढालन
ḍhālana
द्रुतद्रव्यस्य निक्षेपो द्रवे तद्र ढालनं मतम्। (रसे.चू. 4/54), (र.र.स. 8/43), किसी भी पिघलाई हुई धातु को किसी द्रव पदार्थ (जल, दुग्ध, स्वरस, तैलादि) में डालने की क्रिया को ढालन कहते हैं, pouring of melted metal into liquid

ढेकीयन्त्र
ḍhekīyantra
एक घड़े में पारदयुक्त औषधि रखकर उस घट के गले के नीचे वंशनाल को जोड़कर दूसरा सिरा कांस्यपात्र से जोड़ देते हैं, कांस्यपात्र को जल में रखते हैं, औषधियुक्त घट को अग्नि देकर पारद वाष्पीभूत होकर वंशनाल के द्वारा कांस्यपात्र में एकत्र होता है और जल के कारण पुन: द्रवीभूत स्थिति में प्राप्त होता है, यह ढेकीयन्त्र है। (र.र.स. 9/16), an instrument used to get mercury from its ore

तक्र
takra
दुग्धविकृति, मथितदधि। (च.चि. 15/118), मथित दधि को तक्र कहा जाता है, सद्य निर्मित तक्र अविदाही होता है, buttermilk

तक्रकूर्चिका
takrakūrcikā
देखें. तक्रपिण्ड। (चक्र.-च.सू. 27/236)

तक्रपिण्ड
takrapiṇḍa
तक्रपिण्ड: तक्रकूर्चिकाया एव सुतद्रवो घनो भाग:। (चक्र.-च.सू. 27/236), तक्रपिण्ड का ही नाम तक्रकूर्चिका है, waterless curd, water strained curd

तक्राभ्यास
takrābhyāsa
ग्रहणीदोषशोफार्शोघृतव्यापत्प्रशमनानां श्रेष्ठ:। (च.सू. 25/40), तक्र का निरन्तर अधिक समय तक सेवन, ग्रहणी, शोफ, अर्श, घृतव्यापत् शमन हेतु श्रेष्ठ है, use of buttermilk for long period

तक्षक
takṣaka
सर्प। (च.चि. 23/194), एक प्रकार का सर्प, जिसका विष प्राणहर होता है, a fatal type of snake

तक्षण
takṣaṇa
कृशीकरण तनुकरण। (अ.सं.चि. 10), तनुकरण करने वाला जैसे लंघन, reduction, depletion

तडाग
taḍāga
तटादागो गतिर्यस्य स तडाग:। (चक्र.-च.सू. 27/214), जिस जलाशय के जल की गति का दवाब उसके तट (किनारे) पर पड़ता है, सरोवर, water reservoir

तडागपद
taḍāgapada
तटादागो गतिर्यस्य स तडाग: स पुनरुच्चदेशा दागच्छज्जलबन्ध नाद्भवति, अन्ये तु पुष्करिणी तडागमाहु:। (चक्र.-च.सू. 27/214), जिसमें जल की गति तट से हो यानि चारों ओर से खुला हुआ ताल, यह ऊँचे स्थान से आने वाले जल को रोककर बनाया जाता है, अन्य आचार्य कमल से युक्त सरोवर को तडाग कहते हैं, open lake which is used as reservior for collecting water which is flowing from higher region, reservoir filled with lotus

तण्डुलाम्बु
taṇḍulāmbu
तण्डुलधावनाम्बुना:, अन्ये तु तण्डुलाद् द्विगुणमम्लं तण्डुलेन समं चिरं स्थितं तत् तण्डुलाम्बु वदन्ति। (चक्र.-च.चि. 15/130), चावल को अष्टगुण जल में धोने के बाद निकला पानी अथवा चावल से दो गुना अम्लद्रव्य मिलाकर जल में अधिक समय तक रखे द्रव को तण्डुलाम्बु कहते हैं, rice water

तत्व
tattva
यथार्थ, वास्तविक। (च.शा. 1/38), निर्णय। (च.वि. 1/33), यथार्थ, वास्तविक, प्रथम सिद्धान्त, true or real

तत्त्वत
tattavata
परामर्थत:। (ड.-सु.चि. 34/22), वस्तुत: सही अर्थ में, in real sense

तत्वस्मृतिबल tattvasmṛtibala
तत्वस्मृतिबलमिति तत्वस्मृतिरूपं बलम्। (चक्र.-च.शा. 1/150), तत्वस्मृतिरूपी बल अथवा मोक्ष प्राप्ति का साधन, strength of elementary knowledge (as a mean of achieving salvation)

तत्वस्वभावाद् tattvasvabhāvād
तत्वस्वभावादिति ग्राह्याणां रूपादीनां यः। (चक्र.-च.सू. 8/14), उसके स्वभाव से, ग्राह्य रूपादि का जो स्वभाव है यथा तैजस आदि, अर्थात् जिस महाभूत प्रधान ग्राह्य द्रव्य होंगे उनका ग्रहण उन्हीं महाभूतो वाली इन्द्रियां करेंगी, perception of objects by respective sense organs

तत्वाधिगत tattvādhigata
यथावदधीतशास्त्रो यथावज्ज्ञातदर्थश्चेत्यर्थः। (ड.-सु.सू. 34/19), वैद्य, a physician well versed in texts

तदर्थकारी tadarthakārī
विपरीतार्थकारी। (च.वि. 2/13), ऐसा द्रव्य या अद्रव्य, जो रोग एवं रोगहेतु के समान होते हुये भी व्याधि का शमन करता हो, वह तदर्थकारी हैं, antagonist

तदात्वसुखसंज्ञक tadātvasukhasaṃjñaka
तत्कालसुखफलः योषिताहारादिः। (अ.सं.सू.), तत्काल सुखप्रद, जैसे स्त्री सेवन एवं आहार सेवन, giving instant satiety

तद्धर्मता taddharmatā
येन तथाभूतं स तत्तद्धर्मतामसाद्य दर्शनात्तामेवाख्यां लभते। (हे.-अ.हृ.उ. 40/78), एक वस्तु में दूसरे अन्य के धर्मों का आरोपण करना (ताच्छील्यादि में एक), assimilation of one's properties into another

तद्विद्य tadvidya
व्याकरणादिविदः। (ड.-सु.सू. 4/6), विभिन्न शास्त्रादि, व्याकरणादि का ज्ञाता, expert in grammer and other texts

तद्विद्यसम्भाषा tadvidyasambhāṣā
तच्छास्त्राध्यायिना सह संभाषणम्। (चक्र.-च.वि. 8/6), किसी शास्त्र की चर्चा उस शास्त्र के ज्ञाता से दूसरा उसी शास्त्र का ज्ञाता ज्ञानवृद्धि के हेतु से करता है, तो उसे तद्विद्यसम्भाषा कहते हैं, discussion

तनु tanu
1. स्वच्छम्। (चक्र.-च.चि. 22/26), अच्छम्। (ड.-सु.सू. 14/29), निर्मल, स्वच्छ, fine, clean, dilute 2. कृशम्। (चक्र.-च.चि. 5/4), अघनम्। (ड.-सु.चि. 10/11), पतला, कृश, thin, emaciated 3. तनुमिति स्वल्पमांसत्वेनाघनम्। (चक्र.-च.सू. 27/262), मांस का प्रयोग अल्प होने से अकृतयूष पतला होता है, उसे ही 'तनु' शब्द से कहा गया है, clear soup prepared with little quantity of meat

तन्तुक tantuka
मण्डलिनस्तु तन्तुकः। (सु.क. 4/34-2), मण्डली सर्प का एक प्रकार, a type of snake

तन्तुमत्व tantumatva
दर्व्या सञ्चालनेन तन्तुसंयुक्त इव दृश्यते। (आढ.-शा.सं.म. 8/3), दर्वी या कल्छुल से अवलेह को चलाते समय तार के सदृश दिखाई देने वाली आकृति, appearance of thready consistency in confection when stirred with spoon

तन्त्र tantra
तन्त्रणादिति शरीरधारणात्, किंवा आयुर्वेदानुपालनात्। (चक्र.-च.सू. 30/70), शरीर को धारण करना 'तन्त्र' कहलाता है, कुछ लोग इससे आयुर्वेद का अनुपालन करना अर्थ करते हैं, या शरीर धारण करने से अथवा आयुर्वेद के अनुपालन करने से इसकी संज्ञा 'तन्त्र' है, system (because it systemises)

तन्त्रशील tantraśīla
या तन्त्रकारणां प्रकृतिः स्वभाव इत्यर्थः। (हे.-अ.हृ.उ. 40/78), बीस प्रकार के अर्थाश्रय में एक, तन्त्रकारों के स्वभाव को तन्त्रशील कहा जाता है, the style/nature of authors

तन्त्रसंज्ञा tantrasaṃjñā
यत्कस्मिंश्चिदर्थे मध्ये व्याख्यायमाने स्वतन्त्र सिद्धोदाहरणं तत्प्रमाणार्थमुच्यते। (हे.-अ.हृ.उ. 40/78), बीस प्रकार के अर्थाश्रय में एक, ग्रन्थ या शास्त्र में किसी विशेष प्रकरण में किसी शब्द विशेष का सीमित अर्थ में प्रयोग करना, to use a specific word of a text in a limited reference/meaning

तन्द्रा tandrā
इन्द्रियार्थेष्वसम्प्राप्तिर्गौरवं जृम्भणं क्लमः, निद्रार्तस्येव यस्येहा तस्य तन्द्रां विनिर्दिशेत्। (सु.शा. 4/49), परं निद्रायां प्रबोधितस्य क्लमाभावः, तन्द्रायां तु प्रबोधितोऽपि क्लाम्यति। (ड.-सु.शा. 4/49), जिसमें इन्द्रियों के अर्थों का पूर्ण ग्रहण न होता हो, गुरुता हो, जृम्भा हो, थकावट एवं निद्रा से पीडित होना लक्षण हों, वह अवस्था तन्द्रा है, गौरव, जृम्भा एवं क्लम के साथ निद्रा जैसी स्थिति तन्द्रा है, निद्रा एवं तन्द्रा मे यह अन्तर है कि नींद से उठने पर क्लम नहीं होता जबकि तन्द्रा रसप्रदोषज विकार है। (च.सू. 28/9), तन्द्रा कफ का नानात्मज विकार है, dozing, sleeping like condition with heaviness, yawning and fatigue (without physical work), difference between nidra and tandra is that person does not feel klama after awakening from sleep while in tandra on awakening klama is present

तन्मना tanmanā
तत्रैवायुर्वेद ग्रहणे मनोयस्य स तन्मनाः। (चक्र.-च.सू. 1/25), आयुर्वेद को ग्रहण करने में जो तन्मय हो, उसे तन्मना कहते हैं, who is thoroughly involved in bearing and accepting the teachings of Ayurveda

तपनीय tapanīya
तपनीयं लोहितसुवर्णम्। (चक्र.-च.सू. 24/22), अग्नि से तपा हुआ लाल सोना, red hot gold

तम tama
तिमिरदर्शनम्। (अरु.-अ.हृ.सू. 18/26), अज्ञानम्। (हे.-अ.हृ.सू. 18/26), अन्धकारप्रवेशमात्रम्। (गंगा.-च.सू. 20/11), आंखों के आगे अन्धकार का आना, darkness before eyes

तमःस्कन्ध
tamaḥskandha
स्कन्धः समूहः। पक्षरागश्चेह तत्वज्ञानप्रतिबन्धकत्वेन तमःस्कन्ध उच्यते। (चक्र.-च.सू. 25/28), स्कन्ध को समूह कहा गया है, यहां पर अपने पक्ष के प्रति आसक्ति (राग), तत्वज्ञान का प्रतिबन्धक होने से तमःस्कन्ध कहा जाता है, group of mental perplexity

तमालपत्र
tamālapatra
तमालपत्रम्। (रा.नि. 2/52), तमालपत्र, पत्रज, तेजपत्र, तेजपत्ता, गुरुन्द्रा, मध्यमाकार 3 से 7 हजार फीट की ऊँचाई पर पाया जाने वाला वृक्ष, *Cassia cinnamon*

तरक्षु
tarakṣu
तरक्षुः व्याघ्रभेदः तरच्छ इति ख्यातः। (चक्र.-च.सू. 27/35), तरक्षुर्मृगशत्रुर्व्याघ्रविशेषः जरख इति लोके। (ड.-सु.सू. 46/72), व्याघ्र जाति का एक पशु जिसे तरच्छ नाम से जाना जाता है, मृगशत्रु (मृग का शिकार करने वाला), बाघभेद, an animal of tiger species

तरुट
taruṭa
तरुटः कह्लारकन्दः। (चक्र.-च.सू. 27/116), कह्लारं सौगन्धिकम्। (अरु.-अ.हृ.सू. 3/35), कह्लारं सन्ध्याविकाशि पद्मिनीपुष्पम्। (हे.-अ.हृ.सू. 3/35), कमल का पुष्प अथवा कन्द, flower or tuber of lotus

तर्क
tarka
तर्क, logic

तर्क्य
tarkya
यद्यपि स्नाय्वाद्यपि प्रत्यक्षं भवति, तथाऽपीह वक्ष्यमाणसंख्यायुक्तं सर्वं स्नाय्वादि न प्रत्यक्षेण सुकरग्रहमिति तर्क्यमित्युक्तम्। (चक्र.-च.शा. 7/14), स्नायु आदि अंगों का ज्ञान प्रत्यक्ष से सम्भव होने पर भी उनके जो भेदों को निर्दिष्ट किया गया है उनका प्रत्यक्ष करना सरल नहीं है, अतः उनको तर्क्य कहा गया है, inferable, though the structures like snayu are perceptible, yet their classifications mentioned are not very easy to apprehend, they are inferable

तर्पण
tarpaṇa
तर्पयतीतितर्पणम्। (चक्र.-च.सू. 7/21), जो शरीर को तृप्त (प्रसन्न) करता है वह तर्पण है, which satiates is tarpana

तर्ष
tarṣa
तद्यथा - स्रंसभ्रंसव्यासङ्गभेदहर्षतर्षकम्पवर्तचालतोदव्यथाचेष्टादीनि...... वातविकारमेवाध्यवस्येत्। (च.सू. 20/12), मुख की शुष्कता, पानी पीने पर भी प्यास का न बुझना, एक वातविकार, dryness of mouth

तल्प
talpa
तल्पे-शयने, कल्पिते। (अरु.-अ.हृ.सू. 3/36), शय्या, चारपाई, bed, cot

तस्कर
taskara
1.तस्कराश्चौराः। (ड.-सु.सू. 17/6), चोर, अज्ञ चिकित्सक के संदर्भ में, thief,

quack 2. तस्करः चोरकः। (ड.-सु.चि. 37/17), चोरक (वनस्पति), *Angelia glauca*

ताच्छील्य
tācchīlya
यत्केनचिदेव धर्मं सादृश्येन युक्तो भावस्ताच्छील्यमुच्यते। (हे.-अ.हृ.उ. 40/78), किसी भी विषय का समान धर्म से युक्त होना, सत्रह प्रकार के ताच्छील्यों में से एक, any object possessing similar properties

ताडन
tāḍana
संसृष्टलोहयोरेकलोहस्य परिनाशनम्। प्रध्मानवङ्कनालेन तत्ताडनमुदाहृतम्।। (रसे.चूडा. 4/36), एक साथ मिले हुए दो धातुओं को वंकनाल के द्वारा तीव्र धमन कर किसी एक धातु को उड़ा देना ताडन कहलाता है, one metal is destroyed from two mixed metals by strong heating through vankanala

ताडितान्
tāḍitān
ताडितान् अभिहतान्। (ड.-सु.उ. 27/6), पीटा हुआ, मार खाया हुआ, having beaten

तात्स्थय
tātsthaya
यदन्यस्यैवार्थस्य तत्स्थत्वादन्यस्यैव कल्प्यते। (हे.-अ.हृ.उ. 40/78), ताच्छील्यादि में एक, जिसका अर्थ दूसरा कुछ हो लेकिन उस स्थान पर रहने से अन्य अर्थ का ग्रहण हो, to take an opposite meaning

तादर्थ्य
tādarthya
यत्प्रयोजनार्थं प्रवर्तते यो भावस्तेनैव व्यपदिश्यते। (हे.-अ.हृ.उ. 40/78), जिस प्रयोजन के लिए जो भाव प्रवृत्त होता है, उसी से उसका व्यवहार किया जाना, ताच्छील्यादि में से एक, to process an object in a similar way it is initiated

तान्त
tānta
तान्तं रूक्षस्वरम्। (चक्र.-च.सू. 8/24), रूक्षस्वर, hoarse voice

तापन
tāpana
तापनं शरीरादि संतापनम्। (सु.सू. 41/3-3), शरीर आदि अंगों का संतप्त (गर्म) होना, body warmth

ताम्यति
tāmyati
मुहुर्मुहुर्मूर्च्छां गच्छति। (ड.-सु.सू. 33/15), बार-बार मूर्च्छा होना, loss of consciousness repeatedly

ताम्यमान
tāmyamāna
ताम्यमानोऽत्यर्थं तमः प्रविशन्। (ड.-सु.उ. 59/7), आंखों के आगे अंधेरा आ जाना, सन्निपातिक मूत्रकृच्छ्र का एक लक्षण, blurring of vision

ताम्रचूड
tāmracūḍa
ताम्रचूडरसे सिद्धा रेतोमार्गरुजापहा। समाषविदला वृष्या घृतक्षीरोपसाधिता। (च.सू. 2/32), कुक्कुट, मुर्गा, cock

तारकृष्टी
tārakṛṣṭī
रूप्यं वा वातरूप वा रसगन्धादिभिर्हतम्। समुत्थितं हि बहुशः सा कृष्टा हेमतारयोः।। (रसे.चूडा. 4/11), पारद और गंधक से निर्मित रजत भस्म को पुनः

रजत रूप में उत्थित करने को तारकृष्टि या रौप्यकृष्टि कहते हैं, to get back silver in its original form from rajat bhasm prepared by parada, gandhak is known as tarakrishti or raupyakristi

तार्ण
tārṇa
तार्णं तृणमयम्। (ड.-सु.सू. 26/19), तृणमय शल्य, blade of straw (a foreign body)

तालक
tālaka
देखें तुङ्गीनास। (सु.क. 8/15-16), एक प्रकार का सविष कीट, a type of poisonous insect

तालयन्त्र
tālayantra
तालमत्र शकलमाहुः, मत्स्यस्य मीनस्य, तालतुल्ये प्रतनुमुखे इत्यर्थः। (ड.-सु.सू. 7/12), मत्स्यगलतालकवत्। (अ.सं.सू. 34/7), मत्स्य के ताल के समान आकृति युक्त यन्त्र, scoop

तिक्तरस
tiktarasa
तिक्तो विशदयति वदनं विशोधयति कण्ठं प्रतिहन्ति रसनाम्। (अ.सं.सू. 18/4), जो मुख एवं कण्ठ का विशोधन करता है एवं जिह्वा की स्वादशक्ति को नष्ट करता है, वह तिक्तरस है, bitter taste

तितिक्षत
titikṣata
तितिक्षत इति तितिक्षत इव। (चक्र.-च.इ. 10/3), सहनशील की तरह अपने प्राण प्रिय होने के कारण मरण की प्रतीक्षा करने वाला, one who is waiting to die patiently

तितिक्षा
titikṣā
तितिक्षा क्षमा। (ड.-सु.शा. 1/8), क्षमा, pardon

तिनि
tini
तिनिः तिनिसः। (ड.-सु.चि. 16/43), तिनिश, *Oegeinia dalbargioides*

तिनिश
tiniśa
तिनिशः स्यन्दश्चक्री शताङ्गशकटो रथः रथिको भस्मगर्भश्च मेषी जलधरो दश। (रा.नि. 9/14), तिनिशः स्यन्दनः। (ड.-सु.क. 6/3), स्यन्द, तिरिच्छ, *Oeginia dalbarioides*

तिमि
timi
तिमिर्महत्तमो मत्स्यः। (ड.-सु.सू. 46/118), समुद्र में होने वाली बड़ी मछली, a big sea fish

तिमिङ्गिल
timiṅgila
तिमिङ्गिलस्तोऽपि महत्तमः। (ड.-सु.सू. 46/118), समुद्र में होने वाली बड़ी मछली, a bigger sea fish

तिर्यग्विद्धा
tiryagviddhā
तिर्यक् प्रणिहितशस्त्रा किंचिच्छेषा तिर्यग्विद्धा। (सु.शा. 8/19), शस्त्र के टेढ़े प्रहार से, टेढ़ी कटी हुई सिरा, किंचित् शेष, असम्यक् (दुष्ट) सिरा वेध का एक प्रकार, a type of improper phlebotomy caused by oblique incision

तिष्य
tiṣya
तिष्य पुष्यनक्षत्रम्। (चक्र.-च.वि. 8/9), पुष्य नक्षत्र, pushya constellation

तीक्ष्णक्षार
tīkṣṇakṣāra
दंत्यादिद्रव्यप्रतिवापेन सहितः पक्वः पाक्यसंज्ञो भवति तीक्ष्णश्चेत्यर्थः। (ड.-सु.सू. 11/13), क्षार में डुबोने पर एरण्ड नाल को सौ वाक्मात्रा से पूर्व जलाने वाला क्षार, अत्यन्त क्षमता वाला क्षार, alkali having strong potency, obtained by doing avapa and prativapa

तीक्ष्णगन्ध
tīkṣṇagandha
तीक्ष्णोगन्धश्चक्षुर्विरेचनकारकः यथा कृष्णजीरकादीनाम्। (चक्र.-च.सू. 11/37), आँख से आँसू निकालने वाला, तीक्ष्ण गन्ध कहा जाता है, यथा कृष्णजीरक आदि, the odour causing lacrimation, like black caraway seed

तीर्थ
tīrtha
तीर्थं गुरुः। (हे.-अ.हृ.सू. 1/28), गुरु, preceptor

तीव्ररूक्ष
tīvrarūkṣa
तीव्राश्च रूक्षाश्च तीव्ररूक्षाः। (चक्र.-च.सू. 6/6), जो तीव्र एवं रूक्ष दोनों हो, which is both tivra (sharp) and ruksha (dry)

तुङ्गीनास
tuṅgīnāsa
तुङ्गीनासो विचिलकस्तालको वाहकस्तथा। तैर्भवन्तीह दष्टानां वेगज्ञानानि सर्पवत्। (सु.क. 8/15-16), एक प्रकार का सन्निपातिक सविष प्राणनाशक कीट, a type of poisonous insect

तुण्डनाभ
tuṇḍanābha
तुण्डनाभः सर्षपिको वल्गुली शम्बुकस्तथा। तैर्भवन्तीह दष्टानां वेगज्ञानानि सर्पवत्। (सु. क. 8/15-18), एक प्रकार का सन्निपातिक सविष प्राणनाशक कीट, a type of poisonous insect

तुण्डिकेरी
tuṇḍikerī
1. क्षुपभेदः, तुण्डिकेरी वनकार्पासिका, तत्पुष्पाकृतीनि। (ड.-सु.नि. 2/10), तुण्डिकेरी बिम्बी। (गय.-सु.नि. 2/10), वनकपास के पुष्प के आकार सदृश, बिम्बी, resembling wild cotton flower 2. तालुगतरोगः, तुण्डिकेरी वनकार्पासिका, तत्फलानुकारी व्याधिरयम्। (ड.-सु.नि. 16/42), तालु में वनकपास के फल के आकार के समान वृद्धि जन्य रोग, tonsillar abscess

तुन्नसेवनी
tunnasevanī
तुन्नसेवनीमिति यथा वस्त्रं पाटितं तन्तुवायुकाः सन्दधति तद्वत तुन्नसेवनीं सीव्येत्। (ड.-सु.सू. 25/22), फटे हुए वस्त्र को धागे से सिलने के समान व्रण सीवन करना, a type of uninterrepted suturing

तुमुलस्वन
tumulasvana
तुमुलस्वनैः प्रचण्डगर्जितैः। (ड.-सु.सू. 6/32), तीव्र/प्रचण्ड गर्जना, loud sound of clouds

तुला
tulā
तुला पलशतम्। (शा.सं.प्र. 1/32), 100 पल को एक तुला कहते है, 100 palas make 1 tula

तुल्यशीला
tulyasīlā
तुल्यशीलां समानस्वभावाम्। (ड.-सु.चि. 24/130), सम स्वभाव वाली स्त्री, an even natured lady

तुषोदक
tuṣodaka
तुषोदकं सतुषैर्यवैः सन्धानविशेषात् काञ्जिकम्। (चक्र.-च.सू. 3/15), विशेष सन्धान पूर्वक जौं से बनाए गए खट्टे तरल पदार्थ काँजी को तुषोदक कहते हैं, the sour gruel made of whole barley by fermentation

तुहिनोदक
tuhinodaka
तुहिनोदकं हिमपानीयम्। (ड.-सु.उ. 47/55), बर्फीला पानी, ice cold water

तृणपञ्चमूल
tṛṇapañcamūla
कुशकाशनलदर्भकाण्डेक्षुका इति तृणसंज्ञकः। (सु.सू. 38/77), शरेक्षुदर्भकाशानां गालीनां मूलमेव च। (च.चि. 1/44), कुश, काश, नल, दर्भ, इक्षु इन पांचों के मूलों को तृणपञ्चमूल कहते हैं, शर, इक्षु, दर्भ, काश, एव गाली, ये द्रव्य तृणपञ्चमूल कहे जाते हैं, the combination of roots of kusha, kasha, nal, darbha, ikshu is known as trinapancamula

तृणलोप
tṛṇalopa
तृणलोपं तृणगुल्मम्। (हे.-अ.हृ.सू. 29/13), घास का झुण्ड, grass bush

तृतीयकज्वर
tṛtīyakajvara
तृतीयदिनभावितम्। (चक्र.-च.चि. 3/76), प्रति तीसरे दिवस आने वाला ज्वर, tertiary fever

तृप्ति
tṛpti
तृप्तमिवात्मानं सर्वदा मन्यते। (चक्र.-च.सू. 20/17), नानात्मज कफज विकार, उदर में बिना खाये ही तृप्त अनुभव करना, satiety

तृप्तिघ्न
tṛptighna
तृप्तिः श्लेष्मविकारो येन तृप्तिमिवात्मानं मन्यते, तदघ्नं तृप्तिघ्नम्। (चक्र.-च.सू. 4/8), तृप्ति नामक श्लेष्मविकार में व्यक्ति भोजन किए बिना ही स्वयं को तृप्त समझता है, तृप्ति नाशक चिकित्सा को तृप्तिघ्न कहते हैं, a disease of 'kapha' in which a person feels satisfied even without having food, the medicines which cure such feeling are called triptighna

तृषा
tṛṣa
पित्तप्रकोपो मूर्च्छा च शरीरसदनं तृषा। दाहः स्वराङ्गदौर्बल्यमतिस्विन्नस्य लक्षणम्। (च.सू. 14/14), अतिस्वेदित का एक लक्षण, प्यास, पिपासा, thirst (a complication of excessive sudation)

तृष्णा
tṛṣṇā
सततं यः पिबेद्वारि न तृप्तिमाधिच्छति, पुनः काङ्क्षति तोयं च तं तृष्णार्दितमादिशेत्। (सु.उ. 48/3), पीतं पीतं हि जलं शोषयतस्तावतो न याति शमम्। (च.चि. 22/7), बार-बार जल पीते रहने के बाद भी मुख का सूखना एवं पुनः जल की आकांक्षा होना, polydispsia, excessive thirst

तेज
teja
1.तेजः देहोष्मा शुक्रं वा। (चक्र.-च.चि. 15/3), तेजस्त्वग्गतं भ्राजिकाग्नि संज्ञं

पित्तम्। (ड.-सु.चि. 38/50), तेजः पित्तोष्मा। (ड.-सु.उ. 47/70), देह उष्मा, पित्त, उष्मा, भ्राजकपित्त, body heat, pitta heat, bhrajaka pitta 2. तेजः पराक्रमः। (ड.-सु.सू. 45/96), बहादुरता, valour

तेजस्त्व
tejastva
तेजस्विता। (र.र.स. 8/83), द्रुति बनने पर उसमें चमक का होना ही तेजस्विता कहलाता है, glittering

तेजस्विनी
tejasvinī
तेजस्विनी तेजवती तेजोह्वा तथा। (भा.प्र.पू. 1/69), तेजबल, toothache tree, *Zanthoxylum alatum*

तेजोह्वा
tejohvā
देखें. तेजस्विनी, वनस्पति-तेजस्विनी, तेजोवती। (सु.चि. 9/61), toothache tree *Zanthoxylum alatum*

तैल
taila
तिलादिस्निग्धवस्तूनां स्नेहस्तैलमुदाहृतम्। (भा.प्र.पू.तैलवर्ग 1), तैल। (च.सू. 13/13), वातश्लेष्मप्रशमनानां अग्र्यम्। (च.सू. 25/40), तिल से उद्भव होने से इसे तैल कहते हैं, वातकफ शमन करने वालों में श्रेष्ठ, oil

तोटक
toṭaka
चिपिटपिच्चिटककषायवासिकसर्षपकतोटकवर्चःकीट कौण्डिन्यकाः शकृन्मूत्रविषाः। (सु.क. 3/5), एक प्रकार का कीट, जिसमे मूत्र एवं पुरीष विषयुक्त होते हैं, a type of insect whose stool and urine are poisonous

तोद
toda
सूचीव्यधनमिव वेदना। (ड.-सु.उ. 6/12), सुई से चुभने के समान वेदना, pricking pain

तोदन
todana
कषायं मधुरं रूक्षं तोदनं कफवातजित्। (सु.सू. 46/167), एक प्रकार का फल शाक, a type of vegetable

त्रपुस
trapusa
त्रपुसादयः कर्कटीभेदाः। (ड.-सु.सू. 9/4), कर्कटी, 'खीरा', cucumber

त्रयस्रा
trayasrā
त्रयस्रास्त्रिकोणाः। (ड.-सु.चि. 2/5), त्रिकोणीय, तिकोना, (व्रण के आकार के संदर्भ में), tringular (in the context of shape of wound)

त्रस्त
trasta
त्रस्तान् उद्विग्नान्। (ड.-सु.उ. 27/6), उद्विग्न, बेचैन, डरा होना, anxious, stressed, scared

त्रायन्ति
trāyanti
पटोलमूलामरदारुदन्तीत्रायन्तिपिप्पल्यभयाविशालाः। (च.चि. 12/53), त्रायमाण, *Delphinium zalil*

त्रायन्तिका
trāyantikā
त्रायन्तिका मदयन्तिका। (ड.-सु.चि. 11/10), मेंहदी, हिना, henna

त्रायन्ती	trāyantī त्रायमाणा। (भा.प्र.पू. गुडूच्यादि 243), *Delphinium zalil*
त्रिकटु	trikaṭu पिप्पली मरिचं शुण्ठी त्रिभिस्त्र्यूषणमुच्यते।। (शा.सं.म. 6/92), पिप्पली, मरिच, सोंठ, इन तीन द्रव्यों को त्रिकटु कहते है, इन्हें 'त्र्यूषण' भी कहा जाता है, pippali, marica, & sunthi are collectively known as trikatu
त्रिकग्रह	trikagraha त्रिक प्रदेश में स्तम्भ, अस्सी वातविकारों में से एक। (च.सू. 20/11), sacral stiffness
त्रिजातक	trijātaka त्वगेलापत्रकैस्तुल्यैस्त्रिसुगन्धि त्रिजातकम्। (भा.प्र. कर्पूरादि 72), दालचीनी, छोटी इलाचयी और तेजपत्र, इन तीनों द्रव्यों को समान भाग में लेने से त्रिजातक या त्रिसुगन्धि कहा जाता है, tvaka, ela and patra are collectively known as trijataka or trisugandhi
त्रिफला	triphalā पथ्याबिभीतकधात्रीनां फलैः स्यात्त्रिफला समः। फलत्रिकं च त्रिफला सा वरा च प्रकीर्तिता। (भा.प्र.पू.हरीतक्यादिवर्ग 42), हरीतकी, बिभीतक एवं आमलकी, इन तीनों को समभाग में लेने से त्रिफला कहा जाता है, the combination of fruits of haritaki, vibhitaka and amalaki in equal quantity is known as triphala
त्रिमद	trimada मुस्तं चित्रकं विडङ्गञ्च त्रिमदः समुदाहृतः। (भै.र. 4/96), नागरमोथा, चित्रकमूल एवं विडंग, इन तीनों को त्रिमद कहते हैं, musta, chitrakamula and vidanga are collectively known as trimada
त्रिरह्न	trirahna दिन में तीन बार, thrice a day
त्रिवर्ग	trivarga धर्मार्थकामाः। (अरु.-अ.हृ.सू. 2/30), धर्म, अर्थ एवं काम, virtue, wealth and passion
त्रिविधकर्म	trividhakarma त्रिविधं कर्म - पूर्वकर्म, प्रधानकर्म, पश्चात्कर्मेति। (सु.सू. 5/3), शल्यकर्म सम्बन्धी चिकित्सा तीन भागों में विभक्त है, पूर्व कर्म, प्रधान कर्म और पश्चात् कर्म, preoperative, operative and post operative procedures
त्रिवृत	trivṛta त्रिभिःस्नेहैस्त्रिवृतः। (अरु.-अ.हृ.सू; 16/4), किन्हीं तीन स्नेहों को मिलाकर पीना त्रिवृत स्नेह है, use of mixture of any three snehas
त्रिवृतस्नेह	trivṛtasneha घृततैलवसाभिस्त्रिवृतः। (हे.-अ.हृ.सू. 16/4), घृत, तैल एवं वसा को संयुक्त रूप से त्रिवृत कहते हैं, combined administration of ghee, oil and fat

त्रिशरा	triśarā तिलतण्डुलमाषैश्च कृशरा त्रिशरोति सा। (वै.परि.प्र. 3/174) तिल, चावल एवं माष से बनी खिचड़ी को त्रिशरा कहते हैं, a gruel made up of tila, rice and masha
त्रिसूत्र	trisūtra त्रीणी हेत्वादीनि सूत्रयन्ते यस्मिन् येन वा तत् त्रिसूत्रम्। (चक्र.-च.सू. 1/24), हेतु, लिंग एवं औषधि इन तीनों के समन्वित रूप को त्रिसूत्र कहते हैं, the cause, the character and the medicament, these three are collectively refered to as three fold principle or trisutra
त्रिस्कन्ध	triskandha त्रयो हेत्वादयः स्कन्धरूपा यस्य स त्रिस्कन्धः; स्कन्धश्च स्थूलावयवः प्रविभागो वा। (चक्र.-च.सू. 1/25), अवयव या विभाग को स्कन्ध कहते हैं, हेतु, लिंग एवं औषध, ये तीनों जिसके स्कन्ध या अवयव है, उसे त्रिस्कन्ध कहते हैं, division or branch is called skandha, the science having its brnach divsions as three fold principles in called triskandha
त्रैष्टुभ	traiṣṭubha गायत्रस्त्रैष्टुभः पाङ्गक्तो जागतः शाक्करस्तथा। (सु.चि. 29/7), सोम का एक भेद, a type of soma (a divine medicine)
त्वक्सार	tvaksāra त्वचाधातु आधिक्य युक्त पुरुष। (च.वि. 8/103), predominance of dermal characteristics
त्वगवदरण	tvagavadaraṇa त्वगवदरणं बाह्यत्वङ्मात्रावदरणम्। (चक्र.-च.सू. 20/14), बाह्य त्वचा का फटना त्वगवदरण कहलाता है, supeficial skin tear
त्वग्दग्ध	tvagdagdha तत्र शब्दप्रादुर्भावो दुर्गन्धता त्वक्संकोचश्च त्वग्दग्धे। (सु.सू. 12/8), त्वचा को दहन करना और इसके लक्षण शब्द का सुनाई देना, दुर्गन्ध आना और त्वचा का सिकुड़ जाना आदि हैं, a type of therapeutic cauterization confining to skin only
त्सरु	tsaru त्सरुः असिमुष्टिः। (अरु.-अ.हृ.सू. 26/17), मुट्ठी, fist
थ	tha एक प्रकार का रोग, a kind of disease
थुत्कार	thutkāra थूँकने की आवाज, the sound made in spitting
थुर्व्र	thurvra क्षति पहुँचाना to hurt, to injure
थूथू	thūthū थूँकने समान आवाज, inuitative sound of spitting
थोडन	thoḍana आवरण, covering, wrapping up

दंश
daṃśa
1. कीटः। (च.इ. 2/21), कीट, insect 2. दन्तः। (का.सू. 20/5), दांत, tooth 3. दंशो वनमक्षिका। (ड.-सु.सू. 18/29), वनमक्षिका, a fly 4. दष्टस्थान, कीट के काटने की जगह place of bite 5. शिग्रु का पर्याय। (ध.नि. 4/39), synonym of shigru 6. दांत से काटना, biting 7. यन्त्र संदश, an instrument

दंशावदरण
daṃśāvadaraṇa
दंशस्थान स्फोटनम्। (च.चि. 23/168), काटे हुए स्थान का फट जाना, tearing of the bite site

दंष्ट्रा
daṃṣṭrā
तमोरुभयतः पार्श्वयोरपि वस्तौ, तयरपि दंष्ट्रे, शेषाः स्वरुढा हानव्या इति चोच्यन्ते; तथा अधस्तात्। (का.सं.सू. 20/4), उन दोनों (राजदन्त) के पार्श्व में दोनों ओर वस्त होते हैं और इनके दोनों ओर दंष्ट्र होते है, दाढ, canine teeth

दंष्ट्रि
daṃṣṭri
वराहः। (र.र.स. 12/69), सुअर, wild pig

दक
daka
दक उदकम्, पानी, water

दकोदर
dakodara
जलोदरम्। (च.सू. 19/4), जलोदर, ascites

दकोदरयन्त्र
dakodarayantra
दकोदरस्रावणार्थं नाडीयन्त्रम्। (सु.सू. 7/13), जलोदर से पानी निकालने वाला एक प्रकार का नाड़ीयंत्र, a type of nadiyantra used to take out fluid from ascites

दक्ष
dakṣa
1. नृप। (अ.हृ.सू. 18/16), राजा, king 2. देवता विशेष। (च.चि. 3/17), दक्ष प्रजापति। (सु.सू. 43/3), a diety 3. कुक्कुटः। (भा.पू.मांसवर्ग. 62), मुर्गा/मुर्गी, hen 4. चतुर। (सु.क. 1/10), शीघ्रकारी, intelligent, quick

दक्षाण्ड
dakṣāṇḍa
दक्षः गोष्ठकुक्कुटः। (चक्र.-च.चि. 11/25), मुर्गी का अण्डा, egg of hen

दक्षिण
dakṣiṇa
1. दक्षिण एक दिशा, south 2. अभिजाताः, कुलीना इति यावत्। (ड.-सु.क. 1/14), अच्छे परिवार का व्यक्ति, superior caste 3. दायां, right

दक्षिणात्यक
dakṣiṇātyaka
नारिकेल। (ध.नि. 5/74), नारियल, coconut fruit

दक्षिणायन
dakṣiṇāyana
दक्षिणां दिशां प्रति अयनं दक्षिणायनम्। (चक्र.-च.सू. 6/4), सूर्य के दक्षिण दिशा की ओर गमन को दक्षिणायन कहते हैं, southward movement of the sun

दक्षिणावर्ता
dakṣiṇāvartā
वृश्चिकाली नामक वनस्पति। (रा.परि. 9/7/1), मेषश्रृंगी, मेढ़ासिंगी, a plant

दग्ध
dagdha
1. इतरथादग्ध, प्रमाददग्ध। (सु.सू. 12/15), स्नेह एवं रूक्षदग्ध, प्लुष्ट, दुर्दग्ध, सम्यकदग्ध एवं अतिदग्ध भेद से चार प्रकार का होता है, burn & scald 2. अग्निकर्म, therapeutic cauterization

दग्धिका
dagdhikā
दग्धा वनस्पति। (रा.परि. 9/28), दग्ध, a plant

दण्ड
daṇḍa
1. लगुड। (ड.-सु.सू. 17/5), लोहे या लकड़ी का डंडा, stick 2. घटिका, 24 मिनट का समय, 24 minutes period

दण्डक
daṇḍaka
दण्डवत् स्तब्धगात्रस्य। (च.चि. 28/52), दण्ड के समान शरीर का जकड़ना stiffness of body

दण्डापतानक
daṇḍāpatānaka
स दण्डवत् स्तम्भयति सोऽन्नं कृच्छ्रान्निषेवते। (सु.नि. 1/53), पाणिपादशिरः पृष्ठश्रोणीः स्तम्भयति मारुत दण्डवत् स्तब्धगात्रस्य दण्डकः सोऽनुपक्रमः। (च.चि. 28/51), अपतानक में जब रोगी स्तम्भ होने से डण्डे के समान हो जाता है, उसे दण्डापतानक कहते है, वायु, हाथ, पैर, शिर, पीठ एवं श्रोणी का स्तम्भ करके शरीर को दण्डे की तरह स्तब्ध कर देती है, उसे दण्डक कहते हैं, यह असाध्य है और चक्रपाणि के अनुसार दण्डाक्षेप रोग है, when vata causes stiffness in hand, feet, head, back and spine, then body of a person becomes like stick, it is incurable disease, according to chakrapani it is dandaksepa

दण्डालसक
daṇḍālasaka
अतिमात्र प्रदुष्टाश्च दोषाः प्रदुष्टामबद्धमार्गास्तिर्यग्गच्छन्तः कदाचिदेव केवलमस्य शरीरं दण्डवत् स्तम्भयन्ति, ततस्तं दण्डालसकमसाध्यं ब्रुवते। (च.वि. 2/12), अत्यर्थदुष्टास्तु दोषा दुष्टामबद्धखाः यान्तस्तिर्यक्तनुं सर्वो दण्डवत्स्तम्भयन्ति चेत्, दण्डकालसकं नाम तं त्यजेदाशुकारिणम्। (अ.हृ.सू. 8/12), दण्डवद्यदि स्तम्भयन्ति प्रसारणाकुञ्चनरहितं कुर्वन्ति। (अरु.-अ.हृ.सू. 8/12), अलसक में अधिक बढ़े हुये दोष दुष्ट आम से मार्ग अवरुद्ध होने के कारण तिर्यक् गति से शरीर को दण्ड के समान स्तम्भित कर देते हैं, उसे दण्डालसक कहते हैं, यह असाध्य है, दण्ड के समान होने का अभिप्राय प्रसारण और आकुंचन रहित होना है, in alasaka, the dusta ama obstructs the channels of excessively vitiated dosha leading to their oblique movements causing stiffness all over the body, body becomes like stick, stick like means devoid of flexion, extension movements, this condition is known as dandalasaka, it is an incurable condition

दण्डाहत
daṇḍāhata
मथित (मथे हुए) दही का एक पर्याय दण्डाहत है। (ध.नि 6/174), churned yogurt

दण्डैरक
daṇḍairaka
दण्डैरका 'होग्गल' इति ख्याता। (चक्र.-च.चि. 26/51), दण्डैरका गुन्द्राख्यगुल्मः,

नलो वा। (चक्र.-च.क. 1/25), होग्गल, गुन्द्रानामक गुल्म अथवा नल, a plant known as hoggala, gundra or nala

दद्रु dadru
सकण्डूरागपिडकं दद्रुमण्डलमुद्गतम्। (च.चि. 7/23), कण्डु सहित, रक्तपिडका जो उभरे मण्डल से युक्त हो, उसे द्रद्रु कहते हैं, tinea corporis

दधि dadhi
गोरस वर्ग। (च.सू. 27/225-228), दधिवर्ग। (सु.सू. 45/65-83), दूध को जमाने पर निर्मित द्रव्य curd/yogurt

दधिकूर्चिका dadhikūrcikā
दध्ना सह पयः पक्वं सा भवेद् दधिकूर्चिका। (वै.प.प्र.), दूध को दही के साथ मिलाकर अग्नि पर पकाने से निर्मित कल्पना, a preparation obtained by boiling curd and milk togather

दधित्थ dadhittha
दधित्थः कपित्थः। (चक्र.-च.सू. 2/19), *Feronia elephantum*

दध्युत्तरक dadhyuttaraka
दध्नःसरः। (ड.-सु.उ. 12/40), दधिसर, दही का पानी supernatent fluid of curd or yogurt

दन्त danta
दन्तानामुलूखला यथाश्रिता दन्ताः। (चक्र.-च.शा. 7/6), द्वात्रिंशद्दन्ताः। (का.सू. 20/47), मनुष्यों में 32 दांत होते हैं, दांत दो प्रकार के होते हैं, सकृज्जात एवं द्विज, teeth (tooth)

दन्तजन्मिक dantajanmika
अथातो दन्तजन्मिकमध्यायं व्याख्यास्यामः। (का.सं.सू. 20/1), दांतों की उत्पत्ति का जिसमें वर्णन हो ऐसा अध्याय, pertaining to dentition

दन्तधावन dantadhāvana
खदिर पर्याय। (भा.प्र.पू. वटादि 30), खैर, *Acacia catechu*

दन्तनिषेचन dantaniṣecana
अथ खलु भगवन् देहिनां जातानां अभिवर्धमानानां कतिषु मासेषु दन्तन्निषिच्यन्ते, निषिक्ताश्च कियता कालेन मूर्तीभवन्ति, मूर्तिभूताश्च कदोद्भिद्यन्ते, कानि चैषां पूर्वरूपाणि, के चोपद्रवाः। (का.सं.सू. 20/3), भगवन्, प्राणियों में उत्पन्न होकर बढ़ते हुए कितने मासों में दांतों का निषेचन होता है (अर्थात् मसूड़ों के अंदर बैठते हैं), निषेचन के कितने समय बाद वे मूर्तरूप धारण करते हैं, मूर्तरूप होने के बाद प्रकट होते हैं, दांतों के निकलने के क्या पूर्वरूप होते हैं और दन्तोद्भेद के समय क्या क्या उपद्रव होते हैं, मसूड़ों में दंतकलिका की उत्पत्ति, formation of dental buds

दन्तपवन dantapavana
दन्तान् पुनातीति दन्तपवनं दन्तकाष्ठम्। (चक्र.-च.सू. 5/72), दांतों को जिससे साफ किया जाता है या जो दांतों को साफ करे, उसे दन्तपवन (दन्तकाष्ठ) कहा गया है, teeth cleaning stick, toothbrush

23—4 Min. of HRD/2016

दन्तपाली dantapālī
दन्तपाली समधुना चूर्णेन प्रतिसारयेत्। (अ.ह.उ. 2/35), दंतपाली (दांतों की पंक्ति) पर औषधचूर्ण का मधु सहित प्रतिसारण, row of teeth

दन्तबन्धन dantabandhana
देखें दन्तसंपत्। (का.सं.सू. 20/8), मसूड़े, gums

दन्तमूर्ति dantamūrti
देखें दन्तनिषेचन। (का.सं.सू. 20/3), मसूड़ों में दांतों का आकार ग्रहण करना, shaping of teeth within gums

दन्तवेष्टक dantaveṣṭaka
दन्तवेष्टको दन्तवेष्टनमांसम्। (ड.-सु.सू. 5/13), दन्त का मांसप्रदेश, मसूड़े, gums

दन्तसम्पत् dantasampat
पूर्णता समता घनता शुक्लता स्निग्धता श्लक्ष्णता निर्मलता निरामयता किञ्चिदुत्तरोन्नतता, दन्तबन्धनानां च समता रक्तता स्निग्धता बृहद्घनस्थिर मूलता चेति दन्तसंपदुच्यते। (का.सं. 20/8), दांतों की पूर्णता, समानता, कठोरता, सफेदी, स्निग्धता, चिकनापन, निर्मल होना, निरोग होना, कुछ उन्नत बड़े होना तथा दन्तबन्धन (मसूड़ो) का समान लाल, स्निग्ध तथा बड़े, घन एवं स्थिर मूल वाले होना, ये दन्तसंपत् (दांतों के गुण) कहलाते हैं, सर्वगुण संपन्न, सुंदर दांत, perfect, good quality teeth

दन्ताद dantāda
केशरोमनखादाश्च दन्तादाः किक्किशास्तथा। कुष्ठजाः सपरिसर्पा ज्ञेयाः शोणितः संभवाः। (सु.उ. 54/15), एक प्रकार का रक्तजक्रिमि जो कि कुष्ठादि को उत्पन्न करता है, a blood born worm causing skin disease

दन्तान् खादन dantān khādana
दन्तान् खादति परस्परं दन्तपीडनं करोति। (ड.-सु.नि. 3/10), दांतों को परस्पर भींचना या दबाना, वाताश्मरी लक्षण, grinding of teeth

दन्तान्तर dantāntara
दन्तयोर्मध्ये योऽवकाशः सः। दांतों के बीच का अन्तर, space between two tooth

दन्ताशय dantāśaya
दन्तस्थानम्। (अ.सं.उ. 2), मसूड़े के अन्दर वह स्थान जहाँ दन्तमूल स्थित रहते हैं, alveolus

दन्तिनी dantinī
दन्ती समान एक तीक्ष्ण विरेचक द्रव्य, danti

दन्तिमद dantimada
हस्तिमदः। (रा.नि. 6/20), हाथी का मद

दन्ती dantī
उदुम्बरपर्णी। (ड.-सु.चि. 2/89), निकुम्भ, मुकूलक तयोर्मूलानि। तीक्ष्ण विरेचन कराने वाली एक औषध, a variety of plant *Baliospermum montanum*

दन्तीबीज dantibīja
जयपाल। (ध.नि. 1/227), जमालगोटा, *lat- Croton tiglium,* fam. euphorbiaceae

दन्तुरत्वच danturtvaca
मातुलुङ्ग। (रा.नि. 11/27), मातुलुंग फल, variety of lemon

दन्तोद्भेद dantodbheda
देखें दन्तनिषेचन। (का.सं.सू. 20/3), दांतों का बाहर निकलना, eruption of teeth

दन्तोलूखल dantolūkhala
दन्तानामुलूखला यत्राश्रिता दन्ताः। (चक्र.-च.शा. 7/6), जबड़ों में दाँतों के लिए गड्ढे, alveolus

दन्त्य dantya
दन्तेभ्यो हितम्। दाँतो के लिए हितकर, beneficial to teeth

दन्त्यरिष्ट dantyariṣṭa
दन्ती आदि से बनाया गया अरिष्ट जो कि अर्श चिकित्सा मे वर्णित है। (च.चि. 14/144-147), an arishta prepared from danti, chitraka etc

दन्त्यादिगण dantyādigaṇa
दन्त्यादि गण लौह कल्पना में प्रयुक्त होना है। (र.र.स. 28/62), used for loha kalpana

दन्दशूका dandaśūkā
दन्दशूकाः पुनः पुनर्भक्षणशीला। (चक्र.-च.वि. 8/97), बार-बार खाने वाली, voracious, having habit of frequent eating

दम dama
दमनम्। (ध.नि. 3/66), दमन नाम की एक वनस्पति, a plant named damana

दमयन्ती damayantī
मल्लिका। (रा.नि. 10/225), मोगरा पुष्प, flower of mogara

दम्पति dampati
जायापती। (ड.-सु.चि. 24/92), पति एवं पत्नी को दम्पति कहते हैं, married couple

दम्भ dambha
दम्भः पुस्तकवैद्यभाण्डादिभिः स्वार्थोत्कर्षप्रतिपादनम्। (चक्र.-च.सू. 30/79), पुस्तक, वैद्य, भाण्डादि के द्वारा अपने स्वार्थ की उत्कर्षता का प्रतिपादन करना 'दम्भ' कहलाता है, pretention

दर dara
दरदरिका। (चक्र.-च.सू. 17/31), हृत्कम्प, हृदय में कम्पन होना या हृदय गति का बढना, palpitation

दरण daraṇa
दीर्यते आरयेव। (ड.-सु.उ. 43/6), वेदना विशेष, आरे से काटने के समान वेदना विशेष, cutting pain

दर्दुर dardura
1. रसको द्विविधः प्रोक्तो दर्दुरः कारवेल्लकः। सदलो दर्दुरः प्रोक्तो...... । (र.र.स. 2/142), खर्पर भेद, वह खर्पर जो पत्रयुक्त होता है, उसे दर्दुर कहते हैं, calamite 2. मण्डूक। (इन्दु-अ.सं.उ. 43), मेंढक का अन्य नाम दर्दुर होता है, frog 3. धान्यविशेष। (च.सू. 27/14), एक प्रकार का धान्य, a grain

दर्दुरी darduri
पुनर्नवामूल। (र.र.स. 12/82), सूचिकाभरणरस में वर्णित, इससे मण्डूकपर्णी का भी ग्रहण किया जाता है, पुनर्नवा मूल, a herb

दर्प darpa
कस्तूरिका। (अरु.-अ.हृ.सू. 3/11), कस्तूरी, musk

दर्पण darpaṇa
आदर्शः। (ड.-सु.उ. 60/19), मुखदर्शन हेतु प्रयुक्त दर्पण, mirror

दर्भ darbha
कुशः। (अरु.-अ.हृ.सू. 15/21), उलुयातृणम्। (चक्र.-च.सू. 4/12), तृणपंचमूल में सम्मिलित एक द्रव्य, डाभ, a grass *Eragrostis cynosuroides*

दर्भाह्वय darbhāhvya
मुञ्ज। (रा.नि. शाल्मल्यादि 84), मुंजतृण, मूंज,

दर्विका darvikā
चमसः। (र.र.स. 3/34), चम्मच, spoon

दर्वी darvī
1. दारुहस्तकः। (ड.-सु.सू. 7/14), कम्बिः। (ड.-सु.क. 4/23), दर्व्याकार शलाकायन्त्र, अर्श में क्षार पातन हेतु प्रयुक्त चम्मच। (सु.चि. 6/8), करछुल, चम्मच, spoon, ladle 2. दारुहरिद्रा पर्याय। (ध.नि. 1/58), हिं. - दारुहल्दी, *Berbaris aristata*

दर्व्याकृति darvyākṛti
दर्व्याकृतिनीति दर्वी दारुहस्तकः। (ड.-सु.सू. 7/14), चम्मच के आकार का, spoon shaped

दर्शन darśana
दर्शनमिति चक्षुः। (चक्र.-च.चि. 23/120), पञ्चबुद्धिन्द्रियाणि दर्शनं......। (च.शा. 7/7), देखना, visual sense, eye, vision

दल dala
1. मसूरदलेति मसूरस्य दलितस्य निस्तुषखण्डं दलमित्युच्यते। (ड.-सु.सू. 7/14), मसूर की छिलका निकाली हुई दाल, unhusked lentil 2. तमालपत्र का पर्याय। (ध.नि. 2/52), *Cinnamomum tamala*

दलाम्ल dalāmla
चुक्रम्। (रा.परि. 7/64), शाक, तिनपतिया, चुक्र, leafy vegetable

दव dava
1. दावानल। (सु.उ. 41/30), दावाग्नि, जंगल की आग, wild forest fire 2.

मुखोष्ठतालुषु दाहो दवः। (अ.सं.सू. 20/18), मुख, ओष्ठ एवं तालु में होने वाली जलन को दव कहते हैं, burning sensation in mouth, lips and palate

दवथु davathu
दवथुः धकधकिका इति लोके ख्याता। (चक्र.-च.सू. 20/14), चक्षुरादि इंद्रियों में दाह का होना, जिसे लोक में 'धकधकिका' कहा जाता है, burning sensation in sense organs

दवन davana
दवनं सन्तापः। (ड.-सु.उ. 45/9), सन्ताप, hotness

दशन daśana
1.दन्तः। (सु.चि. 22/29), प्रत्यङ्ग। (सु.सू. 35/12), दंत, teeth, tooth 2. भक्षण। (सु.नि. 15/3), दांत से काटना, biting

दशा daśā
सदशास्य वस्त्र प्रान्तः। कपड़े का अन्तिम भाग (छोर), end of cloth

दशाङ्ग daśāṅga
दश द्रव्यों का समूह, a preparation having ten drugs

दशाङ्गयोग daśāṅgayoga
दशाङ्गयोगमिति 'नागरं धान्यकं भार्गीमभयां सुरदारु च। वचां पर्पटकं मुस्तं भूतीकमथ कटफलम्। (ड.-सु.उ. 49/23), दस द्रव्यों का उपरोक्त योग जो कि कफज छर्दि में प्रयुक्त होता है, a decoction of 10 drugs useful in kaphaja chardi

दशाङ्घी daśaṇhhi
दशमूलम्। (र.र.स. 22/10), दशमूल, dashamula, root of ten herbs

दशाष्टक्रिया daśāṣṭakriyā
अष्टादश पारद संस्कारः। (र.र.स. 7/37), पारद के अठारह संस्कार, 18 processings of mercury

दष्ट daṣṭa
सर्पादि का काटना। (सु.सू. 42/10), snake bite

दष्टक daṣṭaka
सर्पदंशभेदः अयं सर्पदंश असाध्योवर्तते। (अ.सं. 3/41), सर्पदंश का एक प्रकार जो असाध्य होता है, a type of snake bite which is incurable

दष्टौष्ठ dastoustha
क्षत ओष्ठो यस्यः। (सु.शा. 10/51), होठों का काटना, biting of lips

दस्त dasta
वैद्य विशेषो अश्विनौ। (र.र.स. 27/143), विशिष्ट वैद्य, दोनों अश्विनी कुमार, celestial physician, both Ashvinikumar

दहन dahana
1. पाचनं दहनं च शस्त्रपदस्य। (ड.-सु.सू. 14/39), अग्नितप्त शस्त्र से दाहकर्म द्वारा रक्तस्राव को रोकना, रक्तस्राव को रोकने की चार विधियों में से एक, a procedure to achieve haemostasis by thermal cauterization 2. अग्नि आदि

कर्म। (सु.सू. 12), अग्निकर्म, cauterization 3. भल्लातक। (ध.नि 3/43), भिलावा, marking nut 4. चित्रक। (ध.नि. 2/80), चीता, chitraka 5. अग्नि। (ध.नि. 2/80), आग, fire

दहनविशेष dahanaviśeṣa
तत्र बलय-बिन्दु-विलेखा-प्रतिसारणानीति दहनविशेषः। (सु.सू. 12/11), दहन (अग्निकर्म) के विशिष्ट प्रकार-वलय, बिन्दु, रेखा और प्रतिसारण, specific types of cauterization

दहनागरु dahanāgaru
दाह उत्पन्न करने वाला अगरु, burning sensation causing agaru

दहनारति dahanārati
जलम्। (रा.नि. 14/318), अग्नि का शत्रु, water

दहनोपकरण dahanopakaraṇa
अग्न्यवचारणोपकरणानि। (ड.-सु.सू. 12/4), अग्निकर्म में काम आने वाले उपकरण, instruments used in thermal cauterization

दाक्षिण्य dākṣiṇya
परापेक्षिणी प्रकृतिः। (ड.-सु.सू. 45/207), दूसरों की सहायता करने वाली प्रकृति, helpful, kind

दाडिम dāḍima
अनार। (च.सू. 27/149-150), अनार, pomegranate

दाडिमादिरसक्रिया dāḍimādirasakriyā
दाडिमाद्यवलेहः। (सु.उ. 12/42), अनारादि द्रव्यों से निर्मित अवलेह, an avaleha prepared from pomegranate and other drugs

दाडिमाष्टक dāḍimāṣṭaka
दाडिम, चतुर्जात, यवानी आदि आठ द्रव्यों से निर्मित एक योग जो कि अतिसार में उपयोगी है। (शा.सं.म. 6/60), a powder mixture containing eight drugs such as dadima, chaturjata, yavani etc

दात्यूह dātyūha
दात्यूहः कालकण्टकः 'रायुक' इति लोके। (ड.-सु.सू. 46/67), रायुक, प्रतुद जाति का एक पक्षी, a pecker bird

दाधिकघृत dādhikaghṛta
गुल्म, प्लीह एवं शूल में उपयोगी एक घृत। (सु.उ. 42/29-30), a ghrita usefull in treatment of gulma, pliha and shula

दाधिकसर्पि dādhikasarpi
दाधिकघृत। (अ.सं.चि 16/6), dadhika ghrita

दान dāna
1. हस्तिमदः। (रा.परि. 6/20), रगड़ने से हाथी के गण्डस्थान का स्राव, हस्तिमद, ichor secreating from the temple of an elephant by rubbing 2. भेंट, donation, gift

दानवप्रिया dānavapriyā
ताम्बूल। (ध.परि. 3/2), पान, betel piper

दान्त dānta
1. शिक्षितः। (चक्र.-च.चि. 9/82), शिक्षित, जैसे पालतू सिंह, pet animal 2. क्षमनक। (ध.नि. 3/64), a plant named kshamanaka

दाम dāma
1. दाम संबाधेऽङ्गे इति संकटेऽङ्गे। (ड.-सु.सू. 18/18), व्रण बन्धन का एक प्रकार, सम्बाध अंग में प्रयोज्य, sling bandage 2. ग्रैवेयकादि पुष्पाभरणम्। (ड.-सु.सू. 19/25), ग्रीवादि में पुष्पमाला, garlend

दारक dāraka
पुत्रः, सुत, son

दारण dāraṇa
1. शरकर्णादिद्विधाकरणम्। (ड.-सु.सू. 7/17), दो भागों में चीरना या बांटना, dividing in two parts 2. विदारणं पक्वशोथस्य। (ड.-सु.सू. 37/10), पक्वशोथ का औषधि लेप से विदारण करना, bursting of an abscess by applying pastes of medicines

दारवी dāravī
दारवीं काष्ठमयीम्। (ड.-सु.चि. 20/43), लकड़ी से निर्मित, made from wood

दारी dārī
दारीमिति विपादिका। (ड.-सु.नि. 13/29), पाददारी, बिवाई, crack foot, rhagades

दारुण dāruṇa
1.दारुणं तु महाबलं ज्ञेय। (चक्र.-च.वि. 6/3; च.सू. 18/41; सु.चि. 7/3), बलवान, कठिन, तीक्ष्ण, severe, difficult, sharp 2. दारुण कृमि। (सु.उ. 54/12), दारुण कफज कृमि, one of the kaphaja krimis

दारुणक dāruṇaka
दारुणा कण्डुरा रूक्षा केशभूमिः प्रपाट्यते। कफवातप्रकोपेण विद्याद् दारुणकं तु तम्। (सु.नि. 13/35), (अ.सं.उ. 27), दारुणक कफ वात से कपाल में होने वाला एक क्षुद्र रोग है, इसमें केशभूमि रूक्ष, कठिन एवं कण्डुयुक्त होकर फटने लगती है, seborrhic dermatitis, a mild disease occuring in scalp due to kapha and vata, in this disease scalp skin becomes dry and hard with itching and cracking

दार्वीलेपन dārvīlepana
गुड़ या शर्करा का पाक करते समय कल्छुल से उसका चिपकना, sticking/adhering to laddle

दाह dāha
दाहः सर्वांगदहनमिव। (चक्र.-च.सू. 20/14), सन्तापः। (हे.-अ.हृ.सू. 11/7), अग्निनेव दुःखम्। (हे.-अ.हृ.नि. 6/32), अग्नि सदृश वेदना, संपूर्ण अंग में जलने की प्रतीति होना, दाह कहलाता है, burning sensation, generalised burning sensation

दिव्यचक्षु divyacakṣu
दिव्यमतीन्द्रियार्थदर्शि चक्षुः समाधिरूपं ज्ञानं येषां ते दिव्यचक्षुषः। (चक्र.-च.सू. 11/29), अतीन्द्रिय विषयों को भी देखने में समर्थ चक्षु यानि समाधि रूप ज्ञान जिसे है, उसे दिव्यचक्षु कहा गया है, supernatural visionary, a person who have supernatural perception

दिष्ट diṣṭa
दिष्टं यद्यस्यद्वेष्यम्। (चक्र.-च.सू. 11/37), जिससे द्वेष हो या जिसे व्यक्ति पसन्द न करता हो, उसे दिष्ट कहा जाता है, hostile, the object arousing a feeling of enmity or unfriendliness

दीपन dīpana
1.पचेन्नामं वह्निकृच्च दीपनम्। (शा.सं.प्र.ख. 4/1), जो अग्नि की वृद्धि करता हो एवं आम का पाचन न करता हो, उसे दीपन कहते हैं, जैसे मिशि, appetizer 2. धातु पाषाणमूलाद्यैः संयुक्ते घटमध्यगः। ग्रासार्थं त्रिदिनं स्वेदो दीपनं तन्मतं बुधैः। (रसे.चू. 4/90), धातु, पाषाण, खनिज, काष्ठौषधि आदि के साथ पारद को एक घड़े में दोलायन्त्र विधि अनुसार कांजी को भरकर ग्रासहेतु तीन दिन तक स्वेदन करने को दीपन संस्कार कहते हैं, to increase the appetite of mercury, a processing of mercury

दीर्घ dīrgha
आयताः। (ड.-सु.शा. 5/40), बड़ा, big

दुःख duḥkha
स्वभावतः प्रतिकूलवेदनीयं दुःखम्। (ड.-सु.शा. 1/17), कायवाङ्मानसी पीडा। (ड.-सु.सू. 1/23), प्रतिकूल वेदना, शरीर, वचन एवं मन की पीडा, discomfort, pain, suffering

दुःखप्रसविनी duḥkhaprasavinī
दुःखेन प्रसूते या सा। (च.चि. 16/46), कष्ट से प्रसव करने वाली, difficult labour

दुःखशय्या duḥkhaśayyā
दुःखोत्पादिका शय्या। (च.चि. 2/9), दुख देने वाली शय्या, discomforting bed

दुराधर्षा durādharṣā
कुटुम्बिनी पयस्या च क्षीरिणी जलकामुका। वत्र शल्या दुराधर्षा क्रूरकर्मा झिरिण्टिका।। (रा.नि.व. 5/78), कुटुम्बिनी का एक पर्याय, दुःसाहसी, अजेय, a synonym of kutumbini plant meaning dangerous, invincible

दुर्ग durga
दुर्गस्य व्याकरणं परं भवति। दुःखेन गम्यते बुध्यते इति भवति (च.प्र.), जो व्याकरण में पर (श्रेष्ठ) हो, वह दुर्ग कहलाता है, या जिसका व्याकरण में कठिनता से ज्ञान हो, वह दुर्ग कहा गया है, जिन शब्दों के अर्थ का ज्ञान कठिनता से हो, वह दुर्ग कहलाते हैं, difficult passages

दुर्गेष्वभ्युपपत्ता durgeṣva bhyupapatti
दुर्गेष्वभ्युपपत्ता दुर्गतिपतितानां रक्षिता। (चक्र.-च.सू. 8/18), संकट में फंसे व्यक्ति को बचाने वाला, a person who help in crisis

दुर्जयोऽन्ताय durjayoantāya
दुर्जयोऽन्तायेति दुर्जयो वा यथाक्रममुपक्रम्यमाणः, अन्ताय वा मिथ्योपक्रमाद्वेति मन्तव्यम्। (चक्र.-च.सू. 18/27), उचित चिकित्सा करने पर भी जिसका प्रशम न हो तथा मिथ्या चिकित्सा से जिसका मरण हो, which is incurable inspite of appropriate treatment, but improper treatment leads to death

दुर्दग्ध durdagdha
यत्रोत्तिष्ठन्ति स्फोटास्तीव्राश्चोषदाहरागपाकवेदनाश्चिराच्चोपशामयन्ति तद्दुर्दग्धम्। (सु.सू. 12/16), जिसमें दारुण फफोले पड़ जाएं, चूसने की सी पीड़ा हो, जलन, रंग लाल हो, पाक हो, और बहुत काल में जिसकी शांति हो, वह दुर्दग्ध है, moderate degree of burn caused by improper cauterization, burn with blister formations

दुर्मना durmanā
दुर्मना मनोबल विहीनः। (चक्र.-च.सू. 17/73), मानसिक शक्तिविहीन, weak minded

दुर्विद्धा durviddhā
दुर्विद्धा असम्यग्विद्धा सती। (अरु.-अ.हृ.सू. 27/34), असम्यक् प्रकार से विद्ध सिरा, improper phlebotomy

दुर्विरेच्य durvirecya
जिनको विरेचन कठिनता से होता है। (सु.चि. 33/20), those who purgate with difficulty

दुश्छर्दन duśchardana
जिनको बड़ी कठिनता से वमन होता है। (च.सि. 2/8), those who vomit with difficulty

दुष्कुला duşkulā
देखें भिन्नसेतवः, नीच कुल में उत्पन्न, those born in lower caste

दुष्कोष्ठ duşkoştha
क्रूरकोष्ठ। (च.सि. 6/37), क्रूरकोष्ठ, constipated bowel

दुष्टक्षीरा duṣṭakṣīrā
अक्षीराजननो येषामल्पक्षीरापि वा भवेत्। दुष्टक्षीरा प्रसूता या धात्री वा तस्य तादृशी।। (का.सू. 1/14), दूषित स्तन्य वाली प्रसूता या धात्री, a lady with unhealthy breast milk

दुष्प्रजाता duşprajātā
दुष्प्रजातामयाः सन्ति चतुःषष्टरिति स्थितिः। (का.खि. 11/7), जिसका सम्यक् प्रकार से प्रसव न हुआ हो, उपद्रव युक्त प्रसूता, a lady having undergone complicated labour

दूयन dūyana
दूयते उपतप्यते। (ड.-सु.उ. 3/29), पीड़ित करना, संतप्त करना, causation of pain associated with burning sensation

24—4 Min. of HRD/2016

दूषीविष dūṣīviṣa
कालान्तरप्रकोपिविषम्। (चक्र.-च.चि. 23/31), चिरकारिविषाः। (चक्र.-च.चि. 23/140), कुछ समय पश्चात दोष करने वाला विष, चिरकारी विष, slow poisoning, weak cumulative poison

दूष्य dūṣya
यद्दोषैर्दुष्टं भवति रसादिकं मलादिकं च तत्। (च.वि. 8/101), दूष्यास्तु शरीरावयवः। (चक्र.-च.सू. 20/3), धातु एवं मल जिनको कि दोष दूषित करते हैं, वे दूष्य हैं, शरीर के अवयवों को दूष्य कहा जाता है, dhatu and mala which get vitiated by dosha, part of the body

देश deśa
1. देशः पुनः स्थानं; स द्रव्याणामुत्पत्तिप्रचारौ देशसात्म्यं चाचष्टे। (च.वि. 1/21-5), द्रव्यों की उत्पत्ति का स्थान, habitat 2. आतुर। (च.वि. 8/92), शरीर, body

देहप्रकृति dehaprakṛti
1. देह प्रकृतिः देहस्वास्थ्यमिति यावत्। (चक्र.-च.सू. 7/40), शरीर का स्वस्थ बने रहना देहप्रकृति है, healthy state of body 2. शुक्रशोणित संयोगे यो भवेद् दोष उत्कटः प्रकृतिर्जायते। (सु.शा. 4/63), शुक्र एवं शोणित से उत्पन्न गर्भ में उस समय जिस दोष की प्रधानता रहती है, उस दोष के अनुसार उसकी प्रकृति होती है, in fetus, at the time of its formation by union of semen with ova, the predominance of dosha at that time determines constitution 3. प्रकृतीनां स्वभावेन, जायते तु गतायुषः। (सु.शा. 4/78), स्वभाव के द्वारा ही प्रकृतियां उत्पन्न होती है तथा जीवन पर्यन्त रहती हैं, prakriti denotes to nature which remains unchanged throughout the life

देहप्रकृतिलक्षण dehaprakṛtilakṣaṇa
देहश्च प्रकृतिश्च लक्षणं च देहप्रकृतिलक्षणम्। (चक्र.-च.सू. 30/25), देहस्य सहजलक्षणं देहप्रकृतिलक्षणम्। (चक्र.-च.सू. 30/25), देहलक्षण व प्रकृतिलक्षण को मिश्रित रूप से देहप्रकृतिलक्षण कहा गया है या देह और प्रकृति का लक्षण देहप्रकृति लक्षण कहा गया है, देह का सहज स्वाभाविक लक्षण देहप्रकृतिलक्षण होता है, यह सब सार प्रकृति आदि के लक्षणों द्वारा जानना चाहिए, the innate or inherent features of body

देहबल dehabala
देहस्य बलं देहबलम्। (चक्र.-च.सू. 6/5), देहस्य दुर्बलत्वे पक्ताऽपि दुर्बलोभवति, देहबलानुविधायित्वाद् वह्नेः। (चक्र.-च.सू. 6/33), शरीर का बल देहबल है, शरीर के दुर्बल होने से पाचकाग्नि भी दुर्बल हो जाती है, क्योंकि अग्नि बल शरीर बल पर निर्भर होता है, when body becomes weak, the digestive power also becomes weak because digestive power depends upon dehabala

देहव्यायाम dehavyāyāma
देहस्य व्यायामो देहव्यायामः। (चक्र.-च.सू. 7/31), शरीर का व्यायाम, physical exercise

देहौज dehouja
देहौजो देहसार: किंवा देहश्च ओजश्च देहौज:। (चक्र.-च.सू. 17/60), देहसार अथवा देह ओज, essence of body or oja of body

दैव daiva
1. दैवमदृष्टम्; न दिखने वाला, invisible 2. दैवशब्देन देवा उच्यन्ते, देवता, God

दोग्ध्री dogdhrī
उत्तम धात्री की परीक्षा का एक लक्षण। (च.शा. 8/52), धात्री ऐसी हो जिसमें प्रचुर स्तन्य विद्यमान हो, an efficiently lactating lady

दोलायन्त्र dolāyantra
द्रवद्रव्येण भाण्डस्य पूरितार्धोदकस्य च, मुखस्योभयतो द्वारद्वयं कृत्वा प्रयत्नत:। तयोस्तु निक्षिपेद् दण्डं तन्मध्ये रसपोटलीम्। बद्ध्वा तु स्वेदयेदेतद्दोलायन्त्रभि स्मृतम्।। (र.र.स. 9/4), एक हांडी में द्रवद्रव्य आधे भाग तक भरकर उस हांडी के किनारों में दो आमने-सामने छेद कर देते हैं, इन छेदों में एक सीधी लकड़ी या लोहशलाका डालते हैं, स्वेद्य द्रव्य को एक कपड़े की पोटली में बांधकर उस शलाका के बीच में टांग देते हैं, हांडी के नीचे आग जलाने से उस द्रव्य का स्वेदन हो जाता है यह दोला यन्त्र है, an instrument used for sudation of materials

दोष doṣa
दूषणस्वभावत्वाद् दोषा इति। (अ.सं.सू. 20/5), जो शरीर को दूषित करे वह दोष है, vitiating factor

दोषदूष्यसंसर्ग doṣadūṣyasaṃsarga
दोषस्य दूष्येण रक्तादिना संसर्गो दोषदूष्यसंसर्ग:। (चक्र.-च.सू. 19/4), दोष का रक्तादि दूष्य के साथ संयोग 'दोष दूष्य संसर्ग' है, conjugation of dosha with raktadi dhatu or dushya

दोषनिर्हरण doṣanirharaṇa
दोषों को शोधन के द्वारा शरीर से बाहर निकालना, elimination of dosha by shodhana

दोषप्रच्यावन doṣapracyāvana
दोषाणां प्रकर्षेण निर्हरणम्। (सु.चि. 1/27), विरेचनम्। (ड.-सु.सू. 39/11), दोष का अधिक प्रमाण में बाहर निकालना, excess removal of dosha

दोषप्रतिपक्ष doṣapratipakṣa
दोष विपरीतम्। (अ.सं.सू. 36), दोष के विपरीत, opposite to dosha

दोषप्रभाव doṣaprabhāva
दोषस्य कार्यविशेषकारित्वम्। (च.वि. 1/12), दोष का विशिष्ट कार्य, specific action of dosha

दोषप्रशमन doṣapraśamana
दोषस्य दोषयोर्दोषाणां वा प्रशमनं दोषप्रशमनम्। (चक्र.- च.सू. 1/67), एक, दो या तीनों दोषों का स्वस्थान में शमन, pacification of vitiated dosa

दोषबलप्रवृत्त doṣabalapravṛtta
दोषा वातादयो रजस्तमसी च, बलं शक्ति:, प्रवृत्ता: जाता:। (ड.-सु.सू. 24/5), दोष के बल से उत्पन्न होने वाले शारीरिक और मानसिक रोग, physical and mental diseases caused by dosha

दोषलिङ्ग doṣaliṅga
दोषाणां वातादीनां, लिङ्ग: क्षय वृद्धिसम्बन्धै:। (चक्र.-च.सू. 7/44), वातादि दोषों के क्षय वृद्धि लक्षण, kshaya and vriddhi symptoms of dosha

दोषवर्चविनिग्रह doṣavarcavinigraha
विनिग्रहो अप्रवृत्ति:। (मधु.-मा.नि. 2/59), दोष एवं मलों की अप्रवृत्ति, retention of dosa and excretas

दोषविकल्पवित् doṣavikalpavit
दोषविकल्पज्ञानाच्च लिङ्गज्ञानं, यावद्धि लिङ्गं तत् सर्वं दोषविकल्पसंबद्धम्। (चक्र.-च.सू. 26/27), दोष विकल्प ज्ञान से अभिप्राय रोग के लक्षणों का ज्ञान है, रोग के लक्षणों को जानने वाला दोषविकल्पविद कहलाता है, one who knows subtle analysis of doshas

दोषविग्रथित doṣavigrathita
दोषमिश्रितम्। (सु.चि. 34/6), दोषयुक्त, mixed with dosha

दोषविभ्रान्तचेतस doṣavibhrāntacetasa
दोषवृद्धया विभ्रांतं चेतो यस्मिन्, तस्मिन् दोषविभ्रान्तचेतसि उन्मादे। (चक्र.-च.क. 10/5), उन्माद रोग जिसमें वृद्ध दोष मन भ्रमित कर देते हैं, increrased dosha cause bhrama in mind to produce unmada

दोषवैषम्य doṣavaiṣamya
दोषाणां प्राकृतप्रमाणन्यूनत्वं प्रमाणधिक्यं वा चय प्रकोपप्रभृतिरोगावस्था रूपमनुसंधेयम्। (अ.सं.सू. 1/43), दोषाणां वातादीनां, वैषम्यं स्वप्रमाणादेकस्य द्वयोस्त्रयाणां वा वृद्धि: क्षयो वा। (अरु.-अ.हृ.सू. 1/20), विकृत दोष, एक, दो, या तीनों दोषों का अपने प्रमाण से अधिक या कम होना, decrease or increase of dosha from its normal quantitiy

दोषहेतु doṣahetu
दोषहेतवो यथा चयप्रकोपप्रशमनिमित्ता यत् ऋतुत्पन्ना मधुरादय:। (मा.नि. 1/5), ऋतुओं के अनुसार दोषों का संचय, प्रकोप और प्रशम होता है (मधुरादि रसों के प्राबल्य से), dosha vitating (seasonal) factors

दोषानुकर्षिणीमात्रा doṣānukarṣiṇīmātrā
दोषानुकर्षिणी मात्रा सर्वमार्गानुसारिणी। (च.सू. 13/34) स्नेह की (उत्तम) मात्रा, maximum dose of unction

दोषापकर्षण doṣāpakarṣaṇa
उपक्रम; दोषाणां संशोधनम्। (च.वि. 7/33), दोषों को शोधन कर्म से बाहर निकालना, removal of dosha by shodhana

दोषावसेचन doṣāvasecana
अपतर्पणभेद: शोधनम्। (च.वि. 3/43), अपतर्पण का एक भेद, शोधन, a type of apatarpana, shodhana

दौर्मनस्य dourmanasya
चित्तविचेष्टितम्। (ड.-सु.सू. 29/45), खिन्न मन, मन में विकार, deranged mood, mental uneasiness

दौहृद douhṛda
गर्भानुभावान्मातुश्चतुर्थादिमासेष्विन्द्रियार्थप्रार्थना 'दौहृदम्' इत्याचक्षते। (ड.-सु.सू. 24/5), गर्भिणी की इच्छा, गर्भिणी के हृदय के साथ साथ गर्भ का हृदय भी रहता है अत: उसकी इच्छा को दौहृद कहा जाता है, desires of pregnant lady

द्रव्य dravya
यत्राश्रिता: कर्मगुणा: कारणं समवायि यत् तद् द्रव्यम्। (च.सू. 1/51), द्रव्य वह है जिसमें गुण और कर्म समवाय सम्बन्ध होकर रहते हैं, dravya is an entity where karma and guna are present in samavayi condition, dravya and guna are inherently related to each other

द्रव्यगुणशास्त्र dravyaguṇaśāstra
द्रव्याणां गुणकर्माणि प्रयोगा विविधास्तया। सर्वशो यत्र वर्णयन्ते शास्त्र द्रव्यगुणं हि तत्।। जिस शास्त्र में द्रव्यों के गुण, कर्म एवं उन के प्रयोगों का वर्णन किया गया हो, उसे द्रव्यगुणशास्त्र कहते हैं, the science, which deals with the explanation of different flora, action & uses of drugs

द्रावण drāvaṇa
संतिष्ठेत् द्रवाकारम्। (र.र.स. 8/84), द्रवित करना, किसी भी पदार्थ को अग्नि अथवा द्रव माध्यम से द्रव रूप में परिवर्तित करना द्रावण कहलाता है, process of melting

द्रुतग्रास drutagrāsa
पारद में दिये हुये ग्रास का पूर्ण रूप से पचन होना, complete assimilation

द्रुतत्वम् drutatvam
सन्तिष्ठते द्रवाकारं सा द्रुति: परिकीर्तिता। (र.र.स. 8/84), विशेष रूप से पतला हो जाना, this is one of the characteristic of druti, that is liquidity

द्रोण droṇa
चतुर्भिराढकैर्द्रोण: कलशो नल्वणोर्मण:। उन्मानश्च घटो राशिर्द्रोण पर्याय संज्ञक:। (शा.सं.प्र. 1/28), चार आढक के तुल्य एक द्रोण होता है, इसके पर्याय कलश, नल्वण, अर्मण, उन्मान, घट, राशि आदि हैं, a measurement equal to four adhakas

द्रोणी droṇī
शूर्पाभ्यां च भवेद् द्रोणी वाहो गोणी च सा स्मृता। (शा.सं.प्र. 1/30), दो शूर्प की एक द्रोणी होती है, वाह एवं गोणी इसके पर्याय हैं, a measurement equal to two shurpa

द्वन्द्वन dvandvana
द्रव्योर्मेलनं ध्मानाद् द्वन्द्वनं परिकीर्तिततम्। (रसे.चू. 4/73), दो द्रव्यों को तीव्र धमन कर आपस में मिलाना द्वन्द्वन कहलाता है, conjugation, amalgamation

द्वन्द्वान dvandvāna
द्रव्ययोर्मर्दनाध्मानाद् द्वन्द्वानं परिकीर्तितम्। (र.र.स. 8/50), दो द्रव्यों (धातुओं) को एक साथ मिलाकर धमन द्वारा मूषा में गलाकर एकीकरण करना द्वन्द्वान कहलाता है, amalgamation, conjugation of (metals)

द्विजदन्त dvijadanta
इह खलु नृणां द्वात्रिंशद्दन्ता:, तत्रष्टौ सकृज्जाता: स्वरुढ दन्ता भवन्ति, अत: शेषा: द्विजा:। (का.सं.सू. 20/4), मनुष्यों में 32 दांत होते हैं, इनमें से आठ सकृज्जात (केवल एक बार उत्पन्न होने वाले) तथा उसी स्वरूप में ही बढ़ने वाले होते हैं, शेष 24 द्विज (द्विर्जायन्ते-दो बार उगने वाले) हैं, deciduous (milk) teeth

द्वेष dveṣa
अप्रीति:लक्षण:। (ड.-सु.शा. 1/17), परापकारेच्छा:। (हे.-अ.हृ.सू.), अनिच्छा, दूसरे का अपकार करने की इच्छा, hatred, aversion

धनञ्जय dhanañjaya
धनञ्जय: अर्जुन:। (चक्र.-च.चि. 4/75), अर्जुन वृक्ष, *Terminalia arjuna*

धनुस्तुल्य dhanustulya
धनुस्तुल्यं नभेद्यस्तु स धनुस्तम्भसंज्ञक:। (मा.नि. 22/33), धनुष का आकार ग्रहण करना, धनुष्टम्भ व्याधि का लक्षण, like an arch (a sign of tetanus)

धनेशायतन dhaneśāyatana
धनेशायतनस्येति हिमालयस्य। (चक्र.-च.सि. 3/3), धनेश (कुबेर) का घर अर्थात् हिमालय, Himalaya, the abode of Kuber, the lord of wealth

धनैषणा dhanaiṣaṇā
तद्यथा-प्राणै, धनैषणा, परलोकैषणेति। (च.सू. 11/3), धन की इच्छा, desire of money/wealth

धन्वन्तरि dhanvantari
धनु: शल्यशास्त्रं, तस्य अन्तं पारं इयर्ति गच्छतीति धन्वन्तरि:। (ड.-सु.सू. 1/3), धनु शल्य शास्त्र को कहते हैं, इसके अन्त को प्राप्त करने वाले को धन्वन्तरि कहते हैं, dhanu means surgery, one who has attained excellence in surgery is Dhanvantari

धन्वन्तरिभाग dhanvantaribhāga
अर्धसिद्धरसस्य तैल घृतयोर्लेहस्य भागोऽष्टम:। ससिद्धाखिललोहचूर्णवटकादीनां तथा सप्तम:। यो दीयते भिषग्वरायगादिभि धन्वन्तरिम्।। (रसे. चू. 4/2), सर्वाऽऽरोग्य सुखाप्तयो निगदितो भाग: स धन्वन्तरे:। (र.र.स. 8/2), सभी प्रकार के आरोग्य तथा सुख प्राप्ति के लिये वैद्य के द्वारा निर्मित सिद्ध औषधों में से रोगी घृत तथा तैल का आधा भाग, अवलेह का आठवां भाग, सिद्ध लौह चूर्ण, वटक का सातवां भाग वैद्य को देता है, यह धन्वन्तरि भाग कहलाता है, donation of a part/portion of prepared medicine back to physician

धन्वोत्थरस dhanvottharasa
धन्वोत्थरसो जाङ्गलदेशमांससमुद्भतो रस:। (अरु.-अ.हृ.सू. 16/36), जांगलदेश के प्राणियों का मांसरस, meat juice obtained from wild animal

धमनी dhamanī

ध्मानाद्धमन्यः स्रवणात् स्रोतांसि सरणात्सिराः। (च.सू. 30/12), ध्मानात् पूरणाद् बाह्येन रसादिनेत्यर्थः। (चक्र.-च.सू. 30/12), ध्मानाद् अनिलपूरणाद् धमन्यः। (ड.-सु.शा. 9/1), जो ध्मापित (पूरित) हो वह धमनी है, जो रसादि से पूरित होकर उनका वहन करती है, वायुपूर्णता से धमन के कारण, a pulsatile blood vessel, an artery

धमनीप्रतिचय dhamanīpraticaya

धमनीप्रतिचयो धमन्युपलेपः। (चक्र.-च.सू. 20/17), धमनी में उपलेप का होना अथवा कफवर्गीय द्रव्यों का धमनी के अन्तर्भाग में जमना, deposition of kapha in dhamani, atherosclerotic changes in artery

धरण dharaṇa

मध्यमनिष्पावा एकोनविंशतिर्धरणम्। (सु.चि. 31/7), मान का एक भेद, 19 मध्यम आकार के निष्पाव (सेम) के दानों के बराबर, a weighing unit equal to weight of 19 medium sized seeds of white bean

धरणी dharaṇī

शुष्का षष्ठी च यमिका धरणी मुखमण्डिका। माता शीतवती कण्डुः पूतनाऽथ निरुञ्चिका। रोदनी भूतमाता च लोकमाता महीति च। शरण्या पुण्यकीर्तिश्च नामानि तव विंशतिः। (का.चि. बालग्रहचिकित्साध्याय), रेवती ग्रह के बीस नामों में से एक, one of the twenty synonyms of Revati

धरणीधरसार dharaṇīdharasāra

धरणीधरसार इति उष्ट्रमुखवत्, तेन धरणीधराः पर्वताः, तेषां सारो लौहं तद्वत्सार इत्यर्थः। (चक्र.-च.चि. 1(1)/61), उष्ट्र के मुख की भाँति, यहाँ धरणीधर से पर्वत अर्थ लिया गया है, पर्वतसार अर्थात् लौह, व्यक्ति के शरीर का लोहे की भांति दृढ़ होना, solid body

धर्म dharma

धारणाद्धर्मः स्वाभाविको गुणश्च; सचात्मसमवेतः। (चक्र.-च.सू. 1/15), कायवाङ्मनोभिः सुचरितम्। (ड.-सु.शा. 1/18), जिसे धारण किया जाता है, या जो स्वाभाविक गुण होता है, उत्पत्ति से ही जो संयुक्त हो, उसे धर्म कहते हैं, शरीर, मन, एवं वाणी से अच्छा कर्म करना, virtue, righteousness, it is the innate or inherent quality of a substance which is inseparably associated with it

धर्मेतरपुरःसर dharmetarapurahsara

धर्मेतरपुरःसरौ धर्माधर्मपुरोगामिनौ। (ड.-सु.शा. 2/37), धर्म एवं अधर्म को जानने वाली (स्त्री), a pious lady

धव dhava

धव इन्द्रवृक्षः। (ड.-सु.चि. 34/17), कुटज, *Holarrhena antidysenterica*

धाता dhātā

धाता शरीरदिसंयोगधारणहेतुत्वात्। (ड.-सु.शा. 3/4), आत्मा का एक पर्याय, शरीर संयोग को धारण करने के कारण धाता कहलाता है, a synonym of soul, which holds the body

धातु dhātu

धारणात् धातवः। (अ.सं.सू. 20/5), धातुर्हिधारणपोषणयोगाद् भवति (चक्र.-च.सू. 30:7), शरीरधारणाद् धातव इत्युच्यन्ते। (सु.सू. 14/20), जो शरीर को धारण करता है, जो शरीर का धारण एवं पोषण करे उसे धातु कहते हैं, body sustaining factors, that sustains and nourishes the body, body tissues

धातुगति dhātugati

धातुगतिरिति रसादीनां पोष्यं धातुं प्रति गमनम्। (चक्र.-च.सू. 18/48), रसादि पोष्य धातुओं में पोषण पहुंचाना 'धातुगति' है, fluid electrolyte balance and transportation, nutrient transportation

धातुपिष्टि dhātupiṣṭi

खल्ले विमर्द्य गन्धेन दुग्धेन सह पारदम्। पेषणात्पिष्टतां याति सा पिष्टिति मताः।। (र.र.स. 8/8), समभाग पारद एवं धातु आदि को गोदुग्ध के साथ खरल मर्दन कर पिष्ट रूप में प्राप्त द्रव्य को धातुपिष्टि कहा जाता है, metallic paste preparation

धातुप्रदूषण dhātupradūṣaṇa

वातादीनां समत्वेन शरीरधारणात्मकानां तथा रसादीनां च दूषणम्। (चक्र.-च.सू. 1/67), वातादि दोषों द्वारा शरीरधारक धातुओं एवं दोषों की दुष्टि, vitiation of tissues by dosa

धातुव्यूह dhātuvyūha

धातुसंघातः। (चक्र.-च.सू. 27/3), रसादि धातुओं का समुच्चय या धातुओं का एक दूसरे से संयोजन, धातुसमूहन, maintaining internal milieu

धातुसत्व dhātusatva

कोष्ठया ध्मातस्य द्रावकौषधिभिः समम्। सारो यो निर्गतः साऽत्र सत्वमित्यभिधीयन्। (र.त. 2/32), धातु आदि को द्रावक गण की औषधियों के साथ मिलाकर भट्टी में रखकर तपाने से प्राप्त सार भाग उस धातु का सत्व कहलाता है, extract of metals

धात्री dhātrī

धात्री स्तनपायिनी पोषयित्रीत्यर्थः। (ड.-सु.उ. 27/6), शिशु को स्तनपान कराने वाली एवं पोषण करने वाली स्त्री, a lactating lady who also brings up the child (other than child's own mother)

धानक dhānaka

माषकस्यपर्यायो हेमोधानकश्च। (अ.सं.क. 8), परिमाण, मान भेद, माष, (एक माशा) का पर्याय धानक है, a synonym of weighing unit called masha i.e. 1 gram

धान dhāna

धाना भृष्टयवाः। (चक्र.-च.सू. 27/267), भूना हुआ यव अथवा जौ धान कहलाता है, roasted barley

धान्य dhānya

आहारद्रव्य, शूकधान्यं शिम्बीधान्यं शाल्यादिसर्षपान्तम्। (च.सू. 27/6), (सु.सू. 46/4-52), चावल, दाल आदि धान्य पदार्थ, grains, the cereals

धान्यमाष dhānyamāṣa
तद्द्वयं धान्यमाष इति तण्डुलद्वयं धान्यमाषो भवेत्। (चक्र.-च.क. 12/88), दो तण्डुल, एक धान्यमाष के बराबर होता है, a unit of measurement weighing 2 rice grains, 15 mg approximately

धान्ययूष dhānyayūṣa
धान्ययूषमिति धान्यप्रधानं यूषं यथोक्तमेव। (चक्र.-च.चि. 19/35), धान्य प्रधान यूष को धान्य यूष कहा गया है, rice gruel

धान्याभ्रक dhānyābhraka
चूर्णाभ्रं शालिसंयुक्तं वस्त्रबद्धं हि काञ्जिके, निर्यात मर्दनाद्वस्त्राद्धान्याभ्रमिति कथ्यते। (र.र.स. 2/21), अभ्रक चूर्ण को शालिधान्य के साथ मिलाकर तथा मोटे कपडे से बांधकर कांजी के साथ मर्दन करने से अभ्रक का बाहर निकला बारीक चूर्ण धान्याभ्रक कहलाता है, processed mica (in sour vinegar and cereals)

धान्याम्ल dhānyāmla
धान्याम्लं काञ्जिकम्। (सु.सू. 45/214), कांजी, a sour liquid recipe prepared by fermentation of cereals, sour vinegar

धान्वन dhānvana
सकषायं हिमं स्वादु धान्वनं कफवातजित्। (सु.सू. 46/170), मरु प्रदेश में होने वाला फल, a type of fruit which grows in desert or waterless areas

धान्वप्रातुदवैष्किर dhānvaprātudavaiṣkira
धान्वप्रातुदवैष्किरमिति वसामज्जविशेषणम्। (चक्र.-च.चि. 29/74), इससे वसा एवं मज्जा की विशेषता को बताया गया है अर्थात् जांगल, विष्किर, एवं प्रतुद पक्षियों की वसा व मज्जा, जितना प्राप्त हो सके, डालकर स्नेह सिद्ध करना चाहिए, a dietary article prepared by fats of gallinaceous and pecker birds

धान्वबैलरस dhānvabailarasa
धान्वबैलरसैरिति धन्वजबिलेशयरसैः। (चक्र.-च.चि. 18/110), जांगल एवं बिल में रहने वाले प्राणियों के मांसरस को पिप्पली आदि द्रव्यों से संस्कारित कर प्रयोग करना, a liquid diet prepared by processing the meat juice of wild animals and creatures living in burrows

धापयन्त dhāpayanta
धापयन्तीं पाययन्तीम्। (ड.-सु.चि. 24/92), गाय द्वारा बछड़े को दुग्ध पिलाना, to feed the calf with milk

धाम dhāma
शारीरं तेजः। (हे.-अ.हृ.सू. 7/76), शरीर का तेज, body lusture

धारण dhāraṇa
1. स्तम्भः। (अरु.-अ.हृ.सू. 7/52), स्तम्भैरागारमिव। (हे.-अ.हृ.सू. 7/52), जिस प्रकार घर में स्तम्भ धारण करते हैं, holding 2. वेगधारण। (च.सू. 7), मल मूत्रादि वेग धारण, suppression of natural urges 3. गृहीतस्योत्तरकालस्मरणं धारणम्। (चक्र.-च.सू. 29/7), गृहीत विषयों का बाद के काल में याद रहना धारण कहलाता है या ग्रहण किये गये विषयों का बाद में स्मरण करना धारण कहलाता है, retention

25—4 Min. of HRD/2016

धारि dhāri
धारयति शरीरं पूतितां गन्तुं न ददातीति धारि। (चक्र.-च.सू. 1/42), जो शरीर को सड़ने न दे, उसे धारि कहते हैं, यह आत्मा का पर्यायवाची है, which supports the body by preventing its decay, synonym of 'atma'

धार्तराष्ट्र dhārtarāṣṭra
धार्तराष्ट्रचकोराणां दक्षाणां शिखिनामपि। (च.सू. 27/85), पक्षी, हंस का एक भेद, a bird resembling swan, a type of a swan

धावन dhāvana
1. धावनं तु पार्श्वतो गमनम्। (चक्र.-च.इ. 3/4), पार्श्व में चलना, दौड़ना, running 2. धावने प्रक्षालने। (ड.-सु.चि. 22/31), प्रक्षालन (दन्त धावन), चलदन्त की चिकित्सा के संदर्भ में, washing

धीतीका dhītikā
धीतीका शुष्कगोमयादिकृतोऽग्न्याश्रयविशेषः। (चक्र.-च.सू. 14/61), धीतीका एक प्रकार की अंगीठी है, जिसमें सूखे गोबर के उपले जलाए जाते हैं, an oven where fire is produced by burning cowdung cakes

धीमान dhīmāna
अनुक्तदुरुक्तोहापोहलक्षणबुद्धियुक्तः। (ड.-सु.सू. 34/20), न कहे गए तथा असत्य कहे गए स्थलों को ऊहापोह की बुद्धि द्वारा निश्चित करने वाला, the person who has decisive knowledge pertaining to right or wrong

धुन्वन dhunvana
धुन्वन् विक्षिपन्। (ड.-सु.उ. 61/13), विक्षेप, convulsions

धूपिताम्बर dhūpitāmbara
धूपिताम्बरः अगुर्वादिधूपितवस्त्रः। अगुरु आदि से धूपित वस्त्र, fomented clothes

धूप्यते dhūpyate
धूममिवोद्वमति। (चक्र.-च.सू. 18/7-2), धुंए जैसी डकार का आना, belching with feeling as smoke

धूमक dhūmaka
धूमकः धूमोद्वमनमिव। (चक्र.-च.सू. 20/14), मुख से धुएं की तरह वमन होना, अथवा डकार में धुएं जैसी गंध का निकलना धूमक है, hot eructations

धूमदर्शी dhūmadarśī
शोकज्वरायासशिरोभितापैरभ्याहता यस्य नरस्य दृष्टिः। सधूमकान् पश्यति सर्वभावांस्तं धूमदर्शीति वदन्ति रोगम्।। (सु.उ. 7/39), शोक, ज्वर, परिश्रम एवं शिरोसंताप से जिस व्यक्ति की दृष्टि प्रभावित हो जाती है, वह सभी वस्तुओं को धुएं से ढंका देखता है, इसे धूमदर्शी कहते हैं, नेत्रगत साध्य दृष्टिरोग, smoky vision

धूमवर्ति dhūmavarti
यच्च नावनिकं तैलं याश्च प्राग्धूमवर्तयः। मात्राशितीये निर्दिष्टाः प्रयोज्यास्ता ज्वरेष्वपि।। (च.चि. 3/255), शिरोविरेचन हेतु प्रयुक्त धूमवर्तिका, धूमदण्डिका, a medicated smoke wick, a medicated cigar

धूमवेध

dhūmavedha

वह्नौ धूमायमानेऽन्तःप्रक्षिप्तरस धूमतः। स्वर्णाद्यापादनं लोहे धूमवेधः स उच्यते।। (रसे.चू. 4/110), (र.र.स. 8/94), अग्नि पर स्थित मूषा में कुछ पारद छोड़ने से जब उससे पारद का धुंआ दिखाई देने लगे, तब मूषा में किसी धातु को द्रवित करें और उसमें संस्कृत पारद को डालकर उस धुंये के संयोग से जब धातु को स्वर्ण रजतादि रूप का बनाया जाता है, तो उसे धूमवेध कहते हैं, contact of mercury fumes to a metal to change its lusture to golden colour

धूमसी

dhūmasī

माषाणां दालयस्तोयेस्थापितास्त्यक्तकञ्चुकाः। आतपे शोषिता यन्त्रे पिष्टास्ता धूमसी स्मृता।। (भा.प्र.नि. कृतान्न. 37), उड़द की दाल को प्रथम जल में भिगो दें, तत्पश्चात् उसके छिलके को निकालकर उसे धूप में डाल कर सूखा दें, सूखने के बाद चक्की में पीस कर आटा तैयार कर लें, इसी को धूआंस कहते हैं, flour of peeled black gram

धूमायन

dhūmāyana

धूमायनं धूमोद्वमनमिवाङ्गानाम्। (ड.-सु.सू. 22/11), धूमोपहतस्येव, 'धूमोद्व-ग्मिवाङ्गानम्' इत्येके। (ड.-सु.नि. 5/8), धुएं के समान वमन की प्रतीति, smoky belching

धूमिका

dhūmikā

धूमिका मधुहा चेति प्रसहा मृगपक्षिणः। (अ.हृ.सू. 6/50), धूमिका धूम्याटः। (हे.-अ.हृ.सू. 6/50), एक प्रतुद पक्षी, a type of pecker bird

धूमोद्गार

dhūmodgāra

यथामुक्तं भवेदामे धूमोद्गारौ विदाहिनि। सश्लेष्मणि गुरुत्वं तु रसशेषे तु हृद्द्रवः।। (का.सं.सू. उपकल्पनीय अध्याय), विदग्धाजीर्ण में धुएं के समान उद्गार (डकार) आना, smoky belching

धूमोपहत

dhūmopahata

श्वसिति क्षौति चात्यर्थमप्याधमति कासते। चक्षुशो परिदाहश्च रागश्चैवोपजयते। सधूमकं निश्वसिति घ्रेयमन्यन्न वेत्ति च। तथैव च रसान् सर्वान् श्रुतिश्चास्योपहन्यते। तृष्णादाहज्वरयुतः सीदत्यथ च मूर्च्छति। धूमोपहत इत्येषः। (सु.सू. 12/29-32), धुँए से पीड़ित मनुष्य को श्वास में कठिनाई होती है, वह छींकता हैं, आँखों में लाली और पीलापन होता है, अन्य गन्ध नहीं अनुभव करता, स्वाद का ज्ञान भी नष्ट हो जाता है, सुनाई नहीं देता, तृष्णा, दाह, ज्वर युक्त होकर मूर्च्छित हो जाता है, smoke asphyxiation, the person affected by smoke has difficulty in breathing, he hiccups, he has burning eyes, he looses sense of smell and taste, he does not listen, he becomes unconscions due to thirst, there is burning sensation and fever

धृति

dhṛti

धृतिः मनसोऽचाञ्चल्यम्। (चक्र.-च.सू. 18/51), मन का चंचल न होना, stability of mind

धेनुका

dhenukā

प्रदेशस्य बहुशोऽवघट्टनादारोहद्व्यथा मुहुर्मुहुः शोषितस्रावा धेनुका। (सु.शा. 8/19), सिरा प्रदेश के ऊपर कई बार प्रहार ताड़न करने से अनेक विद्ध व्रण होने के कारण जिस सिरा से बार-बार रक्त का स्राव होता है उसे धेनुका कहते हैं, an improper type of phlebotomy which is caused by multiple/successive incisons and characterised by bleeding off and on

धैर्य

dhairya

धैर्यमनुन्नतिश्चेतसः। (चक्र.-च.सू. 1/58), मन का स्थिर रहना धैर्य कहलाता है, विचलितता का अभाव धैर्य है, stability of the mind, patience

धौत

dhouta

भूभुजङ्गशकृत्तोयैः प्रक्षाल्यापहृतं रजः, कृष्णवर्ण हि तत्प्रोक्तं धौताख्यं रसवादिभिः। (रसे.चू. 4/72), (र.र.स. 8/45), केंचुओं की विष्ठा को जल में बार-बार धोने से जो कृष्णवर्ण का द्रव्य प्राप्त होता है, उसको रसवादी 'धौत' कहते हैं, a blackish powder obtained after repeated wash of faeces of earthworm

धौतगुड

dhoutaguḍa

धौतः स्वल्पमल इति मलावसेकेन धौतोऽल्पमलो भवति, तेनाल्पक्रिम्यादिर्भवतीति भावः। तत इति धौतगुडात्। (चक्र.-च.सू. 27/239), धौतगुड़ (थोडे मल वाला गुड़) अर्थात् गुड़ के मल को निकाल देने से धौत गुड़ अल्प मल वाला हो जाता है, धौतगुड़ अल्पमल वाला होने से इससे कृमि रोग आदि अल्प होते हैं, यह भाव प्रकट होता है, cleaned jaggery, jaggery devoid of dirt

धौम्य

dhoumya

काङ्कायनः कैकशेयो धौम्यो मारीचकाश्यपौ। (च.सू. 1/12), धौम्य ऋषि, ऋषि का नाम, a name of a sage, a saint

ध्मापन

dhmāpana

ध्मापनं तद्धि देहस्रोतोविशोधनमिति वचनाद् ध्मापनं शिरोविरेचनप्रयोजनकमेवेति दर्शयति। (चक्र.-च.सि. 9/89), नस्य का भेद, औषध चूर्ण का नासा में धमन, ध्मापन शिरोविरेचन के ही प्रयोजन को सिद्ध करता है, insufflation of medicine into the nasal cavity

ध्यानचक्षु

dhyānacakṣu

ध्यानं समाधिविशेषः, तदुपलब्धिसाधनत्वाच्चक्षुरिव ध्यानचक्षुः। (चक्र.-च.सू. 1/17), ध्यान समाधि की एक अवस्था विशेष है, इसमें चक्षुवत् उपलब्धि होने के कारण इसे ध्यानचक्षु कहते हैं, meditation is a state of samadhi, in this state, knowledge is acquired, though there is no direct involvement of senses, the knowledge acquired is called dhyanchakshu, as it is the initiative sense faculty

ध्वंशी

dhvaṁśī

ध्वंशी त्रसरेणुकं वदन्ति; अन्ये तु ध्वंशी धूलिमाहुः। (चक्र.-च.क. 12/87), ध्वंशी को त्रसरेणुक कहते हैं, अन्य आचार्य ध्वंशी से धूल के उड़ते हुए कण का ग्रहण करते हैं, mote, dust particle seen in sunbeam, a unit of measurement

ध्वंसक dhvaṃsaka
श्लेष्मप्रसेकः कण्ठास्यशोषः शब्दासहिष्णुता। तन्द्रानिद्रातियोगाश्च ज्ञेयं ध्वंसकलक्षणम्।। (च.चि. 24/201), श्लेष्म प्रसेक, गले एवं मुख का सूखना, शब्द की असहिष्णुता, अत्यधिक निद्रा एवं तन्द्रा का आना, ये सभी लक्षण ध्वसंक रोग में पाए जाते हैं, मद्यपान जनित विकार, a clinical condition manifests because of alcohol intake

नकुलान्ध nakulāndha
चित्राणि रूपाणि दिवा स पश्येत्, रात्रौ न पश्यति। (ड.-सु.उ. 7/40), त्रिदोषज नेत्ररोग, नकुल के समान दृष्टि, दिन में विभिन्न रूपों का दर्शन एवं रात्रि में देखने की असमर्थता, night blindness

नक्त nakta
निशिः। (अ.हृ.सू. 2/47), रात्रि, night

नक्तक naktaka
कर्पटावयवः। (चक्र.-च.सू. 14/11), जीर्ण या फटा हुआ वस्त्र, torn clothes

नक्तान्ध्य naktāndhya
कफविदग्धदृष्टि लक्षण, रात्रि अन्धता होना। (सु.उ. 7/38), night blindness

नक्र nakra
मत्स्य भेदः, घडियाल इति लोके। (ड.-सु.चि. 26/26), घडियाल, crocodile

नक्राण्ड nakrāṇḍa
नक्रस्याण्डम्। (च.चि. 2(2)/28), नक्र के अण्ड, यह वृष्य होते हैं, testes of crocodile

नखभेद nakhabheda
कुनखः। (गंगा.-च.सू. 20/11), नखभङ्ग, brittle nails

नखर nakhara
नखम्। (च.चि. 10/38) नख, एक उपांग, nail

नखाद nakhāda
शोणितज कृमि। (सु.उ. 54/15), रक्तज कृमि, a worm

नग naga
1. न गच्छति अवशीर्यते दृढमूलत्वादिति नगः। (ड.-सु.उ. 60/16), दृढमूल होने के कारण नष्ट न होने वाला वृक्ष, a tree 2. पर्वतः। (ड.-सु.क. 5/76), पर्वत, mountain

नग्नजीव nagnajiva
पुत्रोत्पत्ति हेतु प्रयुक्त एक औषधि। (अ.सं.शा. 1/61), a herb

नत nata
अवनतम्। नीचे की ओर झुका हुआ, bending

नद nada
सिन्धुशोणादिः। (ड.-सु.सू. 45/4), सिन्धु एवं ब्रह्मपुत्र आदि बड़ी नदियां, very large rivers

नन्द nanda
दिव्यसर्पः। (अ.सं.उ. 41), दिव्य सर्प, celestial snakes

नन्दन nandana
1. स्थावरविष, विषवृक्षोऽयम् अस्य फलं त्वक् सारो निर्यासश्च विषमयः। (सु.क. 2/5), स्थावर विषवृक्ष, इसके फल, त्वक्सार और निर्यास विषाक्त होते हैं, a poisonous tree whose fruit, bark and extract are poisonous 2. आह्लादकरम्, हर्षकरम्। (च.सू. 30/15), प्रसन्नता कारक, exhiliarating

नन्दी nandī
तुण्डेरिका। (अरु.-अ.हृ.सू. 6/92), वट

नन्द्यास्य nandyāsya
नन्दीमुखः आटीभेद। (अ.हृ.सू. 7/81), जलचर पक्षी, आटी पक्षी का एक भेद, an aquatic animal

नपुंसक napuṃsaka
तत्रशुक्रबाहुल्यात् पुमान्, आर्तवबाहुल्यात् स्त्री, साम्यादुभयोर्नपुंसकमिति। (सु.शा. 3/5), शुक्र और आर्तव की समान मात्रा के संयोग से होने वाला गर्भ, conceptus formed by equal quantity of shukra and artava which grows into a body neutral gender, a hermaphrodite

नभस्यप्रथम nabhasyaprathama
नभस्यस्यभाद्रस्य प्रथमः श्रावणः। (चक्र.-च.सू. 7/46), श्रावणमाह, month of shravana

नयनप्लव nayanaplava
नयनयोरश्रुपूर्णता। (ड.-सु.उ. 39/25), नेत्रों में अश्रु का भरना, tears

नलकास्थि nalakāsthi
शाखास्थि। (ड.-सु.नि. 15/16), नलकवदस्थि। (सु.शा. 5/20), नलक के आकार की अस्थि, हाथ पैर में पाई जाने वाली अस्थि, tubular/long bone

नलिन nalina
नलिनं श्वेतमष्टदलपद्मम्। (चक्र.-च.सू. 25/49), श्वेत रंग के अष्ट दल वाले कमल को नलिन कहा गया है, white lotus with 8 petals

नल्वण nalvaṇa
द्रोणः। (च.क. 12/95), मान का एक भेद, द्रोण का पर्यायवाची, a measurement of weight

नवजात navajāta
जन्म से चार सप्ताह की आयु का शिशु, newborn, neonate

नवनीतपिष्टि navanītapiṣṭi
अर्कांशतुल्याद्रसतोऽथ गन्धान्निष्कार्ध तुल्यात्त्रुटिशोऽभिखल्ले, अर्कातपे तीव्रतरे विमर्दयात् पिष्टी भवेत्सानवनीतरूप्ना।। (र.र.स. 8/7), शुद्धगन्धक अर्धनिष्क एवं शुद्ध पारद, गन्धक की अपेक्षा अर्कांश (12वां भाग) लेकर दोनों को खरल में डालकर तेज धूप में तब तक दृढ मर्दन करें जब तक कि इसकी नवनीत समान पिष्टि न बन जाये, यह नवनीतपिष्टि या रसपिष्टि कहलाती है, a butter like paste formed by triturating mercury and sulphur in sunlight

नवनीताभ्रक
navanītābhraka
धान्याभ्रक: नवनीताभ्रक। (आ.प्र. 178), नवनीताभ्रक, संस्कारित अभ्रक को कहते हैं, processed mica

नस्य
nasya
औषधमौषधसिद्धो वा स्नेहो नासिकाभ्यां दीयत इति नस्यम्। (सु.चि. 40/21), किसी औषध या औषधसिद्ध स्नेह को नासिकामार्ग से देने को नस्य कहते हैं, nasal insufflation

नागसम्भूतचपल
nāgasambhūtacapala
त्रिंशत्पलमितं भागं भानु दुग्धेन मर्दितं विमर्द्यं पुटयेत्तावद्यावत कर्षावशेषितं न तत्पटु सहस्रेण क्षयामायाति सर्वदा। चपलोऽयं समुद्दिष्टो वार्तिकै नागसम्भव:।। (रसेन्द्र चूडामणि 4/54-56), नागभस्म तीस पल लेकर मदार के दूध के साथ मर्दन कर पुट दें, इस प्रकार तब तक पुट दें जब तक वह कर्ष शेष रह जाय, वह हजारों पुट देने पर भी कभी नष्ट नहीं होता है, उसी को नागसम्भूत चपल कहते हैं, 30 palas of lead rubbed with arkadugdha within two earthen lids, subjected to heating treatment is called puta paka, arka dugdha bhavana and putapaka is repeated till it remains to one karsha quantity, which will not loose its weight even after 1000 put, then it is known nagasambhuta chapala

नागोदर
nāgodara
तमेव वाताभिपन्नमेव, पुन: पुनरनया वृत्या प्रविलीयमानमल्पीभवन्तं नागोदरमिति ब्रुवते। (ड.-सु.शा. 10/57), हाथी (नाग) के समान उदर, जिसमें गर्भ की वृद्धि, उदर की वृद्धि के परिप्रेक्ष्य में कम होती है, आधुनिक मतानुसार इसका कारण गर्भोदक की वृद्धि है, distended abdomen like that of an elephant, where the fetal growth is comparatively less than enlargement of abdomen, according to modern medicine this condition is due to increased amniotic fluid

नाडी
nāḍī
1. ताम्रादिरचितनलिकाम्। (ड.-सु.सू. 27/17), नलिका, नली, a tube 2. दन्तनाडी। (सु.चि. 22/26), दंत में होने वाला नाड़ीव्रण, dental sinus 3. नाडीव यद्वहति तेन मता तु नाडी; येन हेतुना नाडीवत् प्रणालीवत् वहति याति तेन हेतुना नाडी मतेत्यर्थ:। (ड.-सु.नि. 10/10), नाडीव्रण, a sinus

नाडीयन्त्र
nāḍīyantra
नाडीवन्मध्यच्छिद्राणि। (ड.-सु.सू. 7/13), नाड़ी के समान मध्य में खोखला स्थान युक्त यन्त्र, नलिकाकार यन्त्र, एक या दो ओर मुख, tubular instrumants, endoscopes

नानात्मज
nānātmaja
नानात्मज इति ये वातादिभिर्दोषान्तरासंपृक्तैर्जन्यन्ते। (चक्र.-च.सू. 20/10), नानात्मजा: सर्वे इति दोषान्तरासंपृक्तदोषजन्या उक्ता:। (चक्र.-च.सू. 20/24), नानात्मज=न+आत्मज अर्थात् जिसका स्वरूप आत्मज हो, अर्थात् एक दोष से उत्पन्न हो, स्वतंत्र रूप से एक दोष से उत्पन्न होने वाला, that manifests without combination of doshas

नाभि
nābhi
1. चक्रस्य मध्यभाग:। (सु.शा. 7/5), पहिये का मध्यभाग, centre of a circle 2. नाभि, umbilicus

नामकर्म
nāmakarma
नामकरण संस्कार। (च.शा. 8/50), शिशु के नामकरण के समय किये जाने वाले होमकर्म, naming ceremony

नाल
nāla
नाभिनाल:। (अ.सं.शा. 3), नाभिनाल, umbilical cord

नासा
nāsā
नासिका। (सु.शा. 5/4), nose

नासानाह
nāsānāha
नासाप्रतिनाह:। (सु.उ. 23/9), उदानवायु कफ से आवृत होकर नासाश्रित होकर प्रतीनाह उत्पन्न करती है, nasal obstruction

नासापरिशोष
nāsāpariśoṣa
नासागत रोग, नासागत कफ, वायु पित्त से अवशोषित होकर ऊर्ध्व एवं अध: श्वास में कष्ट उत्पन्न करता है। (सु.उ. 22/17), dry nose syndrome, rhinitis sicca

नास्तिक
nāstika
नास्ति पुनर्भवो नास्ति कर्मफलं नास्त्यात्मेत्यादिनास्तिना प्रचरतीति नास्तिक:। (चक्र.-च.सू. 11/6), तस्मान्नास्ति परलोक इति नास्तिकाभिप्राय:। (चक्र.-च.सू. 11/6), जो पुनर्जन्म, कर्मफल, आत्मा आदि की सत्ता को नहीं स्वीकार करते हैं, उन्हें 'नास्तिक' कहा जाता है, परलोक इत्यादि नहीं होते, ऐसा आग्रह रखने वाले 'नास्तिक' कहे जाते हैं, heterodox, one who does not belive in rebirth, results of action, the soul, one who does not belive in the world beyond this world

निगमन
nigamana
निगमनं हेतुसाधितसाध्यधर्मकथनं, यथा- तस्मादग्निमानिति। (चक्र.-च.सू. 30/18), हेतु, जो साधित साध्यधर्म का कथन हो, उसे निगमन कहा जाता है, या हेतु द्वारा सिद्ध धर्म का कथन अथवा पक्ष को साध्य युक्त जान लेना 'निगमन' कहलाता है, उदा. इस कारण यह अग्निमान है, reasonable exposition

निग्रह
nigraha
अप्रवृत्ति। (च.सू. 16/8), रुक जाना, stasis

निचित
nicita
निचित: संचितो वसन्तपूर्वकाले। (चक्र.-च.सू. 6/22), पूर्वकाल में संचित दोष को निचित कहते हैं जैसे बसन्त के पहले हेमन्त में कफ का संचय होना, earlier accumulated dosha, for example accumulation of kapha in hemanta

नित्यग
nityaga
नित्यं शरीरस्य क्षणिकत्वेन गच्छतीति नित्यग:। (चक्र.-च.सू. 1/42), जो प्रतिक्षण शीर्यमाण शरीर को निरन्तर बनाए रखता है, उसे नित्यग कहते हैं,

(इसका सन्दर्भ आत्मा से है), which preserves the body that undergoes decay at every moment

निदान
nidāna
निदानं कारणमित्युक्तम्। (च.नि. 1/7), निदानं कारणमिहोच्यते, तच्चेह व्याधिजनकं व्याधिबोधकं च सामान्येनोच्यते। (चक्र.-च.नि. 1/1-2), सेतिकर्त्तव्यताको रोगोत्पादकहेतुर्निदानम्। (मधु.-मा.नि.), रोग का कारण, निदान का अर्थ है व्याधि को उत्पन्न करने वाला, निदान का तात्पर्य व्याधिजनक हेतु के अतिरिक्त व्याधि का ज्ञान कराने वाले साधन जैसे पूर्वरूप, रूप, उपशय, एवं संप्राप्ति आदि से भी लिया गया है, कर्तव्य की अनेकताओं से युक्त अर्थात् दोष प्रकोपणादि अनेक कार्यों को करते हुये जो रोगों को उत्पन्न करता है, वह निदान है, etiological factor, causative factors, diagnostic features

निदानपरिवर्जन
nidānaparivarjana
निदानानां दोषकारकहेतूनां रोगकारकहेतूनां च सर्वतो वर्जनम्। (ड.-सु.उ. 1/25), जिन कारणों से दोषों की वृद्धि एवं रोगों की उत्पत्ति होती है, उनका परित्याग करना, avoidance of disease causing factors

निदानार्थकर
nidānārthakara
निदानस्यार्थः प्रयोजनं व्याधिजननं, तत् करोतीति निदानार्थकरः। (चक्र.-च.नि. 8/16), एक रोग जब दूसरे रोग को उत्पन्न करता है तो उसे निदानार्थकर रोग कहते हैं, disease as a causative factor

निद्रा
nidrā
यदा तु मनसि क्लान्ते कर्मात्मानः क्लमान्विता, विषयेभ्यो निवर्तन्ते तदा स्वपिति मानवः। (च.सू. 21/35), समस्त इन्द्रियाँ अपने अपने विषयों से निवृत्त हो जाती हैं, मन के थकने पर मानव सो जाता है, नींद आना, sleep

निद्रानाश
nidrānāśa
निद्रा न आना। (च.सू. 16/14), insomnia

निद्राल्पता
nidrālpatā
स्वल्पनिद्रत्वम्। (मा.नि.), निद्राहानि, disturbed or less sleep

निपात
nipāta
निपात इति रसनायोगे। (चक्र.-च.सू. 26/66), जिह्वा के साथ संयोग होना, contact with tongue

निभृत
nibhṛta
निभृतामिति विनीताम्। (चक्र.-च.शा. 8/52), विनयशील, विनम्र, quiet, humble

निमित्त
nimitta
1. कारण। (सु.चि. 34/3), हेतु, कारण, etiological factor 2. शकुन, चिह्न। (च.इ. 12/21), शकुन, omen

निमिष
nimiṣa
वातज, असाध्य नेत्ररोग। (सु.उ. 1/29), frequent blinking

निमेष
nimeṣa
निमीलनम्। (ड.-सु.शा. 1/17), लघु उच्चारण में लगा समय। (सु.सू. 6/5), नेत्र की पलकों का बन्द होना, blinking of eye

नियन्ता
niyantā
नियन्ता अनीप्सिते विषये प्रवर्तमानस्य मनसः। (चक्र.-च.सू. 12/8), नियन्ता नियमनकर्ता द्विष्टाद्रव्यादिति। (शिव.-च.सू. 12/8), अनिच्छित विषयों में मन की प्रवृत्ति को रोकने वाला नियन्ता कहा गया है, restrainer, that restrains the mind from wandering on unwanted subjects

नियामन
niyāmana
रोधनाल्लब्धवीर्यस्य चपलत्वनिवृत्तये। क्रियते पारदे स्वेदः प्रोक्तं नियमनं हि तत्।। (र.र.स. 8/69), रोधन संस्कार से प्राप्त वीर्य से पारद में उत्पन्न चंचलता को निवृत्त करने के लिये पारद का स्वेदन किया जाता है, इसे नियामन संस्कार कहते हैं, boiling of mercury to remove its excessive mobility

नियुद्ध
niyuddha
बाहुयुद्धम्। (ड.-सु.उ. 64/38), बाहुयुद्ध, wrestling

निरामज्वर
nirāmajvara
निरामश्चाप्यतः प्रोक्तो ज्वरः प्रायोष्टमोऽहनि। (मधु.-मा.नि. 2/65), सामान्यतः आठ दिन बाद ज्वर आमरहित होकर निराम हो जाता है, fever after 7 days

निराश्रय
nirāśraya
निराश्रयो मर्माद्यनाश्रितः। (ड.-सु.सू. 5/9), निराश्रय इति अङ्गुल्याऽवमर्दनेनोन्मूलिताशेषपूयाश्रयः। (हारा.-सु.सू. 5/9), मर्मादि का आश्रय न होना, आश्रित पूय आदि को अंगुलि से मर्दन करके न निकालने से शेष पूय आदि, area (anatomical site) free of marmas or vital sites, pus which is present, unexpelled by means of pressing with fingers

निरुत्थलौह
nirutthalauha
रौप्येण सह संयुक्तं ध्मात रौप्येण चेल्लगेत्। तदा निरुत्थमित्युक्तं लोहं तदपुनर्भवम्।। (र.र.स. 8/31), किसी धातु की भस्म को चांदी के पत्रों के साथ मूषा में रखकर धमन करने से उस भस्म का कुछ भी अंश यदि चांदी के साथ नहीं मिलता हो तो उसे निरुत्थ कहते हैं, calcined preparation that can not be revert back to its original form

निरूह
nirūha
शरीरारोहणाद्दोषनिर्हरणादचिन्त्यप्रभावतया यस्मिन्नूहासम्भवान्निरूहः। (अ.सं.सू. 28/6), शरीर रोहण, दोषनिर्हरण, अचिन्त्यप्रभाव करने वाली बस्ति निरूह बस्ति कहलाती है, evacuative decoction enema

निर्गन्ध मूर्च्छना
nirgandha mūrcchanā
निर्गन्धा च सगन्धा च मूर्च्छना द्विविधा मता। निर्गन्धा गन्धरहित सगन्धा गन्धायुता।। (र.त. 6/2), गन्धक रहित मूर्च्छना, a kind of murcchana without sulpher,

निर्घातन
nirghātana
निर्घातनं इतश्चेतश्च विचाल्य निर्हरणम्, इतश्चेतश्च घट्टनमित्येके। (ड.-सु.सू. 7/17), शल्यादि को चलाकर निकालना, घट्टन होना, mobilization

निर्घृणा
nirghṛṇā
निष्कृपा। (चक्र.-च.सू. 7/56), निर्दयी, merciless

निर्जीवबन्ध nirjīvabandha
जीर्णाभ्रको वा परिजीर्णगन्धो भस्मीकृतरचाखिललोह मौलिः। निर्जीवनामा हि स भस्मसूतो निःशेषरोगन्विनिहन्ति सद्यः।। (र.र.स. 11/76) अभ्रकजीर्ण तथा गन्धकजीर्ण पारद को पुनः भस्म किया जाये तो वह निर्जीवबन्ध अर्थात् अग्निसंयोग से न उड़ने वाला पारद कहा जाता है, उक्त क्रम में भस्मीभूत पारद सेवन करने में धातुओं की भस्मों से श्रेष्ठतर गुणकारक होता है, a type of processing of mercury

निर्दुह्य nirduhya
निर्दुह्यमानमुत्पीडाद्वज्रं सक्षीरशोणितं अथवाऽभ्येति सहसा प्रत्यक्षं चोपलभ्यते।। (का.सं.सू. 19), यदि स्तन को दबाकर दुग्ध को निकाला जाए तो वह 'वज्र' दुग्ध रक्त से मिश्रित होकर सहसा प्रत्यक्ष रूप से बाहर निकल आता है, manual extraction of blood stained breast milk

निर्देशकारित्व nirdeśakāritva
निर्देशकारित्वं वैद्योपदिष्टार्थकर्तृत्वम्। (चक्र.-च.सू. 9/9), वैद्य के द्वारा निर्देश किये गये उपदेश का पालन करना 'निर्देशकारित्व' गुण कहा जाता है, the quality of obeying the advices of physician

निर्भुग्न nirbhugna
अतिकुटिलम्। (चक्र.-च.चि. 3/104), उत्तानीकृतम्। (ड.-सु.उ. 13/5), वक्रीभवनम्। (अरु.-अ.हृ.सू. 28/45), मुड़ा या झुका हुआ, bent, hunchback

निर्मुक्त nirmuktā
निःशेषेण मुक्ता निर्मुक्ताः। (चक्र.-च.सू. 11/18), पूर्णरूप से रज और तम से रहित को 'निर्मुक्त' कहा गया है, annihilator, a person whose reja and tama are annihilated

निर्मुखजारणा nirmukhajāraṇā
निर्मुखा जारणा प्रोक्ता बीजाऽऽदानेन भागतः। (र.र.स. 8/75), वैक्रान्त वज्रसंस्पर्शात् दिव्यौषधिबलेन वा, निर्मुखो भक्ष्येद्देवि क्षणेन गगनं रसः।। (रसार्णव 11/16), बिना मुख बनाये बीज की पूर्ण मात्रा में एक साथ की जाने वाली जारणा को निर्मुख जारणा कहते हैं, वैक्रान्त तथा वज्र के संसर्ग से या दिव्यौषधियों के बल से पारद क्षण भर में अभ्रक को ग्रास कर जाता है, adding of metal into processed mercury without making mouth

निर्यूह niryūha
श्रृतः क्वाथः कषायश्च निर्यूहः स निगद्यते। (शा.सं.म. 2/2), यह कषाय का एक पर्याय है, देखें. कषाय, क्वाथ, a synonym of decoction

निर्लेपत्व nirlepatva
निर्लेपत्वम्............। (र.र.स 8/3), किसी पदार्थ का पात्र से न चिपकना निर्लेपत्व कहा जाता है, non sticky character of the substance in utensil

निर्वाप nirvāpa
तप्तस्याप्सु विनिक्षेपो निर्वापः स्नपनं च तत्। (र.र.स. 8/56), धात्वादेर्वह्नितप्तस्य जलादौ यन्निषेचनम्, स निर्वापः स्मृतच्चापि निषेकः

स्नपनञ्च तत्। (र.त. 2/40), धातु या खनिज पदार्थ द्रव्य को अग्नि तप्त करने के बाद किसी द्रव द्रव्य से बुझाना निर्वाप कहलाता है, निषेक और स्नपन इसके पर्याय हैं, quenching of red hot metal in a liquid, when the heated red hot metals or minerals are immersed in some liquid to remove their heat is known as 'nirvapa', its synonyms are nisheka and snapana

निर्वापण nirvāpaṇa
साध्यलोहेऽन्यलोहं चेत् प्रक्षिप्तं वङ्कनालतः। निर्वापणन्तु तत् प्रोक्तम्।। (र.र.स. 8/25), सिद्ध किये जाने वाले लोह में दूसरी धातु को गलाकर वंकनाल द्वारा मिश्रित किये जाने को निर्वापण कहते हैं, यही निर्वाहण भी है, जिस धातु को पिघलाकर मिलाते है उसे निर्वापण एवं जिस धातु में मिलाते है उसे निर्वाहण कहते हैं, amalgamation, pouring of molten metal into another metal to make an alloy 2. निर्वापणं दाहप्रशनम्। (चक्र.-च.सू. 13/14), दाह को शमन करना, pacifying burning sensation

निर्वाहण nirvāhaṇa
साध्य लोहेऽन्यलोहं चेत् प्रक्षिप्तं वङ्कनालतः। निर्वापणन्तु तत् प्रोक्तं वैद्येर्निर्वाहणं रवलु।। (र.र.स. 8/25), साध्यलोह में उसी समय दूसरी धातु को गलाकर वंकनाल द्वारा उसमें मिलाने की क्रिया को 'निर्वाहण' कहा जाता है, amalgamation, formation of an alloy

निर्विकार nirvikāra
निर्विकारः निर्विकृतिः, तेन नीरोगत्वमत्मनः। (चक्र.-च.सू. 1/56), विकृति का अभाव या विकृति के रहितत्व को निर्विकार कहते हैं, यह आत्मा का एक विशेषण है, which is devoid of any abnormality is called nirvikar, this is an epithet of Atma

निर्विषजलौका nirviṣajalaukā
निर्विषाः जलौका। (सु.सू. 13/12), निर्विष जोंक, विषरहित जौंक, non poisonous leech

निर्ह्राद nirhrāda
निर्ह्रादो मेघं विनागर्जितम्। (चक्र.-च.सू. 12/8), बिना बादल के आकाश में मेघध्वनि सुनाई देना, roar in sky without cloud

निवृत्ति nivṛtti
वैराग्यम्। (च.सू. 25/40), वैराग्य, asceticism

निशि niśi
रात्रि। (सु.चि. 31/22), ऊर्ध्वजत्रुविकारेषु स्वप्नकाले प्रशस्यते। (अ.हृ.सू. 13/41), औषध सेवन काल, रात्रि में स्वप्नकाल में औषध सेवन करना, taking medicine at bed time

निश्चयात्मिका niścayātmikā
निश्चयात्मिका वस्तुस्वरूप परिच्छेदात्मिका। (चक्र.-च.सू. 8/12), वस्तु के स्वरूप का सविकल्पक ज्ञान कराना, definite knowledge of the perceived object

निश्वास niśvāsa
श्वासस्य शरीरान्तःप्रवेशनम्। (अरु.-अ.हृ.सू. 11/1), श्वास का अन्तःप्रवेश होना, inspiration

निषेकदेश
niṣekadeśa
मध्यमा मध्यमानां च दरिद्राजां च दुःखिनाम्। निषेकदेश सात्म्ये च तान् विद्यात् पण्डितो भिषक्।। (का.सं.सू. स्वेद 30), बालक का जन्म/उत्पत्ति स्थान, birth place

निष्कोषण
niṣkoṣaṇa
दन्तकाष्ठः। (ड.-सु.सू. 23/8), दांत स्वच्छ करने के लिये प्रयुक्त दन्तकाष्ठ, teeth cleaner, tooth brush

निष्क्रमण
niṣkramaṇa
बहिर्निष्क्रमणं शून्यागारचैत्यश्मशानवृक्षाश्रयान् क्रोधभयशस्करांश्च भावानुच्चैर्भाष्यादिकं च परिहरेदयानि च गर्भं व्यापादयन्ति। (सु.शा. 10/3), बाहर निकलकर टहलना, गर्भिणी के लिए निषिद्ध, strolling, venturing out

निष्ठीवन
niṣṭhīvana
थूत्करणम्। (ड.-सु.शा. 2/32), थुत्थुगिका। (ड.-सु.उ. 48/14), थूक, थूकना, spit

निस्तुद्यत
nistudyata
निस्तुद्यते सूचीभिरिव। (ड.-सु.नि. 3/8), श्लैष्मिक अश्मरी लक्षण, सूची वेधनवत् पीड़ा होना, pricking pain

नेत्र
netra
1. अक्षिगोलक। (सु.शा. 5/4) नेत्र, आंख, eyes 2. बस्तिनेत्र। (च.सि. 11/21), बस्तिनलिका। (सु.चि. 35/7), बस्तिनेत्र, catheter, enema nozzle

नैगमेष
naigameṣa
पूतना शीतनामा च तथैव मुखमण्डिका। नवमो नैगमेषश्च यः पितृगृहसंज्ञितः।। (सु.उ. 27/5), बालग्रह विशेष, पितृग्रह नैगमेष, the ninth graha which is paternal, one among supernatural powers afflicting a child

नैर्लज्य
nairlajya
जुगुप्सितगोपनेच्छा लज्जा, तदभावो नैर्लज्यम्। (चक्र.-च.सू. 7/27), गोपनीय विषयों को गुप्त रखने की इच्छा 'लज्जा' है, परन्तु इसका अभाव नैर्लज्य है, निर्लज्जता, shamelessness

न्यच्छ
nyaccha
लाञ्छनमिति लोके। (ड.-सु.नि. 13/44), क्षुद्ररोग, लांछन, त्वक्रोग, a skin disease, naevus

न्युब्ज
nyubja
अधोमुखम्। (चक्र.-च.शा. 8/29), नीचे की ओर मुख, pronation

पक्ति
pakti
जाठराग्नि। (च.चि. 3/130), अग्निकृताऽऽहारपरिणतिः। (ड.-सु.शा. 1/19), जठराग्नि, पाचन, digestion, digestive juice

पक्तिद
paktida
पाकोत्पादकम्। (अ.हृ.सू. 4/99), पाचन करनेवाला, digestive

पक्तिरस
paktirasa
शोणिताज्जलयोऽष्टो तु नव पक्तिरसस्य तु। (का.शा. शरीरविचय), आहार के

पाचनोपरांत जो सबसे पहले धातु बनती है तथा जिसे 'रस' कहते हैं, यह पक्तिरस कहलाता है, इसका नौ अञ्जली प्रमाण होता है, digestive juice, liquid digested portion of diet, chyme

पक्तिरुज
paktiruja
वीर्यप्रदं जलनिधेर्जनिता च शुक्तिर्दीप्ता च पक्तिरुजमाशु हरेदवश्यम्। (र.र.स. 4/15), भोजन पाचन काल में होने वाला शूल, समुद्र में उत्पन्न हुई मुक्ताशुक्ति अग्निदीपक तथा परिणामशूल नाशक होती है, pain produced during digestion of food

पक्तिस्थान
paktisthāna
पक्तिस्थानात् अग्निस्थानात्। (ड.-सु.उ. 39/18), अग्नि का स्थान, place of digestion

पक्तृ
paktṛ
इति भौतिकधात्वन्न पक्तृणा कर्म भाषितम्। (च.चि. 15/38), जाठराग्नि, पाचकाग्नि, digestive power

पक्तृवेग
paktṛvega
प्रसन्नवर्णेन्द्रियमिन्द्रियार्थानिच्छन्तमव्याहत पक्तृवेगम्। सुखान्वितं तु(पु)ष्टि बलोपपन्नं विशुद्धरक्तं पुरुषं वदन्ति।। (च.सू. 24/24), अग्निबल, पाचकाग्निशक्ति, जाठराग्नि से पचन करने का वेग, speed of digestion

पक्व
pakva
1. एतान्येव तु लिङ्गानि विपरीतानि यस्य तु। लाघवं च मनुष्यस्य तस्य पक्वं विनिर्दिशेत्।। (सु.उ.), निराम, निराम अवस्था, which is properly digested 2. पक्वं कालपक्वं मृत्युग्रस्तमित्यर्थः। (ड.-सु.सू. 31/12) जिसका काल पक्व हो गया हो अर्थात् मृत्यु समीप हो, one whose death is near

पक्वगुद
pakvaguda
स्रस्तपक्व गुदं पतितगुद वलिम्। (च.चि. 19/9), जिसके गुदा में पाक हो गया हो, सन्निपातज अतिसार का एक लक्षण, proctitis

पक्वजल
pakvajala
पक्वमिति वर्षास्वभिनवभूमिसंबन्धजनितपैच्छिल्यव्यम्लत्वादि दोषरहितम्। (चक्र.-च.सू. 6/46), वर्षाऋतु के पानी के दोष यथा पिच्छिलता, मल आदि से रहित, शरद ऋतु का जल 'पक्व जल' है, in autumn or early winter, the water becomes free from impurities of rainy season, it is pakva jala

पक्वजाम्बवप्रतीकाश
pakvajāmbavapratikāśa
अथार्शः पक्वजाम्बवप्रतीकाशमवसन्नमीषन्नतमभिसमीक्ष्योपावर्त्तयेत्। (सु.चि. 6/4), (क्षार कर्म के कारण) जिस अर्श का वर्ण पके हुए जामुन फल के समान हो गया हो, a cauterized pile mass which has turned purple coloured like a blue berry

पक्वपीनस
pakvapīnasa
दन्त्या च साधितं तैलं नस्यं स्यात् पक्वपीनसे। (च.चि. 26/145), पाकप्राप्त पीनस, जीर्णप्रतिश्याय, chronic rhinitis

पक्वमूषा
pakvamūṣā
कुलालभाण्डरूपा या दृढा च परिपाचिता। पक्वमूषेति सा प्रोक्ता पोटल्यादिविपाचने।। (र.र.स. 10/27), कुम्हार की बनाई हुई हांडी या घट के लिए बनाए हुए भिन्न भिन्न कपाल के आकार की एक दृढ़ और अग्नि में अच्छी तरह पकाई हुई मूषा को पक्वमूषा कहते हैं, a crucible which has been prepared by heating it at high temperatures

पक्वरस
pakvarasa
पक्वरसः यः क्वथितेनेक्षुरसेन क्रियते। (चक्र.-च.सू. 27/184), जो मद्य इक्षुरस को पकाकर तैयार किया जाता है या जो मद्य पक्व इक्षुरस द्वारा तैयार किया जाता है उसे पक्वरस नाम दिया जाता है, alocholic beverage prepared out by boiling of sugarcane juice

पक्वरससीधु
pakvarasasīdhu
परिपक्वान्नसन्धानसमुत्पन्नां सुरां जगुः। (शा.सं.म. 10/4), मीठे रस वाले द्रव्यों के रस को पकाकर जो संधान करते हैं, उसे पक्वरस सीधु कहते हैं, the sidhu prepared by fermenting the cooked juice & sweet substances

पक्वलोष्ट
pakvaloṣṭa
द्राक्षायाः पक्वलोष्टस्य प्रसादे मधुकस्य च। विनीय सघृतं बस्तिं दद्याद्दाहेऽतियोगजे।। (च.सि. 7/14), अग्नि से पके हुए मिट्टी के गर्म ढेले को पानी में बुझाकर एवं उसी पानी को छानकर दाशप्रशमनार्थ बस्ति आदि में प्रयुक्त करना, hot mud ball, backed clay

पक्वशोणिताभ
pakvaśoṇitābha
पक्वशोणितमिव रक्तकृष्ण वर्णयुतम्। (च.चि. 19/9), लाल काले वर्ण के रक्त जैसा दिखने वाला, which appears blackish red in colour

पक्वशोथ
pakvaśotha
नाडीव्रणाः पक्वशोथास्तथा क्षतगुदोरम्। (च.चि. 25/56), शोथ की पकी हुई अवस्था, suppuration

पक्वातिसार
pakvātisāra
गणौ प्रियङ्ग्वम्बष्ठादौ पक्वातिसारनाशनौ। (सु.सू. 38/47), अतिसार की वह अवस्था जिसमें आम न रहता हो, non infected diarrhoea, chronic diarrhoea

पक्वाधान
pakvādhāna
अन्नं पक्वमाधीयते स्थाप्यतेऽस्मिन्निति पक्वाधानम्। (अरु.-अ.हृ.सू. 12/1), पक्वाशयः। (हे.-अ.हृ.सू. 12/1), आहार पाचन के पश्चात् उसको धारण करने वाला शरीर अवयव, वात का स्थान, पक्वाशय, an organ, large intestine, seat of vayu

पक्वाधानालय
pakvādhānālaya
पक्वाशयस्थानम्। (ड.-सु.नि. 1/9), पक्वस्याधानमाधारो आलयः स्थानं यस्य। (गय.-सु.नि. 1/9), जिसका स्थान पक्वाधान है, जैसे अपानवायु, having seat at colon, apana vayu

पक्वान्न
pakvānna
कृतान्नं। (अ.हृ.सू. 6/42), पका हुआ अन्न या आहार द्रव्य, cooked food

पक्वाशय
pakvāśaya
पित्ताशयादधः पक्वाशयः। (ड.-सु.शा. 5/8), शरीर आशय। (च.सू. 14/9), पुरीषवहस्रोतोमूल। (च.वि. 5/8), श्रोणीगुदयोरुपरी अधो नाभेः पक्वाशयः। (ड.-सु.सू. 21/6), शरीर अवयव, नाभि के नीचे, श्रोणि एवं गुद के ऊपर स्थित, पुरीषवहस्रोतोमूल, large intestines

पक्वाशयगुद
pakvāśayaguda
पक्वाशयश्च गुदं चेति, किंवा पक्वाशयसमीपस्थं गुदं पक्वाशयगुदम्, उत्तरगुदमित्यर्थः। (चक्र.-च.शा. 6/21), उत्तरगुद, anorectum

पक्वाशयमध्य
pakvāśayamadhya
पक्वामाशयोर्मध्यस्थं यत् पित्तम्। (अरु.-अ.हृ.सू. 12/10), पक्वाशय एवं आमाशय के मध्य का स्थान, जहाँ पाचकपित्त रहता है, duodenum, a place of pitta

पक्वाशयशूल
pakvāśayaśūla
पक्वाशये शूलवत् वेदना। (च.सू. 7/8), पक्वाशय में होने वाली शूलवत् वेदना, पुरीषवेगरोध लक्षण, intestinal colic

पक्ष
pakṣa
1. परं पक्षरागाद् बुद्धिप्रकर्षान्निश्चिता इवाभिधीयन्ते पक्षा इत्यर्थः। (चक्र.-च.सू. 25/26), वाद का एक अंग, a part of discussion 2. पञ्चदशाहोरात्राणि पक्षः। (सु.सू. 6/5), शुक्लः कृष्णश्च इति पक्षक्रमोमवास्यावधिं मासं ज्ञापयति, अन्ये तु कृष्णः शुक्लश्च। (ड.-सु.सू. 6/5), कालविभाग, मासार्ध, पन्द्रह अहोरात्र, शुक्ल व कृष्णभेद से दो पक्ष, fortnight 3. शरीरार्ध, वाम एवं दक्षिण, शरीर का एक ओर का आधा भाग, a half of body

पक्षग्रह
pakṣagraha
मध्यममार्गानुसारी रोग। (च.सू. 11/49), शरीर के एक अर्धभाग में जकड़ाहट होना, stiffness in one half of body

पक्षवध
pakṣavadha
अशीतिवातविकार में एक रोग। (च.सू. 20/11), मध्यममार्गानुसारी रोग। (च.सू. 11/49), हत्वैकं मारुतः पक्षं दक्षिण वाममेव वा, कुर्याच्चेष्टानिवृत्तिं हि रुजं वाक्स्तम्भमेव च। (च.चि. 28/53), अस्सी वातविकारों में से एक, मध्यममार्गानुसारी रोग, वायु शरीर के वाम या दक्षिण एक पक्ष में स्थित होकर चेष्टानिवृत्ति, रुज, वाक्स्तम्भ करता है, hemiplegia

पक्षसंश्रय
pakṣasaṃśraya
रागतः पक्षसंग्रहात्। (चक्र.-च.सू. 25/26), किसी एक पक्ष की संगत करने से उसी के साथ रहना, remains as one part of a group

पक्षहत
pakṣahata
नष्टार्धभाग। (च.सि. 2/21), शरीर के एक पक्ष का कार्यहीन होना, hemiplegia

पक्षाघात pakṣāghāta
पक्षवध। (च.सू. 14/21), शरीर के एक अर्ध भाग का निष्क्रिय होना, hemiplegia

पक्षान्त pakṣānta
सम्यगर्थावधारणरूपं पक्षान्तम्। (चक्र.-च.सू. 25/27), उचित निर्णय लेना, proper decision

पक्षिक pakṣika
व्रीहिभेद। (रा.नि. 16/120), चावल का भेद, a type of rice

पक्षिण pakṣiṇa
पक्ष (पंख) युक्त विहग या पक्षी। (च.सू. 13/11), दो पंख युक्त पक्षी, bird with two wings

पक्ष्म pakṣma
वर्त्मगतरोममालिका:। (ड.-सु.उ. 16/1), वर्त्मो के ऊपर स्थित रोम, पलकों के बाल, eyelashes

पक्ष्मकोप pakṣmakopa
उपपक्ष्ममाला 'परिवाल' लोके। (ड.-सु.उ. 3/30), सर्वज याप्य नेत्ररोग, नेत्रपक्ष्म का एक विकार, दोष पक्ष्माशयगत होकर रोमों को खर एवं तीक्ष्णाग्र करते हैं, यह नेत्र को कष्ट पहुंचाते हैं, इनको निकालने पर शान्ति प्राप्त होती है, trichiasis (misdirected eye lashes)

पक्ष्मकोपप्रतिषेध pakṣmakopapratiṣedha
पक्ष्मगतरोग चिकित्सा विषयक अध्याय। (सु.उ. 16), a chapter on diseases of eye lashes

पक्ष्मबाल pakṣmabāla
पक्ष्मरोम। (च.चि. 13/39), पक्ष्मरोम या पलकों के रोम, eye lashes

पक्ष्ममण्डल pakṣmamaṇḍala
पक्ष्मवर्त्मश्वेतकृष्णदृष्टीनां मण्डलानि तु, अनुपूर्वं तु ते मध्याश्चत्वारोऽन्त्या यथोत्तरम्। (सु.उ. 1/15), नेत्र के पांच मण्डलों में एक, सबसे प्रथम मण्डल, circular area formed by eyelashes

पक्ष्मल pakṣmala
घनरोमान्वितम्। (ड.-सु.चि. 24/66), घन रोमयुक्त पक्ष्म, long and thick eyelashes

पक्ष्मशात pakṣmaśāta
पक्ष्मान्तमाश्रितं पित्तं कण्डवादिकं करोति तं रोगमाचार्या नाम्ना पक्ष्मशातमिति वदन्ति। (इन्दु.-अ.सं.उ. 11/8), पित्तदोष के कारण पक्ष्म में कण्डू, आदि होकर पक्ष्मों का गिरना, madarosis

पक्ष्माशय pakṣmāśaya
अक्षिरोम्णोऽन्तर्भागो मध्य वा। (सु.उ. 3/29), अक्षिरोम कूप, root of eyelashes

पक्ष्मोपरोध pakṣmoparodha
पक्ष्मप्रकोपम्। (ड.-सु.उ. 16/9), वर्त्मनां संकोच: तथा खरत्वमन्तर्मुखत्वं च रोम्णाम्, अन्यानि वा रोमाणि जायन्ते। (अरु.-अ.हृ.उ. 8/21), पक्ष्मकोप,

27—4 Min. of HRD/2016

वर्त्मसंकोच, नेत्रपक्ष्मरोगों का खर एवं अन्दर की ओर मुड़ना, अन्य रोगों की उत्पत्ति होना, trichiasis, dystrichiasis, blepharospasm entropion symptom complex

पङ्क paṅka
कर्दम:। (इन्दु.-अ.सं.चि. 9, वातोल्बण पानात्यय), कीचड़, mud

पङ्कज paṅkaja
कुमुद पर्याय। (ध.नि. 4/136), कमल, lotus

पङ्कमलोपदेह paṅkamalopadeha
पङ्कमलाभ्यां लेप:। (अ.सं.सू. 8/17), कीचड़ एवं मल लेप, pasted as if mud and excreta

पङ्कि paṅki
ब्रीहि भेद। (रा.नि. 16/96), ब्रीहि का एक भेद, a variey of rice

पङ्कित paṅkita
पंकयुक्त होना। (अ.सं.शा 9/17), कीचड़युक्त, दन्त सम्बन्धी अरिष्ट, muddy

पङ्केरुह paṅkeruha
कमलम्। (रा.नि. करवीरादि 174), कमल, lotus

पङ्क्तिकण्टक paṅktikaṇṭaka
अपामार्ग पर्याय। (रा.नि. शताह्वादिवर्ग 90), हिं.-चिरचिटा, *lat-Achyranthes aspera* fam- amarynthaceae

पङ्क्तिबीज paṅktibīja
बर्बुर। (रा.नि. शाल्मल्यादि 37), हिं.-बबूल, कीकर, eng- Acacia, *lat- Acacia arabica* fam- mimosoidae

पङ्क्तिबीजक paṅktibījaka
कर्णिकार। (रा.नि. प्रभद्रादिवर्ग 42), एक वनस्पति, हिं.-अमलतास, सं.-आरग्वध, *lat- Cassia fistula* fam- caesalpiniodae

पङ्गु paṅgu
विकलोभयपाद:। (इन्दु.-अ.सं.नि. 15/32), सक्थ्नोर्द्वयोर्वधादिति सर्वथा गतिविघातात् पङ्गुरित्यर्थ:। (ड.-सु.नि. 1/77), पादघात, दोनो पैरों में कार्य असामर्थ्य, paraplegia

पचन pacana
पचनमाहारादिपाक:। (ड.-सु.सू. 41/4-3), जठराग्नि संयोग से आहार का पाचन, digestion

पचम्पचा pacampacā
दारुहरिद्रा पर्याय। (ध.नि. गुडूच्यादि 58), synonym of *Berbaris aristata* (Indian burberry)

पञ्च pañca
1. दशार्धम्। (चक्र.-च.सू. 27/28), दश का आधा, पाँच, five 2. विस्तृतम्। (र.र.स. 19/58-68), विस्तृत, extensive

पञ्चकर्म pañcakarma
वमन, विरेचन, नस्य, निरूह, अनुवासन आदि पाँच कर्म। (च.सू. 28/27), five biopurification procedures

पञ्चकर्मगुणातीत pañcakarmaguṇātīta
पञ्चशब्देन पञ्चमधात्वस्थितं कुष्ठमुक्तं, तत्र कर्माणि संशोधनसंशमनाभ्यङ्गगुग्गुलुशिलाजतु प्रभृतीनि, तेषां गुणाः फलानि, तेभ्योऽतीतम्। (ड.-सु.सू. 33/9), अस्थि धातु में स्थित कुष्ठ का संशोधन, संशमन, अभ्यङ्गादि से लाभ न होना, beyond benefits of panchakarma

पञ्चकापित्थघृत pañcakāpitthaghṛta
कपित्थफलमूलपुष्पत्वक्पत्रकल्ककषायसिद्धं पञ्चकापित्थं घृतं सर्वमूषिकविषहरम्। (ड.-सु.क 7/40), कपित्थ के फल, मूल, पुष्प, त्वक् एवं पत्र के कल्क तथा क्वाथ से सिद्धघृत (पंचकापित्थघृत), सभी प्रकार के मूषकविष का नाशक होता है, a ghee preparation for rat poisoning

पञ्चकृत् pañcakṛta
पक्वाण्ड वनस्पति। (रा.नि. शाल्मल्यादि 43), हिं.-पिलखन, पाकर, *lat- Ficus virans*

पञ्चकृत्व pañcakṛtva
पञ्चवारान्। (ड.-सु.शा. 9/11), पर्याय से पाँच बार, five times

पञ्चकृष्ण pañcakṛṣṇa
सविष कीट। (सु.क. 8/12), इसके दंश से कफविकार होते हैं, a poisonous insect

पञ्चकोल pañcakola
पिप्पली पिप्पलीमूलं चव्य चित्रकनागरैः। पञ्चभिः कोलमात्रं यत्पञ्चकोलं तदुच्यते। (भा.प्र.पू. हरीतक्यादि 72), पीपल, पिपरामूल, चव्य, चीता तथा सोंठ ये सभी पांच यदि एक एक कोल मात्र में एकत्र किये जायें, तो 'पञ्चकोल' कहलाते हैं, when the fruit and root of *Piper longum, Piper retrofractum, Plumbago zeylanica* and *Zingiber officinale* are mixed together in equal quantity of one kola each it is called panchakola

पञ्चकोलक pañcakolaka
पिप्पलीपिप्पलीमूलचव्यचित्रकशुण्ठ्याख्यं, पञ्चकोलसंज्ञम्। (अरु-अ.हृ.सू. 6/166), त्रिकटुकं चविकादित्रयं च, मरिचरहितं पञ्चकोलकसंज्ञम्। (हे.-अ.हृ.सू. 6/166), पिप्पली, पिप्पलीमूल, चव्य, चित्रक एवं शुण्ठी को सम्मिलित रूप से पञ्चकोल कहते हैं, a group of five drugs namely, *Piper longum*, root of *Piper longum, Piper chaba, Plumbago zeylanica* and *dry ginger*

पञ्चकोलघृत pañcakolaghṛta
तत्र सर्पिर्जठरापहम्, श्वयथु वातविष्टम्भं गुल्मार्शांसि च नाशयेत्। (च.चि. 13/114), चरकसंहिता चिकित्सास्थान उदरचिकित्सा में वर्णित उदर, शोथ, वातविष्टम्भ, गुल्म एवं अर्श नाशक योग, an ayurvedic preparation for GI disorders

पञ्चक्षीरीवृक्ष pañcakṣirīvṛkṣa
पञ्चक्षीरीवृक्षः न्यग्रोधोदुम्बरोऽश्वत्थपारीषप्लक्षपादपाः। पञ्चैते क्षीरिणो वृक्षास्तेषां त्वक् पञ्चवल्कलम्।। (भा.प्र. वटादि 15), वट, उदुम्बर, अश्वत्थ, पारीष व प्लक्ष के वृक्षों को पञ्चक्षीरी वृक्ष कहते हैं, तथा इनके त्वक् को पञ्चवल्कल कहते हैं,

the *Ficus benghalensis, Ficus glomerata, Ficus religiosa, Thespecia populnea* and *Ficus infectoria* are collectively designated as panchksheeri vriksha, and there barks as panchavalkala

पञ्चखर्पर pañcakharpara
तुत्थखर्परम्। (र.र.स. 2/124), blue copper

पञ्चगङ्ग pañcagaṅga
देशविशेषः। (चक्र.-च.चि. 4/3), पंचनद देश, पाँच नदियों का देश, पंजाब, जम्मू कश्मीर, a state of five rivers

पञ्चगण pañcagaṇa
पञ्चमूलानिः। (ड.-सु.उ. 48/19), पाँचमूल, a group of five roots

पञ्चगव्य pañcagavya
गोमूत्रं गोमयं क्षीरं दधि सर्पिस्तथैव च, समं योजितमेकत्र पञ्चगव्यमिति स्मृतम्। (ध.नि. 7/52), गव्यं क्षीरं दधि घृतं गोमूत्र गोमयं तथा। एकत्र योजितं तुल्य पञ्चगव्यमिहोच्यते। (र.त. 2/22), गोमूत्र, गोबर, गोदुग्ध, दधि एवं गोघृत को पञ्चगव्य कहते हैं, गाय के दूध, घृत, दही, गोमूत्र वा गोबर को तुल्य मात्रा में मिलाने पर पञ्चगव्य कहा जाता है, the mixture of cow's milk, ghee, curd, urine and dung in equal equantity

पञ्चगव्यघृत pañcagavyaghṛta
पंचगव्य सिद्ध घृत जिसका प्रयोग कामला, पाण्डु, ज्वर, शोथ में होता है। (च.चि. 16/43), (च.चि. 10/17), an ayurvedic prepration with cow's ghee, milk, urine, dung and curd

पञ्चगव्यसर्पि pañcagavyasarpi
सर्वापस्मारभूतनुत्। (सु.उ. 61/34-37), पाण्ड्वामयहनमिदम्। (अ.सं.चि. 18), विषमज्वरे बलार्थमुपयुक्तम्। (का.खि. 1/78), पंचगव्य सर्पि अपस्मार, भूत, पाण्डुरोग, विषमज्वर एवं बलहेतु प्रयोग होने वाला योग है, an ayurvedic medicinal preparation

पञ्चगुप्ति pañcagupti
स्पृक्का वनस्पति। (रा.नि. चन्दनादि 127), हिं.-असवरग, असारक,

पञ्चजन pañcajana
मनुष्यः पञ्चभिर्भूतैर्जन्यत इति। (का.चि. उदावर्तचि 4), पंचमहाभूत से जन्मा मनुष्य, man originated out of five primordial elements

पञ्चता pañcatā
मृत्यु। (सु.सू. 28/3), पंचतत्व में विलीन होना, death

पञ्चतिक्त pañcatikta
पटोलनिम्बभूनिम्बरास्नासप्तच्छदः। (च.सि. 8/8), पटोल, नीम, भूनिम्ब, रास्ना, सप्तपर्ण इनको पञ्चतिक्त कहते हैं, five bitter herbs

पञ्चत्व pañcatva
मरणम्। (चक्र.-च.शा. 1/71), मृत्यु, death

पञ्चत्वग्रहण pañcatvagrahaṇa
मरणज्ञानम्। (चक्र.-च.शा. 1/71), मरणज्ञान, knowledge of death

पञ्चत्वप्रत्यय pañcatvapratyaya
क्षयादयोऽपि प्राक्तनकर्मणा क्लिश्यमानान् मारयन्तीत्यर्थः। (चक्र.-च.चि. 3/13), मृत्यु का कारण जैसे क्षयादि व्याधि, cause of death such as tuberculosis

पञ्चन pañcana
विस्तृतम्। (र.र.स. 19/58), विस्तृत, फैला हुआ, broad, spreading

पञ्चनिदान pañcanidāna
निदानं पूर्वरूपाणि रूपाण्युपशयस्तथा, संप्राप्तिश्चेति विज्ञानं रोगाणां पञ्चधा स्मृतम्। (मा.नि. 1/4), निदान, पूर्वरूप, रूप, उपशय एवं सम्प्राप्ति यह पाँच रोग निदान के उपाय हैं, five tools for diagnosis

पञ्चनिम्ब pañcanimba
निम्बस्य पत्रत्वक्पुष्पफलमूलैः समन्वितम्। कुष्ठपञ्चक व्रणनाशनम्। (ध.नि. 7/55), नीमपत्र, त्वचा, पुष्प, फल एवं मूल को ग्रहण करने से पंचनिम्ब कहलाता है, यह पांच प्रकार के कुष्ठ एवं व्रण का नाशक है, five parts of azadirachta i.e. leaves, bark, flower, root, fruits are collectively known as panchanimba

पञ्चपटु pañcapaṭu
पञ्चलवण। (र.र.स. 12/68), पांच प्रकार के लवण सैन्धव, सौवर्चल, विड, सामुद्र एवं औद्भिद, five types of salts

पञ्चपर्णिका pañcaparṇikā
गोरक्षी वनस्पति। (रा.नि.पर्पटादि 94), मालवा में गोरक्षी नाम से प्रसिद्ध, a herb

पञ्चपित्तक pañcapittaka
पञ्चपित्तकम्, नागाश्वशिखिगोमत्स्यपित्तैः स्यात् पच्चपित्तकम्। (र.र.स. 12/122), पांच प्राणियों से प्राप्त पित्त जिसमें हाथी, घोड़ा, मोर, गो, मत्स्य सम्मिलित हैं, five types of bile secretions used for medicinal purpose

पञ्चभूत pañcabhūta
पृथिवी, जल, तेल, वायु एवं आकाश। (अ.हृ.सू. 9/2), five primordial elements

पञ्चभूतप्रसादज pañcabhūtaprasādaja
पञ्चभूतानां धामभूतात् साराज्जाताम्। (ड.-सु.उ. 7/3), पंचभूतों के प्रसाद भाग (सारभाग) से निर्मित दृष्टि आदि इन्द्रियाँ, originated from five premordial elements

पञ्चभृङ्ग pañcabhṛṅga
देवदाली शमी भृङ्गा निर्गुण्डी शणकस्तथा, रोगान्ते स्नानपानार्थं पञ्चभृङ्गमिति स्मृतम्। (ध.नि. मिश्रकादि 16), देवदाली, शमी, भृंगराज, निर्गुण्डी एवं शणपुष्पी इन द्रव्यों के पत्रों को एकत्र कर पंचभृङ्ग कहते हैं, इनके क्वथित जल का रोगशमन पश्चात् स्नान एवं पानार्थ प्रयोग होता है, leaves of five herbs

पञ्चमहाभूतशरीरिसमवाय pañcamahābhūtaśarīrisamavāya
पञ्चमहाभूतानि पृथिव्यादीनी, शरीरि आत्मा, समवायः संयोगः। (ड.-सु.सू. 1/22), पृथिवी आदि पंचमहाभूत, आत्मा का संयोग, पुरुष, combination of five elements, soul, that is living being

पञ्चमाहिष pañcamāhiṣa
पयो दधि घृतं मूत्रं सविट्कम्। (र.र.स. 2/30), भैंस का दुग्ध, दधि, घृत, मूत्र एवं विष्ठा यह पंचमाहिष हैं, अभ्रक सत्वपातन में प्रयुक्त, five materials obtained from buffalo

पञ्चमुखच्छिद्रा pañcamukhacchidrā
मुखे छिद्रपञ्चकयुताः। (हे.-अ.हृ.सू. 25/13), नाड़ीयन्त्रों के अन्तर्गत चतुष्कर्ण वारङ्ग को पकड़ने के लिये पांच छिद्रों वाली नाड़ी, five mouth instrument

पञ्चमुखी pañcamukhī
आटरूष। (रा.नि. शताह्वादि 48), वासा *lat- Adhatoda vasica*

पञ्चमुष्टि pañcamuṣṭi
स्पृक्का। (ध.नि. 3/59), हि.-असबरग, एक सुगन्धित शाक, लोक नाम-लंकोपिका, *lat- Marsilia quadrifoliata/Delphinium zalil*, fam-ranunculaceae

पञ्चमूल pañcamūla
1. पञ्चपञ्चमूल- कनीय पंचमूल, महत् पंचमूल, वल्लीपंचमूल, कण्टकपञ्चमूल, तृणपञ्चमूल। (सु.सू. 38/66-75), five group of root 2. लघुपञ्चमूल, बृहत्पंचमूल। (च.सि. 3/13) 3. विदारिगन्धादि, बिल्वादि, पुनर्नवादि, जीवकादि, शरादि। (च.चि. 1/41-45), ब्राह्मरसायन में वर्णित पंच पंचमूल

पञ्चमृत्तिका pañcamṛttikā
इष्टिका चूर्णकं भस्म तथा वल्मीक मृत्तिका गैरिक लवणञ्चेति कीर्तिता पञ्चमृत्तिका। (र.त. 2/19), ईंट का चूर्ण, साधारण घर की राख, बांबी की मिट्टी गेरु और नमक इन पाँच द्रव्यों को सम्मिलित रूप से पञ्चमृत्तिका कहा जाता है, black powder of brick, house hold ash, anthill mud, ochre and salt, taken together are known as panchamrittika

पञ्चमर्मीयसिद्धि pañcakarmīyasiddhi
पञ्चकर्म प्रवृत्ति निवृत्ति विषय ज्ञानार्थमधिकृत्य कृता सिद्धिः पञ्चकर्मीय सिद्धिः। (चक्र.-च.सि. 2/1), पंचकर्म (वमन, विरेचन, नस्य, निरूह, अनुवासन) विषयक ज्ञान का वर्णन जिस अध्याय में हो, chapter on knowledge/benefits of panchakarma

पञ्चलवण pañcalavaṇa
सौवर्चलं सैन्धवञ्च विडमौद्भिदमेव च। सामुद्रेण सहैतानि पञ्चस्युर्लवणानि।। (च.सू. 1/88-89), सैन्धश्चाथ सामुद्रं विडं सौवर्चलं तथा। रोमकञ्चेति विज्ञेयं बुधैर्लवणपञ्चकम्। सेन्धा नमक, समुद्र लवण, विड़नमक, सौवर्चल नमक तथा रोमक (रेह) नमक, इन पाँच नमकों को लवणपंचक नाम से कहा जाता है, sauvarchal, saindhava, vida, audbhida and samudra, these five salts taken collectively are known as panchalvana

पञ्चलोह pañcaloha
पञ्चलोहा इति ताम्ररजतत्रपुशीसकृष्ण लोहानां ग्रहणम्। (चक्र.-च.सू. 1/70), ताँबा, चांदी, टिन, कांसा और लोहा, ये पाँच सम्मिलित रूप से पंचलोह कहलाते हैं, copper, silver, tin, lead and iron are cellectively called as panchaloha

पञ्चाङ्गुल तैल
pañcāṅgulataila
एरण्डतैलम्। (ड.-सु.उ. 17/29), एरण्ड तैल, वातजन्य तिमिररोग में दूध के साथ प्रयोग हितकर, caster oil

पञ्चाज
pañcāja
पयो दधि घृतं मूत्रं सविट्कं चाजमुच्यते। (र.र.स. 2/31), बकरी का दूध, दधि, घृत, मूत्र एवं मल, पञ्चाज कहलाते हैं, five substances collected from goat

पञ्चाननरस
pañcānanarasa
देवराजेन कीर्त्तितः, सर्वान् पाण्डुगदान् हन्ति। (र.र.स. 19/54-64), पाण्डुरोग, राजयक्ष्मा, जठररोग, हलीमक, वातरुजा, विबन्ध, कुष्ठ, ग्रहणी, ज्वर, अतिसार, श्वास, कास, अरुचि, कफरोग, गलरोग, अर्श, मन्दाग्नि, मेह, गुल्म नाशक रसयोग, a herbomineral preparation

पञ्चामृत
pañcāmṛta
गव्यमाज्यं दधि क्षीरं माक्षिकं शर्करान्वितम्, एकत्र मिलितं ज्ञेयं दिव्यं पञ्चामृतं परम्।। (ध.नि. मिश्रकादि 51), गोघृत, दधि, क्षीर, मधु एवं शर्करा को सम्मिलित रूप से पञ्चामृत कहते हैं, cow ghee, curd, milk, honey and suger are collectively known as panchamrita

पञ्चामृतपर्पटी
pañcāmṛtaparpaṭī
सुवर्णं रजतं ताम्रं सत्वाभ्रं कान्तलोहकम्, क्रमवृद्धमिदं सर्वे शोणेयौ नागवङ्गकौ। (र.र.स. 14/77-97), स्वर्ण, रजत, ताम्र, अभ्रकसत्व, कान्तलोह भस्म की नागवङ्ग सह निर्मित पर्पटी, यह क्षयादि सर्वरोगहनी है, a herbomineral ayurvedic preparation

पञ्चाम्ल
pañcāmla
कोलाम्लं चुक्रिकाम्लं च मातुलुङ्गाम्लवेतसम्, चतुरम्लमिति प्रोक्तं पञ्चाम्लं तु सदाडिमम्। (चक्र.-च.चि. 22/35), बेर, चुक्रिका, मातुलुंग, अम्लवेतस एवं दाड़िम को सम्मिलित रूप से अम्लपंचक या पंचाम्ल कहते हैं, five sour drugs group

पञ्चाम्लक
pañcāmlaka
1. बीजपूरक जम्बीरं नारङ्ग साम्लवेतसम्, फलं पञ्चाम्लकं ख्यातं तिन्तिडी सहितं परम्। (ध.नि. मिश्रकादि 53), बिजौरानींबू, जम्बीर, नारंगी, अम्लवेतस, इमली के फल पञ्चाम्लक कहे जाते हैं, a group of five sour fruits 2. कोलदाडिमवृक्षाम्लं चुक्रिका चाम्लवेतसः, पञ्चाम्लकं समुद्दिष्टं विद्वद्भिश्च भिषग्वरैः। (ध.नि. मिश्रकादि 54), बेर, अनार, वृक्षाम्ल, चुक्र, और अम्लवेतस यह सब पञ्चाम्ल कहलाते हैं, a group of five sour fruits

पञ्चालक
pañcālaka
आग्नेयकीट। (सु.क. 8/10), सविष आग्नेय कीट, इसके दंश से पित्तज व्याधि उत्पन्न होती है, poisonous insect

पञ्चालक्षेत्र
pañcālakṣetra
कान्यकुब्ज देश। (च.वि. 3/3), रुहेलखण्ड एवं कन्नौज का दाहिना भाग, a state right to kannoj

पञ्चेन्द्रिय
pañcendriya
चक्षुः श्रोत्रं घ्राणं रसनं स्पर्शनमिति। (च.सू. 8/8), चक्षु, श्रोत्र, घ्राण, रसन, स्पर्शन, यह पंचेंद्रिय कहलाती हैं, five senses

पञ्चेन्द्रियग्रहण
pañcendriyagrahaṇa
पञ्चभिर्ज्ञानेन्द्रियैर्ज्ञानम्। (ड.-सु.सू. 40/3), पाँचों ज्ञानेन्द्रियों के द्वारा ग्रहण किया ज्ञान, sensory perception

पञ्चेन्द्रियार्थ विप्रतिपत्ति
pañcendriyārth vipratipatti
पञ्चेन्द्रियाणि श्रोत्रादीनि तेषामर्थाः शब्दादयः, अर्थानां शब्दादीनां विप्रतिपत्तिर्विपरीतावबोधो हीनातियोगेन इत्यर्थः। (ड.-सु.सू. 30/1), सुश्रुत सूत्रस्थान का तीसवाँ अध्याय जिसमें पञ्चज्ञानेन्द्रियों के अर्थ शब्दादि के रिष्ट रूप विपरीत ज्ञान का वर्णन किया गया है, a chapter in sushruta sutrasthana

पटचूर्ण
paṭacūrṇa
वस्त्रगालितचूर्ण। (र.र.स. 15/20), कपड़छन चूर्ण, clothes filtered powder

पटल
paṭala
1. नेत्र में आश्रित छः पटल, वर्त्मपटल दो, तेजोजलाश्रित, मांसाश्रित एवं अस्थि आश्रित। (सु.उ. 1/14), tunic of the eye 2. नेत्ररोग। (च.चि. 23/72), an eye disease

पटलहर अञ्जन
paṭalahara añjana
कारवेल्लद्रवैः सार्धं सम्यक् भर्ज्या कपर्दिका, सूतकं टंकणं लाक्षा तुल्यं जंबीरजद्रवैः। मर्दयेत्ताम्रपात्रे तु तस्मिन् रुद्ध्वा विनिक्षिपेत्, धान्यराशौ स्थितं मासमञ्जनं पटलं हरेत्।। (र.र.स. 23/59-60), कपर्दिका चूर्ण को ताम्रपात्र में डालकर करेला पञ्चांग स्वरस के साथ भूनकर उसमें पारद, टंकण, लाक्षा तुल्य जम्बीर द्रव मिलाकर गोला बनाकर धान्यराशि में एक मास तक रखकर अंजन बना लेते हैं, यह पटलरोगहर है, a collyrium for eye disease

पटह
paṭaha
वाद्ययन्त्रविशेष, महागन्धहस्ति अगद का इसके ऊपर लेप कर उसको बजाने से विष का नाश होता है। (च.चि. 23/87), a musical instrument used to relieve poisonous effect

पटालिका
paṭālikā
पटानां वस्त्राणां, आलिः पंक्तिः, वस्त्राणां पंक्तिः पटालिः। (अरु.-अ.हृ.सू. 3/34), पंक्तिमत्यो नवास्तृणादि रचिता भित्तयः। (हे.-अ.हृ.सू. 3/34), वस्त्र एवं तृणादि पंक्ति से निर्मित भित्तियुक्त गृह, a house made up of grass and clothes wall

पटु
paṭu
1. वक्तारम्। (ड.-सु.क. 1/10), प्रवीण वक्ता, good speaker 2. काण्डीरः। (ध.नि. करवीरादि 57), हिं.-जलधनिया, देवकाण्डर, प्लेगबूटी, *lat- Ranunculus sceleratus* 3. चोरक। (रा.नि. चन्दनादि 136), a herb 4. सैन्धवलवण। (अ.हृ.सू. 19/41), rock salt

पटुक्षीरा
paṭukṣīrā
लवणं क्षीरं यस्या या धात्रीः। (का.सं. फक्कचिकित्सा), लवण दुग्ध युक्त धात्री, foster mother having salty milk

पटुतृणक
paṭutṛṇaka
लवणतृणम्। (रा.नि. शाल्मल्यादि 138), अश्ववृद्धिकर लवण घास, salty grass

पटुपञ्चक
paṭupañcaka
पञ्चलवण (सैन्धव, कृष्णलवण, विड सौवर्चल, सांभर)। (र.र.स. 16/142), five types of salts

पटुप्रजा
paṭuprajā
कुशलाधिक एवं प्रबल प्रजा। (का.सं. फक्कचि.), अत्यधिक कुशल संतान, sharp and strong offsprings

पटोल
paṭola
कटुकं तिक्तमुष्णं पित्तविरोधि च, कफासृक्कण्डूकुष्ठानि ज्वरदाहौ च नाशयेत्। (ध.नि. गुडूच्यादि 48-50), यह कटुतिक्त, उष्णवीर्य, पित्त, कफ, रक्तविकार, कण्डू, कुष्ठ, ज्वर दाह नाशक है, हिं.-परवल, *lat- Trichosanthes dioica*, fam- cucurbitaceae

पटोलघृत
paṭolaghṛta
पटोलस्य च पत्रं ग्राह्यम्। (चक्र.-च.चि. 7/135), पटोलपत्र से सिद्ध घृत, कुष्ठनाशक, ghee processed by leaves of patola

पटोलयूष
paṭolayūṣa
कफमेदोविशोषिणौ पित्तघ्नौ दीपनौ हृद्यौ कृमिकुष्ठज्वरापहौ। (सु.सू. 46/370), पटोल निर्मित यूष, soup made from patola

पटोलादिकषाय
paṭolādikaṣāya
विसर्प चिकित्सा में वर्णित कषाय। (च.चि. 21/60), a decoction of patola with other drugs used in erysipelas

पटोलादिगण
paṭolādigaṇa
पटोलचन्दनकुचन्दनमूर्वागुडूचीपाठाः कटुरोहिणी चेति। अयं पित्तकफारोचकनाशनः, ज्वरोपशमनो व्रणच्छर्दिकण्डूविषापहः।। (सु.सू. 38/33-34), पटोलादिगण में पटोल, श्वेतचंदन, रक्तचन्दन, मूर्वा, गिलोय, पाठा, कुटकी आदि का समावेश है, यह गण पित्त, कफ, अरोचकनाशक, ज्वरहर, व्रण हितकर, छर्दि, कण्डू एवं विषहर है, a group of herbs containing patola and others

पटोलादिघृत
paṭolādighṛta
कामलाज्वरवीसर्प गण्डमालाहरं परम्। (सु.उ. 39/250-252), ज्वर प्रकरण में वर्णित, a medicinal preparation for fever

पटोलाद्यचूर्ण
paṭolādyacūrṇa
उदरेषु प्रपूजितम्। (च.चि. 13/119-123), यह चूर्ण उदर रोग, जातोदक, कामला, पाण्डुरोग एवं शोथ में प्रयुक्त होता है, an ayurvedic powder preparation used in G.I.T. disoders

पटोल्यादिघृत
paṭolyādighṛta
अपची, कुष्ठ, ज्वर, शुक्र (नेत्र रोग), अर्जुन, नेत्र, मुख, कर्ण, एवं नासा में होने

वाले व्रण हेतु हितकर। (सु.उ. 39/227-229), an ayurvedic medicinal ghee preparation

पट्ट
paṭṭa
व्रणबन्धनद्रव्यम्। (ड.-सु.सू. 5/6), (च.चि. 25/96), व्रणबंधन में प्रयुक्त वस्त्र, पट्टी, bandage

पट्टबन्धन
paṭṭabandhana
क्षौमकार्पासादि पट्टबन्धन, अनग्निस्वेद भेद। (सु.चि. 4/17), bandaging, a type of sudation

पट्टरञ्जन
paṭṭarañjana
कुचन्दन। (ध.नि. चन्दनादि 6), चन्दनविशेष, हिं.-पतंग, *lat- Caesalpinia sappan*

पट्टिकारोध्र
paṭṭikārodhra
क्रमुकः। (ध.नि. चन्दनादि 157), लोध्रविशेष, लोध्र भेद, a variety of lodhra

पट्टी
paṭṭī
देखे. पट्टिकारोध्र। (ध.नि. चन्दनादि 157), लोध्र भेद

पठन
paṭhana
अद्रुतमविलम्बितमविशङ्कितमननुनासिकं सुव्यक्ताक्षरं पीडितवर्णमक्षिभ्रुवौष्ठ हस्तैरनभिनीतं सुसंस्कृतं नात्युच्चैर्नातिनीचैश्च स्वरैः पठेत्। (सु.सू. 3/54), अध्ययन विधि, न अधिक शीघ्रता से, न अधिक विलम्ब से, निशंक होकर, नासा शब्द न बोलते हुये स्पष्ट शब्दों में, नेत्र हाथों को न हिलाते हुये, शुद्ध, न उच्च एवं न निम्न स्तर से पठन करना चाहिये, study, a classical way of study

पणधा
paṇadhā
पण्यान्ध वनस्पति। (रा.नि. शाल्मल्यादि 139), शस्त्रघात व्रण का सद्य रोहण करने वाली, a herb to treat wound

पणव
paṇava
दुन्दुभिप्रकार। (अ.सं.शा. 10/7), एक प्रकार का वाद्य, a musical instrument

पणाङ्गना
paṇāṅganā
वेश्येत्यर्थः। (चक्र.-च.सि. 1/29), वेश्या, गणिका, prostitute

पणिक
paṇika
वणिक। (अ.हृ.सू. 2/43), व्यापारी, trader

पण्यजीवी
paṇyajīvī
वणिक। (च.सि. 11/29) व्यापारी, trader

पण्यान्ध
paṇyāndha
वनस्पति, पर्यायः कंगुणीपत्र, पणधा, पण्यान्धा, भेद (3)-दीर्घ, मध्य ह्रस्वा। (रा.नि. शाल्मल्यादि 139-141), तत्काल शस्त्रघात जन्य व्रण का शीघ्र रोहण करने वाली, a herb

पण्यविलासिनी
paṇyavilāsinī
नखा। (रा.नि. चन्दनादि 121), नखी सुगन्धितद्रव्य, हिं.- नखी, eng- scell, *lat- Helix aspera*

पण्यान्धा panyāndhā
देखें. पणधा

पतङ्ग patanga
1. शालिभेद, शूकधान्यवर्ग। (च.सू. 27/9), a type of rice 2. रक्तचन्दनम्। (ड.-सु.सू. 14/36), लालचन्दन, eng-sappan wood, *lat- Caesalpinia sappan,* fam - caesalpiniaceae 3. जलमधूकः। (रा.नि. आम्रादि 93), हिं.-जलमहुआ, eng-water elloopa tree 4. पत्तूरम्, रक्तचन्दनसमं काष्ठम्। (र.र.स. 30/64), रक्तचंदन समान लकडी

पतङ्गी patangi
पतंगीकल्कतो जाता लोहे तारे च हेमता। (र.र.स. 8/52), रञ्जन औषधि, पतंगी के कल्क के भीतर कुछ दिन तक लौह तथा चाँदी को रखने से उसमें स्वर्णवर्णता आ जाती है, a herb used for colouration of metals

पतङ्गीराग patangiraga
पतङ्गीकल्कतो जाता लोहे तारत्वहेमता। (रसे.चू. 4/74), औषधिकल्क के प्रभाव से किसी धातु में स्वर्ण का वर्ण उत्पन्न करना पतङ्गीराग कहलाता है, creation of gold colour in a metal by processing it with a medicine paste

पतन patana
अनूर्ध्वस्थितिः। (ड.-सु.सू. 25/34), वृक्षपर्वत आदि से गिरना। (सु.नि. 15/3), गिरना, to fall

पतनधर्मी patanadharmi
पतनस्वभाव। (सु.सू. 32/3), गिरने का स्वभाव जैसे पुरीषादि, habit to fall

पताक patāka
निर्विष सर्प। (अ.सं.उ. 41), विषरहित सर्प, non poisonous snake

पताका patākā
1. देवगृहादिध्वज। (अ.सं.सू. 8/83), मंदिर के ऊपर लगने वाला ध्वज, flag on temples 2. वैजयन्तीः। (इन्दु.-अ.सं.उ. 5), जीवन्ती, a herb

पतित patita
1. पतितं वृक्षादिभ्यः। (ड.-सु.चि. 2/77), वृक्षादि से गिरना, fall from height 2. स्वकीय धर्मात् भ्रष्टः। (ड.-सु.चि. 24/98), अपने आचरण से भ्रष्ट होना, downgraded

पतितत्व patitatva
शिरोग्रीवादीनामधार्यमाणता। (ड.-सु.सू. 32/4), शिर ग्रीवादि को न संभाल पाना, non balancing of head/neck

पतितशल्य patitaśalya
स्वयं पतितशल्यो वा जीवत्युद्धृतशल्यो म्रियत इत्यर्थः। (ड.-सु.शा. 6/27), शल्य का स्वतः ही (पाक होकर) गिर जाना, उत्क्षेप मर्म में शल्य का स्वतः पाक होने पर निकलने से व्यक्ति बच जाता है, spontaneous fell out foreign body

पथ्य pathya
1. पथः शरीरमार्गात् स्रोतोरुपादनपेतम्; अपेतनम् अपकारकम्, अनपेतनम् अनपकारमित्यर्थः। पथोग्रहणे-पथोवाहया दोषा धातवश्च, तथा पथो निर्वर्तका धातवो गृह्यन्ते, तेन कृत्स्नमेव शरीरं गृहीतं भवति, ततश्च शरीरानुपघाति पथ्यमिति भवति। (चक्र.-च.सू. 25/45), स्वस्थस्वास्थ्यरक्षणमातुरव्याधिपरिमोक्षश्चेति पन्थाः, तस्मादनपेतं पथ्यम्। (चक्र.-च.सू. 25/45), पथ अर्थात् शरीरमार्ग, जो शरीरमार्ग अर्थात् शरीर स्रोतसों के लिये अनपेत् (अहानिकर) हो, अपेतनम् अर्थात् अपकारक (हानिकारक)। पथ के ग्रहण से पथ (स्रोत) से बहने योग्य दोष, धातु तथा पथ निर्वर्तक (स्रोतसों के आश्रय) धातुओं का भी ग्रहण किया गया है। अतः पथ से संपूर्ण शरीर का ग्रहण होता है। इस दृष्टि से शरीर के लिए जो अनुपघाति हो वह पथ्य कहलाता है, स्वस्थ व्यक्ति के स्वास्थ्य की रक्षा तथा आतुर व्यक्ति को रोगों से मुक्ति दिलाना पन्थ (पथ) है, इस पथ के लिए जो अनपेत् होता है वह पथ्य है, wholesome

पथ्यतम pathyatama
पथ्यतमत्व इति तमप्प्रयोगः सजातीयेभ्यः प्रकृष्टत्वेन श्रेष्ठतमा इति, यथा- श्रेष्ठतम इति प्रशस्यः; किंवा तमप्ग्रहणं स्वार्थिकं, यथा- "युधिष्ठिर श्रेष्ठतमः कुरुणाम्" इति, तथा 'अन्यतमं जिहवावैषयिकम्' इति। (चक्र.-च.सू. 25/38), पथ्यतमत्व शब्द में तमप् प्रत्यय का प्रयोग समान जातियों में प्रकृष्टता से श्रेष्ठतम (सर्वश्रेष्ठ) होने के कारण किया गया है, यथा- श्रेष्ठतम अर्थात् प्रशस्त अथवा तमप का ग्रहण स्वार्थ के अर्थ में लिया गया है, यथा युधिष्ठिर कुरुवंशियों में श्रेष्ठ हैं तथा रस एकमात्र जिहवा इंद्रिय का विषय होता है, best diet

पथ्याघृत pathyāghṛta
पाण्डु एवं गुल्महर योग। (च.चि. 16/50), a ghee preparation useful in treating anaemia and gaseous distention of abdomen

पथ्यादिचूर्ण pathyādicūrṇa
विसूची, अजीर्ण, शूल, अरुचि नाशक योग। (सु.उ. 56/14), an ayurvedic preparation used in cholera, indigestion colic etc

पद pada
1. अक्षरसमूह। (च.वि. 8/27), अर्थ को व्यक्त करने वाले अक्षरों का समूह, combination of alphabets to convey meaning 2. शस्त्रपद, प्रच्छान। (सु.चि. 1/29), शस्त्र से पछना लगाना, scarification 3. क्षतम्। (ड.-सु.क. 4/45), व्रण, wound

पदकरी padakarī
स्त्री कुम्भकार, a female potter

पदाघातन padāghātana
पदभ्यामुन्मर्दनम्। (चक्र.-च.नि. 6/4), पैरों से दबाकर अभ्यङ्ग करना, massage with the help of feet

पदातिचर्या
padāticaryā
पद्भ्यां अतिगमनम्। (सु.चि. 11/11), पैरों से अधिक गमन करना, excessive walking

पदार्थ
padārtha
पदस्य पदयोः पदानां वाऽर्थः। (चक्र.-च.सि. 12/41), पद्यते गम्यते येनार्थ इति सूत्रस्यापि पदत्वात् सूत्रे योऽर्थः प्रतिपादितः स पदार्थः। (ड.-सु.उ. 65/10), एक पद या अनेक पदों द्वारा व्यक्त होने वाले अर्थ को पदार्थ कहते हैं, inherent meaning

पद्म
padma
1. पद्मं सरक्तमष्टदलपद्मम्। (चक्र.-च.सू. 25/49), लाल रंग का अष्टदल वाला कमल पद्म कहलाता है, red lotus with 8 petals 2. पाठाभेदः, श्वासारि वनस्पति। (ध.नि. 1/72), पुष्करमूल। (रा.नि. पिप्पल्यादि 152), हिं- पोहकरमूल, oris root

पद्मक
padmaka
1. मरुद्भवः। (अरु.-अ.हृ.सू. 15/16), पद्मकाष्ठ, पद्मक पीतकं पीतं मालयं शीतलं हिमम्। शुभ्रं केदारजं रक्तं पाटलापुष्पसन्निभम्। पद्मकाष्ठं पद्मवृक्षं प्रोक्तं स्याद्वादशाह् वयम्। (रा.नि. चन्दनादि 139), गुणः शीतलं तिक्तं रक्तपित्तविनाशनम्, मोहदाहज्वरभ्रान्ति कुष्ठविस्फोटशान्तिकृत्। (रा.नि. चन्दनादि 140), पद्मक, पीतक, पीत, मालय, शीतल, हिम, शुभ्र, केदारज, रक्त, पाटलापुष्पसन्निभ, पद्मकाष्ठ, पद्मवृक्ष यह बारह नाम पद्मक के हैं, यह शीतवीर्य, तिक्त, रक्तपित्तनाशक, मोह, दाह, ज्वर, भ्रान्ति, कुष्ठ एवं विस्फोट हर है, हिं.- पद्माख, *lat- Prunus puddum*, fam- rosaceae 2. कुष्ठ पर्याय। (रा.नि. चन्दनादि 115), कुष्ठ, कूठ पर्याय, *lat: Sausaria lappa* 3. हैमपद्मम्। (अरु.-अ.हृ.सू. 15/12), पीला या स्वर्ण कमल, yellow lotus

पद्मकण्टक
padmakaṇṭaka
अवभासिनी त्वचा में होने वाला चर्मरोग। (सु.शा. 4/4), पद्मिनीकण्टकप्रख्यैः पद्मिनीकण्टक सदृशैः। (ड.-सु.नि. 13/40), क्षुद्ररोग का एक भेद, a skin disease

पद्मकादिगण
padmakādigaṇa
पद्मकपुण्ड्रौ वृद्धितुगर्द्धयः शृङ्ग्यमृता दश जीवनसंज्ञाः। स्तन्यकरा घ्नन्तीरणपित्तं प्रीणन जीवन बृंहण वृष्याः। (अ.हृ.सू. 15/12), हेमपद्म (पीतकमल), प्रपौण्डरीक, वृद्धि, तुगाक्षीरी (वंशलोचन), ऋद्धि, (श्रावणी), शृङ्गी (कुलीरशृङ्गी), अमृता (गुडूची), दश जीवनसंज्ञा (जीवनीयगण) पद्मकादि गण द्रव्य हैं, यह स्तन्यकर, वातशामक, पित्तशामक, प्रीणन, जीवन, बृंहण एवं वृष्य हैं, a group of drugs having galactogogue and nourishing properties

पद्मकादिहिम
padmakādihima
पद्मकादिगणस्य शीतकषायम्। (हे.-अ.हृ.सू. 27/49), पद्मकादिगण के द्रव्यों से निर्मित शीतकषाय जो सिरावेधन में अत्यधिक रक्तस्राव होने पर स्तम्भन हेतु प्रयुक्त होता है, a cold infusion used as hemostatic after venesection

पद्मकेशर
padmakeśara
कमलकिञ्जल्क। (च.सू. 4/15), (सु.सू. 38/46), कमलकेशर, pollen of lotus

पद्मचारिणी
padmacāriṇī
वनस्पति, पर्यायः अतिचरा, पद्मा, पद्मवती, चारटी, गन्धमूला, लक्ष्मी, श्रेष्ठा, सुपुष्करा। (ध.नि. 4/81), जल में उत्पन्न स्थूलमूल एक सुगन्धित वनस्पति, an aquatic plant with aromatic and stout root

पद्मतन्तु
padmatantu
मृणाल, बिस। (रा.नि. करवीरादि 188), कमलनाल, बिस, lotus stem

पद्मतीर्थ
padmatīrtha
पाठा का एक भेद, श्वासारि, पद्म, पुष्परसागम अन्य नाम है, यह समूल शूलरोग को नष्ट करता है। (ध.नि. 1/72), a herb

पद्मनाल
padmanāla
बिस। (ध.नि. 4/142), कमलनाल, मृणाल, stem of lotus

पद्मपत्रक
padmapatraka
1. कमलपत्र। (र.र.स. 18/97), कमलपत्ता, leaves of lotus 2. पुष्करमूल। (रा.नि. पिप्पल्यादि 152), हिं-पोहकरमूल, eng- oris root

पद्मपल्लव
padmapallava
कमलपत्रशाक। (च.सू. 27/105), कमल के पत्र, leaf of lotus

पद्मपुष्कर
padmapuṣkara
पद्मकर्णिका। (ड.-सु.नि. 13/11), वराटकम्। (गय.-सु.नि. 13/11), कमल पुष्प का वृत्त भाग, round part of lotus flower

पद्मबीज
padmabīja
कमलबीज। (च.चि. 29/64), कमल के बीज, lotus seed

पद्ममध्य
padmamadhya
1. पद्मवराटक। (सु.चि. 25/39), कमलककड़ी, lotus stem 2. पद्मकेशर। (सु.चि. 25/30), कमलकेशर, pollen of lotus

पद्ममूल
padmamūla
पद्ममूलं तु शालूकं सकलं करहाटकम्, शालीनं पद्मकन्दं च जलालुकं निगद्यते। (ध.नि. 4/144), कमलमूल, कमलकन्द, पर्याय- शालूक, सकल, करहाटक, शालीन, पद्मकन्द, जलालुक, root/tuber of lotus

पद्मरज
padmaraja
पद्मकेसरम्। (हे.-अ.हृ.सू. 15/37), कमलकेसर, pollen of lotus

पद्मराग
padmarāga
माणिक्यमणि। (र.र.स. 4/3), माणिक्य, ruby

पद्मरूपिणी
padmarūpiṇī
वृक्षादनी। (ध.नि. 4/86), हिं.-वन्दाक, बांदा, *lat- Loranthus longiflorus*, fam- loranthaceae

पद्मवती
padmavatī
पद्मिनी स्यात् पुटकिनी नलिनी च कुमुद्वती, पलाशिनी पद्मवती वनखण्डा सरोरुहा। (ध.नि. 4/139), गुण- शिशिरा रूक्षा कफपित्तहरा स्मृता। (ध.नि. 4/140), पद्मिनी, पुटकिनी, नलिनी, कुमुद्वती, पलाशिनी, वनखण्डा एवं सरोरुहा,

यह पद्मवती के पर्याय हैं, यह शीतवीर्य, रूक्ष, कफपित्तशामक है, a synonym of padmini

पद्मवृक्ष padmavṛkṣa
पद्माक, पद्माख। (रा.नि. चन्दनादि 139), पद्माक, पद्मकाष्ठ, *lat.- Prunus pudum*

पद्महस्त padmahasta
पद्महस्तवैद्य, अमृतहस्तवान् वैद्य, पताकाकुम्भपाथोजमत्स्यचापाङ्क पाणिकः, अनामाधःस्थ रेखाङ्क स स्यादमृतहस्तवान्। (र.र.स. 7/28), जिस वैद्य के हस्ततल में ध्वजा, कलश, कमल, मत्स्य, धनुष आदि के चिह्न हों एवं अनामिका अंगुली के मूल तक अर्ध्वरेखा पहुंची हो, वह पद्महस्त, अमृतहस्त अथवा पीयूषपाणि कहलाता है, इसके हाथ से रससिद्ध होता है, a physician having lotus sign in hand

पद्माकार padmākāra
पद्मकर्णिकाकारम्। (ड.-सु.नि. 16/43), पद्मकर्णिका के सदृश, lotus shaped

पद्माक्ष padmākṣa
पद्मबीज पर्याय। (ध.नि. 4/140), कमलबीज, यह उत्तम गर्भस्थापन एवं रक्तपित्तप्रशमन है, lotus seed

पद्माहवा padmāhavā
स्थलपद्मिनी। (रा.नि. पर्पटादि 81), स्थलकमल, *lat- Ionidium suffruticosum*

पद्मिनी padminī
1. पद्मिनी स्यात् पुटकिनी नलिनी च कुमुद्वती, पलाशिनी पद्मवती वनखण्डा सरोरुहा। (ध.नि. 4/139), गुणः शिशिरा रूक्षा कफपित्तहरा स्मृता। (ध.नि. 4/140), पर्याय- पुटकिनी, नलिनी, कुमुद्वती, पलाशिनी, पद्मवती, वनखण्डा, सरोरुहा, यह शीत, रूक्ष, कफपित्तहर है, Nelumbo nucifera 2. एक स्त्री विशेष जिसका वर्णन वात्स्यायन ने किया है (का.सू.), classification of a woman regarding sexuality

पद्मिनीकण्टक padminīkaṇṭaka
पद्मिनीकण्टकवदाख्या यस्य तत् पद्मिनीकण्टकाख्यम्। (गय.-सु.नि. 13/40), कण्टकैराचितं वृत्तं कण्डूमत् पाण्डुमण्डलम्, पद्मिनीकण्टकप्रख्यैस्तदाख्यं कफवातजम्। (सु.नि. 13/40), एक क्षुद्ररोग, कमलिनीकंटक सदृश कंटक युक्त कफवातज त्वग्रोग, कमलिनी कंटक सदृश कंटक से पूर्ण, वृत्त कण्डूयुक्त पाण्डुवर्ण के चकत्ते युक्त, यह त्वचा के अवभासिनीस्तर में होता है, chillblain

पद्मिनीकर्दम padminīkardama
कमलिनी पंक। (च.चि. 21/81), विसर्प चिकित्सा में पठित प्रदेहोपयोगी कमलिनी पंक, a paste for erysiplas treatment

पद्मिनीपुट padminīpuṭa
नलिनीपत्राणि, वीजनार्थम्। (अरु.-अ.हृ.सू. 3/39), पद्मिनीपुटपत्रमयानि। (हे.-अ.हृ.सू. 3/39), नलिनी पत्र, lotus leaf

पद्मोत्तर padmottara
कुसुम्भ पर्याय। (ध.नि. 6/105), हिं.-कुसुम, बर्रे, गुण- वातलं रूक्षं

रक्तपित्तकफापहम्। यह वातल, रूक्ष, रक्तपित्तकफहर है, *lat- Carthamus tinctorius*, fam- compositac

पद्मोत्तरिका padmottarikā
कुसुम्भः। (चक्र.-च.सू. 26/84), कुसुम्भ, बर्रे, *Carthamus tinctorius*

पद्मोत्पलकन्दासव padmotpalakandāsava
अम्लानां फलानां अनुपानम्। (सु.सू. 46/433), कमल एवं नीलकमल कन्द से निर्मित आसव, यह दाड़िमादि अम्लफलों के सेवन के पश्चात् अनुपान के रूप में प्रयुक्त होता है, an alcoholic preparation used as afterdrinks following sour fruit ingestion

पनस panasa
1. मण्डली सर्प। (सु.क. 4/34), पित्तविषज मण्डलीसर्प, a type of snake 2. बहिःकण्टकिफलः 'कटहल' इति लोके। (ड.-सु.नि. 2/12), (ड.-सु.सू. 46/177), कटहल, jack fruit

पनसास्थि panasāsthi
पनसफलबीज। (सु.नि. 2/12), कटहल के फल का बीज, seed of jack fruit

पनसिका panasikā
कर्णस्याभ्यन्तरे देशे जाता वातकफात्मिका। (गय.-सु.नि. 13/12), शालूकवत्पनसिकां तां विद्याच्छ्लेष्मवातजाम्। (सु.नि. 13/12), क्षुद्ररोग, कान के भीतर या पार्श्व में कमलकन्द सदृश उग्रवेदना युक्त पिड़का का होना, यह वातकफज होती है, Otofurunculosis

पन्नग pannaga
सर्प। (सु.क. 4/11), सर्प का अन्य नाम, a snake

पन्नगी pannagī
1. सर्पिणी। (इन्दु.-अ.सं. 3/41), सर्पिणी, female snake 2. क्षुपेसर्पाकारवत्, सर्पिणी वनस्पति। (रा.नि. पर्पटादिवर्ग 125), यह विषघ्नी एवं कुचवर्धन करने वाली होती है, a herb

पन्नरूपा pannarūpā
नष्टरूपाम्। (चक्र.-च.इ. 7/3), नष्टरूप, नष्टप्राय, spoiled, destructed

पन्नरूपीय pannarūpīya
छाया प्रतिच्छायारूपारिष्टस्य क्रमप्राप्तस्याभिधायकं पन्नरूपीयमुच्यते, पन्नरूपामधिकृत्य कृतं पन्नरूपीयम्। (चक्र.-च.इ. 7/1), छाया प्रतिछाया रूप सम्बन्धी मरण सूचक लक्षणों का वर्णन, चरकसंहिता इन्द्रियस्थान सप्तम अध्याय, seventh chapter of charaka indriyasthana

पय paya
1. दुग्ध। (च.चि. 3/239), दूध, milk 2. जलम्। (ध.नि. 6/275), जल, water 3. क्षीररूपवृक्षस्राव। (र.र.स. 2/25), वटादि वृक्ष से निकलने वाला स्राव, latex

पयःकन्दा payaḥkandā
क्षीरविदारी। (रा.नि. मूलकादिवर्ग 103), हिं.-विदारीकन्द, बिलाईकन्द, भुईं कुम्हड़ा, *lat- Ipomea digitata/ Puraria tuberosa*

पय:क्षीर
payaḥkṣira
तवक्षीर। (रा.नि. पिप्पल्यादि 179), हिं.-तवाखी, eng- arrow root, bamboo manna, *lat- Curcuma angustifolia*

पय:पान
payaḥpāna
दुग्धपान। (सु.चि. 2/47), drinking of milk

पय:फेनी
payaḥpheni
दुग्धफेनी पर्याय। (रा.नि. पर्पटादिवर्ग 98), *Taraxacum officinale*

पयस्या
payasyā
1. कुटुम्बिनी पर्याय। (रा.नि. पर्पटादि 78), जल में होने वाली दूधयुक्त वनस्पति, an aquatic plant 2. अर्कपुष्पी। (ड.-सु.क 8/132), अर्क सदृश पत्र, लूताविष में प्रयोज्य 3. अर्कपुष्पी, दुग्धिकामाहु। (ड.-सु.उ. 40/74), दुग्धिका, दूधी, *Euphorbia thymifolia* 4. क्षीर काकोली। (ड.-सु.उ. 17/89) 5. विदारीकन्द। (च.सू. 4/9), भुई कोहडा, *Puraria tuberosa*

पयस्यादिक्वाथ
payasyādikvātha
पयस्या चन्दनं पद्मा सितामुस्ताब्जकेशरम्। पक्वातिसारं योगाऽयं जयेत्पीत: सशोणितम्। (सु.उ. 40/74), पक्वपित्तरक्तातिसारनाशक कषाय योग, a decoction for pakva pitta raktatisara

पयस्यादिलेप
payasyādilepa
अक्षिरागरुजापहः। (सु.उ. 17/89), नेत्र में उत्पन्न राग एवं वेदनाशामक लेप, an anointment used to relieve redness and pain of eye

पयस्विनी
payasvini
1. क्षीरकाकोली। (ध.नि. 1/130), क्षीरकाकोलीभेद, lat- rosoea species 2. क्षीरविदारी। (ध.नि. 1/149), भुई कोहडा, *lat- Ipomoea digitata*

पयोधर
payodhara
स्तन। (सु.शा. 4/24), सर्वस्रोतांसि हि स्त्रीणां विवृत्तानि विशेषत:। तत: पयोधरमासाद्य क्षिप्रं विकुरुते स्त्रियाः। (का.सं.सू. 19), पय धारण करने वाला, स्तन, दुग्धयुक्त स्तन, breast

पयोधिज
payodhija
समुद्रफेन। (ध.नि. 3/138), समुद्रफेन, *lat- Sepia officinalis*, fam- cephalopoda

पयोभव
payobhava
घृत। (र.र.स. 12/48), ghee

पयोयुत
payoyuta
पयसा युता:। (ड.-सु.शा. 10/62), दूधयुक्त containing milk

पयोलता
payolatā
क्षीरविदारी। (रा.नि. मूलकादिवर्ग 103), विदारीकन्द, भुई कोहडा, *lat- Puraria tuberosa*

पयोवहस्रोतस
payovahasrotasa
दुग्धवाही स्रोतस। (का.खि. 11/63), lactiferous ducts

पयोविदारिका
payovidārikā
क्षीरविदारी। (रा.नि. मूलकादिवर्ग 103), विदारीगन्धा, श्वेत भुई कोहडा, *lat- Puraria tuberosa*

पयोवृत्ति
payovṛtti
पयसा केवलेन वृत्तिरिति यावत्। (ड.-सु.चि. 14/17), दुग्ध सेवन से यापन करना, केवल दुग्ध का सेवन, taking milk for sustenance

पयोहेतु
payohetu
दधि। (ध.नि. 6/173), दही, curd

पर
para
1. परस्य श्रेष्ठस्य (चक्र.-च.सू. 30/7), 'पर इति सूक्ष्म: श्रेष्ठो वा। सूक्ष्म अथवा श्रेष्ठ, श्रेष्ठ गुणों का होना वाला 'पर' कहलाता है, supreme (vital essence), subtle as well as superior 2. अतिरिक्तम्। (चक्र.-च.चि. 4/4), दूसरा, भिन्न, अन्य, other 3. प्रतिवादिन्। (चक्र.-च.वि. 8/18), प्रत्युत्तर देने वाला, अन्य, opposite, one who oppose 4. भूतादि:। (ड.-सु.उ. 39/56), भूत, अन्य, element

परतन्त्र
paratantra
परतन्त्रे शालाक्यतन्त्रे साङ्खये च। (ड.-सु.शा. 1/22), न्यायवैशेषिक हस्तिशिक्षा व्याकरणादीनि। (ड.-सु.चि. 28/27), अन्यशास्त्र, शल्यतन्त्र से भिन्न दूसरे शास्त्र जैसे शालाक्य तन्त्र, न्याय, वैशेषिक, हस्तिशिक्षा, व्याकरण शास्त्र आदि, other sciences different from one's science

परतन्त्रवृत्ति
paratantravṛtti
मात्राधीनवृत्ति:। (चक्र.-च.शा. 6/23) मातृपरायत्तवृत्तित्वात्। (इन्दु.-अ.सं.शा. 2/30), दूसरे के ऊपर जीवन निर्भरता, गर्भ द्वारा माता के आहार रस से पोषण प्राप्त करना, dependent on other for survival e.g. foetus taking nourishment from mother

परत्व
paratva
प्रधानत्वम्। (चक्र.-च.सू. 26/29), जो प्रधान होता है उसे परत्व कहते हैं, जैसे मरुप्रदेश में मरु प्रधान है एवं आनूप अप्रधान है, principal, priority, primary

परदारगमन
paradāragamana
अनायुष्याणां श्रेष्ठ:। (अ.सं.सू. 13/2), परदार से अभिप्राय पर स्त्री से है, परस्त्री सेवन आयुष्य को कम करने वाले भावों में अग्रगण्य है, illicit sexual relationship with other women

परदाराभिगमन
paradārābhigamana
अनायुष्याणां अग्र्य:। (च.सू. 25/40), परस्त्री संग, अनायुष्यकर भावों में अग्रगण्य, illicit sexual relationship with other women

परनिर्माण
paranirmāṇa
पर ऐश्वर्यादिगुणयुक्त आत्मविशेष:, तेन संसार्यात्मनिरपेक्षिणा निर्माणं परनिर्माणम्। (चक्र.-च.सू. 11/6), 'पर' से ऐश्वर्यादि युक्त आत्मविशेष का ग्रहण किया गया है, इस प्रकार संसारी आत्मा से (जीवात्मा) से निरपेक्ष निर्माण को

'परनिर्माण' कहा गया है, evolution by the supreme soul, the belief that the birth of a person is due to the supreme soul and not due to the individual soul

परपीडया parapīdayā
परपीडया परपीडानिमित्तमित्यर्थः। (चक्र.-च.सू. 7/29), दूसरों को कष्ट पहुंचाने वाला कार्य, action that hurt others

परपुष्ट parapuṣṭa
1. कोकिलः। (अरु.-अ.हृ.सू. 3/24), कोयल, दूसरे द्वारा पोषित, cuckoo bird 2. आम्र पर्याय। (ध.नि. 5/1), आम, *lat.- Mangifera indica*, fam- anacardiaceae

परभृत parabhṛta
कोकिलः। (हे.-अ.हृ.सू. 7/16), प्रतुदमांसवर्ग, कोकिल। (अ.सं.सू. 7/61), कोकिलः। (ड.-सु.सू. 46/67), कोयल, अण्डों का पोषण दूसरे के द्वारा होने से, cuckoo bird

परमर्द्धि paramṛddhi
परमा अत्यर्था ऋद्धिर्यस्य स परमर्द्धिः। (चक्र.-च.सू. 30/24), जो अत्यधिक सम्पन्न हो, उसे परमर्द्धि कहते हैं, जिसकी सम्पति श्रेष्ठ हो उसे 'परमर्द्धि' कहते हैं, समृद्धि जो कि अपने पुरुषार्थ से अर्जित कि गई हो, परमर्द्धि है, ऋद्धि =ऋध+क्तिन प्रत्यय= विकास वृद्धि, सफलता, सम्पन्नता के अर्थ में ग्रहण किया है, great wealth

परमाणु paramāṇu
जालान्तरगते भानौ यत्सूक्ष्मं दृश्यते रजः। तस्य त्रिंशन्तमो भागः परमाणुः स कथ्यते।। (शा.सं.प्र. 1/16), खिड़की से आती सूर्य किरणों में दृश्यमान सबसे छोटे कण के 1/30 वें भाग को परमाणु कहते हैं, the 1/30th size of the smallest visible particles in beam of sunlight coming through the window

परलोकैषणा paralokaiṣaṇā
परलोकोपकारस्य धर्मस्यैषणा परलोकैषणा। (चक्र.-च.सू. 11/3), परलोक के लिए हितकारी धर्म की इच्छा परलोकैषणा है, the desire for the virtues that is beneficial for the other world

पराक्रम parākrama
पराक्रमस्तु शौर्याख्यं मानसं बलम्। (चक्र.-च.सू. 11/3), मानसबल को पराक्रम या शौर्य कहा जाता है, mental strength

पराघातन parāghātana
पराघातनं वधस्थानं, बध्यमानप्राणिदर्शनाद्धि घृणया नान्ने श्रद्धा स्यात्। (चक्र.-च.सू. 25/40), पराघातन से वधस्थान का ग्रहण किया गया है, वध्यमान प्राणि के दर्शन से घृणा के कारण अन्न में अरुचि उत्पन्न हो जाती है, sloughter house

परिकर्तिका parikartikā
परि सर्वतो भावेन कृन्ततीव छिनत्तीव बस्त्यादीनीति परिकर्तिका। (ड.-सु.चि. 34/16), केयं परिकर्तिका नाम विशिष्ट देश व्यवस्थित वातवेदना परिकृन्ततीव

गुदामिति सा परिकर्तिका (जे.-च.चि. 3/186), विरेचन का एक व्यापद् जिसमें बस्ति, गुदा आदि में काटने जैसी पीड़ा होती है, किसी विशेष प्रदेश में काटने जैसी वात वेदना, जैसे गुदा, परिकर्तिका एक रोग भी है, जिसमें काटने जैसी पीड़ा होती है। (अ.सं.शा.का. गर्भिणी चि.), a disease in which cutting like pain occurs, a complication of virechana in which cutting like pain occurs in basti or anus

परिग्रह parigraha
मधुराम्लादी नामाहारावयवानां प्रत्येकं मात्रया ग्रहणं परिग्रहः। (चक्र.-च.सू. 5/4), मधुरादि रसों एवं अन्य द्रव्यों की पृथक् पृथक् मात्रा, this term refers to differential quantity of every taste and type of food

परिचोदयन paricodayana
परिचोदयन्निति ज्ञानार्थ प्रेरयन्। (चक्र.-च.सू. 22/3), ज्ञान के लिए प्रेरित करने को परिचोदयन कहा गया है, motivation to gain knowledge

परिणाम pariṇāma
परिणामो अयोगादियुक्ता ऋतुस्वभावजाः शीतादयः। (विज.-मा.नि. 1/5), परिणाम, काल को कहते हैं, शीतादि ऋतुओं के स्वभाव का हीन, अति एवं मिथ्या योग, रोग का कारण बनता है, जैसे शीत ऋतु में शीत (सर्दी) का कम होना, अधिक होना आदि, seasonal variations as etiological factor

परिणुदति pariṇudati
नखदशनैर्धात्रीमात्मानं च परिणुदति। (सु.शा. 10/51), स्वयं को घायल करना, शिशु का ग्रह से ग्रस्त होने पर एक लक्षण, self infliction of injury

परिदाह paridāha
परिसमन्ताद्दाहः। (ड.-सु.सू. 17/5), सर्वतो दाहः। (ड.-सु.नि. 5/8), उदर तथा अन्य शरीरावयवों में जलन होना, buring sensation

परिपचन paripacana
परिपचनं तैलपाचनिका। (चक्र.-च.सू. 15/7), तैल पकाने वाला पात्र, vessel used for boiling oil

परिभाषा paribhāṣā
निगूढानुयुक्त लेशोक्त सन्दिग्धार्थ प्रदीपिका, सुनिश्चितार्था विबुधैः परिभाषा निगद्यते। (र.त. 2/2), जिन संक्षिप्त और सांकेतिक शब्दों द्वारा शास्त्र के सन्दिग्ध, गुप्त, अप्रकट और अविकसित भावों का निश्चित अर्थ प्राप्त हो, उसे परिभाषा कहते हैं, the definition which clarifies the doubtful, hidden, unspecified and uncommon terms

परिमाण parimāṇa
मानं प्रस्थाढकादितुलादिमेयम्। (चक्र.-च.सू. 26/29), परिमीयतेऽनेनेति परिमाणं पलादिकम्। (ड.-सु.चि. 31/8), परिमिति व्यवहारकारणं परिमाणं मानं प्रस्थाढकादि। (यो.र.), भारादि मान, measurement

परिवद्धितभोक्त्री parivaddhitabhoktrī
परिवद्धितभौक्त्री च परालालिततर्पण। परवेश्मरता धात्रीमुच्यन्ते स्तनकीलकात्।।

(का.सं.सू. 19), जो धात्री दूसरे के यहां पथ्य भोजन करती है, दूसरे के यहाँ जिसका पोषण एवं तर्पण होता है, तथा जो दूसरों के घर में रहती है उसे स्तनकीलक नामक रोग नहीं होता, a wetnurse who feeds and stays at infant's house

परिशुष्क pariśuṣka

परिशुष्काणि अनास्रावीणि। (ड.-सु.नि. 2/10), स्राव रहित होना, शुष्क होना, dry, without secretion

परिशुष्का pariśuṣkā

क्षीणशोणितस्यानिलपूर्णा परिशुष्का। (सु.शा. 8/19), अल्प रक्त युक्त एवं वायु से पूर्ण सिरा का व्यधन, असम्यक् (दुष्ट) सिरा व्यधन का एक प्रकार, a type of improper phlebotomy where a vein with deficient blood and full of vayu is incised

परिस्राव parisrāva

कफप्रसेक। (सु.चि. 34/17), कफ का स्राव, पिच्छिल स्राव, यह वमन और विरेचन का व्यापद है। वमन में मुख द्वार से स्राव होता है, जबकि विरेचन में गुदा से स्राव होता है, mucoid secretion, a complication of vamana and virechana, in vamana, secretion occurs from mouth, while in virechana, it occurs from anus

परिस्रावीभगन्दर parisrāvībhagandara

परिस्रावीत्येवंशील: परिस्रावी। (ड.-सु.नि. 4/7), कफज भगन्दर, स्थिर कण्डूमती पिड़का, पाक होने पर व्रण से कण्डूयुक्त, पिच्छिल, निरन्तर स्राव होता है, a type of anal fistula

परिस्रुतसलिल parisrutasalila

यन्त्रेण नाडिकाख्येन वह्निसन्तापयोगत:। बिन्दुशो यत्स्रुतं नीरं तत्परिस्रुतमुच्यते।। (र.त. 2/59), नाड़िका यन्त्र में जल को क्वथित करने के पश्चात् इसे बूंद बूंद करके संग्रहीत किया जाता है, इसे परिस्रुत सलिल (आसवित जल) कहते हैं, water is kept in nadiyantra and boiled then it is collected drop by drop, this is called parisruta salila or distilled water

परीक्षा parīkṣā

परीक्ष्यते व्यवस्थाप्यते वस्तुस्वरूपमनयेति परीक्षा प्रमाणानि। (चक्र.-च.सू. 11/17), जिसके द्वारा वस्तुओं के स्वरूप को व्यवस्थापित किया जाय, वह परीक्षा अथवा प्रमाण कहा जाता है, examination, by which the objects are systematised

परुष paruṣa

1. परुषं अपिच्छिलं रूक्षमित्यन्ये। (ड.-सु.सू. 14/21), पिच्छिल का विपरीत, रूक्ष, rough 2. परुषं परोद्वेजकं वचनम्। (चक्र.-च.सू. 7/28), दूसरे को उद्वेजक (पीडित) करने वाला कठोर वचन 'परुष' है, कष्टकारी न होते हुए भी न बोलने योग्य वचन दूसरे को कहना 'परुष' है, spoken word which hurts other

पर्पटी parpaṭī

संद्राविता कज्जलिकाग्नि योगात् रम्भापलाशे चिपटीकृता च, रसागमज्ञै: खलु पर्पटी सा प्रकीर्तिता पर्पटिका च सैव। (र.त. 2/42), पारद गंधक की कज्जली को

किसी लोह आदि धातु के पात्र में रख अग्नि में पिंघला करके केले के पत्ते पर डालकर दूसरे केले के पत्ते से दबाकर चपटी पपडी सी बना लेने को पर्पटी या पर्पटिका कहते हैं, parpati is prepared by melting kajali on mandagni, which is poured over banana leaf, covered with another leaf and applied pressure on a flat surface, this flat shaped preparation is called parpati

पर्यवदातत्व paryavadātatva

पर्यवदातत्वं विशुद्धज्ञानवत्वं गुरुशास्त्रसेवनादिना। (चक्र.-च.सू. 9/6), गुरु एवं शास्त्र से विशुद्ध ज्ञान की प्राप्ति 'पर्यवदातत्व' है, getting pure knowledge through teachers and classical texts

पर्योग paryoga

पर्योग: कटाह:। (चक्र.-च.सू. 15/7), कड़ाही, big metal pan

पल pala

शुक्तिभ्यां च पलं ज्ञेयं मुष्टिरामं चतुर्थिका। प्रकुञ्च: षोडशी बिल्वं पलमेवात्र कीर्त्यते।। (शा.सं.प्र. 1/24), दो शुक्ति का एक पल होता है, मुष्टी, आम्र, चतुर्थिका, प्रकुञ्च, षोडशी, बिल्व एवं पल, इसके पर्यायवाची हैं, two shuktis constitute one pala, mushti, amra, chaturthika, prakunch, shodasi, vilwa and pala are synonyms

पश्चात्कर्म paścātkarma

बल वर्णाग्निकार्यं तु पश्चात्कर्म समादिशेत्। (ड.-सु.सू. 5/3), शरीर के बल, वर्ण और अग्नि रक्षा सम्बंधी कर्म, पश्चात् कर्म कहलाते हैं, promotion of completeness i.e. strength after operation, post operative procedures

पाक pāka

1. पचनं पाक:, विधिरवचारणं, क्षारस्य पाकविधि यत्र तं क्षारपाकविधिम्। (हारा.-सु.सू. 11/1), पाक का अर्थ है पकाना, विधिपूर्वक, शास्त्र अनुसार क्षार का पकाना, boiling, preparation of alkali by boiling process 2. पाकदिति पक्वो दोषोऽबद्धत्वेनैव निम्नं कोष्ठं याति। (चक्र.-च.सू. 28/33), पक्व दोष बद्ध न होने से ही निम्न स्थल (नीचे स्थान) में आ जाते हैं, यही पाक कहलाता है, suppuration

पाक्य pākya

1.पाक्यमिति श्रृतम्। (चक्र.-च.चि. 3/197), क्वाथ, **decoction** 2. स एव सप्रतीवाप: पक्व: पाक्यस्तीक्ष्ण इति स एव संव्यूहिम संज्ञ: क्षारो दन्त्यादि द्रव्यप्रतिवापेन सहित: पक्व: पाक्यसंज्ञो भवति तीक्ष्णश्चेत्यर्थ:। (ड.-सु.सू. 11/13), वही प्रतिवाप पकाया हुआ पाक्य या तीक्ष्ण क्षार होता है, वही संव्यूहिम नाम का मृदुक्षार दन्ती आदि द्रव्यों के प्रतीवाप सहित पकाने पर पाक्य संज्ञा वाला तीक्ष्ण क्षार कहलाता है, an excessively corrosive variant of alkali

पाचक pācaka

एक प्रकार का पित्त/जो पाचन करे या बढाए। (सु.सू. 21/10), one of the five pitta i.e. pachka pitta, which digests or increases digestion

पाचन pācana

1. पचत्यामं न वह्नि च कुर्याद् यत् तद्धि पाचनम्। (शा.सं.प्र. 4/1), पाचयतीति

पाचनमुच्यते। (अ.हृ.सू. 8/21), पचन्तमग्निं प्रतिपक्षक्षपणेन बलदानेन च यत् पाचयति तत्र पाचनं, तच्च वाय्वग्निगुणभूयिष्ठम्। (चक्र.-च.सू. 22/18), जो द्रव्य पाचकाग्नि का बल बढ़ाकर पाचन कार्य कराए, वह पाचन कहा जाता है, यह द्रव्य वायु तथा अग्नि गुण की बहुलता वाले होते है, जो आम का पाचन करे तथा अग्नि की वृद्धि न करे, उसको पाचन कहते हैं, पचना, digestant, digestion 2. पाचन इति द्विविधोऽपिक्षारः, अत्र व्रणशोथस्य प्रतीसारणीयः पाचनः, अन्नाजीर्णस्य पानीयः। (ड.-सु.सू. 11/5), क्षार दो प्रकार से पाचन (पाक) क्रिया करता है, व्रणशोथ का पाचन प्रतिसारणीय क्षार से एवं अन्नाजीर्ण का पाचन पानीय क्षार से होता है, dissolution of oedema by external application and digestion of food by internal administration of alkali 3. पाचनं दहनं च शस्त्रपदस्य। (सु.सू. 14/39), तथा संपाचयेद्रस्मः। (सु.सू. 14/40) भस्मादि छिड़कर रक्तस्राव को रोकना, रक्तस्राव रोकने की चार विधियों में से एक, शस्त्रपद से क्षार प्रयोग कर रक्तस्राव को रोकना, a procedure to achieve hemostasis by the application of alkali, haemostasis by sprinkling of calcined powders

पाण्ड्य pāṇḍya

पाण्ड्यो दक्षिण दिग्विभागीयो देशः। (ड.-सू.सु. 13/13), मद्रास (तमिलनाडु) प्रान्त में चोल देश में नैऋत्य दिशा में एक प्रदेश पाण्ड्य कहा जाता है, place in south India, south east to chennai is called as chola i.e. ruled by cholas, a part of that is called pandya

पातन pātana

औषधैर्मर्दित पारदस्य यन्त्रस्थितस्योर्ध्वमधश्च तिर्यक्। निर्यातनं पातनसंज्ञयोक्तं वह्निसम्पर्कजः कञ्चुकघ्नम्। (रसे.चू. 4/87), औषधियों के साथ पारद को घोटकर और उसको ऊर्ध्व, अधः और तिर्यक पातन यन्त्र में रखकर ऊपर नीचे या तिरछे जो उड़ाया जाता है, उस कर्म को पातन संस्कार कहते हैं, when the mercury is grounded into a paste with prescribed ingredients and then vapourised in different directions using various patana yantras is called patana

पातनपिष्टि pātanapiṣṭi

चतुर्थांश सुवर्णेन रसेन घृष्ट पिष्टिका। भवेत्पातनपिष्टि सा रसस्योत्तमसिद्धिदा। (र.र.स. 8/9), एक भाग शुद्ध पारद को चौथाई भाग सुवर्ण पत्रों के साथ घोटने से जो पिष्टि (कज्जल) तैयार होती है, उसको पातन पिष्टि कहते हैं, यह पातन पिष्टि रस सिद्धि प्राप्त करने के लिए उपयोगी है, the pisti which is prepared by triturating one part of parad and 1/4 th part of gold is called patanapisti, it is beneficial for achieving rasasiddhi

पादभ्रंश pādabhraṃśa

पादभ्रंशः पादस्यारोपविषयदेशादन्यत्र पतनम्। (चक्र.-च.सू. 20/11), पांव के जमीन पर रखते समय अन्य किसी स्थान पर पांव पड़ना पादभ्रंश कहलाता है, foot drop, subluxation of foot

पादांशिक pādāṃśika

पादः चतुर्थोभागः, तद्रूपोंऽशः पादांशः तेन कृतः क्रमः पादांशिकः, अन्ये तु

पादस्यांशः पादांश इति षोडशं भागं वर्णयन्ति। (चक्र.-च.सू. 7/37), चतुर्थ भाग, कुछ लोग पाद (चतुर्थ) के अंश (चौथाई) भाग अर्थात् सोलहवें भाग को पादांश कहते हैं, one fourth, according to other opinion one sixteenth part

पान pāna

1.पीना, drinking 2. क्षुण्णं द्रव्यपलं साध्य चतुःषष्टिपले जले। अर्धशिष्टं च तद् देयं पाने भक्तादि संविधौ।। (शा.सं.म. 2/157), यह एक औषधि पान है, जिसे एक भाग चूर्णित द्रव्यों को 64 भाग जल में मिलाकर अर्ध भाग अवशिष्ट रहने तक उबाला जाता है, यह औषधीय पान के अतिरिक्त अन्य कल्पना निर्माण हेतु भी प्रयोग में लाया जाता है, a medicated drink prepared by adding 64 parts of water to 1 part of properly crushed drug and reduced to 1/2 by boiling (e.g. shadanga paniya), it is used as medicated drink and also in preparation of different gruels

पानीयक्षार pāniyakṣāra

पानीयः पानार्हः क्षारोदकमित्यर्थः। (ड.-सु.सू. 11/6), आभ्यन्तर प्रयोग किया जाने वाला क्षार, liquid alkali given orally

पाप pāpa

पापशब्देन पापकार्यं दुःखमुच्यते। (चक्र.-च.सू. 11/5), पापशब्द से पापकार्य दुख ग्रहण किया गया है, in this context it means sorrow

पाप्मा pāpmā

दुःखहेतुत्वात् पाप्मा। (च.सू. 17/117), दुख का हेतु होने से पाप्मा कहा जाता है, reason for misery

पायस pāyasa

क्षीरसिद्धास्तण्डुलाः पायसः। (ड.-सु.चि. 32/12), चावल को दूध में पकाने से पायस बनता है, rice cooked in milk

पारद pārada

अथान्यकूपजः सोऽपि चञ्चलः श्वेतवर्णवान्। पारदो विविधैर्योगैः सर्वरोगहरः स हि। (र.र.स. 1/71), ये पारा का एक भेद है जो अन्य कूप में उत्पन्न श्वेत वर्ण वाला है, यह विविध योगों से सभी रोगों को दूर करने वाला होता है, parada is one among the five kinds of mercury which is white in colour, and it can cure most of diseases when applied along with different pharmaceutical preparations

पारुष्य pāruṣya

पारुष्यं कृच्छ्रतोऽपि न वाच्यत्वादि परुषभाषणम्। (चक्र.-च.सू. 30/82), कठोर वचन, कष्टकारी होते हुए न बोलने योग्य वचनों को कहना 'पारुष्य' वचन कहलाता है, harsh speech

पार्थिव pārthiva

पृथिवी विकारः पार्थिवम्। (चक्र.-च.सू. 1/68), पार्थिव, पृथिवी से निकलने वाला कोई भी पदार्थ पार्थिव कहलाता है, earthen, earthy, any object generating from earth is referred to as parthiva

पार्श्व
pārśva
पर्शुकाभिस्तृतं पार्श्वं तेन पार्श्वमिव पार्श्वम्। (च.सू. 1/7), पर्शुकाओं के निकट जो हो उसे पार्श्व कहते हैं, जिस प्रकार पर्वतों के समीप का भाग हिमवत् पार्श्व कहलाता है, which is adjacent to the ribs is called parshva, such as the area near the mountains is called himavata parshva

पार्ष्णि
pārṣṇi
पञ्च चतुरंगुलायत विस्तृता। (सु.सू. 35/21), एड़ी, ankle

पिङ्गला
piṅgalā
किञ्चिद्रक्ता वृत्तकाया पिङ्गाशुगा च पिङ्गला। (सु.सू. 13/12), कुछ लाल शरीर वाली, गोलाकार रक्तधूसर वर्ण की एवं तेज चलने वाली, निर्विष जलौका का एक प्रकार, a type of non poisonuos leech which is reddish brown in colour, round in shape and move fast or swiftly

पिङ्गाक्षी
piṅgākṣī
दुर्दर्शना महाकाया पिङ्गाक्षी भैरवस्वरा। लम्बोदरी शङ्कुर्णी शकुनी ते प्रसीद तु।। (सु.उ. 30/11), पीत नेत्र युक्त, शकुनी ग्रह का एक नाम, tawny eyed, a name of shakuni graha

पिचु
picu
पिचुनेति तूलकपिण्डिकया। (चक्र.-च.सू. 5/69), पिचु शब्द से रुई के पिण्ड अर्थात् रुई के फाहे का ग्रहण किया जाता है, या रुई के फाहे या पिण्ड को पिचु कहा जाता है, cotton ball, swab

पिच्चिता
piccitā
कुण्ठशस्त्रप्रमथिता पृथुलीभावमपन्ना पिच्चिता। (सु.शा. 8/19), कुण्ठित शस्त्र से कुचली हुई तथा चपटी हुई सिरा, असम्यक् (दुष्ट) सिरावेध का एक प्रकार, an improper type of phlebotomy, in which vein is crushed with a blunt instrument, lacerated vein

पिच्छन
picchana
पिच्छनं अत्यर्थपीडनम्। (चक्र.-च.सू. 18/4), अत्यधिक दब जाना, excessive pressing

पिच्छा
picchā
पिच्छा स्वेदस्यैवं पिच्छलो भागः। (चक्र.-च.सू. 14/46), स्वेद का पिच्छल भाग, sebum

पिञ्जरी
piñjarī
लोहं लोहान्तरे क्षिप्तं ध्मातं निर्वापितं द्रवे। पाण्डुपीतप्रभं जातं पिञ्जरीत्यभिधीयते। (रसे.चू. 4/26), एक मूषा में दो धातुओं को रखकर तीव्राग्नि में धमन करें, जब दोनों धातु द्रव रूप हो जाए तो किसी द्रव मे बुझा दे। बुझाने के बाद उस मिश्र धातु का वर्ण पाण्डु या पीत हो जाए, उसे पिञ्जरी कहते हैं, two metals are heated in a musha at high temperature, then cooled with any liquid, the colour of the combined metal becomes yellowish, this is known as pinjari

पिठर
piṭhara
पिठरः स्थाली। (चक्र.-च.सू. 15/7), थाली, plate

पिण्ड
piṇḍa
पिण्डो वर्तुलाकृतिः। (ड.-सु.शा. 3/18), गोलाकार, भ्रूण कालांतर में पुरुष का लिङ्ग धारण करता है, a spherical embryo turns into a male foetus

पिण्डस्वेद
piṇḍasveda
पिण्डरूपः स्वेदः पिण्डस्वेदः। (चक्र.-च.सू. 14/25), पिण्ड (पोट्टली) बनाकर किया गया स्वेद पिण्डस्वेद है, bolus sudation

पिण्डिका
piṇḍikā
पिण्डिका जानुजंघामध्यमांसपिण्डिका। (चक्र.-च.सू. 7/8), जानु एवं जंघा के मध्य स्थित मांसपिण्ड को पिण्डिका कहते हैं, calf muscle

पिण्डित
piṇḍita
पिण्डिते घने। (हे.-अ.हृ.सू. 26/54), घन (गाढ़ा) रक्त के संदर्भ में, dense, solidified

पिण्याक
piṇyāka
1.पिण्याकं तिलखलिः किंवा पिण्याकशाकम्। (चक्र.-च.सू. 22/29), तिल की खली, sediment of oil cake 2. पिण्याक शाक

पित्तला
pittalā
पित्तला पित्तप्रधानाः। (च.सू. 7/39), पित्तप्रधान प्रकृति, pitta prakriti

पित्तान्तवमन
pittāntavamana
वमन के अन्त में पित्त निकलना वमन पूर्ण होने का द्योतक है। (च.सि. 1/14), appearance of pitta in vomitus indicates that vamana karma is completed

पित्ताश्मरी
pittāśmarī
अश्मरी चात्र सरक्ता पीतावभासा कृष्णा भल्लातकास्थिप्रतिमा मधुवर्णा वा भवति, तां पैत्तिकीमिति विद्यात्। (सु.नि. 3/9), पित्तप्रकोप से उत्पन्न अश्मरी, जो लाल, पीली, काली भल्लातक (भिलावे का बीज) व शहद के रंग की होती है, stone formed due to vitiation of pitta dosha, it is red, yellow & black, resembles bhallatak seed & honey coloured, uric acid calculus

पित्र्या
pitryā
पितृतोऽपत्यं गच्छतीन्ति पित्र्याः। (चक्र.-च.सू. 25/17), पिता से रोग संतान में जाना पित्र्या कहा गया है, paternally inherited diseases

पिपासा
pipāsā
पातुमिच्छा। (सु.सू. 1/25), अर्श पूर्वरूप। (सु.नि. 2/8), ज्वर लक्षण। (च.नि. 1/21), तृष्णा, पीने की इच्छा, प्यास लगना, thirst, one of the prodromal features of piles/hemmorrhoids

पिलिपिच्छिका
pilipicchikā
सैषा वृद्धजीवक! रेवती बहुरूपा जातहारिणी पिलिपिच्छकेति चोच्यते, रौद्रीति चोच्यते, वारुणीति चोच्यते। (का.स.कल्प रेवती 7), ततः पक्षात् परे काले विज्ञेयापिलिपिच्छिका। (का.सं.क. रेवतीकल्प 47), हे वृद्धजीवक! इस प्रकार यह अनेक रूपों वाली तथा उत्पन्न हुए प्राणियों का नाश करने वाली रेवती पिलिपिच्छिका, रौद्री तथा वारुणी आदि नामों से कहलाती है, एक पक्ष के

पश्चात् जिस जिस का शिशु नष्ट होता है ऐसी जातहारिणी (रेवती ग्रस्त स्त्री), a synonym of revathi graham, whose newborn dies after a fortnight

पिशाच
piśāca
1. पिशिताशनः। (ड.-सु.सू. 5/21), मांसभक्षण करने वाले, flesh eaters 2. एक प्रकार का सत्व। (च.शा. 4), a type of psychae

पिष्टि
piṣṭi
खल्वे विमर्द्य गन्धेन दुग्धेन सह पारदम्, पेषणां पिष्टतां याति साऽपि पिष्टि मता परैः। (रसे.चू. 4/9), एक पाषाण खरल में शुद्धपारद और शुद्धगन्धक को समभाग मिलाकर दुग्ध के साथ मर्दन करने से जो काली पिष्टी बनती है, उसे पिष्टि कहते हैं, parad and gandhak are taken in equal quantity and triturated vigorously in a khalwa with cow's milk, the floor like substance produced, is called pisti

पीडन
pīḍana
पीडनं व्रणस्य पूयादिनिर्गमनार्थमङ्गुल्यादिनाः। (ड.-सु.सू. 7/17), अंगुली आदि से दबाकर पूयादि को निकालना, squeezing

पीतक
pītaka
पीतगन्धं तु कालीयं पीतकं माधवप्रियम्। कालीयकं पीतकाष्ठं बर्बरं पीतचन्दनम्। (रा.नि. 12/16), पीले चन्दन का एक पर्याय, a synonym of yellow sandal, *Santalium folonum*

पीतमुद्गिरति
pītamudgirati
लालास्रवणमत्यर्थं स्तनद्वेषारतिव्यथाः। पीतमुद्गिरिति क्षीरं नासा श्वासी मुखामये। (का.सं.सू. 25/8), मुख रोग में शिशु के मुख से लालास्राव स्तन्य से अरुचि, ग्लानि एवं व्यथा (पीड़ा) होती है तथा वह पीये हुए दूध को उगल देता है, regurgitation of milk (a sign of oral disorder in infant)

पीयूष
pīyūṣa
पीयूषः सद्यःप्रसूतायाः क्षीरम्। (चक्र.-च.सू. 27/233), सद्यः प्रसूत (शीघ्र ब्याई) गाय आदि का दूध पीयूष कहलाता है, colostrum

पुंसवन
puṃsavana
पुसंवनमिति पुंसत्वकारकं कर्म। (चक्र.-च.शा. 8/19), गर्भ के लिङ्ग परिवर्तन हेतु किए जाने वाले कर्म, संस्कार, procedures adopted to change the sex of foetus/embryo

पुट
puṭa
रसोपरस लोहादेः पाकमानमापकम्। उत्पलाद्यग्नि संयोगात् यत्तदत्र पुटं स्मृतम्। (र.त. 3/32), रसादि द्रव्य पाकानां मारण ज्ञापनं पुटम्। नेष्टो न्यूनाधिकः पाकः सुपाकं हितमौषधम्। (रसे.चू. 5/144), महारस, उपरस लोहादि के विभिन्न प्रकार के भस्म तैयार करने के लिए ताप देने के प्रमाण को पुट कहते हैं, the procedure for inducing quantum of heat for the preparation of bhasmas of maharasa, uparasa, lohas, etc. is called puta, the puta is the unit of heat required to obtain the required paka (supaka) of metals and minerals

पुटपक्व
puṭapakva
पुटपाकस्य कल्कस्य स्वरसो गृह्यते यतः। अतस्तु पुटपाकानां युक्तिरत्रोच्यते मया। पुटपाकस्यमात्रेयं लेपस्याङ्गार वर्णता। लेपं च द्वयङगुलं स्थूल कुर्याद्वाङ्गुष्ठ मात्रकम्।। (शा.सं.म. 1/21-22), औषधि स्वरस निकालने की विधि, जिसमें ओषधि का कल्क बना लेते हैं, तत्पश्चात् चौड़े पत्रों से लपेट कर उसके ऊपर एक अंगुल मोटी मिट्टी की परत बनाकर अग्नि में जलाया जाता है, it is a procedure adopted for the extraction of juice of drug, where the drug is crushed into paste, covered with broad leaves, later wrapped with mud of one angula (3/4th inches) thickness and subjected to heat and then juice is extracted

पुटपाक
puṭapāka
रसादिभिर्भेषजानां खल्वे लोहं विमर्दितम्। पुटस्यं पच्यते भस्मात् पुटपाकस्ततः स्मृतः।। (र.त. 20/31), स्थालीपाक के बाद लौहचूर्ण को विविध औषधियों के स्वरस एवं क्वाथ से मर्दन कर सुखा कर शरावसंपुट में बन्दकर पुट देने की क्रिया को पुटपाक विधि कहते हैं, the iron powder (after doing the sthalipaka) is triturated with prescribed medicated liquids and then it is made in to pellets and dried, thereafter these pellets are roasted in sealed earthen pots is called putapaka

पुण्डरीक
puṇḍarīka
पुण्डरीकं श्वेतशतपत्रपद्मम्। (चक्र.-च.सू. 25/49), श्वेत रंग के सौ पत्र वाले कमल को पुण्डरीक कहा जाता है, white lotus with 100 leaves

पुण्डरीकमुखी
puṇḍarīkamukhī
मुद्गवर्णा पुण्डरीकतुल्यवक्त्रा पुण्डरीकमुखीः। (सु.सू. 13/12), पुण्डरीकतुल्यवक्त्रेति पद्मवद्विस्तीर्णमुखी। (ड.-सु.सू. 13/12), मूंग के समान वर्ण एवं पुण्डरीक के समान मुख वाली जलौका, कमल के समान चौड़े मुख वाली, निर्विष जलौका का एक प्रकार, a type of non poisonous leech with its mouth resembling the shape of lotus

पुण्य
puṇya
पावन, पवित्र, pious

पुण्यकर्माण
puṇyakarmāṇa
पुण्यं पावनं कर्म येषां ते पुण्यकर्माणः। (चक्र.-च.सू. 1/7), पुण्यमायुर्वेदतन्त्रकारण लक्षणं कर्म येषामग्निवेशादीनां ते पुण्यकर्माणः। (चक्र.-च.सू. 1/34), पुण्य या पवित्र कार्य करने वाले व्यक्ति पुण्यकर्मा कहलाते हैं, कल्याणकारी कार्यक्रम, लोक कल्याण या हित का कार्य, अग्निवेश आदि ऋषियों ने लोककल्याणार्थ आयुर्वेद तन्त्र का निर्माण किया, अतः उन्हें पुण्यकर्माणा कहा जाता है, pious people, sacred persons, the sages like Agnivesh who did creative deeds for the welfare of all, such as the development of Ayurveda, are called punyakarmana or punyakarma

पुण्यकीर्ति
puṇyakīrti
रोदनी भूतमाता च लोकमातामहीति च। शरण्या पुण्यकीर्तिश्च नामानि तव विंशतिः।। (का.चि. बालगृह चिकित्सित अध्याय), रेवतीग्रह के बीस नामों में से एक, a synonym of revati graha

पुण्यशब्द
puṇyaśabda
पुण्य: पावन: शब्दो यस्यासौ पुण्यशब्द:। (चक्र.-च.सू. 7/30), जो पुण्य शब्द बोलता है, pious

पुन:पुन:विद्धा
punaḥpunaḥviddhā
सूक्ष्मशस्त्रव्यधनात् बहुशो भिन्ना पुन:पुन:विद्धा। (सु.शा. 8/19), दुष्टवेध का एक प्रकार, सूक्ष्म शस्त्र के बार-बार प्रयोग करने से उत्पन्न सिरावेध, a defective venepuncutre, repeated pricks by a slender point instrument

पुरागुहस्य
purāguhasya
पुरा पूर्वमतीते कस्मिञ्चित कालांशे गुहस्य भगवत: कुमारस्य। (इन्दु.-अ.सं.उ. 3/2), पुरातनकाल में भगवान कार्तिकेय की, in ancient period for lord kartikeya

पुरीषजनन
purīṣajanana
पुरीष को उत्पन्न करने वाला, that produces purisha

पुरीषविरजनीय
purīṣavirajanīya
पुरीषस्य विरजनं दोषसम्बन्धनिरासं करोतीति पुरीषविरजनीय:। (चक्र.-च.सू. 4/8), पुरीष (मल) को सामान्य वर्ण का बनाने वाले द्रव्य, who stabilizes normal colour of faecal matter

पुरुष
puruṣa
पुरि भौतिके शरीरे वसतीति पुरुष:। (ड.-सु.शा. 3/4), पुरुष आत्मा (ड.-सु.शा. 1/9), पंचमहाभूतशरीरिसमवाय: पुरुष इत्युच्यते। (सु.सू. 1/22), पुरुषशब्देन चेह सामान्येन प्राणिवाचिनाऽपि प्रकरणान्मनुष्यरूप एव पुरुष उच्यते। (हारा.-सु.सू. 1/22), पंचभौतिक शरीर में वास करने वाला जीव, पंचमहाभूत एवं आत्मा का समवाय, आत्मा, जीव, soul, living being

पुष्टि
puṣṭi
पुष्टि: धनसंपत्ति:। (चक्र.-च.सू. 11/5), धन की समृद्धि को पुष्टि कहा गया है, accumulation of wealth

पुष्प
puṣpa
कुसुमम्। फूल, flower

पुष्पदर्शन
puṣpadarśana
आर्त्तवदर्शन। (च.शा. 8/24), menarchae, menstruation

पुष्पफल
puṣpaphala
पुष्पफलं कूष्माण्ड:। (ड.-सु.सू. 9/4), कूष्माण्ड, पेठा, pumpkin, *Benincasa hispida*

पुष्पित
puṣpita
पुष्पितस्य वनस्येव नानाद्रुमलतावत:। (च.इ. 2/8), अरिष्ट या मृत्युसूचक लक्षण, जिसमें रोगी के शरीर पर विभिन्न आकृतियां गन्ध आदि प्रकट हो जाती हैं, नाना द्रुम पुष्प चिह्नों का शरीर के ऊपर दिखना, अरिष्ट लक्षण, spots on body, bad prognostic sign

पूतना
pūtanā
मलजा पूतना क्रौञ्ची वैश्वदेवी च पावनी। पञ्चनामेति चाप्युक्ता श्रृणु तस्याश्चिकित्सितम्।। (का.सं.चि. बालग्रह चिकित्सित अध्याय), स्कन्द (कार्तिकेय) द्वारा उत्पन्न स्त्रीग्रह जिसके मलजा आदि पांच पर्याय हैं, a feminine graha produced by skanda

पूति
pūti
पूति अत्यर्थक्लिन्नम्। (चक्र.-च.सू. 11/37), अत्यधिक गीला 'पूति' कहा जाता है, putrid, foetid

पूतिलोह
pūtiloha
जिन धातुओं को तपाने से दुर्गन्ध की उत्पत्ति होती है, जैसे नाग एवं वंग, foetid metals such as lead

पूपलिका
pūpalikā
पूपलिका चापडिकेति ख्याता। (चक्र.-च.सू. 27/267), 'पूपलिका' अर्थात् छोटे आकार का पूप या पूआ जो कि चापडिका नाम से लोक में प्रसिद्ध है, small sized chapati

पूपा
pūpā
पूपा: पिष्टिका:। (चक्र.-च.सू. 27/267), पूपा अर्थात् पूआ जो कि गोधूम चूर्ण की पिष्टी से बना होता है, a kind of dish prepared with wheat flour dough flattened and baked in fire

पूय
pūya
व्रणे संजायमान: आप्यो भाव:। व्रण में उत्पन्न होने वाला जलीय भाव, pus

पूर्वकर्म
pūrvakarma
लङ्घनादि विरेकान्तं पूर्वक्रम व्रणस्य च। (ड.-सु.सू. 5/3), दीपन, पाचन, लंघन, वमन, विरेचन व्रण की चिकित्सा में करते हैं, उसे पूर्वकर्म कहते हैं, deepana, pachana, langhana (fasting), vaman, emesis, purgation before the treatment of the wound is called poorvakarma i.e. pre-operative procedure

पूर्वमुत्तर दन्तजन्म
pūrvamuttara dantajanma
तत्र सदन्तजन्म च, पूर्वमुत्तरदन्तजन्म च, विरलदन्त जन्म च हीनदन्तता च अधिकदन्तता च, करालदन्तता च विवर्णदन्तता च स्फुटितदन्तता चामाङ्गल्य भवति। (का.सं.सू. 20/6), दांतों के साथ जन्म, पहले ऊपर के दांतों का निकलना आदि अशुभ कहे गए हैं, eruption of upper incisors first

पूर्वरूप
pūrvarūpa
एतेन उत्पत्ते: पूर्व यत् भविष्यव्याधेर्लक्षणं तत् पूर्वरूपम्। (चक्र.-च.नि. 1/8), भविष्य में होने वाली व्याधि का ज्ञान करवाने वाले लक्षणों को पूर्वरूप कहते हैं, prodromal signs/symptoms

पूर्वरूप विशिष्ट
pūrvarūpa viśiṣṭa
विशेषतस्तु जृम्भाङ्गमर्दभूयिष्ठं हृदयोद्वेगि वातजम्। (हारीत.-च.नि. 1/8), जो पूर्वरूप, भाविव्याधि का प्रधान दोष सहित ज्ञान करावे वह विशिष्ट पूर्व रूप है जैसे नयनदाह पैत्तिक ज्वर, जृम्भा वातिक ज्वर की ओर इंगित करते हैं, तो वह

ज्वर के विशिष्ट पूर्वरूप हैं, दूसरी तरफ उर: क्षतादि के अव्यक्त लिंग उनके विशिष्ट पूर्वरूप हैं, specific prodromal symptoms are that which indicate the manifestation of a disease with involved dosha

पूर्वरूप सामान्य pūrvarūpa sāmānya

तत्र सामान्यं येन दोषदूष्य समूर्च्छनावस्थाजनितेन भावि ज्वरादिव्याधिमात्रं प्रतीयते, न तु वातादि जनित्वादि विशेष:। (विज.-मा.नि. 1:6), जो दोष एवं दूष्य समूर्च्छना से उत्पन्न होने वाली केवल भावी व्याधि का ज्ञान कराये वह सामान्य पूर्व रूप है, उस व्याधि में कौन सा दोष प्रधान होगा, इस बात का ज्ञान सामान्य पूर्वरूप से नहीं होता है, the symptoms which indicate the manifestation of future disease without giving any knowledge about the dosha involved is known as samanya purvarupa

पूर्वाभिभाषी pūrvābhibhāṣī

पूर्वाभिभाषी प्रथम संभाषणशील:। (चक्र.-च.सू. 8:18), अपनी बात पहले कहने वाला 'पूर्वाभिभाषी' है, person who initiates the dialogue

पृथक्त्व pṛthaktva

सर्वथाऽसंयुज्यमानयोरिव मेरुहिमाचलयो: पृथक्त्वम्, विशिष्टलक्षणयुक्तत्वलक्षितं विजातीयानां पृथक्त्वमित्यर्थ:। (चक्र.-च.सू. 26/29), एक को दूसरे से भिन्न करने वाला जैसे मेरु एवं हिमालय, division, differentiation, to distinguish, separation

पृथुका pṛthukā

पृथुका: चिपिटा:। (चक्र.-च.सू. 27/273), पृथुका अर्थात् चिपिटा, चिउड़ा, flattened rice

पृथुशिरा pṛthuśirā

पृथुशिरा महामस्तका। (ड.-सु.सू. 13/11), बडे सिर वाली, big headed

पृषत pṛṣata

चित्रहरिण:। (चक्र.-च.सू. 27/45), चित्रित हिरन, चितकबरा हिरन, spotted dear

पेया peyā

पेया बहुद्रवा यवागू:। (चक्र.-च.सू. 27/250), द्रवाधिका स्वल्पसिक्था चतुर्दशगुणे जले सिद्धा पेया बुधैर्ज्ञेया। (शा.सं.म. 2/67), अधिक द्रव युक्त यवागू (खिचडी) पेया कहलाती है, द्रव्य से चौदह गुना जल में पकाई हुई अत्यन्त पतली एवं थोड़े से सिक्थ भाग युक्त कल्पना को पेया कहते हैं, the rice gruel with more liquid portion, the very thin gruel prepared by boiling one part of grains in fourteen times of water

पेशी peśī

पेशी दीर्घाकृति:। (ड.-सु.शा. 3/18), लम्बाकृति, भ्रूण अथवा गर्भावस्था के द्वितीय मास में पेशी के आकार का भ्रूण स्त्री का लिङ्ग धारण करता है, an elongated shaped embryo develops into a female fetus

पोष poṣa

पोषण, पुष्टि, nourishment

पौतन poutana

पौतनो मथुरा प्रदेश:। (ड.-सु.सू. 13/13), उत्तर प्रदेश में मथुरा प्रदेश को पौतन प्रदेश कहते हैं, Mathura is name of a place in Uttarpradesh

पौरुष pouruṣa

1. पौरुषं शारीरं बलम्। (चक्र.-च.सू. 11/3), शारीरिक बल को पौरुष कहा जाता है, physical strength 2. पौरुष उत्कृष्टं कर्म। (चक्र.-च.सू. 30/24), पुरुष द्वारा किये गए उत्तम कार्य को 'पौरुष' कहा जाता है, the gretest action done by a person

पौष्कर पुष्करपत्ररूपं शाकम्। (चक्र.-च.सू. 26/84), पुष्कर के समान पत्र युक्त तीन प्रकार के शाक, a leafy vegetable

प्रकिरेत् prakiret

सूतिकागारस्यान्तर्बहिश्च सर्षपादिकणिका विकिरेद्विक्षिपेत्। सायं प्रातश्च बलिं भूतोपहारमन्तर्बहि:प्रकिरेत्। (अ.सं.उ. 1/16), बालक की रक्षा हेतु सरसों आदि का अंदर बाहर प्रात: सायं छिड़काव, sprinkling of protective material in and around post partum ward

प्रकृति prakrti

1. प्रकृति वातादीनां रसादीनां च साम्यावस्थाम्। (चक्र.-च.सू. 5/4), वातादि दोषों एवं रसादि धातुओं की साम्यावस्था 'प्रकृति' है, equilibrium state of vatadi dosha and rasadi dhatu is prakriti 2. प्रक्रियतेऽस्माद् गर्भ इति प्रकृति:। (चक्र.-च.शा. 4/42), जिस प्रक्रिया से गर्भ होता है वह प्रकृति है, the way the fetus is formed is its prakriti 3. प्रकृतिं स्वभावम्। (चक्र.-च.सू. 8/15), प्रकृति: अविकार: स्वभाव:। (चक्र.-च.सू. 8/15), स्वभाव ही प्रकृति है, सामान्य स्वभाव प्रकृति है, nature of a person is prakriti, normal nature is prakrati 4. प्रकृतिं उत्पत्तिकारणं स्मरेत्। (चक्र.-च.सू. 8/27), सृष्टि की उत्पत्ति का कारण प्रकृति है, from which universe is created 5. प्रकृतिं पंचभूतसमुदायलक्षणमनित्यां स्मरन्न रागद्वेषादिरभिभूयते। (चक्र.-च.सू. 8/27), पंचमहाभूत से बनी अनित्य प्रकृति 6. प्रकृति: आरोग्यम्। (चक्र.-च.सू. 9/4), निरोगता, health 7. प्रकृतिर्गुणानां साम्यावस्था भवतीति दर्शयति। (चक्र.-च.सू. 9/4), गुणों की साम्यावस्था प्रकृति है, equilibrium of guna 8. प्रकृति मूलभूत:। (चक्र.-च.सू. 19/7), मूलभूत कारण प्रकृति है 9. प्रकृति: कारणम्। (चक्र.-च.सू. 19/5), प्रकृति कारण है 10. प्रकृतिश्च जन्मप्रभृति वृद्धो वातादिरुच्यते। दोषानुशायिता हि एषां देह प्रकृतिरुच्यते। (चक्र.-च.सू. 17:62), देह प्रकृति जन्म से ही जो दोष वृद्ध हो उसके अनुसार होती है। 11. प्रकृति: देह जनकं बीजम्। (चक्र.-च.सू. 21:12), शरीर को उत्पन्न करने वाला बीज प्रकृति है, one who produces body

प्रकृतिभाव prakṛtibhāva

प्रकृतिभावे निर्विकारत्वकरणे। (चक्र.-च.सू. 8/17), विकार रहित करना, making normal by clearing abnormality

प्रकोप prakopa
विलयनरूपा वृद्धिः प्रकोपः। (ड.-सुं.सू. 21/18), विलयन रूप में होने वाली वृद्धि को प्रकोप कहते हैं, aggravation

प्रक्षारयन् prakṣārayan
प्रक्षारयन् स्थानाद्भ्रंशयन् क्षपयंश्च। (चक्र.-च.सू. 13/71), अपने स्थान से हटाकर दूर फेंकना, displacement

प्रक्षेप prakṣepa
द्रव्यमार्द्रं शिलापिष्टं शुष्कं वा सजलं भवेत्। प्रक्षेप आवाप कल्कास्ते तन्मानं कर्ष संमितम्।। (शा.सं.म. 5/1), कल्के मधु घृत तैलं देयं द्विगुण मात्रया सिता गुण समद्रात् द्रवदेया चतुर्गुणा।। (शा.सं.म. 5/12), कल्क का पर्याय, जल के साथ ताजा आर्द्र औषधि या सूखी औषधि का बनाया हुआ पिष्टि, चूर्ण, मधु, क्षार, लवण, शर्करा आदि द्रव्य जो मुख्य कल्पना में अतिरिक्त रूप से मिलाया जाता है, synonym of kalka

प्रच्छन्न pracchanna
ग्रहैरपि हि जायन्ते प्रच्छन्ने व्याध्यः शिशोः। कर्म शस्तमस्तेषु दैवयुक्त्यापाश्रयं सदा।। (अ.सं.उ. 2/57), छिपा हुआ, अदृश्य, hidden, dormant

प्रच्छर्दन pracchardana
वमनम्। (अरु.-अ.हृ.सू. 5/54), वमनकर्म, emesis

प्रच्छान pracchāna
शस्त्रविस्रावणं द्विविधं-प्रच्छानं, सिराव्यधनं च। (सु.सू. 14/25), प्रच्छानं पिण्डिते वा स्यात्। (अ.हृ.सू. 26/54), पिण्डिते घने। (हे.-अ.हृ.सू. 26/54), शस्त्र से रक्त विस्रावण की दो विधियाँ हैं - प्रच्छान एवं सिरावेधन, पिण्डित (घन) रक्त के निर्हरणार्थ प्रयुक्त विधि, a procedure of blood letting by superficial incisions, scarification

प्रजङ्घा prajaṅghā
जङ्घाया अधोभागः। (का.सू. 28), जंघा का नीचे का भाग, lower part of leg

प्रजापत्यसत्व prajāpatyasatva
मानस प्रकृति का एक भेद। (च.शा. 4), a type of psychae

प्रजावरणबन्ध prajāvaraṇabandha
प्रजावरणं बध्नीयात्। (का.सं.क. रेवती कल्पाध्याय 80), जिस बन्ध के द्वारा गर्भ स्थित होता है तथा गर्भपात का भय नहीं रहता, उस बन्धन को प्रजा (संतान) का स्थिर रखने वाला बन्ध कहते हैं, a bandage to prevent abortion

प्रजास्थापन prajāsthāpana
प्रजोपघातक दोषं हृत्वां प्रजां स्थापयतीति प्रजास्थापनम्। (चक्र.-च.सू. 4/8), जो प्रजा (सन्तान) के उपघातक (नाश करने वाले) दोष को नष्ट करके प्रजा (सन्तान) को स्थापित अर्थात् सन्तान की प्राप्ति कराता है, उसे प्रजास्थापन कहा जाता है, removing and normalizing fertility defects

प्रज्ञापराध prajñāparādha
धीधृतिस्मृतिविभ्रष्टः कर्म यत् कुरुतेऽशुभम्। प्रज्ञापराध तं विद्यात् सर्वदोषप्रकोपणम्। (च.शा. 1/102), प्रज्ञापराधो मिथ्याज्ञानादि। (विज.-मा.नि. 1/5), प्रज्ञापराध मिथ्याज्ञान होता है, बुद्धि, धारण एवं स्मृति के नाश होने पर जब स्वास्थ्य के लिए अहितकर कर्म किए जाते हैं, उसे प्रज्ञापराध कहते हैं, misconduct of intellectual factors as etiological factors

प्रणति praṇati
लोकवंद्यता। (चक्र.-च.चि. 1(1)/8), लोकमान्यता, रसायन सेवन का फल, reverence of the people

प्रणिपात praṇipāta
प्रणिपातो देवादीनां शारीरो नमस्कारः। (चक्र.-च.सू. 11/54), देव आदि को सम्पूर्ण शरीर से दण्डनमस्कार करना, prostration, laying with the face downward with reverence to God

प्रणेता praṇetā
प्रणेता च मनस एवेप्सितेऽर्थे। (चक्र.-च.सू. 12/8), इच्छित विषयों की तरफ मन को प्रेरित करने वाला प्रणेता कहा गया है, controller of mind, that guids the mind towards desirable objects

प्रतामक pratāmaka
प्रतमक एव प्रतमकः श्वासविशेष। (चक्र.-च.सू. 7/33), तमकश्वास भेद, a type of dyspnoea

प्रतिग्रह pratigraha
प्रतिगृह्णन्तीति प्रतिग्रहाः पतद्ग्रहाः। (चक्र.-च.सू. 15/11), एक पात्र जिसमें वमित द्रव्य गिरे तथा एकत्र रहे, a vessel in which vomitus material falls

प्रतिद्वन्द्व pratidvandva
प्रतिद्वन्द्वशब्देन च विपरीतार्थकारिणामपि ग्रहणम्। (चक्र.-च.सू. 7/44), विपरीतार्थकारी, उल्टे अर्थ को बताने वाला, opposite

प्रतिपत्ति pratipatti
प्रतिपत्तिरुपदिष्टार्थस्य सम्यगवबोधः। (चक्र.-च.सू. 7/55), बताए गए नियमों का भली प्रकार से पालन करना, to follow the rules properly

प्रतिबुद्धतर pratibuddhatara
प्रतिबुद्धतरं जागर्तीत्यर्थः। (ड.-सु.शा. 3/30), अधिक व्यक्त होना (मन का गर्भ के पांचवे माह में), more clear intellect

प्रतिरूपक pratirūpaka
प्रतिरूपकः अन्यथारूपकारी द्रोहकारक इत्युच्यते लोके। (चक्र.-च.सू. 29/8), अन्यथारूप बनाने वाले (चिकित्सक) न होने पर भी चिकित्सक का वेष बनाने वाले प्रतिरूपक कहलाते हैं, इन्हें लोक व्यवहार में द्रोही (दुश्मनी करने वाले) भी कहा जाता है, physician in disguise

प्रतिवाप prativāpa
प्रतिवापे इति क्षिप्ते आवापे पुनरपरद्रव्यः प्रक्षेपः प्रतीवापः। (ड.-सु.सू. 11/13),

आवाप में डालने के बाद फिर से दूसरे द्रव्यों को कूटकर प्रक्षेप देना प्रतिवाप कहा जाता है, admixture of substances to increase the potency of alkali

प्रतिसरण
pratisaraṇa
प्रतिसरणं प्रतीपगमनम्। (चक्र.-च.सू. 12/8), विपरीत दिशा में गमन करना प्रतिसरण है, movement in opposite direction

प्रत्यागतप्राण
pratyāgataprāṇa
प्राणों की पुनर्स्थापना युक्त नवजात शिशु। (अ.सं.उ. 1/5), resuscitated neonate

प्रदूषण
pradūṣaṇa
प्रदूषणं तु प्रदुष्टवर्णादियुक्तत्वेन प्राकृतवर्णाद्युपघातः। (चक्र.-च.सू. 28/22), दूषित वर्ण आदि से स्वाभाविक वर्ण का उपधान हो जाना, प्रदूषण कहलाता है, loss of normal complexion

प्रदोष
pradoṣa
प्रदोष इति निशाप्रवेश एव परं चन्द्ररश्मि सेवाः। (चक्र.-च.सू. 6/48), रात्रि के आरम्भ काल को प्रदोष कहते हैं, तथा इस काल में चन्द्रमा का किरणों में बैठना चाहिए, first part of night

प्रधमन
pradhamana
श्लेष्मशल्यसङ्गे नासिकायां नाड्या चूर्णक्षेपणम्। (ड.-सु.सू. 7/17), नासाकर्णादि में नाड़ी की सहायता से औषधि चूर्ण फूंक देना, insufflations

प्रधानकर्म
pradhānakarma
पाटनं रोपणं यच्च प्रधानं कर्म तत् स्मृतम्। (ड.-सु.सू. 5/3), पाटन रोपण आदि कर्म अथवा शस्त्रकर्म प्रधान कर्म कहलाते हैं, operative procedures in the context of management of wounds

प्रधानस्नेहमात्रा
pradhānasnehamātrā
अहोरात्रशब्दो अष्ट प्रहरो लक्षणः। (चक्र.-च.सू. 13/29), जिस स्नेह मात्रा का आठ प्रहर (24 घंटे) में पाचन हो जाए उसे स्नेह की प्रधान मात्रा कहते हैं, dose of unction which digests in 24 hours

प्रनाडी
pranāḍī
प्रणाडी वेणुनलनाड्याद्याः। (चक्र.-च.सू. 14/44), बांस, नल आदि की नली को प्रनाडी/प्रणाडी कहते हैं, a tube/pipe made of bamboo

प्रभव
prabhava
षड्भ्यो रसेभ्यः प्रभवश्च तस्य। (च.शा. 2/4), उत्पत्ति (रसों के संदर्भ में), origin (in reference to tastes)

प्रभा
prabhā
वर्णप्रकाशिनी दीप्तिः। (चक्र.-च.सू. 26/11), वर्ण को प्रकाशित करने वाली दीप्ति (कान्ति) को प्रभा कहते हैं, luster

प्रभाषण
prabhāṣaṇa
अधीतशास्त्रस्य पुनरर्थतो व्याख्यानं प्रभाषणम्। (ड.-सु.सू. 4/1), पहले पढ़े हुए शास्त्र का पुन अर्थ सहित, महत्व सहित व्याख्यान करना प्रभाषण कहलाता है, interpretation, whatever learnt, read from teachers and books is re-spoken or reproduced with its meaning and importance

प्रमथ्या
pramathyā
प्रमथ्या प्रोच्यते द्रव्यपलात्कल्को कृताच्छनात्। तोयऽष्टगुणिते तस्या पानमाहुः पलद्वयम्। (शा.सं.म. 2/150), इस कल्पना में 1 भाग औषधकल्क को 8 भाग जल के साथ 1/4 भाग अवशेष रहने तक उबालते हैं, इसे प्रमथ्या कहते हैं, water extract of a drug where the paste of the drug is boiled with 8 parts of water and reduced to 1/4th is called pramathya

प्रमाथि
pramāthi
निजवीर्येण यद्द्रव्यं स्रोतोभ्यो दोषसंचयं निरस्यति प्रमाथिस्यात्। (शा.सं.प्र. 4/23-24), जो द्रव्य अपनी शक्ति से स्रोतों में संचित दोषसंचय को खींच कर दूर करे, उसे प्रमाथि कहते है, the drugs that expel the accumulated doshas and malas, present in the channels of the body by its inherent property, channel cleanser

प्रमाद
pramāda
प्रमादः बुद्ध्वाऽपि रोगमप्रतीकारः। (चक्र.-च.सू. 11/57), जानते हुए भी रोग का प्रतिकार न करना 'प्रमाद' कहा गया है, inadvertence, negligence

प्रमार्जन
pramārjana
प्रोञ्छनं बालाङ्गुलि वस्त्रैरक्षिरजः शल्यादिषु। (ड.-सु.सू. 7/17), अंगुली, वस्त्र, बाल इत्यादि से पोंछकर स्वच्छ करना, moping, cleaning

प्रमिताशन
pramitāśana
प्रमितस्य स्तोकस्याशनं प्रमिताशनम्। (चक्र.-च.सू. 21/11), अल्प आहार का सेवन करना प्रमिताशन कहलाता है, limited diet, dieting

प्रमीलक
pramīlaka
प्रमीलकः सततं प्रध्यानम्। (चक्र.-च.सू. 23/7), स्तन्यदूषणमेवाग्रे ज्वर तन्द्री प्रमीलकः। शिरोभितापो वैवर्ण्य भृशं वा पाण्डुपीतता।। (का.सं.क. रेवतीकल्प 73), हमेशा ध्यानमग्न रहना प्रमीलक कहलाता है, मूढ़ता, निद्रालुता, यह रेवती ग्रह से ग्रस्त शिशु का एक लक्षण है, busy in thought process, sleepiness, one of the signs of child afflicted with revathi graha

प्रमोहक
pramohaka
प्रमोहको मूर्च्छा, इन्द्रियापटुत्वं वा। (चक्र.-च.सू. 2/6), मूर्च्छा होना अथवा संज्ञाहीन होने को प्रमोहक कहते हैं, fainting or the impairment of sense

प्रयत्न
prayatna
प्रयत्नादि कर्म चेष्टितमुच्यते। (च.सू. 1/49), प्रयतन प्रयत्नः कर्मवाङ्मात्मनः। (चक्र.-च.सू. 1/49), प्रवृत्तिस्तु खलु चेष्टा कार्यार्था; सैव क्रिया, कर्म। (च.वि. 8/77), प्रवृत्तिस्तु प्रतिकर्मसमारम्भः। (च.वि. 8/129), कार्य हेतु की गई चेष्टा को प्रयत्न कर्म कहते हैं, प्रयत्न, कर्म का ही पर्याय है, इसे प्रवृत्ति, चेष्टा, प्रयत्न, कर्म इत्यादि अर्थों में प्रयुक्त किया जाता है, मन, वाणी व शरीर की प्रवृत्ति को कर्म कहते हैं, the effort taken to produce an effect is prayatna, prayatna, karma, pravritti, chesta etc are synonyms, the actions done by the body, mind and speech is also called karma